अनुवादक : यशवन्त

चित्रकार : त० शिश्मार्योवा

विषय-सूची

पृष्ठ

जीवन की गाथा से बढ़कर

कथा नहीं है कोई

एंडरसन



हड़ताल

नेपल्स के ट्राम कर्मचारी हड़ताल पर थे। सारे रिव्येरा क्याया पथ पर खाली ट्राम-गाड़ियों की लंबी क़तार लगी हुई थी और प्यात्सो देल वित्तोरिया (विजय मैदान) में कंडक्टरों और ड्राइवरों की भारी भीड़ इकट्ठी हुई थी—ये सब आनंदी, वाचाल और पारे की तरह चंचल नेपल्स-निवासी थे। ऊपर की ओर उद्यान की रेलिंग के उस तरफ़ फुहारे की धार तलवार के पतले फल की तरह चमक रही थी। हड़तालियों के चारों ओर उन लोगों का बड़ा भारी जमाव था जिन्हें अपने अपने काम के लिए इस विशाल नगर के विभिन्न हिस्सों में जाना था। दूकानों के मुनीम, कारीगर, बिसाती और दर्ज़िनें—ये सब लोग क्रुद्ध हुए थे और हड़तालियों को ज़ोरों से गालियाँ दे रहे थे। कठोर शब्दों और चुभते तानों का आदान-प्रदान हो रहा था और हाव-भावों से भी काफ़ी काम लिया जा रहा था क्योंकि नेपल्स-निवासी अपने हाथों से उतनी ही स्पष्ट तथा ओजपूर्ण बात करते हैं जितनी कि अपनी अनथक ज़बानों से।

सागर से मन्द पवन की लहर तैरती हुई आई, और नगर-उद्यान के लंबे ताल-वृक्षों के गहरे हरे रंग के पंखा-नुमा पत्तों में कोमल कंपन हुआ। इन वृक्षों के तने भीमकाय हाथियों के बेढ़ंगे पैरों जैसे विचित्र लग रहे थे। बच्चे, नेपल्स की सड़कों के अधनंगे बच्चे, गौरैयों की तरह इधर-उधर कुदक-फुदक रहे थे। उनकी चहक तथा हंसी से वायुमंडल गूंज रहा था।

प्राचीन शिल्प-कृति के सदृश दिखाई देनेवाला नगर देदीप्यमान सूर्य की सहस्र सहस्र रश्मियों से सुस्नात हुआ था और उसमें से आरगन-बाजे का गुंजार उठता प्रतीत हो रहा था। खाड़ी की नीली नीली लहरें प्रस्तर-बंध से टकरा रही थीं। उनकी धीमी छपछपाहट खंजरी की सकंप ध्वनि की तरह, नगर के कोलाहल और चिल्लाहट का साथ दे रही थी।

सारे हड़ताली सविषाद एकत्र खड़े थे और शायद ही भीड़ के खीझभरे शब्दों का जवाब दे रहे थे। उनमें से कुछ लोग उद्यान की रेलिंग पर चढ़कर भीड़ के ऊपर से सड़क की ओर व्यग्रता से झाँक रहे थे—बिल्कुल उसी तरह जिस तरह शिकारी कुत्तों से घिरा हुआ भेड़ियों का झुंड। यह स्पष्ट था कि वर्दी पहने हुए हड़ताली अपनी बात पर अटल रहने के दृढ़ निश्चय के सूत्र में बंधे हुए थे और इसी बात से भीड़ का गुस्सा बढ़ रहा था। लेकिन इस भीड़ में कुछ तत्वज्ञानी भी निकले। शांतिपूर्वक धूम्रपान करते हुए उन्होंने हड़ताल के अधिक उत्तेजित विरोधकों को इन शब्दों में झिड़कियाँ सुनाईं:

"देखिये, महाशय! आखिर आदमी करे भी क्या, जब वह अपने बाल-बच्चों के लिये मकारोनी* तक न खरीद सकता हो?"

---

*मकारोनी (सिवैयाँ) इटली का एक आम और सस्ता खाना है।—संपा०

शानदार वर्दियाँ पहने हुए म्युनिसिपल पुलिसवाले दो दो, तीन तीन के दलों में खड़े रहकर यह देख रहे थे कि भीड़ से कहीं गाड़ियों के यातायात में रुकावट न पैदा हो। पुलिसवाले बिल्कुल तटस्थ थे, निंदकों और निंदितों दोनों को एक ही निगाह से देख रहे थे और जब चिल्लाहट तथा हाव-भाव बहुत ही तेज़ हो जाते तब दोनों पक्षों का सद्भावपूर्वक मज़ाक़ उड़ाते थे। कराबिनेर* का एक दस्ता अपनी छोटी, हल्की बंदूकें संभाले हुए, पासवाली एक तंग गली के मकानों के सामने क़तार बांधे खड़ा था—यदि गंभीर झड़पें हुई तो दखल देने के लिये ये लोग तैयार थे। यह दल कुछ अशुभ-सा लग रहा था—दल के सिपाही तिकोने टोप, बिना आस्तीन के छोटे लबादे और लाल धारियोंवाले पतलून पहने हुए थे। पतलूनों पर की दो दो धारियाँ खून की लकीरों जैसी लग रही थीं।

यकायक झगड़ा-फ़साद, उपहास, गाली-गलौज और उत्तेजना शांत हुई। ऐसा दिखाई दिया कि भीड़ में एक नई प्रवृत्ति का—शांतिशीलता का संचार हुआ है।

"सिपाही! सिपाही!"

भीड़ से चिल्लाहट सुनाई दी और झुंझलाहट-भरी मुख-मुद्रा के साथ हड़ताली एक दूसरे के अधिक नज़दीक आये।

हड़तालियों के ख़िलाफ़ बजायी गयी तिरस्कार तथा विजय-सूचक सीटियों की आवाज़ अभिवादन-सूचक चिल्लाहट में मिल गई और भूरे रंग का हल्का सूट तथा पनामा का टोप पहने हुए एक हृष्ट-पुष्ट आदमी पत्थर के पक्के रास्ते पर पैरों से खट खट आवाज़ करता हुआ घटना-स्थल पर उछलने लगा।

---

*फ़ौजी पुलिस।—संपा०

कंडक्टर तथा ड्राइवर भीड़ को चीरते हुए धीरे धीरे ट्राम-गाड़ियों की ओर बढ़े और कुछ तो गाड़ियों पर चढ़े। चारों ओर से हो रहे चीत्कारों-झिड़कियों का मुंहतोड़ जवाब देते हुए जब वे भीड़ को चीरकर जा रहे थे तब वे और उग्र दिखाई दे रहे थे। कोलाहल शांत होने लगा।

सांता लुचीया बांध की ओर से भूरी वर्दियाँ पहने हुए वे छोटे सिपाही नृत्य का-सा हल्का पदन्यास करते हुए आये। उनकी पदध्वनि में ताल-बद्धता थी और उनके बायें हाथ यंत्रवत आगे-पीछे झूल रहे थे। वे टीन के सिपाहियों-से लग रहे थे और खिलौनों की तरह भंगुर। उनका नायक था एक लंबा, खूबसूरत अफ़सर, जिसकी भौंहों में सिकुड़न थी और होंठों में तिरस्कार-युक्त ऐंठन। उसकी बग़ल में एक गठीला आदमी उछलता हुआ चल रहा था जो टौप-हैट लगाये था। वह खूब बकवास कर रहा था तथा अनगिनत हाव-भावों से हवा को चीर-सा रहा था।

भीड़ ट्राम-गाड़ियों से पीछे की ओर हट गयी; सिपाही माला के भूरे गुटकों की तरह बिखर गये और उन्होंने वहीं, ट्राम-गाड़ियों के प्लेटफ़ार्मों के पास अपने स्थान संभाले जहाँ हड़ताली खड़े थे।

टौप-हैट पहने हुए आदमी ने तथा उसके इर्दगिर्द खड़े, प्रतिष्ठित दिखाई देनेवाले कई नागरिकों ने अपने हाथों को जोरों से हिलाते हुए चिल्लाकर कहा:

"यह आखिरी मौक़ा है... अत्तीमा वोल्ता! सुना आप लोगों ने?"

अफ़सर सर झुकाए, अनमनी मुख-मुद्रा में मूछों पर ताव दे रहा था। अपने टौप-हैट को हिलाता हुआ और कर्कश आवाज में चिल्लाता हुआ वह आदमी अफ़सर की ओर दौड़ा। अफ़सर ने

कनखियों से उसकी ओर देखा, फिर अपने को संभाला और सीना तानकर ज़ोरदार आवाज़ में हुक्म फ़र्माने लगा।

हुक्म सुनते ही सिपाही उछलकर ट्राम-गाड़ियों के पायदानों पर चढ़ने लगे। एक एक पायदान पर दो दो सिपाही खड़े हुए जब कि ड्राइवर और कंडक्टर एक के बाद एक नीचे कूद पड़े।

भीड़ को यह दृश्य बड़ा मज़ेदार लगा—लोग चिल्ला उठे, हंस पड़े और उन्होंने सीटियाँ बजाईं। लेकिन शोरोगुल यकायक रुक गया और लोग उग्र, खिंची हुई मुख-मुद्रा तथा अचरज से फैली हुई आँखों के साथ ट्राम-गाड़ियों से बिल्कुल चुपचाप पीछे हट गये और सबसे आगे खड़ी ट्राम-गाड़ी की ओर भीड़ मचाने लगे।

वहाँ देखते क्या हैं कि गाड़ी के पहियों से दो फ़ुट के अन्दर अन्दर, पटरियों पर एक ड्राइवर आड़ा लेट गया है। उसका सफ़ेद बालोंवाला सिर नंगा था और मुख उसका आकाश की ओर ताक रहा था। उसका चेहरा सिपाही जैसा था और उसकी खड़ी मूँछें डरावनी लगती थीं। भीड़ घूर घूर के देख ही रही थी कि एक छोटा-सा और बंदर की तरह चंचल बालक कूदकर उक्त ड्राइवर के पास लेट गया और फिर एक के बाद एक कई जनों ने उसका अनुकरण किया।

भीड़ में एक हल्की भनभनाहट पैदा हुई और लोगों ने भयभीत होकर देवी मदोन्ना* को पुकारा। कुछ ने तो झुंझलाकर गालियाँ तक दीं। स्त्रियाँ चीख पड़ीं तथा कराह उठीं और बच्चे उत्तेजना में आकर रबड़ की गेंद की तरह उछलते रहे।

टॉप-हैटवाला आदमी आपे से बाहर होकर कुछ चिल्ला उठा, अफ़सर ने उसकी ओर देखा और अपने कंधे सिकोड़े—ट्राम ड्राइवरों

---

*मरियम—संपा०

का काम करने के लिये उसके सिपाही भेजे गये थे लेकिन हड़तालियों से लड़ने-झगड़ने का हुक्म उसके पास नहीं था।

तब कुछ चापलूस नागरिकों से घिरा हुआ वह टॉप-हैटवाला आदमी तेज़ी के साथ कराविनेर की ओर बढ़ा—और ये लोग आगे आकर पटरी पर लेटे हुए आदमियों को वहाँ से हटाने के इरादे से झुक गये।

थोड़ी-सी हाथापाई हुई और फिर एकदम तमाशबीनों की सारी भीड़—जो कि धूलि-धूसर हो गई थी—लपककर, गरजकर और गुर्राकर पटरियों की ओर दौड़ पड़ी। पनामा-टोप पहने हुए व्यक्ति ने झटके से टोप उतार लिया, उसे हवा में ऊपर फेंक दिया और सबसे पहले वही आखिरवाले हड़ताली के पास लेट गया। हड़ताली के कंधे पर उसने थपकी लगाई और जोरों से कुछ प्रोत्साहन के उद्‌गार निकाले।

लोग एक एक करके पटरियों पर गिरने लगे, मानो उनके पैरों तले की धरती खिसकती जा रही हो। बड़े आनंदी थे वे लोग और काफ़ी शोरोगुल मचा रहे थे। दो मिनट पहले उनका वहाँ कोई पता नहीं था। धरती पर गिरते हुए वे हँस रहे थे, एक दूसरे की ओर देख मुँह बना रहे थे और उस अफ़सर को संकेत करते हुए चिल्ला रहे थे जो टॉप-हैटवाले व्यक्ति से बात कर रहा था, कुछ मुस्कुराता हुआ अपने दस्तानों को उसकी नाक के नीचे हिला रहा था और अपने सुंदर सिर को झटका दे रहा था।

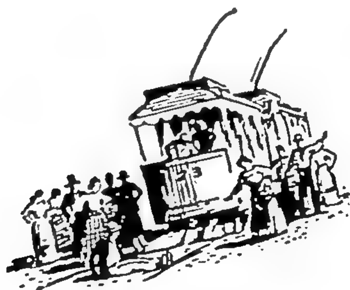
अधिकाधिक लोग पटरियों पर बरस-से पड़े, स्त्रियों ने अपनी टोकरियाँ तथा गठरियाँ फेंक दीं, हँसी से लोटपोट होते हुए बच्चे काँपते हुए पिल्लों की तरह सिकुड़ गये और शानदार पोशाकें पहने हुए लोग भी धूल में लोट गये।

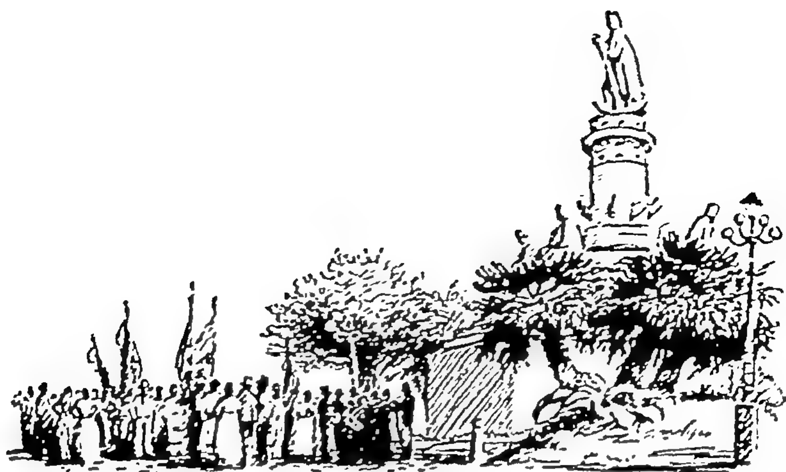
अगली गाड़ी के प्लेटफ़ार्म पर खड़े पाँचों सिपाहियों ने पटरियों पर पड़े मानव-शरीरों के ढेर को देखा और ठट्ठा मारकर हँस पड़े। हँसते हँसते वे इतने लोट-पोट हो गये कि आधार के लिए उन्होंने लोहे की छड़ों को पकड़ लिया और अपने सिरों को पीछे झटककर तथा आगे झुकाकर वे उस नज़ारे का मज़ा लेते रहे। अब वे स्प्रिंग के खिलौने नहीं दिखाई दे रहे थे।

...आधे घंटे के बाद ट्राम-गाड़ियाँ झनझनाती-ठनठनाती नेपल्स की सड़कों पर सरपट दौड़ने लगीं। प्रसन्न-वदन विजेता प्लेटफ़ार्म पर खड़े थे और गाड़ियों में चलते हुए नम्रता-पूर्वक पूछ रहे थे:

"टिकट?"

और मुसाफ़िर ज़ोरों से पलक मारते हुए, मुस्कुराते हुए तथा हल्का-सा असंतोष दिखाते हुए उन्हें लाल-पीले नोट दे रहे थे।





पारमा के बच्चे

जिनोग्रा में रेलवे स्टेशन के सामनेवाले छोटे-से मैदान में लोगों की भारी भीड़ लगी हुई थी। इनमें से अधिकांश तो श्रमिक थे किन्तु सुखी तथा सुवेषधारी लोग भी वहाँ काफ़ी संख्या में बिखरे हुए थे। भीड़ के सामने नगर-पालिका का भारी और कौशलपूर्ण क़सीदा-कामवाला रेशमी ध्वज लहरा रहा था और उसके नीचे नगर-पालिका के सदस्य खड़े थे। इस ध्वज के पास विभिन्न श्रमिक संगठनों के झंडे लहरा रहे थे। झंडों के सुनहरे झब्बे, झालरें, डोरियाँ और ध्वज-दंडों के सिरे चमक-दमक रहे थे; रेशम की सरसराहट सुनाई दे रही थी और उस आनंदित जन-समूह में वैसी ही हल्की ध्वनि गूंज रही थी जैसी हल्की आवाज़ में संगीत प्रस्तुत करनेवाले गायक-समूह से सुनाई देती है।

ऊपर की ओर ऊँचे चबूतरे पर उस स्वप्नदर्शी कोलंबस की मूर्ति खड़ी थी जिसे अपने विश्वासों के कारण अपार कष्ट सहने पड़े थे

और जो अपने विश्वास ही के कारण जीत गया था। आज भी वह उस जन-समूह की ओर देख रहा था और उसके संगमरमर के होंठ यह कहते हुए-से दिखाई दे रहे थे:

"जो विश्वास करते हैं वही जीत सकते हैं।"

वादकों ने अपने वाद्य मूर्ति के चरणों के पास चबूतरे के इर्दगिर्द रख दिये थे और पीतल के वे वाद्य सूर्य-प्रकाश में स्वर्ण की तरह जगमगा रहे थे।

पीछे की ओर स्टेशन की अर्धगोलाकार इमारत अपने भारी संगमरमर के बाज़ुओं को इस तरह फैलाये हुए थी मानो प्रतीक्षा में खड़े जन-समूह का आलिंगन करना चाह रही हो। बंदरगाह से अग्निबोट की भारी साँस, पानी को मथनेवाले पंखे की दबी-सी आवाज़, ज़ंजीरों की झनझनाहट, सीटियाँ और चिल्लाहट सुनाई दे रही थीं। लेकिन वह मैदान बिल्कुल शांत था और तेज़ धूप में तप रहा था। मकानों के बरामदों तथा खिड़कियों में स्त्रियाँ अपने हाथों में फूल लिये खड़ी थीं और उनके पास जो बच्चे खड़े थे वे भी रंगबिरंगी शानदार पोशाकों के कारण फूलों जैसे नज़र आ रहे थे।

जैसे ही रेल सीटी बजाती हुई स्टेशन में घुसी, भीड़ में हलचल मची और कई सिमटे-सिकुड़े हैट पंछियों की तरह आसमान में उड़े, वादकों ने अपनी तुरहियाँ उठाईं और कुछ गंभीर, वयस्क व्यक्ति ज़रा ठाठ के साथ आगे बढ़कर भीड़ की तरफ़ मुखातिब होते हुए उत्तेजनापूर्ण बातें तथा कुछ हरकतें करने लगे।

धीरे धीरे भीड़ बँट गई और बीच में सड़क तक एक चौड़ा मार्ग तैयार हुआ।

"ये लोग किनसे मिलने आये हैं?"

2*

"पारमा के बच्चों से!"

पारमा में हड़ताल जारी थी। मालिक लोग हार मानने को तैयार न थे और मज़दूर ऐसे घोर संकट में थे कि उन्होंने अपने बच्चों को भुखमरी से बचाने के लिये जिनोआ भेजने का निर्णय किया था।

स्टेशन की इमारत के खंभों के पीछे से बच्चों का एक सुव्यवस्थित जुलूस निकला। ये बच्चे अधनंगे थे और अपने फटे-पुराने कपड़ों में वे कुछ विचित्र, झबरे, छोटे जानवरों-से लग रहे थे। ये नन्हे-मुन्ने, धूल-सने और थके-माँदे बालक हाथ में हाथ डाले पाँच पाँच की क़तार में चल रहे थे। उनके चेहरे गंभीर थे लेकिन आँखें उनकी चमक रही थीं और वादकों ने जब गारीबाल्डी का स्तुति-गीत बजाया तब उन छोटे, दुबले और क्षुधा-पीड़ित चेहरों पर आनंदसूचक मुस्कुराहट दौड़ी।

जन-समूह ने गगनभेदी घोषणाओं के साथ इन भावी नर-नारियों का स्वागत किया। उनके सामने झंडियाँ झुक गईं, पीतल की तुरहियाँ ज़ोरों से बज उठीं जिससे बच्चे घबड़ा-से गये और उनकी आँखें चौंधिया गईं। इस भव्य स्वागत से चकित होकर वे एक क्षण के लिये कुछ पीछे हटे और फिर एकदम सँभलकर सीधे खड़े रहे जिससे वे कुछ लंबे और एक राशि में बद्ध से दिखाई दिये। इसी समय शत शत कंठों से गर्जना हुई:

"वीवा इताल्या!"*

"नव पारमा ज़िन्दाबाद!" बच्चों की ओर वेग से आगे बढ़ते हुए जन-समूह ने ज़ोरदार नारा लगाया।

---

*इटली की जय!—संपा०

"एव्वीवा गारीवाल्डी!"* भूरे पच्चड़ की सूरत में भीड़ के बीच में से सरकते हुए बच्चों ने भी घोषणा की और जन-समूह ने उनको घेर लिया।

होटलों की खिड़कियों तथा मकानों की छतों से सफ़ेद पंछियों की तरह अनगिनत रूमाल फड़फड़ा रहे थे और नीचे की भीड़ पर फूलों तथा उत्साहपूर्ण हर्ष-ध्वनियों की वर्षा हो रही थी।

हर वस्तु प्रसन्न रूप धारण किये थी, हर चीज़ में जीवन का संचार हुआ था, भूरे संगमरमर तक से तेजस्वी किरण-शलाकाएं प्रस्फुटित होती हुई दिखाई दे रही थीं।

वायु-लहरी के कारण पताकाएं लहरा उठीं, हवा में टोपियाँ फेंकी गईं तथा फूलों की बौछार की गई; बच्चों के नन्हे नन्हे सिर लोगों के सिरों के ऊपर दिखाई देने लगे; अभिवादन के हेतु फैलाये गये नन्हे, मैले हाथों ने फूलों को पकड़ने की कोशिश की और प्रचंड तथा अखंड घोषणाओं से गगन गूंज उठा:

"समाजवाद की जय!"

"इटली की जय!"

लगभग सभी बच्चों को लोगों ने उठा लिया। कुछ बच्चे बड़ों के कंधों पर सवार हुए तो कुछ को कठोर मुखाकृति और मूंछोंवाले आदमियों ने अपने चौड़े सीनों से चिपका लिया। शोर तथा हंसी के कोलाहल में वाद्य-संगीत दब-सा गया।

बाक़ी बाल-अतिथियों को लेने के लिये स्त्रियां भीड़ में आती-जाती रहीं और एक दूसरी से चिल्ला-चिल्लाकर पूछती रहीं:

"तुम दो लोगी न, अनीता?"

---

* गारीबाल्डी की जय! – संपा०

"जी हाँ, और तुम भी?"

"बेचारी अपंग मार्गरेट के लिये एक बच्चा जरूर लेना..."

वहाँ आनंदपूर्ण उत्तेजना छाई हुई थी, सब ओर सस्मित वदन और सदय नयन नजर आ रहे थे, और हड़तालियों के कुछ बच्चों ने रोटी चबाना भी शुरू कर दिया था।

"हमारे ज़माने में ऐसी बात किसी ने भी नहीं सोची थी!" एक वृद्ध ने कहा। उसकी नाक चोंच जैसी थी और वह दांतों के बीच काला चुरुट दबाये था।

"और बात कितनी सरल है..."

"हाँ तो। सरल भी और समझदारी की भी"

वृद्ध ने मुँह से चुरुट हटाया, उसके सिरे को देखा और राख झटकते हुए आह भरी। फिर दो नन्हे नन्हें पारमा-बालकों (जो स्पष्टतया भाई भाई थे) को देखकर उसने भयंकर मुखाकृति बनाई, और जब तक बच्चे गंभीरतापूर्वक देख रहे थे, उसने अपने हैट को नीचे दबाया, हाथ फैलाये और जैसे ही वे दोनों भाई मुँह सिकोड़कर एक साथ पीछे हटे वह एकदम उकडूँ बैठा और मुर्गे की तरह कुकडूँ-कूँ की आवाज़ की। बच्चे ठहाके के साथ हंस पड़े, और अपने नंगे क़दमों को सड़क पर पटकते हुए वे उछलने लगे। वृद्ध उठ खड़ा हुआ, उसने अपने हैट को ठीक किया और इस ख्याल में कि मैंने अपना फ़र्ज़ अदा किया है, लड़खड़ाता हुआ वहाँ से चल दिया।

एक कुबड़ी, सफ़ेद बालोंवाली स्त्री, जिसका चेहरा डाइन जैसा था और जिसकी सूखी ठोड़ी पर सफ़ेद, तार जैसे बाल दिखाई दे रहे थे, कोलंबस की मूर्ति के पास खड़ी खड़ी रो रही थी, और

अपनी फीकी शाल के सिरे से अपनी आँसू-भरी लाल लाल आँखें पोंछ रही थी। यह काली और कुरूप स्त्री उस उत्तेजित भीड़ में विलक्षण निरावार-सी नज़र आ रही थी...

काले केशवाली एक जिनोवाई युवती एक लगभग "सप्तवर्षीय आदमी" को हाथ से पकड़े धीरे धीरे वहाँ आई। यह आदमी लकड़ी की एड़ीवाले जूते पहने था और उसके सिर पर इतना बड़ा भूरा हैट था जो क़रीब क़रीब उसके कंधे छू रहा था। आँखों पर से हैट को पीछे हटाने के लिए वह अपने नन्हे-से सिर को झटका दे रहा था लेकिन वह उसके मुँह पर खिसकता ही रहा। आखिर उस युवती ने हैट को झटके से उतारकर हंसते-गाते हवा में घुमाया। बच्चे के चेहरे पर मुस्कुराहट की लहर दौड़ी। उसने ऊपर देखा और फिर हैट को पकड़ने के लिये उछल पड़ा। वे दोनों ऐसे ही आँखों से ओझल हो गये।

एक लंबा आदमी जिसकी बलशाली बाँहें नंगी थीं और जो चमड़े का एप्रन पहने था, एक छःवर्षीया बालिका को अपने कंधे पर बैठाये जा रहा था। यह बच्ची नन्ही, भूरी चुहिया-सी लग रही थी।

"समझी, मैं क्या कह रहा हूँ?" चमकीले लाल बालोंवाले एक बच्चे को हाथ से पकड़े हुए, पास से जानेवाली एक स्त्री से उस आदमी ने कहा। "यदि ऐसी बातों ने ज़ोर पकड़ा तो... हमको हराना कोई आसान काम नहीं है, सच है न?"

और विजय की ज़ोरदार हंसी के साथ उसने अपने नन्हे-से बोझ को नीली हवा में फेंका और चिल्ला उठा:

"पारमा की जय!"

बच्चों को उठाये हुए या हाथ से पकड़े हुए लोग धीरे धीरे वहां से चल दिये और आखिर वह मैदान खाली हुआ—वहां मौजूद रहे सिर्फ़ कुचले हुए फूल, मिठाइयों के वेठन, आनंदित हमालों का एक समूह और सबसे ऊपर उस व्यक्ति की महिमामयी मूर्ति जिसने नये विश्व का आविष्कार किया था।

और नवजीवन की दिशा में अग्रसर लोगों की आनंदपूर्ण गर्जनाएं सड़कों में इस तरह गूंज रही थीं मानो बड़ी बड़ी तुरहियां बज रही हों।





फूल

उमसभरी दुपहरी। कुछ दूरी पर मध्याह्न की तोप सड़े हुए राक्षसी अंडे के फटने की-सी विचित्र दबी हुई आवाज़ के साथ अभी अभी चल चुकी है और इस विस्फोट से कंपित हवा में शहर की कटु गंध– ज़ैतून के तेल, लहसुन, शराब और धूप से तपी धूल की वास– और तेज़ लग रही है।

तेज़ गरम दक्षिणी दिवस का कोलाहल तोप की भारी आह के कारण कुछ देर तक सड़क के गरम पत्थरों पर दबकर फिर से ऊपर उठता है और चौड़े अस्पष्ट प्रवाह में, सागर की ओर बहता है।

शहर बड़ा ही रंगदार लग रहा है– पादरी के भारी ज़रदोज़ी जामे जैसा। उसकी आवेशपूर्ण चिल्लाहट, आहें-कराहें तथा गर्जन जीवन के प्रार्थना-गीत की तरह गूंज रहे हैं। प्रत्येक नगर मानवी श्रम द्वारा निर्मित मंदिर है और सब श्रम है भविष्यत् की उपासना।

सूरज माथे पर चढ़ आया है और नीले आसमान से चिलचिलाती गर्मी इस तरह बरस रही है मानो धरती तथा सागर

पर गिरनेवाली प्रत्येक सूर्य-किरण पत्थर तथा पानी में भोंकी गई तेज़ तलवार हो। पानी चांदी के तारों से खूब कढ़े हुए चमकदार रेशम की तरह दिखाई दे रहा है, उसकी उष्ण हरी लहरें तट को स्पर्श कर रही हैं और वह जीवन तथा सुख के स्रोत—सूर्य को अपना महिमामय स्तोत्र समर्पित कर रहा है।

धूल-सने और पसीने से तर आदमियों के झुंड के झुंड अपने दोपहर के भोजन के लिये जल्दी जल्दी जा रहे हैं। खुशी-भरी ज़ोरदार आवाज़ में उनकी बातचीत चल रही है। उनमें से कई एक सागर-तट की ओर दौड़ते हैं, अपने मटमैले कपड़ों को उतार देते हैं और सागर में ग़ोता लगाते हैं। पानी में कूदने पर उनके साँवले शरीर बहुत ही छोटे दिखलाई पड़ रहे हैं—शराब के बड़े जाम में तैरनेवाले काले धूलि-कणों जैसे।

पानी का रेशमी उछाल, स्नान से विश्रांत लोगों की हर्ष-ध्वनियाँ, बच्चों की ज़ोरदार हंसी व चिल्लाहट और कई पदाघातों के कारण उठे इंद्र-धनुष सदृश तुषार—इन सब के रूप में मानो सहस्त्ररश्मि को सानंद श्रद्धांजलि समर्पित की जा रही है।

एक ऊँची हवेली की छाया में सड़क की पटरी पर चार खोदाई मज़दूर बैठे हैं जो खाना खाने की तैयारी कर रहे हैं। जिन पत्थरों पर बैठे हैं उन्हीं की तरह भूरे, मूखे और मस्त हैं वे। सफ़ेद बालों-वाला एक वृद्ध, जिसके शरीर पर राख-सी धूल की मोटी परत चढ़ी हुई है, अपनी पैनी आँख को सिकोड़कर लम्बी पाव-रोटी काट रहा है। वह इस बात का पूरा ख्याल रख रहा है कि सब टुकड़े बिल्कुल बराबर हों। उसने बिनाई की लाल ऊनी टोपी पहन रखी है जिसका झब्बा उसकी आँखों के सामने लटकता रहता है और वह अपने देवदूत सदृश विशाल मस्तक को बार बार आगे-पीछे

झटका देता है और तोते की चोंच के समान उसकी नाक के नथुने थरथराते हैं।

उसके पास गर्म पत्थरों पर एक हट्टा-कट्टा नौजवान पीठ के वल लेटा हुआ है। काँसे जैसा उसके शरीर का रंग है और वाल उसके कोयले की तरह काले काले हैं। पाव-रोटी के टुकड़े उसके मुँह पर पड़ते हैं और वह मानो नींद में कोई तर्ज़ गुनगुनाता हुआ सुस्ती के साथ पलक मारता है। वाक़ी दो जने मकान की सफ़ेद दीवाल के सहारे वैठे हुए झपकी ले रहे हैं।

एक हाथ में शराव की वोतल और दूसरे हाथ में एक छोटा-सा वंडल लिये एक लड़का उनकी ओर आता है। वह अपने सिर को पीछे की ओर झटका देता है और किसी पंछी की-सी कर्कश ध्वनि में कुछ चिल्लाता है। उसे इस वात तक का ख्याल नहीं है कि हाथ की वोतल के पुआल के आवरण में से माणिक की तरह लाल मदिरा की वड़ी वड़ी वूंदें चू रही हैं।

लेकिन वह वूढ़ा यह देख लेता है और पाव-रोटी तथा छुरी को पास में लेटे हुए युवक के सीने पर रखकर उस लड़के को हाथ से संकेत करते हुए चिल्लाता है:

"अरे अंधे, ज़रा जल्दी कर! देख तो—सारी शराव गिरा रहा है!"

लड़का वोतल ऊपर उठाता है, ज़रा हाँफता है और उन मज़दूरों की ओर दौड़ता है। वे सव एक साथ सचेष्ट होते हैं, उत्तेजित होकर चिल्ला उठते हैं और शराव की वोतल को टटोलते हैं जव कि वह लड़का एक घर के अहाते में घुस जाता है और फ़ौरन एक वड़ा-सा पीला कटोरा लिये वाहर आता है।

कटोरे को वह ज़मीन पर रखता है और वूढ़ा उस सजीव रक्तवर्ण

धारा को उसमें उंडेल देता है। धूप में चमकनेवाली उस मदिराधारा को चारों की आँखें बड़े प्यार के साथ देखती हैं और उनके सूखे होंठ फड़कते हैं।

हल्के नीले रंग की पोशाक और काले केशकलाप पर सुनहरी लैसदार गुलूबंद पहने एक स्त्री वहाँ आती है। उसके ऊंची एड़ी के जूते फ़र्श पर खट खट आवाज़ करते हैं। घुंघराले बालोंवाली एक नन्ही-सी बालिका को वह हाथ से पकड़े हुए है। बालिका के हाथ में गहरे लाल रंग के दो फूल हैं जिन्हें वह चलते चलते लहरा रही है और गा रही है:

"माँ, ओ मेरी माँ ..."

उस वृद्ध मज़दूर के पीछे रुककर बालिका गाना बंद कर देती है, एड़ी उठाकर खड़ी होती है और गंभीरता के साथ उसके कंधे पर से झाँककर देखती है उस पीले कटोरे में गलगल करके गिरनेवाली शराब को। यह आवाज़ मानो उसका गीत आगे चला रही है।

स्त्री के हाथ से वह अपना हाथ छुड़वा लेती है, अपने पास के फूलों की पंखुड़ियाँ नोच लेती है और गौरैया के पर की तरह साँवला नन्हा-सा हाथ ऊपर उठाकर पंखुड़ियों को शराब के कटोरे में गिरा देती है।

चारों आदमी चौंक पड़ते हैं और गुस्से में अपने धूल-सने सिर उठाकर देखते हैं। बालिका तालियाँ बजाती है, हंस पड़ती है और नाच उठती है। परेशान माता उसका हाथ पकड़ने का प्रयत्न करती है और साथ साथ तीखी आवाज़ में उसे झिड़कियाँ सुनाती है। लड़का हंसते हंसते लोट-पोट हो जाता है और फूलों की पंखुड़ियाँ कटोरे की गहरी शराब में नन्ही नन्ही गुलाबी नावों की तरह तैरती हैं।

बूढ़ा मज़दूर जाने कहाँ से एक प्याला उठाता है, पंखुड़ियों सहित शराब निकाल लेता है, उठता है और प्याला अपने होंठों से लगाकर शांत-गंभीर आवाज़ में कहता है:

"कोई बात नहीं, देवीजी! बच्चे का उपहार ईश्वरीय उपहार है... आपके स्वास्थ्य के लिये, देवीजी, और बिटिया, तुम्हारे भी! तुम अपनी माता जैसी ही सुन्दर बनो और उससे दुगुना सुख पाओ।"

वृद्ध की भूरी मूंछों के सिरे प्याले की शराब में डूबते हैं, वह अपनी आँखों को सकुचाता है और धीरे धीरे शराब का मजा लेने लगता है। होंठ उसके जोरों से चपचप करते हैं और उसकी टेढ़ी नुकीली नाक कुछ सिकुड़ जाती है।

माता मुस्कुराती है, सिर नवाती है और बालिका को हाथ से पकड़े हुए वहाँ से चल देती है। बालिका दायें-बायें झूमती-झामती, सड़क की पटरी पर नाचती-फुदकती गीत दोहराती है:

"माँ, ओ मेरी माँ ..."

मजदूर सुस्ती से अपने सिर घुमाते हैं। उनकी नज़र अभी शराब पर है तो अभी उस बालिका पर। वे हंसते हैं और अपनी वेगवती दक्षिणी बोली में एक-दूसरे से कुछ कहते हैं।

और कटोरे में लोहितवर्ण मदिरा पर फूल की वे लाल लाल पंखुड़ियां अभी भी तैर रही हैं।

सागर गा रहा है, नगर गुनगुना रहा है और सूरज अपनी ऐंद्रजालिक कथाओं को बुनता हुआ तेज़ जगमगा रहा है।





सुरंग

शांत नीला सरोवर, अनंत हिमाच्छादित मुकुटधारी ऊंचे पर्वतों से परिवेष्टित है। सरोवर के किनारे तक गहरे रंग के लहरदार बगीचे फैले हुए हैं जो नयनरम्य नक्काशी से नज़र आते हैं। सफ़ेद घर, जोकि शक्कर के बने हुए-से दिखाई देते हैं, जलाशय में टकटकी लगाये झाँक रहे हैं और वहाँ शिशु की मीठी नींद की-सी शांति फैली हुई है।

प्रभात का समय। पहाड़ियों से फूलों की सुमधुर सुगंध लहराती हुई आ रही है। सूरज अभी अभी निकला है और पेड़ों की पत्तियों पर तथा तृणों की नोकों पर ओसकण अभी भी चमक रहे हैं। शांत घाटी में से गुज़रनेवाला रास्ता भूरे रंग का फ़ीता-सा लग रहा है और यद्यपि यह पत्थर का पक्का रास्ता है फिर भी ऐसा लगता है कि स्पर्श में मखमल जैसा मुलायम हो।

कंकड़-पत्थरों के ढेर के पास एक मजदूर बैठा हुआ है। रंग उसका काला है—बिल्कुल गोबरैले के जैसा। उसके चेहरे पर साहस

तथा दयालुता के भाव झलक रहे हैं और उसके सीने पर एक पदक लटक रहा है।

कांसे के-से हाथ घुटनों पर रखे हुए वह एक पथिक की ओर ताक रहा है जो शाहबलूत के एक वृक्ष के नीचे खड़ा है।

"महाशय," वह कहता है, "यह पदक मुझे सिंपलन सुरंग पर किये हुए काम के लिये मिला है।"

गर्दन झुकाकर वह सीने पर लटक रहे धातु के उस सुन्दर टुकड़े को देखता है और उसके चेहरे पर नाजुक मुस्कुराहट दौड़ती है।

"हाँ, जबतक आप काम में दिल नहीं लगाते और उसे प्यार करना नहीं सीखते तबतक हर काम कठिन है, लेकिन जभी उससे दिली प्यार होता है, वह आपको उत्साहित करता है और उसकी कठिनता खत्म हो जाती है। लेकिन, सच है कि वह आसान नहीं था।"

सूरज की ओर देखकर मुस्कुराते हुए उसने अपना सिर कुछ हिलाया; फिर यकायक सचेत होकर हाथ लहराया और उसी क्षण उसकी काली आँखें चमक उठीं।

"कभी कभी तो वह भयंकर भी था। धरती को भी ज़रूर कुछ महसूस होता होगा, क्या आप नहीं मानते? पहाड़ की बग़ल को चीरकर जब हमने गहरा विवर बनाया तब वहाँ की धरती बड़े क्रोध में हमारे सामने आई। उसकी साँस गरम थी। हमारे दिल की धड़कन रुक-सी गयी, हमारे सिर भारी हुए और हमें लकवा-सा मार गया। कई लोगों ने यही अनुभव किया! फिर धरती ने हम पर पत्थरों की बौछार की और गरम पानी उंडेला। ओह! कैसा भयानक था वह प्रसंग! जब कभी पानी पर रोशनी पड़ती, वह लाल लाल नज़र आता और तब मेरे पिताजी कहते कि 'याद रखो, हमने धरती को घायल किया है, वह हम सबको अपने खून में डुबो देगी और उससे झुलसा देगी!'

हाँ, यह थी तो कोरी कल्पना; लेकिन धरती के गर्भ में, जहाँ पर कि गला घोंटनेवाला अंधकार फैला हुआ हो, पानी रोता हुआ-सा रस रहा हो और पत्थर पर लोहे के रगड़ने की आवाज़ आ रही हो, कोई भी बात संभव लगती है। महाशय, वहाँ सब कुछ बड़ा अकल्पनीय था। जिसकी आँतों में हम छेद बना रहे थे उस गगनस्पर्शी पहाड़ की तुलना में हम कितने कमज़ोर दिखाई दे रहे थे ... अगर आपने उसे देख लिया होता तो आप मेरी बात समझ लेते – हम अदने-से आदमियों ने उस पहाड़ की बग़ल में कैसा चौड़ा छेद बनाया था। प्रभात के समय जब हम नीचे उतरकर धरती की आँतों में विवर बनाने लगते तब सूरज कैसी दुखभरी दृष्टि से हमारी ओर देखता! वे मशीनें, वह खिन्न-वदन पहाड़, गहराई की वह गंभीर गड़गड़ाहट और पागल आदमी की हंसी जैसी विस्फोटों की वे प्रतिध्वनियाँ!"

उसने अपने हाथों को निहारा, नीले ऊपरी पहनावे पर लटक रहे पदक को ठीक किया और एक अस्पष्ट आह भरी।

"आदमी जानते हैं कि काम कैसे करना चाहिये!" उसने अभिमानपूर्वक बात आगे चलायी। "अजी महाशय, आदमी भले ही छोटा हो लेकिन जब वह काम करना चाहता है तब वह एक अजेय शक्ति बन जाता है। और विश्वास कीजिये कि अदना होते हुए भी आदमी जो भी चाहता है, कर सकता है। मेरे पिताजी पहले ऐसा नहीं मानते थे।

"वे कहा करते थे कि 'पहाड़ को चीरकर एक देश से दूसरे देश में जाना भगवान की व्यवस्था को तोड़ना है, जिसने पहाड़ों की दीवारों से भूमि का बँटवारा किया है। याद रखो, देवी मदोन्ना हमसे नाराज़ होगी!' पिताजी की यह बात सही नहीं थी क्योंकि मदोन्ना उनसे कभी नाराज़ नहीं होती जो उसको प्यार करते हैं। बाद में पिताजी भी

लगभग वही सोचने लगे जो मैं सोचता था, क्योंकि उन्होंने अपने को पहाड़ से भी बड़ा और ज़्यादा ताक़तवर महसूस किया; लेकिन ऐसे मौक़े भी आते थे जब किसी त्योहार के दिन अपने सामने मेज़ पर शराब की बोतल रखे हुए वे मुझे तथा दूसरे लोगों को व्याख्यान सुना देते।

"'भगवान के बच्चो,'– यह पिताजी का एक विशेष प्रिय संबोधन था क्योंकि वे एक अच्छे, धर्मपरायण व्यक्ति थे। वे कहना शुरू करते, 'भगवान के बच्चो, तुम इस प्रकार धरती का मुक़ाबला नहीं कर सकते। उसपर किये गये आघातों का वह ज़रूर बदला लेगी और ख़ुद अजेय ही रहेगी! तुम्हें पता चलेगा कि हम पर्वत के हृदय तक विवर ज़रूर बनाएंगे लेकिन जैसे ही उसे स्पर्श करेंगे हम ज्वालाओं के बीच फेंके जाएंगे, क्योंकि धरती का हृदय है अग्नि–इसे सब कोई जानते हैं! धरती को जोतना दूसरी बात है, प्रकृति की प्रसूति-वेदना में सहायक होना पुरुष का कर्त्तव्य है, लेकिन उसके मुख को या उसके रूप को विकृत करना–नहीं, यह हम नहीं कर सकते। देखो, पहाड़ में हम जैसे जैसे अधिकाधिक खोदते जाते हैं, हवा ज़्यादा गरम बनती जाती है और साँस लेना दूभर होता जाता है..'"

मूंछों पर ताव देते हुए वह आदमी धीरे से हंसा।

"ऐसा माननेवाले अकेले वही नहीं थे, और यह सच भी था: जैसे जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, हवा गरम होती जा रही थी, हमारे लोगों में बीमारी बढ़ रही थी और कई लोगों को मौत का शिकार बनना पड़ा। उष्ण जल-स्रोत ज़ोरदार प्रवाहों में परिवर्तित हुए, ज़मीन की दरारें ज़ोरों से फट पड़ीं और हमारे दो साथी, जो कि लुगानो से आये हुए थे, पागल हो गये। रात के समय बैरकों में कई लोग चित्त-भ्रम में बड़बड़ा उठते और मारे डर के बेबस होकर अपनी खाटों पर से कूद पड़ते...

"'मैं ठीक कह रहा था न?' पिताजी ने कहा। उनकी आँखों में भय था और उनकी खाँसी का ज़ोर वढ़ रहा था ... 'मैं ठीक कह रहा था न?' उन्होंने फिर से कहा। 'तुम प्रकृति को पराजित नहीं कर सकोगे!'

"और आखिर वह जो बीमार पड़े ... फिर चंगे नहीं हुए। मेरे पिताजी वृद्ध थें लेकिन थे वड़े मज़वूत और उन्होंने ज़िद् के साथ, विना शिकायत किये, तीन सप्ताह से भी अधिक समय तक मौत का मुक़ावला किया—विल्कुल उस आदमी की तरह जो अपना मूल्य जानता है।

"'सुनो पावलो, मेरा काम समाप्त हुआ,' एक रात पिताजी ने मुझसे कहा, 'संभलकर काम करो और घर चले जाओ। मदोन्ना तुम्हें सुखी रखे!' तव वे वड़ी देर तक मौन रहे। उनकी आंखें वंद थीं और साँस भारी हो रही थी।"

वह आदमी उठ खड़ा हुआ, उसने पहाड़ की ओर देखा और अंगड़ाई ली जिससे उसकी नसें चटचटा उठीं।

"तव पिताजी ने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और मुझे अपने पास खींचकर कहा—यह ईश्वरीय सत्य है, महाशय!—'जानते हो वेटा पावलो? मैं मानता हूं कि यह ऐसा ही होगा: हम और दूसरी ओर से खुदाई करनेवाले लोग पर्वत के वीच एक दूसरे से मिलेंगे, हां, ज़रूर मिलेंगे हम; तुम मानते हो न, वेटा पावलो?' 'जी हाँ,' मैंने इसका विश्वास किया। 'ठीक है, मेरे पुत्र! मनुष्य को अपने कार्य में सदैव विश्वास रखना चाहिए, अपनी कामयावी का यक़ीन होना चाहिये और उस परमेश्वर के प्रति श्रद्धा होनी चाहिये जो मदोन्ना की कृपा से सत्कार्यों का सहायक है। मेरे वेटे, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि यदि यह हो जाय, पहाड़ के वीच लोगों का मिलन हो जाय, तो मेरी क़ब्र

के पास आना और कह देना: पिताजी वह हो गया! तव मैं समझ लुंगा!'

"यह अच्छा था, महाशय, और मैंने पिताजी को आश्वासन दिया। पाँच दिन वाद पिताजी का देहांत हुआ। अपनी मृत्यु से दो दिन पहले उन्होंने मुझसे तथा हमारे साथियों से कहा कि उन्हें सुरंग के अंदर वहीं दफ़न किया जाय जहाँ उन्होंने काम किया था। उन्होंने हमसे ऐसा करने की प्रार्थना ही की, लेकिन मैं मानता हूँ कि वे चित्त-भ्रम में वड़वड़ा रहे थे।

"हम और दूसरी ओर से हमारी ओर वढ़नेवाले लोग मेरे पिताजी के देहांत के तेरह सप्ताह वाद पहाड़ के वीच एक दूसरे से मिले। ओह! महाशय, उस दिन हम पागल-से हो उठे थे जव हमने अंधकारपूर्ण भूगर्भ में दूसरी ओर से हमारी ओर आनेवाले लोगों के काम की आवाज़ सुनी। ज़रा सोचिये महाशय, हम उस वक़्त धरती के ऐसे भारी वोझ के नीचे थे कि यदि वह चाहती तो एक ही चोट में हम सव अदने-से आदमियों का काम तमाम कर देती!

"कई दिन तक हम यह आवाज़ सुनते रहे। हल्की-सी आवाज़ें दिन-व-दिन ज़ोरदार तथा ज़्यादा साफ़ हो रही थीं और विजेताओं की मस्ती-सी हमपर सवार हुई थी। हम राक्षसों की तरह, भूत-पिशाचों की तरह काम करते रहे और हमें ज़रा-सी भी थकावट नहीं महसूस हुई, न ही किसीके हुक्म की जरूरत पड़ी। वाह! कैसा मजा आ रहा था! यक़ीन कीजिये, हमें उस वक़्त लग रहा था कि हम एक सुहावने दिन पर नाच रहे हैं। और हम सव, वच्चों की तरह सदय तथा सरल-हृदय वन गये। महाशय, यह अनुभव से ही जाना जा सकता है कि महीनों से जहाँ हम छछूंदर की तरह अथक

3*

परिश्रम से विवर बना रहे थे वहाँ, अंधकारमय भू-गर्भ में दूसरे लोगों से मिलने की इच्छा कितनी बलवती, कैसी उत्कट रही होगी!"

इन संस्मरणों से उस आदमी का चेहरा उत्तेजना से उज्ज्वल हो उठा। वह समीप आया और अपनी गंभीर मानवतापूर्ण आँखों से अपने श्रोता की आँखों में एक टक देखते हुए उसने मृदु, मंजुल स्वर में बात आगे चलायी :

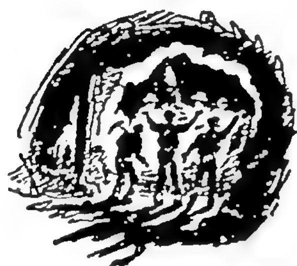
"हमारे बीच की मिट्टी की आख़िरी परत गिर गई, सुरंग का अभी अभी खुला हुआ हिस्सा मशाल की तेज़ लाल रोशनी से जगमगा उठा और उस ओर हमें एक काला चेहरा दिखाई दिया जिसपर आनंदाश्रु चमक रहे थे। इस चेहरे के पीछे कई और मशालें तथा चेहरे दिखाई दिये। एक साथ विजय-घोष, हर्ष-ध्वनियाँ गूंज उठीं। अपने जीवन के आनंद की चरम सीमा मैंने उस समय देखी और जब कभी मुझे वह दिन याद आता है मैं महसूस करता हूँ कि मेरा जीवन बेकार नहीं रहा! मैं आपसे कहता हूँ महाशय, इसका कारण था मेरा काम, मेरा पवित्र काम! जब हम धरती के गर्भ से फिर ऊपर, सूर्य-प्रकाश में आये तो हममें से कइयों ने भूमि पर गिरकर रोते हुए, अपने होंठों से उसे चूम लिया! यह सब परी-कथा की तरह अद्भुत था। जी हाँ, जीते गये पर्वत को हमने चूम लिया, धरती को चूम लिया और सुनिये महाशय, मैंने उस दिन अपने को धरती के अधिक समीप पाया, मैंने उसको प्यार किया—ठीक उसी तरह, जिस तरह आदमी स्त्री को प्यार करता है!

"कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं अपने पिताजी की क़ब्र पर पहुँचा। मुझे मालूम है कि मृत व्यक्ति कुछ सुन नहीं सकता, फिर भी मैं वहाँ गया, क्योंकि हमें उन लोगों की इच्छाओं का आदर करना चाहिये

जिन्होंने हमारे लिये परिश्रम किया और हमारी तरह ही कष्ट उठाये। क्यों जी, सच है न?

"हां, सचमुच मैं पिताजी की क़ब्र पर गया, धरती पर मैंने अपने पैर से दस्तक दी और वही शब्द दोहराये जो पिताजी मुझसे कह गये थे:

"पिताजी, वह हो गया! मैंने कहा। हम आदमी जीत गये। वह हो गया, पिताजी!"





शहर

उस युवा संगीतकार की काली आँखें दूरी में निर्निमेष निहार रही थीं और वह मृदु स्वर में बोल रहा था।

"यह है जो मैं संगीत के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता हूँ," उसने कहा।

"एक बड़े शहर को जानेवाली सड़क पर एक लड़का धीरे धीरे चल रहा है।

"यह शहर पत्थरों के धुंधले पुंज-सा उसके सामने फैला हुआ है और भूमि से चिपका हुआ कराह-सा रहा है, बड़बड़ा-सा रहा है। दूर से ऐसा लगता है कि आग ने उसे ध्वंस कर डाला है, क्योंकि सूर्यास्त की धुंधली ज्वालाएँ अभी भी उसपर फैली हुई हैं और किनारे के गिरजाघरों के क्रास, मीनारें तथा बादनुमे झिलमिला रहे हैं।

"काले बादलों के किनारे भी जलते हुए-से नजर आ रहे हैं भव्य भवनों के कोणात्मक हिस्सों की ठोस रूप-रेखाएँ आसमान के लाल

लाल टुकड़ों की पृष्ठ-भूमि पर अंकित हुई हैं और इधर-उधर खिड़कियों के शीशे खुले ज़ख़्मों की तरह चमक रहे हैं। ऐसा लगता है कि सुख-प्राप्ति के लिये निरंतर संघर्ष का स्थान—वह विनष्ट और पीड़ाग्रस्त शहर रक्त-स्राव से मर रहा है और उससे गरम, पीला-सा, गला घोटनेवाला धुआँ उठ रहा है।

"सांध्य वेला में वह लड़का सड़क की भूरी पट्टी पर चल रहा है। यह शहर की बग़ल में सीधे भोंकी हुई तलवार-सी लगती है और मालूम होता है कि किसी अदृश्य, शक्तिशाली हाथ के अचूक इशारे पर यह काम हुआ हो। सड़क के दोनों तरफ़ बुझी मशालों जैसे वृक्ष खड़े हैं जो शांत, उम्मीद-भरी धरती पर विशाल काली तूलिकाओं की तरह खड़े नज़र आ रहे हैं।

"आकाश अभ्राच्छादित है, तारों का चिह्न तक नहीं है और छायाओं का अभाव है। ढलती सांध्य वेला खिन्न तथा शांत है और निद्रामग्न खेतों के श्रांत मौन में केवल उस लड़के की हल्की पद-ध्वनि अस्पष्ट सुनाई देती है।

"लड़का आगे बढ़ रहा है और रात चुपचाप आकर विस्मृति के आवरण में उस लंबी दूरी को छिपा देती है, जहाँ से वह आया है।

"नम्रता से धरती का सहारा लिये हुए इक्के-दुक्के सफ़ेद और लाल मकानों, पहाड़ियों पर इधर-उधर नज़र आ रहे बग़ीचों, पेड़ों और चिमनियों को संध्या अपने दृढ़ालिंगन में समा लेती है। रात के अंधेरे से कुचला जाकर सारा संसार कृष्ण वर्ण धारण करता है और फिर अदृश्य हो जाता है, मानो उस दंडधारी छोटी-सी मूर्ति से डरकर अपने को छिपा रहा हो या उसके साथ आँख-मिचौनी खेल रहा हो।

"वह मौन आगे बढ़ रहा है। वही धीमा पदन्यास, छोटी-सी अकेली मूरत और आँखें बराबर उस शहर पर गड़ी हुई। मानो वहाँ के नागरिकों की चिरप्रत्याशित किसी महान वस्तु को वह अपने साथ ले जा

रहा है और शहर की नीली, पीली तथा लाल बत्तियाँ टिमटिमाकर उसका स्वागत कर रही हैं।

"सूर्यास्त हो चुका है। क्रास, मीनारें और बादनुमे गलकर ग़ायब हो गये हैं। शहर अब सकुचा हुआ, घटा हुआ और शांत धरती में अधिक दृढ़तापूर्वक चिपका हुआ-सा नज़र आ रहा है।

"शहर के ऊपर एक दूधिया बादल नज़र आता है और एक दूसरे से सटकर खड़े मकानों के जाल पर मंद प्रकाशयुक्त, पीत वर्ण कुहरा छा जाता है। अब शहर ज्वाला-ग्रस्त और रक्त-रंजित नहीं दिखाई देता; अब उसकी छतों और दीवारों की टेढ़ी-मेढ़ी क़तार पर कुछ रहस्यमयता तथा अपूर्णता फैली हुई दिखाई देती है; मानो जिसने आदमियों के रहने के लिये इस बड़े शहर को बनाना शुरू किया था वह थककर आराम करने चला गया हो या संभवतः, आरंभ किये गये काम में विफल होकर उसने दूर की राह ली हो या विश्वास खोकर आख़िरी साँस खींच ली हो।

"लेकिन शहर जी रहा है; अपने गौरवपूर्ण सौंदर्य को सूर्य-स्पर्शी बना हुआ देखने की वेदनायुक्त अभिलाषा उसपर सवार हुई है। बहुमुखी सुखेच्छा के चित्त-भ्रम में वह कराह उठता है, जीने की उत्कट इच्छा से ही यह उद्वेलन हो रहा है, और शहर के चारों ओर खेतों की गहरी शांति में झरनों की हल्की कल कल सुनाई देती है, जबकि आकाश का काला कटोरा अस्पष्ट तथा उदास प्रकाश से अधिकाधिक भरता जाता है।

"लड़का रुकता है, अपनी गर्दन को पीछे झटकता है, भौंहों को ऊपर उठाता है और आगे स्थिर तथा साहसपूर्ण दृष्टि दौड़ाता हुआ क़दम तेज़ कर लेता है।

"और उसका अनुसरण करती हुई रात माता के मृदु-मधुर स्वर में कहती है:

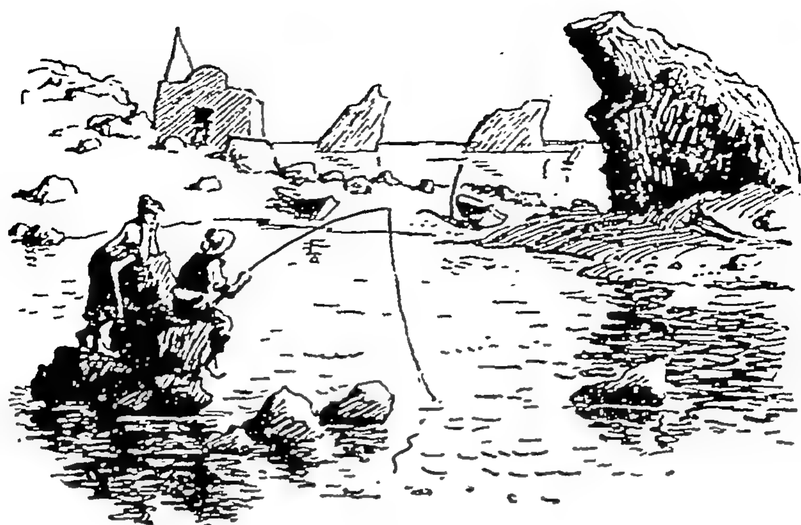
"'आगे बढ़ो, बच्चे! समय हो चुका है! वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

..."लेकिन, सच है कि ऐसे संगीत की रचना करना असंभव है,"—आख़िर उस युवा संगीतकार ने उदास मुस्कराहट के साथ कहा।

फिर हाथ जोड़कर कोमलता तथा चिंतातुरता के साथ वह पुकार उठा:

"हे भगवान! उसे वहाँ क्या मिलेगा?"





मध्याह्न

मध्याह्न के नीले आकाश में सूर्य गलता जाता है और अपनी उष्ण सप्तरंगी रश्मियाँ सागर तथा धरती पर उंडेल देता है। सुस्त सागर की उसांसों में दूधिया धुंध उठती है, नीला-सा पानी इस्पात की तरह चमकता है और किनारे पर तेज़ खारी गंध बहती आती है।

सुस्त लहरें तट स्थित भूरे शिलाखंडों से टकराती हैं और उनकी पीठ पर से उछलकर कंकड़ों पर जा गिरती हैं। ये छोटी छोटी लहरें हैं, जो शीशे की तरह पारदर्शी और बिल्कुल फेन-रहित हैं।

बैंगनी धुंध पहाड़ को ढांक लेती है, जैतून की भूरी पत्तियाँ सूर्य-प्रकाश में पुरानी चांदी की तरह चमकती हैं, पहाड़ियों पर फैले हुए बगीचों की गहरी मख़मली हरियाली नीबू तथा नारंगी की स्वर्णाभा से दमक उठती है, लाल लाल अनारकलियाँ खुलकर मुसकाती हैं और यत्र-तत्र-सर्वत्र फूल ही फूल दिखाई देते हैं।

सूरज सचमुच इस धरती को प्यार करता है।

शिलामय सागर-तट पर दो मछुए नज़र आ रहे हैं। उनमें से एक बुड्ढा है जिसने सींकों का टोप पहन रखा है। चेहरा उसका गोल-मटोल है और गालों तथा ठुड्डी पर दाढ़ी की खूंटियां नज़र आ रही हैं। मांसल चेहरे में उसकी आँखें कुछ छिपी हुई-सी लगती हैं। नाक उसकी लाल है और हाथ धूप के कारण कांसे जैसे बन गये हैं। मछली पकड़ने की वंसी की पतली-सी छड़ी पानी पर ताने वह अपनी बालोंभरी टांगें लटकाये एक शिलाखंड पर बैठा हुआ है। हरी लहरें उछलकर उसके पैरों को चाटती हैं और पैरों की काली अंगुलियों से पानी की भारी तथा चमकती बूंदें सागर में टपकती हैं।

बुड्ढे के पीछे, शिलाखंड पर अपनी केहुनी टेककर एक युवक खड़ा है जिसकी आँखें काली हैं, रंग सांवला है, क़द सुडौल तथा छरहरा है। उसके सिर पर लाल टोपी है, उसका मजबूत सीना सफ़ेद जरसी से ढंका हुआ है और अपनी नीली पतलून को उसने घुटनों तक चढ़ा लिया है। मूंछों पर ताव देता हुआ और कुछ सोचता हुआ वह सागर की ओर ताक रहा है जहां छोटी छोटी मछलीमार नौकाएं पानी पर नज़ाकत से नाच रही हैं और दूर अंतर पर एक निश्चल सफ़ेद पाल अस्पष्ट दिखाई देता है जो कि गरमी में पिघलते हुए फुज्जीदार बादल-सा लगता है।

"क्या वह सिन्योरा* धनी है?" वंसी की डोरी खींचते हुए बुड्ढा रूखे स्वर में पूछ लेता है।

"हां, ख्याल तो ऐसा ही है," युवक धीरे से जवाब देता है। "उसने भारी नील-रत्न वाली जड़ाऊ पिन, कर्ण-फूल, कई अंगूठियां और एक घड़ी पहन रखी थी। शायद कोई अमरीकन है।"

---

* महाशया (इतालवी)—संपा०

"और क्या वह सुन्दर है?"

"जी हाँ! वह बहुत ही पतली जरूर है लेकिन आंखें उसकी फूल-सी हैं और उसका वह नन्हा-सा, कुछ खुला हुआ मुंह..."

"ऐसा मुँह तो ईमानदार स्त्री की निशानी है और ऐसी स्त्री ज़िन्दगी में एक ही बार प्यार करती है।"

"यही मैं भी मानता हूँ।"

बुड्ढे ने झटके के साथ हाथ की छड़ी को ऊपर उठाया, संकुचित आँखों से खाली बंसी की ओर देखा, कुछ बड़बड़ाया और फिर हंसकर कहा:

"मछलियाँ हमसे अधिक मूर्ख नहीं हैं।"

"मध्याह्न के समय भी कोई मछली पकड़ने जाता है?" उकड़ूं बैठते हुए युवक ने कहा।

"मैं जो जाता हूँ," बुड्ढे ने कहा और अपनी बंसी में चारा लगाया। बंसी की डोरी को दूर सागर में फेंक कर उसने पूछा:

"क्या कहा तुमने? तुम सवेरे तक नाव की सैर करते रहे?"

"जी, जब हम किनारे पहुँचे तो सूरज कुछ निकल आया था," गहरी सांस खींचकर युवक ने कहा।

"बीस लीरे ही मिले?"

"जी हाँ।"

"वह इससे ज़्यादा दे सकती थी।"

"हाँ, वह बहुत कुछ दे सकती थी..."

"अच्छा, तुम दोनों बातें क्या करते रहे?"

युवक का सिर दुःख तथा खिन्नता से झुक गया।

"वह इतालवी के सिर्फ़ दस एक शब्द जानती थी और इसलिये हम मौन ही रहे..."

"सच्चा प्रेम बिजली की तरह हृदय को धक्का देता है और बिजली की तरह मौन भी होता है," युवक की ओर मुड़कर वृद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा। इस समय उसकी सफ़ेद दंत-पंक्ति दिखाई दी। "तुम इस बात को जानते ही हो।"

युवक एक बड़े पत्थर को उठाकर सागर में फेंकने जा रहा था कि उसने अपना विचार बदल लिया और पत्थर को अपने कंधे पर से पीछे फेंक दिया।

"कभी कभी अचरज लगता है कि आख़िर इतनी अलग अलग भाषाओं की ज़रूरत ही क्या है?" युवक बोल उठा।

"कहते हैं कि एक दिन ऐसा नहीं रहेगा," कुछ रुककर वृद्ध ने कहा।

बादल की परछाईं की तरह एक सफ़ेद स्टीमर विशाल सागर में दूर अंतर पर दूधिया धुंध में से चुपचाप सरकता हुआ दिखाई दिया।

"यह तो सिसिली जा रहा है," स्टीमर की दिशा में सिर हिलाकर संकेत करते हुए वृद्ध ने कहा।

उसने कहीं से एक लंबा, बेढंगा और काला चुरुट निकाला, उसके दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा अपने कंधे पर से उस युवक को थमा दिया।

"जब तुम उसके साथ नाव में बैठे थे, तब कहो, क्या सोच रहे थे?"

"मनुष्य बराबर सुख की ही सोचा करता है..."

"इसी लिये वह बराबर मूर्ख बना रहता है," वृद्ध ने कहा।

उन्होंने चुरुट के टुकड़े सुलगाये। धुएं के नीले वृत्त घुंघराली गति में पत्थरों के ऊपर उस हवा में उठने लगे जो उपजाऊ धरती की तथा मंद जल की संतोषकर सुगंध से परिपूर्ण थी।

"मैंने उसे गीत सुनाया और वह मुस्कुराती रही..."

"और फिर?"

"तुम तो जानते ही हो कि मैं कोई ख़ास गवैया नहीं हूँ।"

"हाँ।"

"मैंने डाँड़ों को थाम लिया और उसकी ओर ताकता रहा।"

"सचमुच?"

"हाँ, मैं उसकी ओर ताकता रहा और सोचता गया—'मैं जवान हूँ, मुझमें ताक़त है और तुम जीवन से ऊब रही हो। आओ, मुझे प्यार करो और सुखी जीवन बिताने का मौक़ा दो।'"

"क्या सचमुच वह ऊबी हुई है?"

"भला, कोई दरिद्र न हो और सुखी भी हो, तो फिर अजनबी मुल्क की सैर क्यों करे?"

"शाबाश!"

"'कुमारी मरियम की क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ अच्छी तरह पेश आऊँगा और हमारे आस-पास के सभी लोग सुखी हो जाएंगे...' मेरा विचार-चक्र जारी रहा।"

"वाह वाह!" वृद्ध ने कहा और अपने विशाल मस्तक को पीछे झटककर वह खुलकर हंस उठा।

"'मैं सच्चे दिल से तुम्हें प्यार करूंगा...'"

"ओहो..."

"या, मैंने सोचा कि 'हम कुछ देर तक साथ रहेंगे और मैं तुम्हें जितना चाहो उतना प्यार करूँगा; तब तुम मुझे नाव, उसका साज-सामान और एक छोटा-सा खेत ख़रीदने के लिये धन दे देना, फिर मैं वापस अपने प्रिय देश को चला जाऊंगा और जीवन भर कृतज्ञता के साथ तुम्हें याद करता रहूंगा।'"

"यह तो तुमने समझदारी की बात कही..."

"फिर, सवेरा हो रहा था और मैंने सोचा कि शायद मुझे कुछ भी नहीं चाहिये। मुझे धन नहीं चाहिये था, मैं चाहता था सिर्फ़ उसकी प्राप्ति, कम से कम उस एक रात के लिये।"

"यह तो और भी आसान रहा।"

"केवल एक रात के लिये!"

"वाह वाह!" वृद्ध ने कहा।

"चाचा पेत्रो, मैं मानता हूँ कि थोड़ी-सी ख़ुशी में सच्चाई ज़्यादा होती है..."

वृद्ध ने कुछ भी नहीं कहा। उसने अपने मोटे होंठों को सिकोड़ लिया और हरे पानी की ओर ताकने लगा, जबकि युवक ने मृदु तथा शोकाकुल स्वर में गाना आरंभ किया:

"ओ, सूरज मेरे..."

"हाँ, हाँ," वृद्ध ने सिर हिलाते हुए एकदम कहा। "थोड़ी-सी ख़ुशी में सच्चाई ज़्यादा होती होगी लेकिन ज़्यादा ख़ुशी और भी अच्छी होती है। ग़रीब लोग ज़्यादा ख़ूबसूरत होते हैं और धनी लोग ज़्यादा ताक़तवर। और, सब बातों का यही हाल है...बस यही हाल!"

लहरों की अखंड कलकल जारी रही। नीले धूम्र-वलय उन आदमियों के सिर के ऊपर प्रभा-मंडल-से दिखाई दिये। युवक उठ खड़ा हुआ। चुरुट का टुकड़ा उसके मुंह के कोने में था और वह कुछ तर्ज़ गुनगुना रहा था। अपने कंधे से एक भूरे शिलाखंड का आधार लिये, भुजाओं को सीने पर रखे हुए वह खड़ा रहा और स्वप्नमय दृष्टि से सागर को ताकने लगा।

और बुड्ढा सिर झुकाये, निश्चल बैठा रहा। वह ऊँघता हुआ-सा दिखाई दिया।

पहाड़ों में बैंगनी परछाइयाँ घनीभूत हुई और मुलायम भी।

"ओ, सूरज मेरे!" युवक गा उठा...

सूरज निकला
सुन्दरतर वह
सुन्दरतर री तुमसे;
सूरज है,
मम अंतस्तल में
चमको उज्ज्वलता से!

हरी हरी लहरों का आनंद-विहार जारी रहा।





विवाह

रोम और जिनोवा के बीच के एक छोटे से स्टेशन पर कंडक्टर ने हमारे डिब्बे का दरवाजा खोला और एक मलिन तेल-कामगार की मदद से एक नाटे से बुड्ढे को लगभग उठाकर अंदर रख दिया। बुड्ढा एक आँख से अंधा था।

"बहुत ही बुड्ढा है बेचारा!" सद्भाव से मुस्कुराते हुए उन्होंने एक साथ कहा।

लेकिन बुड्ढा बड़ा फुर्तीला निकला। अपना झुर्रियोंभरा हाथ हिलाकर उसने अपने मददगारों को धन्यवाद दिया और प्रसन्नता तथा शिष्टता के साथ अपने भूरे सिर पर से दबा-चिपका टोप उतारकर अपनी उत्सुक आँख से बेंचों की ओर देखते हुए उसने पूछा:

"क्या मैं बैठ सकता हूँ?"

यात्री कुछ सरक गये और राहत की साँस खींचता हुआ वह बुड्ढा अपने हड्डी-निकले घुटनों पर हाथ रखे हुए वहाँ बैठ गया।

उसके होंठ विलग हुए और दंत-विहीन मुख पर सद्भावपूर्ण मुस्कुराहट दौड़ी।

"कहिये दादाजी, बहुत दूर जा रहे हैं क्या?" मेरे साथी ने पूछा।

"जी नहीं, यहाँ से सिर्फ़ तीन स्टेशन!" वृद्ध ने जवाब दिया। "मैं अपने नाती के व्याह में जा रहा हूँ।"

कुछ मिनट बाद पहियों की तालबद्ध संगत पर वह हमें अपनी कहानी सुनाने लगा। बोलते समय वह तूफ़ान में टूटी हुई वृक्ष-शाखा की तरह इधर-उधर झूम रहा था।

"मैं लिगेरिया का रहनेवाला हूँ," वृद्ध ने आत्मकथा आरंभ की। "हम लिगेरियन बड़े हृष्ट-पुष्ट होते हैं। मुझी को लीजिये; मेरे तेरह बेटे और चार बेटियाँ हैं और जाने कितने नाती-पोते हैं। अब मेरे दूसरे नाती का व्याह होने जा रहा है। कहिये, बड़भागी हूँ न?"

अपनी निस्तेज किन्तु प्रसन्न आँख से अभिमानपूर्वक हमारी ओर देखते हुए वह मुस्कुराया।

"देखिये, मैंने अपने राजा को तथा देश को कितने लोग दिये हैं!"

"आप जानना चाहते हैं, मेरी यह आँख कैसे फूटी? ओह! यह एक बहुत पुराना क़िस्सा है। तब मैं बच्चा ही तो था लेकिन फिर भी पिताजी की मदद करने लगा था। एक दिन वे अंगूर के बग़ीचे में ज़मीन खोद रहे थे—हमारे यहाँ की ज़मीन बड़ी सख़्त और पथरीली है और उसपर हमें काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है—और उसी समय उनकी कुदाली से एक कंकड़ ऊपर उड़ा और सीधे मेरी दाहिनी आँख में आ घुसा। कुछ दर्द होने की तो मुझे याद नहीं,

लेकिन उस दिन खाना खाते वक़्त मेरी आँख बाहर निकल आई। क्या कहूँ महाशयो! बड़ा भयंकर प्रसंग था। लोगों ने आँख को फिर से उसकी जगह में चिपकाकर गरम रोटी की पुल्टिस लगा दी लेकिन कुछ फ़ायदा नहीं हुआ और आँख गई सो गई!"

वृद्ध ने अपने पिलपिले गाल को खूब रगड़ा और फिर उसके चेहरे पर वही प्रसन्न सद्भावपूर्ण मुस्कुराहट नजर आई।

"उस जमाने में आजकल की तरह बहुत से डाक्टर नहीं हुआ करते थे और लोग बड़े मूरख थे। हाँ, लेकिन वे शायद अधिक दयालु थे, समझे?"

अब उसके झुर्रीदार एकाक्ष चेहरे पर, जोकि दाढ़ी की हरी-भूरी खूंटियों के कारण सांचे में ढला हुआ-सा लग रहा था, धूर्ततापूर्ण विजय का भाव चमक उठा।

"जब कोई आदमी मेरी तरह लंबी ज़िन्दगी बिताता है तब वह बिल्कुल निडर होकर लोगों के बारे में अपनी राय दे सकता है। क्यों जी, ठीक है न?"

उसने गंभीरतापूर्वक अपनी एक काली, टेढ़ी उंगली ऊपर उठाई, मानो किसी को डाँट रहा हो।

"तो सुनिये, महाशयो, अब मैं आपको लोगों के बारे में कुछ बातें बतलाता हूँ..."

"जब मेरे पिताजी का देहांत हुआ तब मैं तेरह साल का था और आज से कहीं छोटा-नाटा। लेकिन मैं था बड़ा फुरतीला और काम करते कभी न थकता। पिताजी से विरासत में जो कुछ मिला था वह यही था, क्योंकि कर्जा चुकता करने के लिये हमारा खेत और घर दोनों बेचे जा चुके थ। इस तरह मैं अपनी एक आँख और दो हाथों के सहारे जिंदगी बिता रहा था और जहाँ कहीं काम

मिलता कर लेता... दिन बड़े कठिन थे, लेकिन जवानी कभी कठिनाइयों से डरती नहीं। सच है न?

"जब मैं उन्नीस साल का हुआ, एक लड़की से मेरी मुलाक़ात हुई, जिसको प्यार करना मेरे भाग्य में लिखा हुआ था। वह मेरी तरह ही दरिद्र थी लेकिन बड़ी चुस्त लड़की थी और मुझसे बलिष्ठ थी। वह अपनी बीमार बूढ़ी माता के साथ रहती थी और मेरी ही तरह, जो कुछ काम मिलता, कर लेती। वह ख़ास ख़ूबसूरत तो नहीं थी लेकिन दिल की भली थी और दिमाग़ उसका अच्छा था। उसकी आवाज़ बड़ी मीठी थी। वाह, कैसा सुन्दर वह गाया करती! बिल्कुल पेशेवर गायिका की तरह। अच्छी आवाज़ भी बड़ी संपत्ति है। मैं ख़ुद भी काफ़ी अच्छा गा लेता था।

"'मेरे साथ शादी करोगी?' मैंने एक दिन उससे पूछ लिया।

"'यह मूर्खता होगी, समझे, काने!' उसने दुःख से जवाब दिया, 'न तुम्हारे पास कुछ माया है, न मेरे ही पास। तो फिर हम रहेंगे भी कैसे?'

"यह तो साफ़ सचाई थी: हममें से किसी के पास कुछ माया नहीं थी। लेकिन प्रेमी जुगल के लिये चाहिये ही क्या? आप ख़ुद भी जानते हैं कि प्यार की ज़रूरतें कितनी कम होती हैं। मैं बराबर समझाता रहा और आख़िर जीत भी गया।

"'ठीक है, शायद तुम्हारी बात सही है,' आख़िर मेरी ईदा ने कहा। 'हमारे अलग अलग रहते हुए भी पवित्र माता मरियम हमारी सहायता करती है, फिर अगर हम साथ रहने लगें तो उसके लिये हमारी मदद करना और भी आसान होगा!'

"तब हम पादरी के पास गये।

"'यह तो पागलपन है!' उसने कहा। 'क्या ऐसे ही

लिगेरिया में भिखारियों की कमी है? अभागो, तुम शैतान के खिलौने हो, उसके लालच को रोक डालो, नहीं तो तुम्हें अपनी कमज़ोरी के लिये भारी क़ीमत चुकानी पड़ेगी!'

"बिरादरी के जवान लोगों ने हमारी हंसी उड़ायी और बड़े-बूढ़ों ने हमारी निंदा की। लेकिन जवानी हठी होती है और अपनी तरह से चतुर भी! ब्याह का दिन आया। हमारी हैसियत जो पहले थी वही तब भी थी और इस बात तक का ठिकाना नहीं था कि ब्याह की रात को भी हम सोयेंगे कहाँ?

"'चलो, हम खेत में चले जायं!' ईदा ने कहा। 'क्यों नहीं? लोग कहीं पर भी हों, माता मरियम उनपर दया-दृष्टि रखती ही है।'

"फिर हमने तय किया कि धरती हमारा बिछौना हो और आकाश हमारा ओढ़ना।

"और महाशयो, अब ज़रा ग़ौर फ़रमाइये! अब एक नयी कहानी शुरू होती है। और यह मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ कहानी है।

"हमारे ब्याह के एक दिन पहले सबेरे ही सबेरे बुड्ढे ज्योवान्नी ने, जिसके मातहत मैंने बहुत-सा काम किया था, यों ही मुझसे कहा—क्योंकि बात कुछ ख़ास नहीं थी:

"'ऊगो, देखो तुम बकरियों का वह पुराना बाड़ा साफ़ कर लो और वहाँ नयी घास बिछा दो। वह बिल्कुल सूखा है और एक साल बीत गया, वहाँ बकरियाँ नहीं रखी जा रही हैं। अगर तुम और ईदा वहाँ रहना चाहो तो उसे साफ़ कर लो।'

"और इस तरह हमें मकान मिल गया।

"मैं गाता गाता बाड़ा साफ़ कर ही रहा था कि दरवाज़े में बढ़ई कोस्तांत्सिओ खड़ा दिखाई दिया।

"'अच्छा, तो यहाँ तुम और ईदा रहने जा रहे हो? लेकिन बिस्तर कहाँ है तुम्हारा? देखो, मेरे पास एक फ़ालतू पलंग है। जब तुम्हारा सफ़ाई का काम खत्म हो जायगा तो मेरे यहाँ आओ और उसे ले जाओ।'

"जब मैं उसके पास जा रहा था, कर्कशा दूकानदारिन मारिया चिल्ला उठी:

"'पास में न कोई चादर है और न तकिया ही, और ब्याह कर रहे हैं, अभागे कहीं के! तुम तो बिल्कुल पागल हो रे, काने! लेकिन अपनी दुलहिन को मेरे पास भेज दो...'

"'और लंगड़े तथा सदा गठिया व बुखार से पीड़ित एत्तोरे बिआनो ने अपने दरवाज़े की सीढ़ी पर से पुकारते हुए दूकानदारिन से कहा:

"'उससे ज़रा पूछो कि मेहमानों के लिये कितनी शराब रखी हुई है। जाने लोग कैसे छिछोरे होते हैं!'"

वृद्ध के गाल पर की गहरी सिकुड़न में एक उज्ज्वल आँसू चमक उठा, उसने पीछे की ओर अपना सिर झटक दिया और कुछ मुस्कुराया। उसके गले की घाँटी हिल रही थी और चेहरे का ढीला चमड़ा काँप रहा था। बालक की-सी प्रसन्नता के कारण उसके हाथ हिल रहे थे।

"ओह, महाशयो। क्या कहूँ!" हंसते हंसते उसका दम घुट गया। "ब्याह के दिन सवेरे हमें वह सब चीजें मिल गई जो हमारे घर के लिये ज़रूरी थीं—मदोन्ना की मूर्ति, बरतन-भांडे, कपड़े, फ़र्नीचर और यक़ीन कीजिये, सब कुछ हमें मिला। ईदा हंसी और रोयी। मैं भी हंसा और रोया, और बाक़ी सब लोग हंसे—क्योंकि ब्याह के दिन रोना ठीक नहीं है; हमारे सब लोग हमारी ओर देखकर हंसे!

"महाशयो, लोगों को अपना कहने से वढ़कर कौन चीज़ हो सकती है? और इससे भी वढ़कर है उन लोगों को अपने सगे-संबंधी मानना जो हमारे जीवन को मज़ाक़ नहीं मानते और हमारे सुख को जुआ नहीं समझते!

"और कैसे ठाठ से व्याह हुआ! वाह, कैसा सुहावना दिन था वह! सारी विरादरी समारोह में शरीक हुई और हर कोई हमारे वकरी-वाड़े में आया जोकि यकायक एक राजमहल-सा वन गया था... सव चीज़ें वहाँ मौजूद थीं! शराव और फल, मांस और रोटी... सव लोगों ने दावत खायी और हर कोई प्रसन्न रहा... और महाशयो, यह इसी लिये हुआ कि लोगों का भला करने से वढ़कर कोई सुख नहीं है, विश्वास कीजिये कि इससे अधिक अच्छी और सुन्दर कोई चीज़ नहीं है।

"और पादरी भी आया। उसने अच्छा खासा भाषण दिया। उसने कहा: 'देखिये, यहाँ ऐसे दो व्यक्ति हैं जिन्होंने आप सव लोगों के लिये काम किया है और उनके जीवन में आज के दिन को सर्वोत्तम वनाने के लिये आपने भी यथासंभव सव कुछ किया है। और ऐसा ही होना भी चाहिये था, क्योंकि उन्होंने आपके लिये काम किया है और ताँवे तथा चाँदी के सिक्कों से काम अधिक महत्त्वपूर्ण है। काम के लिये आपको जो पैसा मिलता है उससे काम कहीं ज्यादा अहमीयत रखता है। दाम चला जाता है लेकिन काम वना रहता है... ये लोग प्रसन्न और विनम्र हैं, उनका जीवन कठिन रहा है; फिर भी उन्होंने शिकायत नहीं की; उनका जीवन और भी कठिन होगा लेकिन वे कराहेंगे नहीं क्योंकि आप लोग ज़रूरत के समय उनकी मदद करते रहेंगे। उनके पास अच्छे हाथ हैं और हैं उनसे भी अच्छे हृदय।'

"उन्होंने मेरे बारे में, ईदा के बारे में और सारी बिरादरी के बारे में तारीफ़ के कई और शब्द कहे।"

वृद्ध ने हम सबको उस आँख से निहारा जो फिर जवान हो उठी थी :

"तो महाशयो, मैं आपको लोगों के बारे में कुछ कह चुका। कहिये, अच्छा रहा न?"





प्रचारक

वसंत ऋतु आरंभ हो चुकी है! सूरज तेज चमक रहा है, हर कोई प्रसन्न है और पुराने पक्के मकानों की खिड़कियाँ तक मुस्कुराती हुई नजर आ रही हैं।

तीज-त्योहार के योग्य शानदार कपड़े पहने हुए लोगों की भीड़ उस छोटे-से शहर की सड़कों में रंगविरंगे प्रवाह की तरह उमड़ रही है। सारा शहर वहाँ इकट्ठा हुआ है—मज़दूर, सिपाही, व्यापारी, पादरी, अधिकारी, मछुए—सब वहाँ दिखाई दे रहे हैं। सब पर वसंत की मस्ती-सी सवार है। वे जोर से बोल रहे हैं, हंस रहे हैं और गा रहे हैं। वे एक विराट स्वस्थ शरीर से लग रहे हैं। जीने की खुशी में वे फूले नहीं समाते।

स्त्रियों की रंगीन छतरियाँ तथा टोपियाँ और बच्चों के हाथ के लाल तथा नीले गुब्बारे स्वप्न-सृष्टि के फूल जैसे दिखाई दे रहे हैं और हर जगह परी-कथा के राजा के बहु मूल्य वस्त्रों पर चमकने-

दमकनेवाले रत्नों की तरह हंसमुख बच्चे, धरती के वे सुखी सम्राट् नज़र आ रहे हैं।

पेड़ों के हल्के हरे रंगवाले पर्ण-गुच्छ अभी तक नन्ही नन्ही कलियों की तरह कसकर बंद हैं और अतिलोभी की तरह, उष्ण सूर्य-किरणों का पान कर रहे हैं। कुछ दूर से संगीत के सुमधुर स्वर सुनाई दे रहे हैं।

ऐसा लगता है कि मनुष्य की बदक़िस्मती एक बीती बात बन गई है, अब तक के कष्टपूर्ण तथा उबानेवाले जीवन का कल ही अंत हुआ है और आज हर आदमी बिल्कुल बालक की तरह भाररहित हृदय के साथ जाग उठा है, मनचाही बात को प्राप्त करनेवाली अजेय इच्छाशक्ति में नये विश्वास तथा श्रद्धा का अनुभव करता है और एक साथ सब लोग आत्म-विश्वासपूर्वक भविष्यत् की ओर क़दम बढ़ा रहे हैं।

ऐसे प्रसन्न जन-समूह में एक लंबे, हट्टे-कट्टे युवक को, जो एक युवती के हाथ में हाथ डाले जा रहा था, खिन्न-वदन देखकर बड़ा अजीब तथा दुःखदायक लग रहा था। उम्र उसकी शायद ही तीस के ऊपर होगी, फिर भी उसके बाल सफ़ेद हो गये थे। उसने अपना टोप हाथ में ले लिया था जिससे उसका गोल, रुपहला सिर नज़र आ रहा था। उसके कृश, स्वस्थ चेहरे पर शांत किन्तु शोकपूर्ण भाव नज़र आ रहा था और पलकों में कुछ कुछ ढंकी उसकी बड़ी तथा गहरी आँखें ऐसे आदमी की आँखों जैसी दिखाई दे रहीं थीं जिसने अविस्मरणीय दुःख सहन किया हो।

"उस युगल को देखो," मेरे मित्र ने मुझसे कहा "और खासकर उस युवक को। वह ऐसी मुसीबत का शिकार हुआ है जो आजकल उत्तर इटली के मज़दूरों में अधिकाधिक फैल रही है।"

और उसने मुझे यह कहानी सुनाई :

वह व्यक्ति समाजवादी है, मज़दूरों के एक छोटे-से स्थानीय समाचारपत्र का संपादक है। वह ख़ुद भी मज़दूर है और घरों को रँगने का काम करता है। उसकी प्रकृति उन लोगों जैसी है जिनके लिये ज्ञान ही विश्वास है और विश्वास ज्ञान-लालसा को बढ़ाता है। बड़ा भावुक और बुद्धिमान, पोप-पादरियों का विरोधी है वह। देखो, ये काले लबादोंवाले पादरी किस तरह ग़ुस्से से उसकी ओर देख रहे हैं!

प्रचारक के नाते वह कई अध्ययन-मंडल चलाता था और कुछ पाँच साल पहले ऐसे ही एक मंडल में एक लड़की से उसकी मुलाक़ात हुई। यहाँ की स्त्रियों को ईश्वर में अंध तथा अडिग विश्वास रखने को सिखाया गया है। उन्हें इस तरह प्रभावित करने के लिये पादरी लोग सदियों से कोशिश करते रहे और अपने काम में सफल भी हुए। किसीने बिल्कुल ठीक कहा है कि केथोलिक चर्च स्त्रियों की श्रद्धा से पुष्ट हुआ है। मदोन्ना का धर्म केवल प्रतिमा-पूजा की दृष्टि से सुन्दर है सो बात नहीं, यह धर्म बड़ा चतुर भी है। मदोन्ना ईसा से सरल है, हृदय के अधिक समीप है, और अंतर्द्वंद्व से त्रस्त नहीं है। उसके पास नरकवाली धमकी नहीं है, बल्कि वह है पूर्ण प्रेम, दया तथा क्षमा की प्रतिमा। स्त्री-हृदय को जीतकर जीवन भर अपने अधीन रखना उसके लिये आसान है।

लेकिन यहाँ एक ऐसी युवती थी जोकि बोल सकती थी और प्रश्न कर सकती थी; और उसके प्रश्नों में इस युवक को अपने विचारों के प्रति अकृत्रिम आश्चर्य के अलावा अपने प्रति स्पष्ट अविश्वास भी नज़र आया जोकि कई बार भय तथा विराग मिश्रित भी रहता था। इतालवी प्रचारक को धर्म के बारे में बहुत कुछ बोलना ही पड़ता है और

अक्सर पोप तथा पादरियों के वारे में कठोर शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। और जब कभी वह इस प्रकार की बातें करता, उस लड़की की आँखों में उसे नज़र आता अपने प्रति तिरस्कार तथा द्वेष-भाव। और जब वह युवक से कुछ सवाल करती, उसके शब्दों में विरोध की झनकार रहती और मृदु स्वर में विष की धार। समाजवाद-विरोधी केथोलिक साहित्य से वह सुपरिचित थी और इस अध्ययन-मंडल में उसके शब्द उतने ही ध्यान के साथ सुने जाते जितने उस युवक के भाषण।

यहाँ इटली में स्त्रियों के प्रति जो दृष्टिकोण है वह रूस की तुलना में कहीं ज़्यादा रूखा रहा है और हाल ही तक इसके लिये मुख्यतया दोषी रही हैं ख़ुद इतालवी स्त्रियाँ ही। धर्म के अलावा और किसी चीज़ में उनकी दिलचस्पी न होने के कारण अपने पुरुषों की सांस्कृतिक गति-विधियों के प्रति वे पूरी तरह से उदासीन रही हैं और उनका महत्त्व भी नहीं समझ पाती हैं।

हमारे दोस्त के मर्दाना घमंड पर चोट आई और एक कुशल प्रचारक के रूप में उसकी प्रसिद्धि को इस लड़की के साथ हुए वाद-विवादों के कारण धक्का लग गया। कभी कभी तो वह आपे से बाहर हो जाता और कई वार बड़ी होशियारी से युवती के तर्कों की हंसी उड़ा देता। लेकिन वह भी प्रत्यक्ष रूप में उसका पूरा वदला चुकाती। उसके अनिच्छापूर्ण आदर भाव को वह जगा देती और अपने मंडल में व्याख्यान देने से पहले खास तैयारी करने के लिये उसे मजबूर कर देती।

लेकिन साथ साथ युवक ने देख लिया कि उसके विपक्षी के चेहरे पर एक दूसरा ही भाव नज़र आता है जब वह वर्तमान जीवन की कुरूपता का ज़िक्र करते हुए बताता है कि उसके कारण मनुष्य किस तरह उत्पीड़ित है, उसकी देह तथा आत्मा किस प्रकार पंगु बनी हैं; और

जव वह उस भावी जीवन के चित्र खींचता है जहाँ मनुष्य नैतिक तथा शारीरिक दृष्टि से मुक्त होगा। उसकी वातें वह जीवन की श्रृंखलाओं के भार से परिचित वलवती तथा वुद्धिमती नारी के क्रोध के साथ और अपनी आत्मा को मंत्रमुग्ध-सी कर देनेवाली चित्ताकर्षक परी-कथा सुननेवाले वच्चे की विश्वासपूर्ण उत्सुकता के साथ सुन लेती।

इससे युवक के मन में यह आशा जागृत हुई कि वह अंत में अपने उस विपक्षी को जीत लेगा जो उसका वढ़िया साथी वन सकता है।

लगभग एक साल तक यह संघर्ष चलता रहा लेकिन दोनों में से किसी के भी मन में यह इच्छा जागृत नहीं हुई कि एक दूसरे से घनिष्ठ परिचय हो और आमने-सामने आकर वाद-विवाद हो। लेकिन आखिर हमारा दोस्त एक दिन उस युवती के पास जा पहुँचा।

"देवीजी, आप वरावर मेरी विरोधिनी रही हैं, क्या आप ऐसा नहीं सोचती कि अंगीकृत कार्य की दृष्टि से हम दोनों का एक दूसरे को अच्छी तरह जानना हितकर होगा?"

उसने खुशी से इस वात को स्वीकार किया और फ़ौरन दोनों में लड़ाई छिड़ गई: युवती ने चर्च का जोरदार समर्थन करते हुए कहा कि वह ऐसा स्थान है जहाँ मनुष्य की उत्पीड़ित आत्मा को शांति मिलती है, जहाँ उदार मदोन्ना के सामने सव कोई समान हैं, सव के सव उसकी दया के पात्र हैं, भले ही उनका रंग-रूप कैसा भी हो। युवक ने आपत्ति की और कहा कि मनुष्य को विश्राम की नहीं वल्कि संघर्ष की आवश्यकता है, भौतिक लाभों की समानता के अभाव में सामाजिक समानता असंभव है और मदोन्ना की आड़ में ऐसे लोग छिपे हुए हैं जिनके लिये जनता का दुःखी तथा अज्ञान रहना ही लाभकर है।

आगे चलकर ये वाद-विवाद उनकी पूरी ज़िंदगी भर छाये रहे। एक चर्चा से दूसरी चर्चा का सूत्रपात हो जाता और हर समय तर्क की

वही तीव्रता नजर आती। दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक स्पष्ट होता गया कि उनकी मान्यताओं का समन्वय पूर्णतया असंभव है।

युवक के लिये जीवन का अर्थ था ज्ञान-प्राप्ति का प्रयत्न, प्रकृति की अद्भुत शक्तियों को मानव की इच्छा के सामने झुकाने के लिये संघर्ष। वह तर्क प्रस्तुत करता कि हर व्यक्ति को उस संघर्ष के लिये समान रूप में सशस्त्र होना चाहिये जिसका परिणाम होगा विवेक-बुद्धि की स्वतंत्रता तथा विजय; और विवेक-बुद्धि ही सर्वश्रेष्ठ शक्ति है तथा संसार भर में यही एक ऐसी शक्ति है जो ज्ञानपूर्वक काम करती है। युवती के लिये जीवन का अर्थ था अज्ञात के प्रति कष्टपूर्ण समर्पण, उसी इच्छा के आगे मन का अवरोहण, जिसकी विधि और लक्ष्य केवल पादरी ही जानता है।

"तो फिर आप मेरे व्याख्यान सुनने क्यों आती हैं?" आश्चर्य के साथ उसने पूछा। "समाजवाद से आपका क्या अभिप्राय है?"

"ओह, मैं जानती हूँ कि अपने श्रेष्ठ विचार के विरुद्ध जाने में मैं पाप कर रही हूँ," उसने दुःख के साथ स्वीकार किया। "लेकिन आपके व्याख्यानों को सुनते रहना और संसार के सभी लोगों के लिये सुख की संभावना के सपने देखना कितना अच्छा लगता है!"

वह खास खूबसूरत तो नहीं थी—दुबली-पतली थी, लेकिन चेहरे पर चतुरता की चमक थी और आँखें उसकी बड़ी बड़ी थीं जिनसे मार्दव तथा रोष, कोमलता तथा कठोरता प्रकट होती। वह एक रेशम मिल में काम करती थी और अपनी वृद्ध माता, पंगु पिता तथा व्यावसायिक स्कूल में पढ़नेवाली छोटी बहन के साथ रहती थी। कभी कभी वह बड़ी प्रसन्न रहती; खुशी में शोर नहीं मचाती लेकिन उसकी प्रसन्नता बड़ी मनोहर लगती। उसे संग्रहालय तथा पुराने गिरजाघर देखने का बड़ा शौक़ था; चित्रकारी तथा सुन्दर वस्तुओं में बड़ी दिलचस्पी थी। उनकी ओर देखकर वह कह उठती:

"यह सोचना कैसा अजीब है कि ये सुन्दर वस्तुएं किसी समय कुछ लोगों के निजी मकानों में वंद थीं और किसी एक ही व्यक्ति को उनसे आनंद उठाने का अधिकार था! सौंदर्य तो सब की पहुँच में होना चाहिये, तभी वह सच्चे अर्थ में जीवित रहता है!"

कभी कभी वह ऐसी विचित्र वात करती, जिससे उसे ऐसा लगता कि उसके शब्द आत्मा की किसी अज्ञात वेदना से प्रस्फुटित हो रहे हैं, क्योंकि उनके कारण उसे आहत आदमी की कराह की याद हो आती। उसने महसूस किया कि यह लड़की जीवन तथा जनता को माता की तरह प्यार करती है; इसका प्रेम-अनुकम्पा तथा सहृदयता से भरा हुआ है। वह धीरज के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा में था जब उसका विश्वास युवती के हृदय में उस चिनगारी को प्रज्वलित कर सके जिससे उसका मृदु प्रेम अभिलाषा में परिवर्तित हो जाय। उसे ऐसा लगा कि वह उसके भाषणों को अधिकाधिक उत्सुकता से सुन लेती है और अपने हृदय में तो वह उसकी वात मान गई है। फिर पहले से अत्यधिक उत्कटता के साथ वह उसे समझाने लगा कि मानवजाति को पुरानी बेड़ियों से मुक्त करने के लिये अविरत संघर्ष की आवश्यकता है, क्योंकि इन बेड़ियों का जंग मनुष्यों की आत्मा में घुसता जा रहा है और उसे विषमय वना रहा है।

एक दिन हमारा दोस्त उस लड़की को उसके घर तक छोड़ने जा रहा था। रास्ते में उसने लड़की से कह दिया कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ तथा तुम्हारे साथ व्याह करना चाहता हूँ। उसकी वात का लड़की पर जो असर पड़ा उसे देखकर उसका दिल दहल उठा। वह इस तरह ठिठक गई मानो युवक ने उसपर प्रहार कर दिया हो। उसकी आँखें विस्फारित हुईं, चेहरा फक पड़ गया और पीठ पीछे हाथ ले जाकर वह आधार के लिये दीवार की ओर झुक गई।

"मैंने यह भाँप ही लिया था," उसकी ओर कुछ भयपूर्ण दृष्टि से ताकते हुए लड़की ने कहा। "मैंने यही महसूस किया था, क्योंकि

मैं भी कितने दिनों से तुम्हें प्यार करने लगी हूँ। लेकिन, हे भगवान, अब हम क्या करें?"

"हम दोनों एक साथ सुख से रहेंगे, हम साथ साथ काम करेंगे!" युवक ने कहा।

"नहीं," लड़की ने कहा और उसका सिर झुक गया। "नहीं, हम दोनों के बीच प्यार की बात नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"क्या तुम गिरजाघर में चलकर मेरे साथ ब्याह करोगे?" लड़की ने धीमी आवाज़ में पूछा।

"नहीं!"

"तो फिर विदा!"

यह कहकर लड़की फ़ौरन वहाँ से चल दी।

वह फ़ौरन उसके साथ हो लिया और उससे तर्क करने लगा। लड़की ने शांतिपूर्वक उसकी बातें सुन लीं और तब बोली:

"मैं और मेरे माता-पिता, धर्म को मानते हैं और मृत्यु पर्यंत मानते रहेंगे। मजिस्ट्रेट द्वारा ब्याह मैं नहीं कर सकती। ऐसे विवाह से पैदा होनेवाली संतान भाग्यहीन ही होगी, यह मैं जानती हूँ। गिरजे में संपन्न विवाह ही प्रेम को पवित्र करता है, वही सुख तथा शांति प्रदान कर सकता है।"

वह जान गया कि लड़की आसानी से नहीं मानेगी लेकिन वह भी हार मानने को तैयार नहीं था। दोनों अपनी अपनी राह चल दिये। युवक से विदा लेते हुए लड़की ने कहा:

"हम एक दूसरे को व्यथित करना छोड़ दें। अब मुझसे मिलने की कोशिश न करो। काश, तुम यहाँ से कहीं दूर चले जाते। मैं ख़ुद कहीं जा नहीं सकती, मैं बहुत ग़रीब हूँ ..."

"मैं तुम्हें आश्वासन नहीं दे सकता," युवक ने जवाब दिया।

इस तरह इन दो प्रबल व्यक्तियों में संघर्ष का सूत्रपात हुआ। यह सही है कि वे मिलते रहे और पहले से भी अधिक। वे मिलते रहे, क्योंकि वे मिलना चाहते थे; दोनों को आशा थी कि अतृप्त वासना-निर्मित संताप को, जोकि अधिक तीव्रता से जलाता है, उनमें से एक न एक सहन नहीं कर पाएगा। उनकी मुलाक़ातें दुःख तथा निराशा से सराबोर रहतीं। प्रत्येक अवसर पर युवक अपने को हतबल तथा असहाय अनुभव करता जबकि युवती रोती हुई पादरी के पास अपराध-स्वीकार के लिये चली जाती। वह इस बात को जानता था और उसे लग रहा था कि उन सिरमुंडे पादरियों की काली काली दीवार दिन-प्रतिदिन अधिक ऊँची तथा अधिक भयंकर होती जा रही है और डर है कि कहीं उन्हें सदा के लिये एक दूसरे से अलग न कर दे।

एक बार, किसी पर्व के दिन वे दोनों शहर के बाहर हरे-भरे मैदान में टहल रहे थे। टहलते टहलते युवक ने युवती से कहा:

"कभी कभी मुझे लगता है कि मैं तुम्हारी हत्या कर डालूंगा।" यह कोई धमकी नहीं थी, वह सिर्फ़ संताप में सोच रहा था।

युवती ने कुछ जवाब नहीं दिया।

"सुना तुमने जो मैंने कहा?"

"हाँ," उसकी ओर कोमलता से देखते हुए युवती ने उत्तर दिया।

और वह समझ गया कि यह लड़की मरना स्वीकार करेगी लेकिन उसके सामने झुकेगी नहीं।

उस "हाँ" से पहल युवक ने कभी कभी उसका आलिंगन-चुंबन किया था। उसन कुछ विरोध तो अवश्य किया किन्तु उसकी प्रतिकार-शक्ति घटती गई और युवक के मन में आशा पैदा हुई कि वह उसकी बात को मान जायगी और उसे जीत लेने में उसके स्त्री-स्वभाव से काफ़ी सहायता मिलेगी। लेकिन अब उसने जान लिया कि यह विजय

नहीं बल्कि विवशता होगी; और तब से युवक ने उसके स्त्रीत्व को जागृत करने का प्रयत्न छोड़ दिया।

इस प्रकार युवक ने जीवन के बारे में युवती की संकुचित धारणा के अंधकारमय कोनों का अन्वेषण किया। ज्ञान के प्रकाश से उस अंधकार को हटाकर उन कोनों को चमकाना उसने चाहा लेकिन वह अंधे की तरह उसकी बातों को सुनती भर रही। उसके होंठों पर स्वप्निल स्मित खेलता रहता और हृदय में अविश्वास।

"कभी कभी मैं महसूस करती हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे कहते हो वह सचमुच संभव है," युवती ने एक बार कहा। "लेकिन फिर मैं सोचती हूँ कि यह केवल इसी लिये कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ लेकिन विश्वास नहीं करती, कर सकती ही नहीं। और जब तुम मेरे पास से चले जाते हो, तुम्हारा सब कुछ तुम्हारे साथ ही चला जाता है।"

यह लगभग दो साल चलता रहा और एक दिन वह लड़की बीमार पड़ गयी। युवक ने अपना काम छोड़ दिया, अपनी राजनीतिक गतिविधि को त्याग दिया, उसके सिर पर ऋण का भार चढ़ गया और अपने साथियों को टालता हुआ वह अपना सारा समय युवती के कमरे के बाहर या उसके बिछौने के पास बैठकर गुज़ारने लगा; यह देखता रहा कि वह अंदर ही अंदर जलती-सी जा रही है, दिन-ब-दिन तेज़ होती रही बीमारी की लपटों से घिरकर क्षीण होती जा रही है।

"कहो, आगे क्या होगा," युवती ने प्रार्थना के स्वर में कहा।

लेकिन युवक ने वर्तमान के बारे में बातें कीं और उन सब बातों को गिनाया जो हमारा विनाश कर रही हैं, जिनका वह बराबर मुक़ाबला करने को कटिबद्ध है और जिन्हें मानवी जीवन से उसी तरह उठाकर फेंक देना ज़रूरी है जिस तरह गंदे, फटे-पुराने चिथड़ों को।

वह सुनती रही और जब वेदना असह्य हो उठी तो उसने युवक

के हाथ को स्पर्श करते हुए और विनयपूर्वक उसकी आँखों में आँखें गड़ाते हुए उसे रोक लिया।

युवक को डॉक्टर बता चुके थे कि लड़की को तेज़ तपेदिक की बीमारी है और उसके चंगे होने की कोई आशा नहीं है। इसके कई दिन बाद लड़की ने एक बार युवक से पूछा :

"क्या मैं मर ही जाऊंगी?"

युवक ने जवाब न देते हुए मुंह फेर लिया।

"मुझे मालूम है कि अब मैं कुछ ही दिन की मेहमान हूँ," उसने कहा, "आओ, मेरे हाथ में अपना हाथ दो।"

और जब युवक ने अपना हाथ युवती की ओर बढ़ाया तो उसने अपने गरम होंठ उस हाथ पर दबाये।

"क्षमा करो मुझे," वह बोल उठी। "मैं अपराधिनी हूँ, मुझे तुमको सताना नहीं चाहिये था। अब मुझे पता चला कि मेरा विश्वास और कुछ नहीं था, बल्कि उस बात का डर था जिसे मैं अपनी इच्छा और तुम्हारे प्रयत्नों के बावजूद समझ न सकी। यह डर ज़रूर था लेकिन वह मेरे खून ही में है। मैं उसे लेकर पैदा हुई थी। मेरे पास अपना मन है—या शायद तुम्हारा— लेकिन मेरा हृदय मेरा अपना नहीं है। मैं जानती थी कि तुम्हारी बात सही है, लेकिन मेरा हृदय तुमसे सहमत नहीं हो सका।"

कुछ दिन बाद युवती का देहांत हुआ और उसकी मरण-यातनाओं को देखकर युवक के बाल सफ़ेद हो गये हालांकि उसकी उम्र तब सिर्फ़ सत्ताईस साल की थी।

हाल ही में उसने उक्त युवती की एकमात्र सहेली के साथ ब्याह कर लिया। यह भी उसकी छात्रा थी। ये दोनों अब क़ब्रिस्तान की ओर जा रहे हैं। युवती की क़ब्र पर फूल चढ़ाने के लिये वे हर रविवार के दिन वहाँ जाते हैं।

वह युवक अपनी विजय को विजय नहीं मानता है। उसे विश्वास हो चुका है कि केवल उसे सांत्वना देने के लिये लड़की ने झूठ-मूठ ही उसकी बात को सही कह दिया था। उसकी पत्नी भी ऐसा ही मानती है। दोनों के हृदयों में मृत युवती की स्मृति बनी हुई है और उसकी दुःखांत कहानी उन्हें एक सरल-हृदय व्यक्ति की मृत्यु का बदला चुकाने की प्रेरणा देती है और उनके संयुक्त प्रयास को असीम शक्ति तथा विशेष सौंदर्य प्रदान करती है...

... रंगबिरंगे वस्त्रधारी और प्रसन्न-वदन लोगों की भीड़ सूर्य-किरणों से चमकनेवाली नदी की तरह बह रही है, आनंद-ध्वनियाँ इस जन-सरिता की संगत कर रही हैं, बच्चे चिल्लाते हुए और किलकारियाँ मारते हुए चले जा रहे हैं। यह सच है कि हर कोई प्रसन्न नहीं है और हर किसी का हृदय भाररहित नहीं है; इसमें शक नहीं कि कई हृदय शोकाकुल हैं, कई मन असंगतियों से पीड़ित हैं, फिर भी हम सब क़दम बढ़ा रहे हैं स्वतंत्रता की ओर, हमारा लक्ष्य है स्वतंत्रता!

और इस राह पर जितना हमारा मेलजोल बढ़ता जायगा उतनी ही हमारी प्रगति तेज़ होती जायगी!





माता

नारी की, माता की, सर्व-विजयी जीवन के उस अक्षय स्रोत की प्रशंसा में हम अपनी आवाज़ें बुलंद करें!

यह कहानी है संगदिल तैमूर-इ-लंग—लंगड़े चीते की, साहिब-इ-किरानी—भाग्यशाली विजेता की, या तैमूरलंग की जैसा कि काफ़िर उसे कहा करते थे। सारी दुनिया को बरबाद करने की ख्वाहिश रखनेवाले उस आदमी की यह कहानी है।

पचास साल वह धरती को रौंदता रहा, उसके फ़ौलादी क़दमों ने कई शहरों और राज्यों को उसी तरह कुचल डाला जिस तरह हाथी अपने पैरों से बांबी को मसल देता है। उसकी राहों पर खून की लाल लाल नदियाँ चारों ओर बहती रहीं। पराजित जनों की हड्डियों से उसने लंबी लंबी मीनारें बनवाईं। मौत की ताक़त से अपनी शक्ति की होड़ लगाते हुए उसने जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला क्योंकि वह अपने पुत्र जहाँगीर की मृत्यु का बदला ले रहा था। मौत की सारी लूट को उसने छीन लेना चाहा ताकि भूख तथा निराशा से मौत ही मर जाय!

जिस दिन उसका बेटा चल बसा और समरकंद के बाशिंदे, जिनके सिर पर धूल तथा राख छिड़की हुई थी, और जिन्होंने काले तथा हल्के

नीले रंग के वस्त्र पहन रखे थे, दुष्ट जटों के इस विजेता से मिलने आये, उस दिन से लेकर तीस वर्ष वाद ओत्रार में आखिर मौत से शिकस्त खाने के क्षण तक तैमूर के चेहरे पर कभी मुस्कराहट नज़र नहीं आयी। तीस साल उसके होंठ भिंचे हुए रहे, सिर ऊँचा रहा और हृदय-कपाट दया के लिये वंद रहे!

हम नारी के, माता के प्रशंसा-गीत गायें, क्योंकि वही एकमात्र शक्ति है जिसके आगे मौत भी अदव से सिर झुकाती है। यहाँ हम माता के विपय में सत्य कथन करते हैं, यह वताते हैं कि मौत के खिदमतगार और गुलाम ने, उस संगदिल तैमूर ने, धरती के उस मूर्तिमान रक्तपिपासु क्षय-रोग ने, किस तरह माता के आगे अपना सिर नवाया।

घटना यों हुई: नयनमनोहर कनीगुला घाटी में तैमूर-वेग खुशियाँ मना रहा था। गुलाव तथा मल्लिका पुष्पों की राशियों से मंडित इस खूवसूरत घाटी को समरकंद के कवियों ने कैसा सार्थक नाम दे रखा है—"फूलों का प्यार"। यहाँ से उक्त विशाल नगर की नीली मीनारें, मसजिदों के नीले गुंवद वड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

इस घाटी में पंद्रह हज़ार गोल तंवू पंख की शक्ल में गाड़े गये थे जो पंद्रह हज़ार त्युलिप फूल से लग रहे थे और हर तंवू पर लगाई गई सैंकड़ों रेशमी पताकाएं प्रफुल्लित पुष्पों के समान वायु की लहरों के साथ नाच रही थीं।

और वीचोंवीच गुरुगन तैमूर का तंवू था जो अपने परिजनों में खड़ी रानी जैसा दिखाई दे रहा था। उसके चार कोने थे, हर तरफ़ से लंवाई एक सौ क़दम और ऊँचाई तीन भालों के वरावर थी। वीच में आधार के लिये वारह स्वर्ण-स्तंभ थे और हर स्तंभ आदमी जितना मोटा था। तंवू के ऊपर हल्के नीले रंग का गुंवद था जवकि चारों तरफ़ काली, पीली और नीली धारियोंवाली रेशमी क़नात तनी

हुई थी। पाँच सौ लाल रस्सियाँ तंबू को कसकर रोके हुए थीं ताकि वह जमीन से उचटकर आसमान में न उड़ जाय। उसके कोनों पर चाँदी के चार बाज़ बैठे हुए थे और गुंबद के नीचे, तंबू के ठीक बीच एक मंच पर बैठा था पाँचवाँ बाज़—अजेय शाहंशाह तैमूर-गुरुगन।

वह आसमानी रंग का रोबदार रेशमी जामा पहने हुए था जिसमें बड़े बड़े मोती जड़े हुए थे। मोतियों की संख्या पाँच हज़ार से किसी भी तरह कम नहीं थी। उसके डरावने सफ़ेद सिर पर नोकदार सफ़ेद टोपी थी जिसकी नोक पर एक माणिक रत्न था जो सारे संसार को निहारनेवाले आरक्त नेत्र की तरह इधर-उधर हिल रहा था।

तैमूर का चेहरा उस चौड़े छुरे जैसा था जिसपर हज़ारों बार ख़ून में डूब जाने के कारण जंग चढ़ा हो; उसकी संकुचित पैनी आँखों से कोई चीज़ छूट न पाती थी और उनकी ठंडी चमक अरबों के प्रिय रत्न ज़मुर्रद जैसी थी जिसे कि काफ़िर पन्ना कहते हैं और जिससे सख़्त बीमारी नष्ट होती है। उसके कानों से लंका-द्वीपीय माणिकों की बालियाँ लटक रही थीं जिनका रंग किसी कमनीय किशोरी के अधरों का सा था।

तंबू के फ़र्श पर बेहद ख़ूबसूरत कालीन बिछे हुए थे जिनपर मदिरा की तीन सौ सुनहरी सुराहियाँ और शाही दावत के लायक़ सारी चीज़ें सजी हुई थीं। तैमूर के पीछे गवैये-बजवैये बैठे हुए थे, उसकी बग़ल में कोई भी नहीं था जबकि पैरों के पास उसके संबंधी-जन, राजा तथा राजकुमार और सरदार विराजमान थे। उसके सबसे समीप था मतवाला कवि केरमानी जिससे विश्व-विनाशक तैमूर ने एक बार पूछा था :

"कहो, केरमानी! अगर मुझे बेच दिया जाय तो तुम कितना दाम दोगे?" और जिसने फ़ौरन जवाब दिया था : "पचीस आसकर!"

"लेकिन यह तो अकेले मेरे कमरबंद की कीमत है!" विस्मयचकित तैमूर ने कहा था।

"हाँ, मैं तुम्हारे कमरबंद ही की तो सोच रहा था," केरमानी ने कहा, "सिर्फ़ तुम्हारे कमरबंद की, क्योंकि खुद तुम दो कौड़ी के भी नहीं हो!"

जी हाँ, कवि केरमानी ने शाहंशाह को, उस खूंखार और खतरनाक आदमी को यही जवाब दिया था। इस कवि का, सचाई के साथी का गौरव, तैमूरलंग के गौरव से सदा अधिक सम्मानित रहे!

हम उन कवियों की गौरव-गाथा गायें जो एक ही ईश्वर को जानते हैं और यह है निर्भय सुन्दर सत्य। वही उनका अजरामर ईश्वर है!

इधर मदिरापान तथा दावत की, युद्धों और विजयों की उन अभिमानपूर्ण स्मृतियों की चरम सीमा हो चुकी थी। शाहंशाह के तंबू के सामने ज़ोरदार संगीत सुनाई दे रहा था, तरह तरह के लोकप्रिय खेल खेले जा रहे थे। रंग-बिरंगी पोशाकोंवाले अनगिनत मसखरे इधर-उधर कुलाँचें ले रहे थे, पहलवान कुश्तियाँ लड़ रहे थे। तनी रस्सी पर चलनेवाले नटों के करतब देखकर ऐसा लग रहा था कि उनके शरीर में एक भी हड्डी नहीं है। योद्धागण तलवारें तानकर प्राण-हरण-कला का अपूर्व कौशल दिखा रहे थे। लाल तथा हरे रंग से रंगाये गये हाथियों के—जो क्रमशः भयंकर तथा हास्यास्पद लग रहे थे—तमाशे भी दिखाये जा रहे थे। ग़रज़ यह कि तैमूर के लोगों पर उसके भय का, उसके गौरव के प्रति अभिमान का, विजयों की थकान का, शराब का और कूमिस* का पूरा नशा सवार हुआ था। इस तरह उन्माद चरम सीमा पर था कि यकायक कहीं से एक औरत की पुकार, एक मादा

---

*घोड़ी का दूध—संपा०

वाज़ की ग़रूरभरी चीख, गरजनेवाले बादलों को चीरकर चमकनेवाली बिजली की तरह पड़ाव के उस शोरोगुल को चीरती हुई सुलतान बायेज़ीद के विजेता के कानों तक आ पहुँची। इस आवाज़ से वह परिचित था जो कि उसकी आहत आत्मा के अनुरूप थी। मृत्यु ने उसकी आत्मा पर चोट की थी और इसी से वह जीवित मनुष्यों के प्रति क्रूर बनी थी।

"देख आओ, यह कौन है जो इस तरह दर्दभरी पुकार सुना रही है," उसने अपन सिपाहियों को हुक्म दिया। उन्होंने आकर बताया कि मैले-कुचैले चिथड़े पहने हुए एक पागल औरत आयी है जो अरबी ज़बान बोलती है और उससे, दुनिया की तीन दिशाओं के बादशाह से, मुलाक़ात करने की माँग—हां, माँग—कर रही है।

"उसे अंदर ले आओ!" बादशाह ने फ़रमाया।

औरत को उसके सामने पेश किया गया। औरत नंगे-पैर थी और धूप से उसके चिथड़ों का रंग उड़ गया था। उसके काले बाल खुले थे और उसके वस्त्रहीन वक्ष को ढांके हुए थे। उसके चेहरे का रंग कांसे जैसा था और आंखें उसकी ढीठ थीं। तैमूरलंग की ओर फैलाये हुए उसके काले हाथ में जरा भी कंप नहीं था।

"क्या तुम्हींने सुलतान बायेज़ीद को हराया था?" औरत ने पूछा।

"हां, मैंने ही उसे और दूसरे कइयों को हराया है और फिर भी मैं जीतों से ऊब नहीं गया हूँ। अच्छा, अब यह बताओ कि तुम कौन हो?"

"सुन लो!" उसने कहा। "तुमने चाहे कुछ भी किया हो लेकिन फिर भी तुम एक आदमी ही तो हो। मैं हूँ एक माँ! तुम मौत के सिपाही हो और मैं हूँ ज़िंदगी की खिदमतगार। तुमने मेरा अपराध किया है और मेरी यह मांग है कि तुम उसका प्रायश्चित्त करो। मुझसे कहा गया कि 'इन्साफ़ में ताक़त रहती है,' ऐसा तुम मानते हो। मैं इसका यक़ीन

नहीं करती लेकिन तुम्हें मेरे साथ इन्साफ़ करना चाहिये क्योंकि मैं माँ हूँ।"

बादशाह इन धृष्ट शब्दों के पीछे की ताक़त को पहचानने जितना अक्लमंद ज़रूर था।

"बैठो और बोलो। मैं तुम्हारी सारी बात सुन लूंगा!"

राजाओं की मित्र-मंडली के बीच क़ालीन पर बैठकर औरत ने अपनी कहानी बतानी शुरू की:

"मैं सालेर्नो इलाक़े की रहनेवाली हूँ। यह जगह दूर इटली में है और तुम दुनिया के इन हिस्सों को जानते नहीं! मेरा बाप मछुआ था और मेरे ख़ाविंद का भी यही पेशा था। वह ऐसा ख़ूबसूरत था जैसा सिर्फ़ खुशहाल आदमी ही हो सकते हैं और उसे ख़ुशी दी थी मैंने! मेरे एक बेटा भी था; दुनिया में सबसे ख़ूबसूरत ..."

"मेरे जहाँगीर जैसा," वृद्ध योद्धा ने धीरे से कहा।

"मेरे बेटे जैसा ख़ूबसूरत और होशियार लड़का और कोई नहीं है! जब सारात्सीन दरियाई डाकू हमारे किनारे पर उतरे तब मेरा बेटा छः साल का था। डाकुओं ने मेरे बाप, ख़ाविंद तथा दूसरे कई लोगों को मार डाला और मेरे बेटे को वे उठा ले गये। चार साल से उसकी खोज में मैं धरती का चक्कर लगा रही हूँ। अब वह तुम्हारे पास है। मैं यह जानती हूँ, क्योंकि बायेज़ीद के सिपाहियों ने उन डाकुओं को जीत लिया और तुमने बायेज़ीद को जीतकर उसका सब कुछ अपने मातहत करा लिया। तुम्हें ज़रूर मालूम होना चाहिये कि मेरा बेटा कहाँ है और उसे मेरे पास लौटा देना चाहिये!"

सब लोग हंस पड़े और अपने को हमेशा होशियार समझनेवाले राजाओं ने कहा:

"कैसी पागल है!" राजाओं तथा तैमूर के मित्रों ने, राजकुमारों ने और सरदारों ने, सभी ने यही कहा और वे हंस पड़े।

सिर्फ़ केरमानी गंभीरता से औरत की ओर ताकता रहा और तैमूर ने उसे देखा बड़े अचरज की निगाह से।

"हाँ, वह पागल है, मां की तरह पागल," मदमाते कवि ने मृदुता के साथ कहा, और दुनिया का दुश्मन बादशाह बोला:

"औरत! उस अनजाने मुल्क से समुंदरों, दरियाओं और पहाड़ों को लाँघकर, घने जंगलों को पार कर तुम यहाँ तक कैसे आ सकी? यह कैसे हुआ कि जंगली जानवरों व आदमियों ने–जोकि अक्सर सबसे ज्यादा जंगली जानवरों से भी बढ़कर जंगली होते हैं–तुम्हें सताया नहीं? बिना हथियार के तुम इतना कैसे घूम सकी? असल में हथियार ही तो बेबस का सहारा है, जो उसे तब तक धोखा नहीं दे सकता जब तक हाथ में उसपर क़ाबू रखने की ताक़त हो। मैं यह सब इसलिये जानना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारी बात पर यक़ीन कर सकूँ और मेरे दिल का अचरज मुझे तुम्हारी बात को समझ लेने से रोक न पाये!"

आइये, हम नारी के, माता के प्रशंसा गीत गायें, जिसका प्यार कोई बाधा नहीं जानता और जिसके दूध से सारे संसार का लालन-पालन होता है! मनुष्य में जो कुछ सुन्दर है वह सूरज की किरणों से और माता के दूध से प्राप्त हुआ है। और यही वह तत्व है जो हमें जीवन के प्रेम से सराबोर करता है!

"मेरी मुसाफ़िरी के दौरान मुझे सिर्फ़ एक समुंदर दिखाई दिया," औरत ने जवाब दिया। "इस समुंदर पर कई टापू व मछलीमार नौकाएं थीं; और जब कोई अपने लाड़लों की खोज में होता है तब हवा हमेशा ही मददगार रहती है। और समुंदर के किनारे पर ही जो पैदा

हुआ व वड़ा हुआ उसके लिये दरिया तैर जाना कोई मुश्किल नहीं है। तुमने पहाड़ों का ज़िक्र किया? लेकिन मैंने तो उन्हें देखा ही नहीं।"

और मतवाले केरमानी ने खुशी के साथ कहा:

"प्यार करनेवाले के लिये पहाड़ घाटी वन जाता है।"

"हाँ, मेरे रास्ते में जंगल ज़रूर रहे। जंगली सुअरों व भालुओं से, वनविलावों व सिर झुकाये खतरनाक वैलों से मेरी मुठभेड़ हुई और दो वार चीतों ने भी मेरी ओर देखा जिनकी आँखें तुम्हारी आँखों जैसी थीं। लेकिन हर जानवर के दिल होता है, और मैंने उनके साथ वैसे ही वातें कीं जैसे तुम्हारे साथ कर रही हूँ। जव मैंने कहा कि मैं माँ हूँ तव उन्होंने मेरा यक़ीन किया और आह भरते हुए अपनी अपनी राह चल दिये क्योंकि उन्हें मुझपर तरस आया! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जानवर भी अपने वच्चों को प्यार करते हैं और आदमियों की तरह ही जानते हैं कि उनकी ज़िंदगी व आज़ादी के लिये कैसे लड़ना चाहिये!"

"औरत, ठीक कहा तुमने," तैमूर वोला। "और मैं यह भी जानता हूँ कि अक्सर वे आदमी की वनिस्वत ज़्यादा प्यार करते हैं और लड़ते भी हैं ज़्यादा ज़िद्द के साथ!"

"आदमी..." औरत ने वच्चे की तरह कहानी आगे चलायी क्योंकि हर माता का हृदय वच्चे की भांति ही, वल्कि उससे सौगुना कोमल होता है। "आदमी हमेशा अपनी माँ के लिये वच्चे ही होते हैं, क्योंकि हर आदमी के माँ होती है, हर आदमी किसी माँ का वच्चा होता है, और वुड्ढे आदमी, तुम भी औरत से ही पैदा हुए थे। तुम खुदा से इनकार कर सकते हो लेकिन इस वात से कभी इनकार नहीं कर सकोगे!"

"वाह, औरत, वाह!" निडर कवि केरमानी बोल उठा। "ठीक कहा तुमने। अकेले बैलों के झुंड से बछड़े नहीं पैदा होंगे, सूरज के बिना फूल नहीं खिलेंगे और प्यार के बिना सुख नहीं मिलेगा। औरत न हो तो प्यार कहाँ होगा? बिना माँ के न शायर होंगे और न सूरमा ही!"

और उस औरत ने कहा:

"मेरा लाल मुझे लौटा दो, क्योंकि मैं उसकी माँ हूँ और उसे प्यार करती हूँ।"

नारी के आगे हम नतमस्तक हो जायं क्योंकि वही है मूसा, मुहम्मद तथा महान ईसा की जन्मदात्री। दुष्ट लोगों ने ईसा को मरवा डाला लेकिन, जैसा कि शरीफ़ुद्दीन कह गया है, वह फिर से जाग उठेगा और जीवित तथा मृत प्राणियों के बारे में फ़ैसला करेगा, और यह सारी घटना दमिश्क में होगी, दमिश्क में!

हम उसके आगे सिर नवायें जो बराबर महान व्यक्तियों को जन्म देती आयी है। अरस्तू उसी का पुत्र है और फ़िरदौसी, मधु-मधुर सादी, विष मिश्रित मदिरा जैसा उमर ख़ैयाम, सिकंदर तथा अंध कवि होमर, सब उसी की संतान हैं। सबको उसने दूध पिलाया, और उंगली से पकड़कर दुनिया की राह पर चलना सिखाया, जब वे नन्हे-मुन्ने थे—तुलिप के फूल जैसे! संसार के समूचे गर्व का स्रोत है माता!

नगरों का नाशक, लंगड़ा चीता, तैमूर-गुरुगन विचारमग्न हुआ। देर तक मौन रहने के बाद उसने अपने लोगों से कहा:

"मैं, तंगरी कुली तैमूर! मैं, ख़ुदा-इ-ख़िदमतगार तैमूर वही कहता हूँ जो कहना चाहिये! मैंने इस तरह ज़िंदगी बितायी, कई साल धरती मेरे क़दमों के नीचे कराहती रही, और तीस साल से मैं उसे

बरबाद कर रहा हूँ अपने बेटे जहाँगीर की मौत का बदला लेने के लिये, मेरे दिल के आफ़तावे ज़िंदगी को बुझाने के लिये! सलतनतों और शहरों के लिये लोग मेरे ख़िलाफ़ लड़े लेकिन इन्सान के लिये मुझसे लड़ने कोई नहीं आया। मेरी निगाह में इन्सान की कोई क़ीमत भी नहीं थी और न ही मैं जानता था कि वह कौन है और क्यों मेरे रास्ते में खड़ा रहे! बायेज़ीद को परास्त करके उससे मैंने, इस तैमूर ने ही कहा था: 'सुनो बायेज़ीद, ऐसा लगता है कि ख़ुदा के आगे इन्सान और मुल्क कुछ नहीं हैं। तुम्हीं देखो, तुम काने, और मैं लंगड़ा, फिर भी ख़ुदा मुल्क व इन्सान पर हमारी हुकूमत बर्दाश्त करता है!' हाँ, बिल्कुल यही कहा मैंने, जब वह भारी ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ और उनके बोझ के नीचे दबा हुआ सा मेरे सामने पेश किया गया। क़हर की नज़र से उसको ताकते हुए मैंने यही लफ़्ज़ कहे थे और ज़िंदगी उस वक़्त मेरे लिये नागदौने जैसी, खंडहर के उस पौधे जैसी कड़ुई महसूस हो रही थी।

"मैं, ख़ुदा का बंदा तैमूर, वही कहता हूँ जो कहना चाहिये! यहाँ मेरे आगे एक औरत बैठी है, जो हज़ारों में से एक है और इसने मेरी रूह में ऐसी भावनाएं जगायी हैं जो मुझे कभी मालूम न थीं। वह मुझे अपने बराबर मानकर मुझसे बात करती है और अर्ज़ नहीं बल्कि माँग करती है। अब मुझे समझ आयी और पता चला कि यह औरत इतनी ताक़तवर क्यों है—वह प्यार करती है और प्यार ने उसको सिखाया है कि उसका बच्चा ज़िंदगी की वह चिनगारी है जो सदियों के लिये दुनिया को रोशन कर सकती है। क्या सभी पैग़म्बर किसी वक़्त बच्चे ही नहीं थे? और क्या सभी सूरमा कमज़ोर नहीं थे? ओह, जहाँगीर, मेरी आँखों के तारे, शायद तुम्हारी क़िस्मत में लिखा हुआ था कि तुम दुनिया को रोशन करो, धरती में ख़ुशी के

बीज बोग्रो; ग्रौर इधर मैंने उसे खून से तर कर दिया ग्रौर वह उपजाऊ हो गई!"

कई राष्ट्रों का संहारक फिर एक बार चुप हुग्रा ग्रौर ग्राखिर बोल उठा:

"मैं, खुदा-इ-खिदमतगार तैमूर, वही कहता हूँ जो कहना चाहिये! मेरे मुल्क की चारों दिशाग्रों में तीन सौ घुड़सवार रवाना होंगे ग्रौर इस ग्रौरत के बच्चे का पता लगायंगे; वह यहीं इन्तजार में रहेगी ग्रौर उसके साथ मैं भी। बच्चे को जीन में बैठाये जो लौटेगा उसकी क़िस्मत खुलेगी—यह मैं, तैमूर बोल रहा हूँ। कहो ग्रौरत, ठीक कहा मैंने?"

ग्रौरत ने ग्रपने काले बालों को झटके के साथ ग्रपने चेहरे पर से पीछे हटाया ग्रौर मुस्कुराकर जवाब दिया:

"जी हाँ, बादशाह सलामत, ग्रापने ठीक फ़रमाया!"

तब यह खतरनाक बुड्ढा ग्रादमी उठ खड़ा हुग्रा ग्रौर चुपचाप उस ग्रौरत के ग्रागे झुक गया। ग्रौर खुशदिल कवि केरमानी बड़ी प्रसन्नता से बोल उठा:

सुंदरतर क्या हो सकता है पुष्प-तारिका-गीतों से?
"गीत प्यार का" यही मिलेगा उत्तर सब के कंठों से।
जेठ-दुपहरी की किरणों से बढ़कर क्या सतेज होगा?
"मुख-मंडल मेरी प्यारी का" प्रेमी जन उत्तर देगा।

मध्य-रात्रि के नभ में सचमुच चमक सितारों की प्यारी,
ग्रीष्म काल में जगमग जगमग दमक दिखाता रवि न्यारी।
नेत्र प्रिया के ग्रधिक मनोहर सब दुनिया के फूलों से,
मोहक है मुसकान प्रिया की, प्रसन्नतर रवि-किरणों से।

सुंदरतम पर गीत अभी तक नहीं किसी ने गाया है,
पूर्ण जगत के मूल स्रोत का स्तोत्र नहीं बन पाया है।
विश्व-हृदय का, कौन सुन सका, जादू का-सा गीत कहां?
माता जो कहलाती उसका वह सुंदरतम गीत यहां।

और तैमूर ने अपने कवि से कहा:

"वाह, केरमानी! अपनी अक्लमंदी के नग़्म गाने के लिये ख़ुदा ने तुम्हारे होंठों को चुनकर ठीक ही किया!"

"ख़ुदा ख़ुद भी एक बड़ा शायर है!" मतवाले केरमानी ने कहा।

वह औरत मुस्कुराई और उसको निहारकर मुस्कुराये राजा तथा राजकुमार और सेनापति तथा अन्य सभी। उनकी नज़रों में बच्चों का-सा भाव था। वह माता जो थी।

यह सब सच है, यहाँ पर कहा गया हर शब्द सत्य है। हमारी माताएं यह जानती हैं। उनसे पूछिये तो वे कह देंगी:

"जी हाँ, यह सब अमर सत्य है। हम मृत्यु से अधिक बलवती हैं, जो बराबर इस संसार में मुनियों, कवियों तथा वीरों को जन्म देती हैं और मनुष्य को उन सब सद्गुणों से संपन्न कराती हैं जिनके कारण वह गौरवशाली बनता है!"





बेढंगा

गरमी का एक दिन। चारों ओर खामोशी छायी हुई है। संसार मौन तथा शांत है। नभोमंडल धरती को कोमल नील नेत्र से देखता है, और सूर्य है इस आंख की प्रज्वलित पुतली।

सागर चिकनी तथा नीलवर्ण धातु की चादर-सा लगता है। रंगविरंगी मछलीमार नौकाएं इस प्रकार स्थिर खड़ी हैं, मानो खाड़ी के अर्ध-वर्तुल में जोड़ दी गई हों। खाड़ी की चमक भी आकाश की तरह आंखों को चौंधियानेवाली है। गंगा-चिल्ली सुस्ती में पर फड़फड़ाती हुई आकाश में उड़ती है और सागर की सतह पर दूसरी एक चिड़िया दिखाई देती है जो आकाश में उड़नेवाली चिड़िया से ज़्यादा सफ़ेद और अधिक सुन्दर है।

दूर जगमगाहट में बैंगनी रंग का एक छोटा-सा द्वीप नज़ाकत से तैरता है, या यों कहिये कि सूरज की तेज़ किरणों में पिघलता है—

समुद्र से ऊपर उठी यह अकेली चट्टान 'नेपल्स के अज्ञात' रूपी अंगूठी में जटित देदीप्यमान सुन्दर रत्न-सी दीखती है।

ऊबड़-खाबड़ तथा टेढ़ी-मेढ़ी चट्टानों से भरा ढालू शिलामय सागर-तट गाढ़े रंग की अंगूर लताओं, नारंगी, नीबू तथा अंजीर के पेड़ों और ज़ैतून की हल्की रुपहली पत्तियों की आल्हादकारी उलझन से आवृत है। समुद्र तक फैली हुई सघन हरियाली में से सुनहरे, लाल तथा सफ़ेद फूल मृदुता से मुसकाते हैं और पीले तथा नारंगी फल उस गरम चांदनी रात का स्मरण दिलाते हैं जब आकाश अंधकारमय रहता है और हवा आर्द्रतामय।

आकाश, उदधि और आत्मा शांत हैं, और इस शांति में उस मौन स्तोत्र को सुनने के लिये जी व्याकुल हो उठता जोकि जीवन द्वारा भगवान भास्कर को समर्पित किया जाता है।

बग़ीचों के बीच से गुज़रनेवाली सर्पिल पगडंडी पर एक लंबी, कृष्णवसना स्त्री मंद गति से चल रही है। धूप से फीकी पड़कर उसकी पोशाक अब गंदले भूरे रंग की हुई है और जीर्ण वस्त्र में लगे हुए थेगले दूर से भी दिखाई देते हैं। उसका सिर नंगा है और उसके चमकदार रुपहले बालों की छोटी छोटी घुंघराली लटें विशाल ललाट पर, कनपटियों पर तथा गहरे रंगवाले गालों पर लटक रही हैं। इन बालों को कंघी से सँवार कर रखना असंभव है।

उसका चेहरा रूखा-सूखा तथा कठोर है। एक बार देखने पर उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। यह चेहरा कुछ प्राचीन-सा लगता है और यदि उसकी गहरी आँखों के सीधे कटाक्ष को देखें तो पूर्व की जलती मरुभूमियों का, देबोरा तथा जूडिथ का विचार मन में आये बिना नहीं रहेगा।

वह सिर झुकाये चलती है और चलते चलते बिनाई का काम करती है। बिनाई का इस्पात से बना हुक चमकता है। ऊन का अंटा उसके कपड़े में कहीं छिपा हुआ है और ऐसा लगता है कि उसके हृदय में से रक्तवर्ण धागा निकल रहा है। पगडंडी एकदम ढालू तथा ऊबड़-खाबड़ है और नीचे की ओर लुढ़कनेवाले कंकड़-पत्थरों की खड़खड़ाहट बीच बीच में सुनाई देती है। लेकिन भूरे बालोंवाली यह स्त्री बड़े आत्म विश्वास के साथ चलती है, मानो उसके पैरों में आँखें लगी हुई हों।

इस स्त्री की कहानी लोग यों बताते हैं: वह विधवा है। उसका पति मछलीमार था। विवाह के कुछ ही दिन बाद वह मछली फँसाने के दौरे पर जो गया सो घर नहीं लौटा। इधर स्त्री के गर्भ रह चुका था।

यथा-समय बच्चा पैदा हुआ लेकिन वह उसको लोगों से छिपाती रही। अपने बच्चे को गोद में लिये कितनी शान के साथ माताएं घूमती-फिरती हैं लेकिन यह स्त्री अपने बच्चे को कभी सड़क पर या सूर्य प्रकाश में नहीं ले जाती। वह उसे चिथड़ों में लपेटकर अपनी कुटिया के घुप अंधेरे कोने में रख देती। एक लंबे अर्से तक पड़ोसी इतना भर देख सके थे कि बच्चे का सिर बहुत बड़ा है और पीले चेहरे में दो बड़ी बड़ी गतिहीन आँखें हैं। लोगों ने यह भी देखा कि किसी समय बिना थके तथा प्रसन्नता के साथ दारिद्र्य का सामना करते हुए दूसरों में शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न करनेवाली यह स्वस्थ तथा चुस्त स्त्री अब बिल्कुल मौन तथा म्लान बन गई है, दुख के घूंघट में से दुनिया को देखती है और उसकी आँखों में एक विचित्र प्रश्नार्थक भाव नज़र आता है।

शीघ्र ही हर किसी को इस स्त्री की वदक़िस्मती का पता चला: उसका वच्चा वदसूरत था और इसी लिये वह उसको छिपाये रखती थी। उसके दुःख का यही कारण था।

यह मालूम होने पर पड़ोसियों ने उससे कहा कि ऐसे वेढंगे वच्चे को जन्म देना किसी स्त्री के लिये कितना लज्जाजनक होता है इसे वे जानते हैं और अकेली मदोन्ना ही जानती है कि यह क्रूर दुर्भाग्य उसके लिये न्याय दंड है या नहीं; किन्तु स्वयं वच्चे का कोई अपराध नहीं है और उसको सूर्य-प्रकाश से छिपाये रखकर वह अन्याय कर रही है।

पड़ोसियों की वात सुनकर उसने अपना वच्चा उन्हें दिखा दिया। उन्होंने देखा कि उस वेढंगे वालक के हाथ-पैर मछली के सुफ़नों जितने छोटे हैं, उसका विशाल फूला हुआ सिर दुवली-पतली गर्दन पर इधर-उधर हिलता रहता है, वुड्ढे आदमी की तरह झुर्रीदार उसका चेहरा है, आँखें धुंधली हैं और विशाल फैले हुए मुँह पर विकट खीस नज़र आती है।

स्त्रियाँ उसे देखकर रो पड़तीं और पुरुष घृणा की दृष्टि से देख मुँह फेर लेते और चुपचाप वहाँ से चल देते। राक्षस सदृश इस वालक की माँ ज़मीन पर वैठे कभी अपना मुँह छिपा लेती तो कभी सिर उठाकर पड़ोसियों की ओर ऐसे शव्दहीन प्रश्न की नज़र से ताकती जिसे कोई समझ न पाता।

पड़ोसियों ने तावूत जैसा एक वक्स वनाकर उसमें वेकार ऊन तथा चिथड़ों के टुकड़े विछा दिये और इस मुलायम तथा गरम घोंसले में उस वेढंगे वच्चे को विठा आँगन के सायादार हिस्से में रख दिया। लोगों के मन में एक गुप्त आशा यह थी कि प्रति-दिन नये नये चमत्कार दिखानेवाला सूर्य इस वालक के वारे में कुछ और ही करामात कर दिखाएगा।

किन्तु दिन पर दिन वीतते गये और उस विशाल सिर में, निर्वल हाथ-पैरवाले उस लंबे शरीर में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। परिवर्तन केवल इतना हुआ कि उसकी मुस्कुराहट अतृप्त भूख की निश्चित अभिव्यक्ति का भाव धारण करने लगी और उसका मुंह तीक्ष्ण तथा वक्र दंत-पंक्तियों से भर गया। आगे की ओर दवे हुए उसके छोटे छोटे पंजे रोटी के टुकड़ों को पकड़ना तथा ठीक उस विशाल तथा गरम मुंह में डालना सीख गये।

वह गूंगा था लेकिन जव कभी अन्न की सौंघ उसकी नाक तक पहुँचती तो वह कराह उठता, मुंह खोलकर अपना भारी सिर हिला देता और उसकी आँखों का धुंवला सफ़ेद हिस्सा लाल लाल वन जाता।

वह खूव खा लेता, दिन-व-दिन उसकी भूख वढ़ती ही जा रही थी और उसका कराहना वरावर जारी था। वेढंगे की माँ अथक परिश्रम करती लेकिन उसकी आय वहुत ही कम थी और कभी कभी तो उसे कुछ भी नहीं मिलता। फिर भी वह कभी शिकायत नहीं करती। पड़ोसियों द्वारा दी गयी सहायता वह अनिच्छा से, और हमेशा ही चुपचाप, स्वीकार कर लेती लेकिन जव वह घर पर न रहती तो वेढंगे की कराहों से चिढ़कर पड़ोसी आँगन की ओर दौड़ते और रोटी, साग-भाजी, फल—या यों कहिये कि खाने लायक़ कोई भी चीज़—उस अतृप्त मुंह में ठूंस देते।

"शीघ्र ही वह तुम्हें पूरी भकोस जाएगा," एक दिन पड़ोसियों ने उससे कहा। "तुम उसे किसी पंगु-घर या अस्पताल में क्यों नहीं डाल आती?"

"मैंने उसे जन्म दिया है," वह उदास स्वर में जवाव देती। "मुझे उसको खिलाना-पिलाना ही चाहिये।"

वह सुन्दर थी और अनेक पुरुषों ने उससे प्रेम की प्रार्थना की थी लेकिन उनमें से कोई सफल नहीं हो सका। एक प्रेमी का वह ज़रा ज़्यादा ख्याल रखती थी जिससे एक दिन उसने कहा:

"मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती, क्योंकि मुझे डर लगता है कि कहीं एक और बेढंगे को जन्म न दूं। मैं तुम्हें बदनाम नहीं करना चाहती। चलो, रास्ता नापो।"

उस आदमी ने उसको समझाने की कोशिश की। उसने उसको स्मरण दिलाया कि मदोन्ना सभी माताओं पर दया दृष्टि रखती है और उन्हें अपनी बहनें मानती हैं; लेकिन बेढंगे की माँ ने उत्तर दिया:

"मुझे मालूम नहीं कि मैंने क्या किया, लेकिन देखो मुझे कैसा कठोर दंड दिया गया है।"

प्रेमिक ने मिन्नतें कीं, वह रोया और बड़बड़ाया भी, लेकिन बेढंगे की माँ ने कहा:

"नहीं, मैं अपने विश्वास के विरुद्ध काम नहीं कर सकती। तुम जाओ!"

तब वह किसी दूर देश में चला गया और फिर लौटा नहीं।

कई साल तक वह उस बेपेंदी के पेटू को, लगातार चलनेवाले उन जबड़ों को खिलाती रही। माँ के श्रम के फलों को, उसके खून को तथा उसके जीवन को वह निगलता रहा। उसका सिर सतत बढ़ता रहा और दिन-ब-दिन और ही डरावना बनता रहा। ऐसा दिखाई देने लगा कि बड़े गेंद जैसा यह सिर किसी दिन उसकी कमज़ोर, पतली गर्दन से विदा होकर घरों को लांघता हुआ, कोनों से टकराता हुआ और सुस्ती में इधर-उधर झूमता हुआ भाग जाएगा।

आँगन के पास से जानेवाला अजनवी व्यक्ति इस अजीव वच्चे को देखकर घवड़ा जाता और वहीं रुक जाता। वह समझ न पाता कि उसने क्या देखा है। हरी लताओं से ढंकी दीवार के पास पत्थरों के एक ढेर पर—जो वलिवेदी-सा लगता था—रखे हुए उस अजीव वक्स में से वह वेढंगा सिर ऊपर उठा हुआ दिखाई देता और हरे रंग की पृष्ठभूमि पर वह पीला, झुर्रीदार व चौड़ा चेहरा लोगों की नजर अपनी ओर खींच लेता। जो भी एक वार उसे देख लेते उनके लिये इस विचित्र जीव को भुला देना मुश्किल हो जाता: अपने गड्ढों में से झांककर भावशून्यता से ताकनेवाली वे आँखें, चौड़ी सपाट नाक, अस्वाभाविक रूप से वढ़ी हुई गालों तथा जवड़ों की हड्डियाँ, लटकने तथा भरभरानेवाले होंठ, उनमें से दिखाई देनेवाली क्रूर दंत-पंक्तियाँ, जानवर के से तेज कान—जोकि अपना अलग जीवन विताते हुए दिखाई देते थे—और इस सारे विकराल सिर पर नीग्रो के समान नन्हे नन्हे घुंघराले और काले वालों का एक गुच्छा।

छिपकली के पंजे जैसे अपने नन्हे तथा छोटे हाथ में किसी खाद्य-पदार्थ का टुकड़ा पकड़कर वह उसे अपने दाँतों से तोड़ लेता, चुगने-वाली चिड़ियों की तरह सिर आगे पीछे करता और साथ साथ गुर्राता जाता। खाना खत्म होने के वाद वह इर्दगिर्द खड़े लोगों की ओर देखकर मुंह विचकाता। तव उसकी आँखें अपनी नाक पर गड़ जातीं जो मानो प्राणान्तक पीड़ा के कारण मरोड़े हुए काले-कलूटे और फैले हुए चेहरे में धंसी हुई थीं। भूख लगने पर वह अपनी गर्दन लंवी कर लेता, अपना लाल मुंह खोल देता और साँप जैसी लंवी ज़वान को मोड़ता हुआ खाने के लिये कराह उठता।

देखनेवाले लोग छाती पर हाथों का क्रास वनाकर प्रार्थना

करते और यकायक उन्हें अपने समूचे दुःख की, सारे दुर्दैव की याद हो आती और वे मुँह फेरकर वहाँ से चल देते।

बुड्ढा लुहार अक्सर कहा करता: "जब मैं उस सबखाऊ मुँह को देखता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि वह मेरी पूरी ताक़त को ही चट कर गया है और मैं महसूस करता हूँ कि हम सब परान्नभोजियों के लिये जीते तथा मरते हैं।"

वह गूंगा सिर हर किसी के मन में दुःख के विचार तथा भाव पैदा कर देता जिनसे घबड़ाकर आत्मा ठिठक-सी जाती।

बेढंगे की माँ उसके बारे में लोग जो कुछ कहते, चुपचाप सुन लेती। उसके बाल शीघ्र ही भूरे बन गये, चेहरे पर झुर्रियाँ छा गई और एक लंबे अर्से से वह हँसना तक भूल गयी। लोगों को मालूम था कि वह रात के समय दरवाज़े पर चुपचाप खड़ी होकर आकाश की ओर ताकती है, मानो किसी की प्रतीक्षा कर रही हो।

"वह किसके इंतज़ार में है?" लोग एक दूसरे से पूछने लगते।

"उसे पुराने गिरजेवाले मैदान में रख दो," पड़ोसियों ने सलाह दी। "विदेशी लोग वहाँ से आते-जाते रहते हैं और वे हर रोज़ बेढंगे की ओर पैसा दो पैसा ज़रूर फेंक देंगे।"

लेकिन इस विचार से माँ काँप उठती।

"विदेशियों को यह बच्चा दिखाना बड़ा भयंकर होगा," उसने कहा। "वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे?"

"दुनिया में सब जगह ग़रीबी है," लोगों ने कहा। "हर कोई इस बात को जानता है।"

माँ ने अपना सिर हिलाया।

लेकिन परिचित जगहों से ऊबकर विदेशी लोग हमेशा इधर-उधर घूमते रहते, हर आँगन में झाँक झाँक कर देखते जाते और एक

दिन वे इस औरत के आँगन में भी आ धमके। वह घर ही पर थी और उसने इन आलसी लोगों के स्वस्थ चेहरों पर अरुचि तथा घृणा के चिह्न देखे। दाँत निपोरते हुए, मुँह विचकाते हुए और आँखों को सकुचाते हुए वे उस वच्चे के वारे में जो कुछ वोलते जा रहे थे, उसे माँ ने सुन लिया। सवसे गहरी चोट उसे उन शव्दों से लगी जिनमें तिरस्कार, अपमान तथा स्पष्ट द्वेष की वदवू आ रही थी।

विदेशी शव्दों को उसने याद कर लिया, कई वार उनको दोहराया, क्योंकि उसके हृदय ने—एक इतालवी महिला तथा माता के हृदय ने—उन शव्दों में कूट कूट कर भरे हुए अपमान को भाँप लिया था। वह अपनी पुरानी पहचानवाले एक कमीश्नर के पास चली गई और उससे उन शव्दों का अर्थ पूछने लगी।

"वह तो इन शव्दों को वोलनेवालों पर निर्भर है," उसने तेवर चढ़ाते हुए कहा। "उनका मतलव है: 'अन्य रोमन वंशों की अपेक्षा इटली अधिक शीघ्रता से मर रहा है।' इस झूठ को तुमने कहाँ से सुना?"

विना उत्तर दिये ही वह वहाँ से चल दी।

दूसरे दिन उसके वच्चे ने ज़रूरत से ज्यादा खा लिया और मरोड़ से वह मर गया।

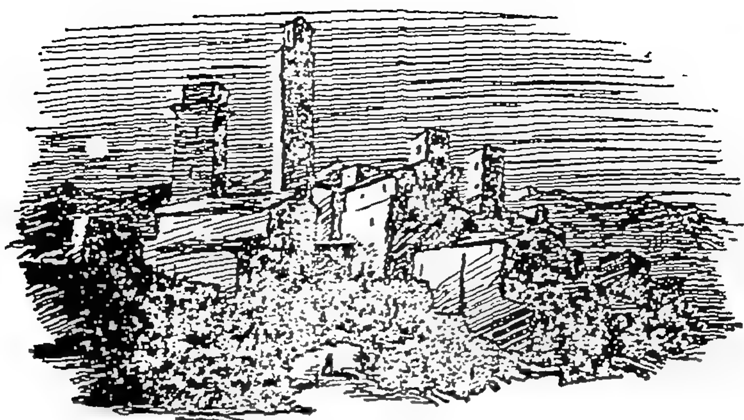
वह आँगन में वक्स के पास वैठ गई। उसका हाथ अपने निर्जीव वच्चे के सिर पर था और वह चुपचाप प्रश्नार्थक मुद्रा से उन लोगों की ओर देख रही थी जो उसके वच्चे के शव को देखने आये थे।

शायद वहुतों ने चाहा कि गुलामी से मुक्त होने के लिये उसे वधाई दी जाय या कुछ सहानुभूति के शव्द कहे जायं, क्योंकि

आखिर उसका बच्चा जो मर चुका था। लेकिन कोई कुछ बोला नहीं और न किसीने कुछ सवाल ही किया। सब चुपचाप खड़े रहे। कभी कभी लोग समझ लेते हैं कि ऐसी भी कुछ बातें होती हैं जिनके बारे में कुछ भी न कहना ही बेहतर होता है।

बाद में एक लंबे अर्से तक वह अपने पड़ोसियों की ओर उसी मौन प्रश्नार्थक मुद्रा से देखती रही लेकिन यथा समय वह पहले की तरह सरल-हृदया बन गयी।





देशद्रोही की माँ

माताओं की गौरव-गाथा अनंत है।

कई सप्ताह हुए दुश्मन की फ़ौज के फ़ौलादी दस्तों ने शहर को बुरी तरह घेर रखा था; रात में आग जलाई जाती थी और उसकी ज्वालाएं घने अंधेरे को चीरकर शहर की दीवारों की ओर हज़ारों रक्तवर्ण आँखों की तरह झाँकती थीं। इन ज्वालाओं को देखकर नफ़रत पैदा हो जाती और उनकी डरावनी चमक के कारण, उस घिरे हुए शहर में विषादपूर्ण विचार फैल जाते।

नागरिकों ने दीवारों पर से देखा कि शत्रु-सेना का फंदा अधिकाधिक कसता जा रहा है। आग के चारों ओर चक्कर काटनेवाली गहरी परछाइयां भी उन्होंने देखीं। उन्होंने सुना पुष्ट घोड़ों का हिनहिनाना, हथियारों का खनखनाना और विजय को सुनिश्चित माननेवाले सिपाहियों का गाना-बजाना। और कहिये, शत्रु के गीतों तथा हँसी के फ़व्वारों से अधिक कर्णकटु क्या हो सकता है?

शत्रु ने शहर को जलपूर्ति करनेवाले सभी झरनों-स्रोतों में लाशें फेंक दी थीं, दीवारों के आस-पासवाले अंगूर-बग़ीचों को जला दिया था, खेतों को कुचल डाला था और फल-बाग़ों को तहस-नहस कर दिया था। शहर अब चारों ओर से खुला पड़ा था और लगभग हर दिन शत्रु-सेना की तोपें तथा बंदूक़ें उसपर गोलों तथा गोलियों की बौछार कर रही थीं।

युद्ध से ऊबे हुए तथा अध-भूखे सिपाहियों की नाराज़ टुकड़ियाँ शहर की तंग सड़कों पर क़दम बढ़ा रही थीं; घरों की खिड़कियों में से घायलों की कराहें, भ्रान्तचित्तों की चीखें, स्त्रियों की प्रार्थनाएं तथा बच्चों की विलाप-ध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं। लोग आपस में कानाफूसी करते, बोलते बोलते यकायक रुक जाते और हमेशा बड़े ही सावधान रहते क्योंकि शत्रु-सेना आक्रमण जो कर रही थी।

सबसे भयानक थीं रातें। रात की नीरवता में कराहें तथा चीखें अधिक स्पष्ट सुनाई देतीं। दूरस्थ पहाड़ों के दर्रों से काली काली परछाइयाँ शत्रु के सैनिक शिविर को छिपाती हुई शहर की अर्धनष्ट दीवारों की ओर सरकती आ रही थीं, और पर्वत-श्रेणी की काली शिरोरेखा के ऊपर चाँद निकल आ रहा था जो कि तलवार के आघातों से छिन्न-भिन्न ढाल की तरह दिखाई दे रहा था।

और शहर के लोग सहायता के बारे में निराश हो गये थे, श्रम तथा भूख से व्याकुल हो गय थे। दिन-प्रति-दिन मुक्ति की आशा घटती जा रही थी और वे घबड़ाहट में उक्त चांद को, तीक्ष्ण दाँत जैसे पर्वत-शिखरों को, दर्रों के काले काले मुखों को तथा कोलाहलपूर्ण शत्रु-शिविर की ओर ताक रहे थे। हर चीज़ में से उन्हें

मृत्यु की आहट मिल रही थी और उन्हें दिलासा देने के लिये आकाश में एक सितारा तक नहीं था।

नागरिक अपने घरों में बत्तियाँ जलाने से डरते थे। शहर की सड़कों को घने अंधेरे ने ढंक रखा था और नदी की गहराई में इधर-उधर जानेवाली मछली की तरह एक स्त्री जो कि एड़ी से चोटी तक काले वस्त्र पहने हुए थी, चुपचाप चल रही थी।

जब लोगों ने उसे देखा तो आपस में कानाफूसी करने लगे।

"क्या यह वही है?"

"हाँ वही।"

इतनी बातचीत के बाद कुछ लोग फाटक के आलों में छिप गये और कुछ लोग चुपचाप उस स्त्री के पास से चले गये। गश्ती सिपाहियों के प्रमुख ने उस स्त्री को सख्त शब्दों में डाँट सुनाई:

"फिर तुम बाहर आई, मोन्ना मरिआन्ना? सावधान रहना, हो सकता है कि कोई तुम्हें मार डाले और फिर कोई अपराधी को ढूंढ़ने की कोशिश ही न करे।"

वह सम्हलकर खड़ी रही लेकिन गश्ती सिपाही वहाँ से चल दिये। उनमें उसपर हाथ उठाने की या तो हिम्मत नहीं थी या वे उसे अत्यंत घृणास्पद मानते थे। सशस्त्र सैनिक उसे प्रेत की तरह टालते थे और अंधेरे में वह अकेली रह जाती तथा एक सड़क से दूसरी सड़क पर अपना सैर-सपाटा जारी रखती। चुपचाप चलनेवाली यह स्याहपोश औरत शहर के दुर्दैव की प्रतिमा-सी लगती जबकि चारों ओर से आर्त-ध्वनियाँ मानो उसका पीछा-सा करती रहतीं। उसको सुनाई देतीं कराहें, चीखें, प्रार्थनाएं और विजय की सारी आशा खोये हुए सिपाहियों की नाराज़गी-भरी बड़बड़ाहट।

एक नागरिक और एक माता के नाते वह अपने पुत्र तथा देश

के बारे में विचार कर रही थी: क्योंकि शहर को नष्ट-भ्रष्ट करनेवाले सैनिकों का अगुआ था उसका पुत्र—प्रसन्न वदन, सुन्दर किन्तु हृदयहीन पुत्र। फिर भी कुछ ही दिन पहले वह पुत्र को गर्व की दृष्टि से देखती थी, उसे देश के प्रति एक मूल्यवान उपहार मानती थी और मानती थी कि जिस शहर में वह पैदा हुई और उसने अपने पुत्र को जन्म दिया तथा उसका लालन-पालन किया, उस शहर के लोगों की सहायता के लिये उसने अपने पुत्र के रूप में एक लाभकारी शक्ति प्रदान की है। उसका हृदय सैकड़ों अदृश्य सूत्रों से उन प्राचीन पत्थरों के साथ बँधा हुआ था जिनसे उसके पुरखों ने उस शहर में घर बनाये थे तथा नगर-रक्षक दीवार भी; उस भूमि के साथ वह संलग्न था जिसमें उसके सगे-संबंधियों की अस्थियाँ रखी गई थीं और वह सम्बद्ध था लोक-कथाओं, लोक-गीतों तथा लोगों की आशाओं से। लेकिन अब इस हृदय ने अपने प्रिय पुत्र को खो दिया था और इसलिये वह रो रहा था। तराजू की तरह अपने हृदय में वह पुत्र-प्रेम तथा जन्म-भूमि के प्रेम को तोल रही थी और वह कह नहीं पाती थी कि दोनों में से अधिक भारी कौन है।

और इस तरह वह रात में सड़कों पर घूमती रहती और बहुत से लोग उसे न पहचानकर तथा उसकी काली आकृति को मृत्यु की—जो कि उन सब के अति निकट थी—प्रतिमा समझकर वे ठिठक जाते और जब वे उसे पहचान लेते तो चुपचाप उस देशद्रोही की माता के पास से दूर हट जाते।

लेकिन एक दिन नगर-रक्षक दीवारों के एक दूरस्थ कोने में उसे एक अन्य स्त्री दिखाई दी जो एक शव के पास घुटनों के बल इतनी चुपचाप बैठी थी कि धरती का एक अंग ही लग रही थी। दुःखग्रस्त मुख को तारों की ओर उठाये हुए वह प्रार्थना कर रही थी।

ऊपरवाली दीवार पर संतरी धीमी आवाज़ में बोल रहे थे और पत्थर पर घिसकर उनके शस्त्रों से कर्कश ध्वनि निकल रही थी।

देशद्रोही की माँ ने पूछा:

"तुम्हारा पति?"

"जी नहीं।"

"तो कौन, भाई?"

"मेरा बेटा। मेरा पति तेरह दिन पहले ही मारा गया और यह आज।"

उठ खड़ी होते हुए, मृतक की माँ ने नम्रता से कहा:

"मदोन्ना सब देखती है और सब जानती है। मैं उसका एहसान मानती हूँ।"

"वह किसलिये?" पहली स्त्री ने पूछा। दूसरी ने उत्तर दिया:

"इस समय जब कि मेरा बेटा अपने देश के लिये लड़ते लड़ते वीर-गति प्राप्त कर चुका है, मैं कहना चाहती हूँ कि मैं उसके लिये डरती थी: उसका हृदय बड़ा चंचल था, वह मौज-मस्ती भरी ज़िंदगी का शौक़ीन था और मुझे डर था कि वह कहीं मरिआन्ना के बेटे की तरह, ईश्वर तथा मानव के उस शत्रु की तरह, हमारे दुश्मनों के नेता की तरह, अपने शहर के साथ विश्वासघात न कर दे। लानत है उस देशद्रोही पर तथा उसे जन्म देनेवाली कोख पर!"

मरिआन्ना ने अपना चेहरा ढँक लिया और वहाँ से चल दी। दूसरे दिन सवेरे वह नगर-रक्षकों के पास पहुँची और बोली:

"मेरा बेटा तुम्हारा शत्रु बन गया है। अब या तो मुझे मार डालो या शहर का फाटक खोल दो, ताकि मैं उसके पास जा सकूँ..."

उन्होंने जवाब दिया:

"तुम इन्सान हो और तुम्हारे लिये अपना देश सर्वोपरि होना चाहिये; तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये भी उतना ही दुश्मन है जितना कि हममें से हरेक के लिये।"

"मैं उसकी माँ हूँ। मैं उसको प्यार करती हूँ और मानती हूँ कि वह ऐसा बना है मेरे ही दोष के कारण।"

तब नगर-रक्षकों ने एक दूसरे से सलाह-मशविरा किया और कहा:

"बेटे के पापों के लिये तुम्हें मार डालना ठीक नहीं होगा। हम जानते हैं कि तुमने उसे ऐसा भयंकर पाप करने की सलाह कभी न दी होती और हम यह भी समझते हैं कि तुम कितनी दुःखी हो। लेकिन शहर को शरीर-बंधक के रूप में भी तुम्हारी आवश्यकता नहीं है; तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये कोई फ़िक्र नहीं करता है, हम तो मानते हैं कि वह शैतान तुम्हें भूल भी गया है और यही तुम्हारे लिये काफ़ी सज़ा है। हम मानते हैं कि यह सज़ा मृत्यु से भी अधिक भयंकर है!"

"जी हाँ," उसने कहा। "यह सचमुच अधिक भयंकर है।"

उन्होंने फाटक खोल दिया और उसने शहर से विदा ली। दीवारों पर से नगर-रक्षकों ने उसे अपनी मातृभूमि से, जो कि उसीके पुत्र द्वारा खून से लथपथ की गयी थी, बिछुड़ते हुए देखा। वह धीरे धीरे चल रही थी क्योंकि उसके क़दम इस भूमि को त्यागने में हिचक रहे थे। नगर-रक्षकों के शवों को उसने झुककर प्रणाम किया और टूटे हथियारों को नफ़रत के साथ ठुकरा दिया क्योंकि जीवन-रक्षक शस्त्रों को छोड़कर बाक़ी सारे शस्त्र माताओं के लिये घृणित हैं।

वह इस तरह चल रही थी मानो अपने लवादे में छिपाकर क़ीमती पानी की शीशी ले जा रही हो और एकाध बूंद गिर जाने का डर उसे लग रहा हो। नगर-रक्षक दीवार से उसकी ओर देखनेवाले लोगों को उसकी आकृति जैसे जैसे अधिकाधिक छोटी होती हुई दिखाई दी वैसे वैसे उन्हें महसूस होने लगा कि उस स्त्री के साथ उनकी निराशा तथा असहायता भी चली गयी।

उन्होंने देखा कि वह बीच रास्ते में रुक गई, अपने सिर पर का वस्त्र उसने पीछे हटा दिया और पीछे मुड़कर देर तक शहर की ओर ताकती रही। उधर शत्रु-शिविर में वह मैदान में अकेली देखी गयी। फिर उसी की जैसी काली काली आकृतियाँ सावधानी के साथ तथा धीरे धीरे उसके पास आ गयीं। उन्होंने पूछा कि वह कौन है तथा किधर जा रही है?

"तुम्हारा नेता मेरा बेटा है," उसने कहा और किसी भी सिपाही को इसमें शक नहीं हुआ। उसके साथ चलते चलते वे उसके पुत्र की गौरव-गाथा गाने लगे और उसकी चतुरता तथा वीरता की प्रशंसा करने लगे। अभिमान के साथ सिर ऊँचा करके वह इन बातों को सुनती रही और उसने तनिक भी आश्चर्य नहीं दिखाया, क्योंकि उसका पुत्र इससे कुछ और हो ही नहीं सकता था।

और इस समय वह आख़िर उस व्यक्ति के सामने खड़ी थी जिसको वह उसके जन्म के नौ मास पहले से जानती थी, जिसको वह अपने हृदय से अलग कभी नहीं मानती थी। रेशमी तथा मखमली वस्त्र पहने वह उसके सामने खड़ा था और उसके शस्त्र रत्नजटित थे। सब कुछ वैसा ही था जैसा होना चाहिये था। माता ने कई बार सपनों में उसको इसी रूप में देखा था—धनी, प्रसिद्ध और प्रशंसनीय।

"माँ!" माँ के हाथों को चूमते हुए उसने कहा, "तुम मेरे पास आ गई। आखिर तुमने मुझे जान लिया और कल मैं उस शापित शहर को जीत लूँगा!"

"हाँ, उसी शहर को जहाँ तुम पैदा हुए थे," माँ ने याद दिलाई।

अपनी शक्ति से उन्मत्त तथा अधिक गौरव के लिये तरसनेवाले पुत्र ने जवानी के जोश में उद्दंडता के साथ उत्तर दिया:

"मैं दुनिया में तथा दुनिया के लिये पैदा हुआ और मैं चाहता हूँ कि दुनिया मेरी अद्भुत शक्ति से थर्रा उठे! अब तक मैंने इस शहर को फ़तह नहीं किया था, सिर्फ़ तुम्हारे कारण। मेरे पैर में वह काँटे की तरह चुभ रहा है और मेरी तेज़ तरक़्क़ी की राह में एक रोड़ा-सा बना हुआ है। लेकिन कल मैं तहस-नहस कर दूँगा ज़िद्दी मूर्खों के इस घोंसले को!"

"जहाँ का हर पत्थर तुम्हें एक बच्चे के रूप में जानता है और स्मरण करता है," माँ ने कहा।

"पत्थर तब तक गूँगे हैं जब तक आदमी उन्हें ज़बान नहीं देता। पहाड़ मेरे गौरव-गीत गायें, यही मैं चाहता हूँ!"

"और मनुष्यों का क्या?" माँ ने पूछा।

"हाँ माँ, मैंने उनको नहीं भुलाया है। मुझे उनकी भी आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य की स्मृति में ही वीर अमर बनते हैं!"

माँ ने कहा:

"वीर वह है जो मौत का मुक़ाबला करके जीवन का निर्माण करता है, जो मृत्यु को जीत लेता है..."

"जी नहीं!" पुत्र ने आपत्ति उठाई। "नगर-नाशक का गौरव उतना ही ऊँचा है जितना कि नगर-निर्माता का। देखो, हम नहीं

जानते कि रोम का निर्माण किसने किया --एनिअस ने या रोमुलस ने-- लेकिन हम अलारिक तथा उन अन्य वीरों के नाम अच्छी तरह जानते हैं जिन्होंने रोम को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया..."

"लेकिन रोम का नाम चिरस्थायी रहा," माँ ने याद दिलाई।

इस तरह दोनों सूर्यास्त तक बातें करते रहे; माँ उसके उद्दंड भाषण में क्रमशः कम दखल देती गई और उसका गर्वोन्नत मस्तक धीरे धीरे झुकता गया।

माता निर्माण करती है, रक्षण करती है और उसके आगे विनाश की बातें करना उसके विरुद्ध बोलना है, लेकिन बेटे को यह मालूम नहीं था। वह जानता नहीं था कि वह माता के जीवन-हेतु का निषेध कर रहा है।

माता सदैव मृत्यु के विरुद्ध रहती है। जो हाथ इन्सान के घर में मौत को बुला लाते हैं वे माताओं के लिये तिरस्करणीय तथा घृणित हैं; लेकिन पुत्र इस तथ्य को देख न पाया, क्योंकि हृदय को बधिर करनेवाले गौरव की सर्द जगमगाहट के कारण उसकी आँखें चौंधिया गई थीं।

उसे यह भी मालूम न था कि माता जितनी निर्भय होती है उतनी ही स्वनिर्मित तथा स्वसंवर्धित जीवन को खतरा पैदा होने पर वह चतुर तथा कठोर भी हो सकती है।

माँ सिर झुकाये बैठी थी और शत्रु-नेता के वैभवशाली तंबू के खुले हिस्से में से उस शहर को देख रही थी जहाँ उसको गर्भाधान का तथा प्रसव वेदना का प्रथम अनुभव हुआ था। और जिसको उसने जन्म दिया, वही उसका लाल आज विनाश के लिये तरस रहा था।

7*

सूर्य की लोहित-वर्ण किरणों ने शहर की दीवारों तथा मीनारों को रक्तरंजित कर दिया और खिड़कियों के शीशों पर ऐसी अमंगल चमक फैला दी जिससे सारा शहर क्षत-विक्षत शरीर जैसा दिखाई देने लगा, जिसके हर गहरे ज़ख्म में से जीवन की लोहित धारा वह रही थी। शीघ्र ही शहर लाश की तरह काला पड़ गया। उसके ऊपर अनगिनत तारे अंत्येष्टिकालीन मोम-बत्तियों की तरह चमक रहे थे।

उसने उन धुंधले घरों को देखा जिनमें लोग वत्तियाँ जलाने से डर रहे थे ताकि कहीं शत्रु का ध्यान उनकी ओर न खिंच जाय; उसने उन सड़कों को देखा जिनपर अंधेरा और लाशों की वदवू फैली हुई थी। मौत के इंतज़ार में ज़िंदगी की घड़ियाँ वितानेवाले लोगों की धीमी कानाफूसी उसने सुन ली—उसने यह सव देखा, उसके लिये जो कुछ अपना तथा प्रिय था वह सव उसके आगे उसके निर्णय की प्रतीक्षा में मौन खड़ा रहा और उसके मन में यह भाव पैदा हुआ कि वह नगर में रहनेवाले सव लोगों की माता है।

काले पर्वत-शिखरों से वादल घाटी में उतर आये और उस मरणोन्मुख शहर पर पंखवाले घोड़ों की तरह झपट पड़े।

"हम शायद आज रात को हमला करेंगे," वेटे ने कहा, "यदि रात काफ़ी अंधेरी हो! जव सूरज आँखों को चौंधियाता है और शस्त्रों की जगमगाहट सिपाहियों को अंधे-से वना देती है, तव दुश्मन को मारना मुश्किल होता है और कई वार वेकार हो जाते हैं," अपनी तलवार को निहारते हुए उसने कहा।

माता ने उससे कहा: "आओ मेरे लाल, मेरी छाती पर सिर रखकर, ज़रा आराम करो, ज़रा याद करो कि वचपन में तुम कितने खुश और दयालु थे और किस तरह हर कोई तुम्हें प्यार करता था..."

बेटे ने माँ की बात मानी और अपना सिर उसकी गोद में रखकर तथा आँखें मूँदकर कहा:

"मैं प्यार करता हूँ केवल कीर्ति को और तुम्हें इसलिये प्यार करता हूँ कि तुमने मुझे ऐसा बनाया।"

"और तुम स्त्रियों को नहीं प्यार करते?" उसके मुख पर झुकते हुए माँ ने पूछा।

"भला उनकी क्या कमी है? लेकिन आदमी उनसे उसी तरह ऊब जाता है जिस तरह हर बेहद मीठी चीज़ से।"

"और क्या तुम यह नहीं चाहते कि अपने कोई बच्चे हों?" माँ ने आखिर पूछा।

"किसलिये? ताकि वे मारे जायं? मेरे ही जैसा कोई उन्हें मार डालेगा; इससे मुझे बड़ा सदमा पहुँचेगा और तब तक मैं इतना बुड्ढा तथा कमज़ोर बन जाऊँगा कि बच्चों की मौत का बदला नहीं ले सकूँगा।"

"तुम सुन्दर हो लेकिन उतने ही ऊसर हो; बिल्कुल गाज की तरह," माता ने आह भरते हुए कहा।

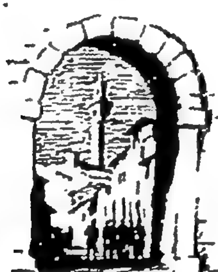
"जी हाँ, गाज की तरह..." पुत्र ने मुसकुराते हुए जवाब दिया।

अब वह माता के वक्ष पर बच्चे की तरह झपकी ले रहा था।

माता ने पुत्र को अपने काले लबादे से ढँक दिया, उसके हृदय में उसने छुरा भोंक दिया और थर्राहट के साथ बेटे ने आखिरी सांस खींची। हाँ, माता के सिवा उसकी हृदय-गति को अधिक अच्छी तरह और कौन जान सकता था? आश्चर्यचकित हुए सिपाहियों के पैरों के पास पुत्र के शव को लुढ़काकर उसने अपने नगर को संकेत करते हुए कहा:

"एक नागरिक के नाते मैंने अपने देश के लिये वह सब कुछ कर दिया जो मैं कर सकती थी; और माता के नाते मैं हूँ अपने पुत्र के साथ! अब मेरे लिये फिर से पुत्र-प्राप्ति असंभव है, क्योंकि मेरी उम्र ढल गयी है। मैं मानती हूँ कि अब मेरे जिन्दा रहने से किसी को कोई लाभ नहीं होगा।"

और यह कहकर उसने अपने पुत्र के खून से, खुद अपने ही खून से लथपथ वह गरम छूरा, जोर से अपनी छाती में भोंक दिया—और इस बार भी उसने ठीक निशाना साधा; क्योंकि दर्दभरे दिल को ढूंढ़ना मुश्किल नहीं होता।





मछुए का उपदेश

झींगुर झनकार रहे हैं।

ऐसा लगता है कि जैतून वृक्षों के सघन पर्णगुच्छों में सहस्र सहस्र तार तने हुए हैं। वायु की लहरें कुड़कीली पत्तियों में कंपन पैदा करती हैं, वे उक्त तारों को स्पर्श करती हैं और इस कोमल तथा निरंतर स्पर्श के कारण वातावरण एक उन्मादकारी ध्वनि से परिपूर्ण हो जाता है। यह यथार्थ में संगीत नहीं है तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि कोई अदृश्य हाथ शत शत अदृश्य वीणाओं को सुर में रख रहे हैं और हम उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं कि कब यह स्वर-साधन समाप्त होता है और कब उस दिव्य वीणा-वृन्द से आदित्य, आकाश और उदधि के प्रति विजय-स्तोत्र की ध्वनियाँ गूंज उठती हैं।

हवा चलती है और वृक्षों को इस तरह हिलाती है कि उनके झूमते हुए मुकुट, पर्वतों पर से नीचे समुद्र की ओर सरकते हुए से दिखाई देते हैं। सागर की लहरें मंद तथा तालबद्ध रीति से शिलामय

तट से टकराती हैं। सागर, झाग की सजीव चित्तियों का विशाल पुंज वना हुआ है और इन चित्तियों को देखकर ऐसा लगता है कि चिड़ियों के वड़े वड़े समुदायों ने सागर के नीले विस्तार पर बसेरा किया हो। ये सब एक ही दिशा में तैरती हुई जाकर गहराई में विलीन होती हैं, किंतु दूसरे ही क्षण कुछ अस्पष्ट ध्वनि के साथ फिर ऊपर आती हैं। और मानो इनको फुसलाकर अपनी मार्गरेखा पर चलानेवाली दो नौकाएं जोकि स्वयं भी दो भूरे पंछियों-सी नजर आ रही हैं, अपने तिहरे पालों को ऊँचे उठाये हुए, क्षितिज पर नाचती-सी दिखाई देती हैं। यह सारा दृश्य किसी सुदूर, अर्धविस्मृत स्वप्न के समान आभासमय लगता है।

"सूर्यास्त के समय जोरदार आँधी होगी," छोटे कंकरीले तट पर चट्टानों की छाया में वैठा हुआ एक वुड्ढा मछुआ कहता है।

ज्वार ने सुर्खमायल, पीली और हरी समुद्री घास के ढेर के ढेर तट पर लगा दिये हैं जो गरम वालू पर, तेज़ धूप में सूख रहे हैं और इससे खारी हवा आयोडिन की सी तेज़ गंध से भरपूर हो जाती है। घुंघराली लहरियाँ किनारे तक एक दूसरी का पीछा करती हैं।

अपनी नन्ही-सी शुष्क मुखाकृति, नुकीली नाक और गहरी झुर्रियों में छिपी हुई गोल तथा वड़ी ही तेज़ आँखों के कारण वुड्ढा मछुआ एक पंछी-सा दिखाई देता है। उसकी टेढ़ी-मेढ़ी तथा रुखी-सूखी उंगलियाँ उसके घुटनों पर अविचल टिकी हुई हैं।

"महाशय, लगभग पचास साल पहले," लहरों की मरमर तथा झींगुरों की झनकार के साथ एकस्वर आवाज़ में वुड्ढे ने कहा, "मुझे एक ऐसा चमकदार तथा आनन्द-भरा दिन याद आता है जब हर चीज़ मुस्कुराती तथा गाती हुई दिखाई दे रही थी। मेरे

पिताजी की उम्र उस समय लगभग चालीस साल की थी और मैं सोलह साल का था। मैं प्यार करने लगा था, जैसा कि हमारी ऐसी गरम आबोहवा में रहनेवाले सोलह साल के लड़के के लिये बिल्कुल स्वाभाविक है।

"'आओ, ग्वीदो,' मेरे पिताजी ने कहा, 'चलें हम कुछ पित्सोनी पकड़ने जायं।' महाशय, पित्सोनी एक बड़ी ही नाज़ुक और ज़ायक़ेदार मछली है, जिसके गुलाबी सुफ़ने होते हैं। यह गहरे पानी में मूंगे की परतों में मिलती है और इसलिये मूंगा मछली भी कहलाती है। लंगर डाले नाव खड़ी करके भारी अंकुड़ी के सहारे उसे पकड़ा जाता है। यह मछली बड़ी सुन्दर होती है।

"और हम पित्सोनी पकड़ने के लिये रवाना हुए। दिल में ख़याल था कि हम जरूर सफल होंगे। मेरे पिताजी अच्छे तगड़े और अनुभवी मछुआ थे, लेकिन इस समय की सैर के कुछ ही दिन पहले वह बीमार हुए थे। उनके सीने में दर्द था और गठिया से, मछुओं के उस रोग से, उनकी अंगुलियाँ ऐंठ गई थीं।

"सागर-तट से हमारी ओर बहनेवाली और हमें समुद्र की ओर धीरे धीरे ढकेल सी देनेवाली यह नाज़ुक हवा असल में बड़ी ही धोखेबाज़ और खराब होती है। वह यकायक बहती हुई आकर हमपर झपट पड़ती है, मानो हमने उसपर कुछ चोट कर दी हो। हमारी नावों को वह हवा में उड़ा देती है और कभी कभी तो नाव की पेंदी हो जाती है ऊपर की ओर और हम गिर जाते हैं पानी में। यह सब इतनी जल्दी के साथ होता है कि उस हवा को कोसने या भगवान का नाम लेने की फ़ुरसत मिलने से पहले ही हम अपने को दूरी पर लाचारी से चक्कर खाते हुए पाते हैं। डाकू भी इस हवा से ज़्यादा

ईमानदार होता है। लेकिन फिर आदमी भी तो हमेशा ही पंचमहाभूतों से अधिक ईमानदार होते हैं।

"ग़रज़ यह कि ऐसी हवा ने हमें तट से चार किलोमीटर पर याने बिल्कुल नजदीक ही घेर लिया। डरपोक और बदमाश की तरह वह यकायक हमारे मुक़ाबले आयी।

"'ग्वीदो!' अपने ऐंठन भरे हाथों में डाँड को पकड़ते हुए मेरे पिताजी चिल्लाये। 'होशियार ग्वीदो! जल्दी करो, लंगर डालो!'

"लेकिन मैं लंगर को उठा रहा था कि इतने में हवा ने पिताजी के हाथ से डाँड को जबरदस्ती हटा दिया और उनके सीने पर ऐसी फटकार लगाई कि वे बेहोश होकर नाव के तल में लुढ़क पड़े। मैं उनकी मदद नहीं कर सका क्योंकि हर सेकंड नाव के उलट जाने का डर था। हर बात बड़ी जल्दी से होती गई: मैंने डाँडों को पकड़ तो लिया लेकिन तबतक हम बहते चले जा रहे थे। चारों ओर फ़व्वारे हमें घेरे हुए थे। लहरों की चोटियों को चुनक चुनक कर हवा हमपर उसी तरह पानी छिड़क रही थी जिस तरह कोई पादरी करता है। फ़र्क़ इतना ही था कि यह छिड़काव काफ़ी ज़ोरदार था और उसमें हमारे पापों को धोने का मक़सद नहीं था।

"'देखो, मेरे बेटे, बड़ा गंभीर प्रसंग है,' होश में आकर पिताजी ने कहा। तट की ओर देखते हुए वे बोले: 'यह ज़ोरदार तूफ़ान साबित होगा।'

"जब हम जवान होते हैं तब आसानी से ख़तरे की परवाह नहीं करते; मैंने जी-जान से डाँड चलाने की कोशिश की और दूसरी भी सब बातें कर डालीं जो कि मल्लाह को ऐसे ख़तरनाक मौक़ों पर करनी चाहिये, जब हवा के रूप में शरारती शैतानों की

साँस हमारे लिये हज़ारों क़ब्रें खोद रही हो और मुफ़्त में हमारा मरसिया गा रही हो।

"'खामोश बैठो, ग्वीदो!' मेरे पिताजी ने मुस्कुराते हुए तथा अपने सिर पर से पानी को झटकते हुए कहा। 'इन दियासलाइयों से समुंदर में क्या कुरेदोगे? अपनी ताक़त को बचाये रखो नहीं तो तुम्हारे लिये घरवालों का इंतज़ार करना बेकार हो जायगा।'

"हरी हरी लहरें हमारी नाव को उसी तरह ऊपर फेंकती रहीं जिस तरह बच्चे गेंद को फेंकते हैं। वे नाव के किनारों पर चढ़ गईं, हमारे सिर से भी ऊपर उछल पड़ीं और ज़ोर ज़ोर से गरजती हुई हमें बुरी तरह झोरने लगीं। एक क्षण हम भयानक गड्ढों के तल में थे, तो दूसरे ही क्षण लंबी सफ़ेद चोटियों पर। समुंदर का किनारा तेज़ रफ़्तार से दूर दूर भागता जा रहा था और हमारी नाव के साथ नाचता हुआ नज़र आ रहा था।

"'तुम वापस जा सकोगे, लेकिन मैं नहीं!' पिताजी ने मुझसे कहा। 'सुनो, मैं तुम्हें मछलीमारी और दूसरे काम के बारे में कुछ बातें बतला दूं...'

"और उन्होंने मुझे बताना शुरू किया कि फ़लाँ फ़लाँ मछली की क्या आदतें होती हैं और उसे कहाँ, कब और कैसे पकड़ना चाहिये।

"'पिताजी, अच्छा हो कि हम ज़रा भगवान की प्रार्थना करें!' हम पर बीत रहे भारी संकट को देखकर मैंने सुझाया। उस समय हमारी हालत उन दो खरगोशों की सी थी जिन्हें सफ़ेद शिकारी कुत्तों का झुंड घेरकर खड़ा हो और चारों ओर से अपने ज़हरीले दांतों को दिखाता हुआ गुर्रा रहा हो।

"'भगवान सब देखता है।' उन्होंने कहा। 'वह जानता है कि जिन आदमियों को उसने धरती पर रहने के लिये पैदा किया वे अब सागर में बरबाद हो रहे हैं और उनमें से एक को, जिसके बचने की कोई आशा नहीं है, अपने पास का ज्ञान-भंडार अपने बेटे को सौंप देना चाहिये। धरती तथा आदमियों के लिये काम ज़रूरी है। भगवान यह जानता है...'

"और जब पिताजी मुझे अपने पेशे के बारे में सब जानकारी दे चुके तब उन्होंने मुझे वे बातें बताईं जो आदमी को अपनी बिरादरीवालों के साथ शांति से ज़िंदगी बिताने की दृष्टि से समझ लेनी चाहिये।

"'क्या यही मुझे पढ़ाने का वक़्त है?' मैंने पिताजी से पूछा। 'ज़मीन पर आपने यह कभी नहीं किया!'

"'ज़मीन पर मौत इतनी नज़दीक कभी नहीं थी।'

"हवा जंगली जानवर की तरह गुर्रा रही थी और लहरें इतने ज़ोर से गरज रही थीं कि पिताजी को चिल्ला-चिल्लाकर बोलना पड़ा ताकि मैं सुन सकूँ।

"'हमेशा दूसरे आदमियों के साथ पेश आते समय अपने को उनसे न बुरा समझो और न अधिक अच्छा ही। इस बात को ध्यान में रखो तो सब कुछ ठीक हो जायगा! रईस और मछुआ, पादरी और सिपाही सब एक ही शरीर के अंग हैं, और तुम भी सब की तरह उस शरीर का एक ज़रूरी हिस्सा हो। किसी के पास जाते समय यह कभी न सोचना कि उसमें अच्छाई से ज्यादा बुराई है; विश्वास करो कि उसमें अधिक अच्छाई है और तुम्हें सदैव अनुभव होगा कि वास्तव में यही बात सत्य है। आदमी को जैसा तुम मानो, वह वैसा ही होता है।'

"हां, यह सब वे एक साथ नहीं बता सके। उनके शब्द फव्वारों तथा फेन को चीरते हुए मेरे कानों तक आ रहे थे, जब हम एक लहर से दूसरी लहर पर उछल रहे थे और एक क्षण पाताल में थे, तो दूसरे क्षण आकाश में। पिताजी ने जो कुछ कहा उनमें से बहुत-सी बातों को मेरे कानों तक पहुँचने से पहले ही हवा उड़ा ले गई और बहुत-सी बातों को मैं समझ ही न पाया। महाशय, आप ही बताइये कि जब सिर पर मौत नाच रही हो तो कोई कैसे कुछ सीख भी सकता है? मैं डर गया था। मैंने समुंदर की यह खौफ़नाक सूरत पहले कभी न देखी थी और न ही कभी इतनी लाचारी का अनुभव किया था। कह नहीं सकता कि कब—उसी क्षण या बाद में उन क्षणों की याद आने पर—मुझे ऐसी अनुभूति हुई जिसको मैं जीते जी कभी नहीं भुला सकूंगा।

"मानो कल ही की बात हो, मैं अपने पिताजी को नाव के तल में बैठे हुए देखता हूँ। उनके दुर्बल हाथ फैले हुए हैं और वे अपनी टेढ़ी-मेढ़ी, ऐंठी-मरोड़ी उंगलियों से नाव के किनारों को पकड़े हुए हैं; उनका टोप पानी में बह गया है और लहरों ने उनके सिर पर तथा कंधों पर थपेड़े लगाये हैं—बायें से, दायें से, आगे से और पीछे से। और हर समय वह अपने सिर को झटका देकर, नथुनों को फड़फड़ाकर और चिल्ला-चिल्लाकर मुझे कुछ बता रहे हैं। पानी में बुरी तरह भीगा हुआ पिताजी का शरीर सिकुड़ा हुआ सा दिखाई दिया और उनकी आँखें विस्फारित हुईं—डर के कारण या शायद दर्द के कारण। मैं मानता हूँ दर्द ही के कारण।

"'सुनो!' वे चिल्लाकर कहते। 'मेरी आवाज़ तुम्हें सुनाई देती है?'

"कभी कभी मैं जवाब देता:

"'जी हाँ, पिताजी।'

"'ध्यान रखो, सब अच्छाई का मूल आदमी ही है।'

"'जी हाँ', मैं उत्तर देता।

"ज़मीन पर पिताजी मुझसे इस तरह कभी नहीं बोले थे। वे हमेशा बड़े ख़ुशदिल और दरियादिल रहते लेकिन मुझे ऐसा महसूस होता कि वे मेरी ओर कुछ मज़ाक़ तथा अविश्वास की दृष्टि से देखते थे और ऐसा मानते थे कि मैं अभी तक बच्चा हूँ। क़भी कभी यह मुझे बुरी तरह से खलता क्योंकि जवान दिल आसानी से घायल होता है।

"पिताजी की चिल्लाहट के कारण मेरा डर कम हो जाता। शायद इसी वजह से मुझे सब बातें इतनी साफ़ साफ़ याद आती हैं।"

बुड्ढा मछुआ कुछ देर ख़ामोश रहा और उसकी आँखें फेनिल सागर पर गड़ी रहीं। फिर वह मुसकुराया और पलक मारकर बात आगे चलाई:

"महाशय, मैं लोगों को ग़ौर से देखता आया हूँ और यह जानता हूँ कि स्मरण करना और समझ लेना दोनों बराबर हैं और जितना अधिक हम समझ लेते हैं उतनी ही अधिक अच्छाई हमें दिखाई देती है। विश्वास कीजिये कि यह सत्य है!

"देखिये, मुझे पिताजी का प्यारा चेहरा याद आता है—पूरा भीगा हुआ और बड़ी बड़ी आँखें गंभीरता तथा प्रेम से मुझपर गड़ी हुईं। यह दृष्टि ऐसी थी जिससे मैं समझ चुका था कि उस दिन मेरी मृत्यु नहीं होनेवाली थी। मैं घबड़ा गया था लेकिन यह जान चुका था कि मैं नष्ट नहीं होऊँगा।

"आख़िर हमारी नाव उलट ही गयी। उछलते हुए पानी में हम दोनों गिर गये, झाग ने हमें अंधा कर दिया और लहरें हमारे

शरीरों को इधर उधर फेंकती तथा नाव की पेंदी पर पटकाती-टकराती रहीं। हमने जहाँ तक हो सका, सब चीज़ों को बेंचों में बांध रखा, अपने हाथों में रस्सों को पकड़ रखा और जब तक हम में ताक़त थी, हम नाव से दूर नहीं हटे। लेकिन सिर को पानी के ऊपर रखना बड़ा मुश्किल था। कई बार मैं और पिताजी पेंदी से टकराकर फिर दूर फेंके गये। सबसे बुरी बात यह कि सिर चकराने लगता, हम अंधे और बहरे हो जाते, कान पानी से भर जाते और बहुत-सा पानी निगलना पड़ता।

"काफ़ी देर तक, लगभग सात घंटे, यह संघर्ष जारी रहा। आख़िर एकदम हवा का रुख़ बदल गया, वह ज़ोर से किनारे की ओर बहने लगी और हम तेज़ी के साथ किनारे की ओर बहते गये।

"'धीरज रखो!' मैं ख़ुशी से चिल्ला उठा।

"जवाब में पिताजी ने कुछ कहा लेकिन मैं सिर्फ़ एक शब्द सुन पाया :

"'...चट्टानें।'

"वह किनारे की चट्टानों के बारे में सोच रहे थे, लेकिन वे अभी तक काफ़ी दूर थीं और मैंने पिताजी की बात पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन वह मुझसे ज्यादा जानते थे। हम बेहोशी और लाचारी में पानी के पहाड़ों के बीच से बहते चले जा रहे थे। अपनी नाव से हम घोंघे की तरह चिपके हुए थे और उससे बेदम पिट गये थे। बड़ी देर तक यह हालत जारी रही लेकिन आख़िर किनारेवाली काली चट्टानें नज़र आने लगीं। इसके बाद सब कुछ बड़ी तेज़ी के साथ हुआ। झूमती हुई, पानी पर झुकी हुई और हमपर ढह पड़ने की तैयारी में वे हमारी ओर बढ़ीं। सफ़ेद लहरों ने हमारे शरीरों को एक दो बार आगे फेंक दिया। हमारी नाव उसी तरह कुचल-सी गई जिस तरह बूट

की एड़ी के नीचे अखरोट दब जाता है। मैं निराधार हो गया, मैंने छुरों की तरह तेज़ चट्टानों की पसलियों को अपने सामने देखा और देखा पिताजी के सिर को—मुझसे बहुत ही ऊपर—और फिर शैतान के इन पंजों के ऊपर। एक दो घंटों के बाद पिताजी का शरीर मिल गया। पीठ उनकी टूट गई थी और सिर कुचला हुआ था। उनके सिर का घाव इतना बड़ा था कि भेजे का कुछ हिस्सा बाहर झाँक रहा था। मुझे अभी तक उस घाव के वे सफ़ेद हिस्से याद हैं, जिनमें लाल रक्तवाहिनियां फैली हुई थीं। यह घाव ख़ून मिले संगमरमर या झाग जैसा दिखाई दे रहा था। पिताजी का शरीर बुरी तरह से कुचल गया था लेकिन उनका चेहरा साफ़ तथा शांत था और आँखें कसकर बंद थीं।

"मेरी हालत? हाँ, मैं भी बुरी तरह से घायल हुआ था और जब लोग मुझे किनारे की ओर खींच लाये तब मैं बेहोश ही था। हम अमाल्फ़ी से आगे, अपने घर से बहुत ही दूर, महाद्वीप की ओर बह गये लेकिन वहाँ भी तो मछुए रहते हैं और ऐसी बातों को देखकर वे केवल आश्चर्य-चकित नहीं होते बल्कि दयालु और सहृदय बन जाते हैं। ख़तरे में ज़िंदगी बितानेवाले लोग हमेशा दिलदार होते हैं।

"हो सकता है कि मैं पिताजी के बारे में अपनी पूरी भावना स्पष्ट नहीं कर सका हूँ। उस भावना को मैं गत इक्यावन साल से अपने हृदय में संभाले हुए हूँ। उस भावना की अभिव्यक्ति के लिये विशेष शब्दों की आवश्यकता है—शायद शब्दों की नहीं, संगीत की। लेकिन हम मछुए मछली की तरह ही भोले-भाले होते हैं। हम उतना अच्छा बोल नहीं सकते जितना कि हम चाहते हैं। जितना हम प्रकट कर सकते हैं, उससे कई गुना अधिक जानते और अनुभव करते हैं।

"सबसे महत्त्व की बात यह है कि अपनी मृत्यु के समय पिताजी यह जान चुके थे कि अब मौत से छुटकारा नहीं है; लेकिन फिर भी

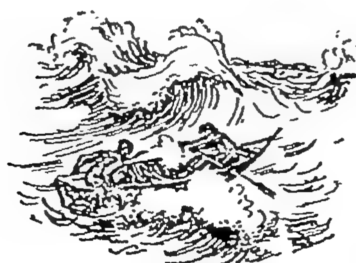
वह घवड़ाये नहीं और न मुझे, अपने बेटे को भूला सके। उनमें वह ताक़त व फ़ुरसत जरूर रही और उन्होंने मुझे ऐसी हर बात बता दी जिसको वे मेरे लिये जरूरी मानते थे। आज मेरी उम्र सड़सठ साल की है और मैं कह सकता हूँ कि उस समय पिताजी ने मुझे जो कुछ बताया वह सत्य है।"

बुड्ढे ने अपनी बुनी हुई टोपी उतारी, जो किसी ज़माने में लाल थी और अब भूरी बन गई थी। उसने अपनी चिलम निकाली और अपना नंगा, कांसे जैसा सिर झुकाये बल देकर कहा:

"जी हाँ, महाशय, यह सब सत्य है। आदमी वैसे ही होते हैं जैसे आप उन्हें देखना चाहते हैं। आप उनकी ओर दिलदारी से देखिये और इससे आपका तथा उनका—दोनों का कल्याण होगा। वे अधिक अच्छे बनेंगे और आप भी। कितनी सीधी बात है, है न?"

हवा क्रमशः तेज़ होती गई, लहरें ऊपर उठती हुईं, तीक्ष्णतर तथा शुभ्रतर होती गईं; दूर आकाश में पंछियों के समुदाय तेज़ी से उड़ते हुए नज़र आये और तीन तीन पालोंवाली वे दो नौकाएं क्षितिज की नीली किनार के पीछे अदृश्य हो गईं।

द्वीप के ढालवाँ तट फेन से शुभ्र हो गये हैं, गहरा नीला पानी खलबला उठा है और झींगुरों की अश्रान्त भाव-भरी झनकार जारी है।





सजा

उस दिन सिरोक्को हवा वह रही थी। अफ़्रीका से ग्रानेवाली यह नम हवा वड़ी ही खराव होती है। नाड़ी-मंडल पर उसका वुरा असर पड़ता है और आदमी में चिड़चिड़ाहट पैदा होती है। यही कारण था कि गाड़ीवान जुज़ेप्पे चिरोत्ता और लुईजी मेता आपस में लड़ पड़े। झगड़ा यकायक शुरू हुआ और किसी को पता न चला कि शुरुआत किसने की, लेकिन लोगों ने देखा कि लुईजी ने उछलकर जुज़ेप्पे की गर्दन पकड़ने की कोशिश की जबकि जुज़ेप्पे ने अपनी मोटी लाल गर्दन को छिपाने के हेतु सिर को कंधों के बीच दवा लिया और अपनी काली तथा वलिष्ठ मुट्ठियाँ ऊपर उठायीं।

लोगों ने फ़ौरन इन दोनों को खींचकर अलग कर दिया।

"आखिर वात क्या है?" लोगों ने पूछा।

लुईजी, जिसका चेहरा क्रोध से काला पड़ गया था, चिल्ला उठा:

"इस वैल ने मेरी वीवी के वारे में जो कहा, उसे वही ज़रा खुले आम दोहराये तो!"

चिरोत्ता ने चले जाने की कोशिश की। उसके चेहरे पर घृणा सूचक ऐंठन पैदा हुई जिसमें उसकी छोटी छोटी आँखें छिप गईं। अपना गोल काला सिर हिलाकर उसने उक्त अपमानजनक शब्दों को दोहराने से इनकार कर दिया। तव खुद मेता ही गरज उठा:

"यह कहता है कि उसे मेरी वीवी के आलिंगन की मिठास मालूम है!"

"ओहो!" लोगों ने कहा। "तव यह कोई मज़ाक़ नहीं, यह तो वड़ा गंभीर मामला है। लुईजी, तुम ज़रा सब्र से काम लो! तुम यहाँ पराये हो लेकिन तुम्हारी वीवी तो हममें से है, उसे हम उसके वचपन से जानते हैं और अगर उसने तुम्हारे साथ कोई वेईमानी की हो तो उस अपराध की छाया हम सवपर पड़ती है। सुनो, हमें न्याय से काम लेना है!"

फिर उन्होंने चिरोत्ता से पूछा:

"क्यों जी, तुमने यह वात कही थी?"

"जी हाँ," उसने स्वीकार कर लिया।

"क्या यह सच है?"

"क्या किसीने मुझे कभी झूठ वोलते हुए सुना है?"

चिरोत्ता एक अच्छा आदमी, अच्छा पति और पिता था। और इधर मामला वड़ा वेढंगा था। लोग चुपचाप और उद्विग्न खड़े थे। लुईजी घर चला गया और अपनी पत्नी कोंचेत्ता से वोला:

"मैं तुम्हें छोड़ रहा हूं। और जव तक तुम यह नहीं सावित कर

रसकती कि इस हामज़ादे का इलज़ाम झूठ है तब तक मुझे तुमसे कुछ लेना-देना नहीं।"

वह रोयी तो सही, लेकिन आँसुओं से कुछ बात थोड़े ही सिद्ध होती है! लुईजी ने उसे दूर ढकेल दिया और वह बेसहारा हो गयी ...गोद में नन्हा-सा बच्चा और पास में न कोई पैसा, न रोटी का टुकड़ा ही!

अब औरतों ने मामले में दखल दिया। सबसे पहले आगे आई कुंजड़िन कतरीना जो लोमड़ी जैसी चालाक थी। उसका ढीला-ढाला झुर्रीदार वदन पुराने बोरे जैसा था, जिसमें कि मांस और हड्डियों को ठूंस ठूंसकर भर दिया गया हो।

"बहनो," कतरीना ने कहा, "तुमने लोगों को यह बोलते हुए सुना होगा कि इस मामले से हम सबकी इज़्ज़त पर आंच आती है। यह कोई चांदनी रात के हल्के से मज़ाक़ का मामला नहीं है। दो माताओं की क़िस्मत जोखिम में है। ठीक है न? मैं कोंचेत्ता को अपने घर ले जाऊँगी और जब तक सच्ची बात मालूम नहीं होती, वह मेरे साथ रहेगी।"

और यही बात हुई। फिर कतरीना ने और उस अस्थि-पंजर डाइन लुचीआ ने—जिसकी आवाज़ तीन मील दूर से सुनी जा सकती थी—बेचारे जुज़ेप्पे की सुनवाई करने की ठानी। उन्होंने उसको बुला लिया और अपनी उंगलियों से उसकी आत्मा को इस तरह चिथेड़ना शुरू किया मानो वह कोई फटा-पुराना चिथड़ा हो।

"तो फिर भले आदमी, हमें बता दो कि तुमने कितनी बार कोंचेत्ता का आलिंगन किया?"

स्थूलकाय जुज़ेप्पे ने ज़रा-सा हाँफकर और कुछ सोचकर कहा:

"बस, एक बार।"

"वाह! विना कुछ सोचे-विचारे एकदम तुम यह कह सकते हो", लुचीया ने मानो अपने आपसे कहा।

"अच्छा, अब बताओ कि यह प्रसंग हुआ कब? शाम को, रात को या सवेरे?" कतरीना ने सही सही न्यायाधीश की शान के साथ सवाल किया।

"शाम को," जुज़ेप्पे ने झट से कह दिया।

"उस समय रोशनी थी?"

"जी हाँ," उस अनाड़ी ने उत्तर दिया।

"ठीक! तब तो उसका बदन तुम्हें दिखाई दिया होगा?"

"ज़रूर!"

"अच्छा, तो अब हमारे लिये उसका बयान करो।"

अब तो जुज़ेप्पे ने सवालों का रुख भाँप लिया और उस चिड़िया की तरह अपना मुंह खोला जिसके गले में अभी अभी जव का दाना अटक गया हो। वह कुछ बुदबुदाने लगा। उसपर इतना गुस्सा सवार हुआ कि उसके कान लाल-नीले हो गये।

"आखिर आप मुझसे क्या कहलवाना चाहती हैं?" उसने गुर्राते हुए पूछा। "क्या आप यह समझती हैं कि मैंने डाक्टर की तरह उसकी जाँच-पड़ताल की?"

"ओहो! तो तुम फलों का रंगरूप देखे विना ही उनका मज़ा लेते हो?" लुचीया बोल उठी। "लेकिन कोंचेत्ता के बारे में एक खास बात तुमने ज़रूर देखी होगी?" व्यंग्यपूर्ण पलक मारते हुए उस नागिन ने डंक मारा।

"सारी बात इतनी जल्द हुई," जुज़ेप्पे ने कहा "कि मैंने कुछ भी नहीं देखा। मैं सच सच कहता हूँ।"

"तो इससे यही साबित होता है कि तुमने उसे कभी पाया ही

नहीं!" कतरीना चिल्लायी। वह बड़ी ही दयालु वुढ़िया है लेकिन जब चाहे तब अत्यंत कठोर भी हो सकती है। ग़रज़ यह कि उन दो औरतों ने जुज़ेप्पे को परस्पर विरोधी बातों के ऐसे जंजाल में फंसा दिया कि आख़िर अंधखोपड़ी को मुंह लटका कर स्वीकार करना पड़ा: "असल में बात कुछ भी नहीं थी। मैंने सिर्फ़ डाह से सारा मामला गढ़ दिया था।"

उन वुढ़ियों को तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ।

"हम तो जानती ही थीं," उन्होंने ज़ाहिर किया और उसको विदा करके सारा मामला आख़िरी निर्णय के लिये पुरुषों पर सौंप दिया।

दूसरे दिन हमारी बिरादरी की बैठक हुई। एक स्त्री की बदनामी करने के आरोप पर चिरोत्ता उनके सामने खड़ा था। वृद्ध लुहार जाकोमो फ़ास्का ने बढ़िया भाषण दिया:

"नागरिको, साथियो, सज्जनो! अगर हम अपने बारे में न्याय चाहते हैं तो हमें एक दूसरे के साथ न्याय का ही बर्ताव करना चाहिये। सबको यह मालूम हो जाय कि हम जो माँग करते हैं, उसकी ठीक इज़्ज़त करते हैं और इन्साफ़ हमारे लिये निरर्थक शब्द नहीं है, जैसा कि वह हमारे मालिकों के लिये है। यहाँ हमारे सामने एक ऐसा आदमी खड़ा है जिसने एक औरत की बेइज़्ज़ती की है, अपने एक साथी का अपमान किया है, एक कुनबे को तितर-बितर कर दिया है, और अपनी बीवी को डाह तथा शर्म का शिकार बनाकर दूसरे कुनबे पर क़हर ढा दिया है। हमें उसके साथ सख़्ती से पेश आना चाहिये। आप ही बताइये, उसको कैसा दंड दिया जाय?"

सड़सठ जवानों ने एक साथ घोषणा की:

"बस, हमारी बिरादरी से उसको अलग कर दिया जाय!"

लेकिन पंद्रह जनों की राय रही कि यह बहुत ही सख्त सजा है और तब दंड के बारे में विवाद खड़ा हुआ। इन पंद्रह जनों ने कर्कश स्वर में कहा—आखिर हम एक इन्सान की क़िस्मत का फ़ैसला करने बैठे हैं—और एक इन्सान ही क्यों कहें, वह तो बाल-बच्चोंवाला आदमी है—अब आप ही बताइये कि उसकी बीवी का और बच्चे का क्या क़सूर है? इस आदमी का अपना घर है, अंगूर का बग़ीचा है, उसके पास घोड़ों की एक जोड़ी है, विदेशियों के लिये चार गवे भी हैं—और यह सब उसने अपनी मेहनत से जुटाया है, सख्त मेहनत की है उसने। बेचारा जुज़ेप्पे कोने में अकेला एक कुर्सी पर सिर झुकाये और कूबड़ निकाले बैठा हुआ अपने टोप को गूंथ-सा रहा था। बच्चों के बीच बैठे हुए शैतान जैसा वह लग रहा था। टोप के फ़ीते को वह फाड़ चुका था और अब उसकी उंगलियां टोप के किनारे पर काम कर रही थीं। किसी वायलिन-वादक की तरह उसकी उंगलियों का नृत्य चल रहा था। जब लोगों ने उससे कहा कि चाहे तो वह अपनी सफ़ाई दे सकता है तो बड़ी मुश्किल से वह उठ खड़ा हुआ और बोला:

"मैं दया की भीख मांगता हूं। हममें से कोई भी निष्पाप नहीं है। मुझे उस जगह से निकाल देने में न्याय नहीं होगा जहां मैंने तीस से ज्यादा बरस बिताये हैं और जहां मेरे पुरखों ने मेहनत-मज़दूरी की है!"

स्त्रियां भी निष्कासन-दंड के विरुद्ध थीं और अंत में फ़ास्का ने यह सुझाव दिया:

"मित्रो, मैं मानता हूं कि अगर हम उसे लुईजी की बीवी और बच्चे की परवरिश का भार सौंप दें तो उसे वाजिब जुर्माना होगा। लुईजी की कमाई के आधे हिस्से के बराबर रक़म जुज़ेप्पे कोंचेत्ता को देता रहे!"

इस बात पर काफ़ी बहस-मुबाहिसा हुआ, लेकिन आख़िर यही सज़ा बहाल रही और जुज़ेप्पे चिरोत्ता ने सोचा कि बस, सस्ते ही में छूट गये। असल में हर किसी को संतोष हुआ। उन्होंने सोचा कि हमने अपना मामला बिना अदालत का या तलवार का सहारा लिये, ख़ुद ही आपस में निपटा लिया। महाशय, हमें यह बिल्कुल पसंद नहीं कि हमारा मामला अख़बारों में आ जाय जिनकी भाषा में समझ में आनेवाले शब्द उतने ही इनेगिने रहते हैं जितने कि किसी बुड्ढे आदमी के मुँह में दांत। हम यह भी कैसे पसंद करें कि न्यायाधीश, जो कि हमारे लिये बिल्कुल अजनबी होते हैं और हमारी ज़िन्दगी को ज़रा भी नहीं जानते, हमारे बारे में इस तरह बोलें कि मानो हम जंगली आदमी हैं, और ख़ुद वे हैं देवदूत, जिन्होंने कभी शराब और मछली का मज़ा न लिया हो और न ही किसी औरत को छू लिया हो! हम सीधे-सादे लोग हैं और जीवन की ओर सीधी नज़र से देखते हैं।

आख़िर फ़ैसला यही हुआ कि जुज़ेप्पे चिरोत्ता लुईजी की बीबी तथा बच्चे की परवरिश की ज़िम्मेदारी उठाये। लेकिन मामला यहीं ख़तम नहीं हुआ। लुईजी को पता चला कि चिरोत्ता ने झूठ कहा था और उसकी बीबी निरपराध थी। हमारी सज़ा की ख़बर भी उसने सुनी। तब उसने अपनी पत्नी को पत्र लिखकर अपने पास बुलाया।

"मेरे पास आओ और हम फिर से सुखी बन जायं," उसने लिखा। "उस आदमी से एक कौड़ी भी न लो और अगर तुमने पहले ही कुछ लिया हो तो उसे उसके मुंह पर फेंक मारो! मैंने तुम्हारे प्रति कोई अन्याय नहीं किया है। भला, मैं कैसे जानता कि वह आदमी प्यार जैसी बात में भी इतना झूठ बोल सकता है।"

चिरोत्ता को भी उसने एक ख़त लिखा:

"मेरे तीन भाई हैं और हम चारों जने प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि अगर तुम कभी भी टापू को छोड़कर कहीं जाओगे और सोरेन्तो, कास्तेल्लामारे, तोर्रे या ऐसी ही किसी जगह में दिखाई दोगे तो हम तुम्हें भेड़े की तरह मार डालेंगे। याद रखो! जसे ही हमें खबर मिलेगी कि तुम चल दिये, यक़ीन करो कि तुम्हारी मौत आ गई! यह उतना ही सच है जितने कि तुम्हारी बिरादरी के लोग ईमानदार सज्जन हैं। मेरी बीवी को तुमसे मदद लेने की ज़रा-सी भी ज़रूरत नहीं है। अरे, मेरा सुअर तक तुम्हारी रोटी को ठुकरा देगा। ज़िंदा रहो, लेकिन जब तक मैं न कह दूं, टापू को छोड़ जाने की हिम्मत न बांधो।"

कहते हैं कि चिरोत्ता इस चिट्ठी को लेकर हमारे न्यायाधीश के पास पहुंचा और उसने जानना चाहा कि क्या खून की धमकी देने के लिये लुईजी को जेल नहीं भेजा जा सकता है! और मानते हैं कि न्यायाधीश ने यों जवाब दिया:

"हां, हम ज़रूर उसे जेल भेज सकते हैं लेकिन तब उसके भाई निश्चय ही तुम्हारा खातमा कर डालेंगे। वे यहां आकर तुम्हारा खून कर डालेंगे। मेरी सलाह है कि तुम ज़रा सब्र कर लो। यही अच्छा होगा। आख़िर, गुस्सा प्यार जैसा नहीं होता, जो बहुत देर तक टिक जाय...."

हो सकता है कि न्यायाधीश ने ऐसा कहा हो। वह एक दयालु, बुद्धिमान सज्जन है और काफ़ी अच्छी कविता भी लिखता है, लेकिन मैं नहीं मानता कि चिरोत्ता उस चिट्ठी को लेकर उसके पास पहुंचा हो। नहीं यह कभी नहीं हो सकता; क्योंकि चिरोत्ता ईमानदार है और इस तरह का बेढंगा बर्ताव उससे कभी नहीं हो सकता। अगर कहीं उसके 'साथियों को पता लग जाय तो वे उसकी ऐसी हंसी उड़ाएंगे कि बेचारा पानी पानी हो जायगा।

महाशय, हम सीधे-सादे मज़दूर हैं, जीवन का हमारा अपना अलग रास्ता है, अलग कल्पनाएं हैं और अलग विचार भी। हमें पूरा अधिकार है कि जिस तरह चाहें, जो भी हमारी राय में सबसे अच्छा हो, उसी तरह हम रहें।

क्या कहा? समाजवादी? मेरे दोस्त, मैं मानता हूं कि हर मज़दूर जनम से ही समाजवादी है और हालांकि हम किताबी पंडित नहीं हैं तो भी सच्चाई को अच्छी तरह पहचान सकते हैं क्योंकि सच्चाई में हमेशा मज़दूर के पसीने की गंध रहती है!





ज्योवान्नी समाजवादी कैसे बना

पुराने अंगूर-बग़ीचे की झाड़ी में छिपे हुए सफ़ेद शराबख़ाने के किवाड़ के पास दो आदमी बैठे हुए हैं—रंगसाज़ विचेंत्सो और फ़िटर ज्योवान्नी। उनके सामने मेज़ पर शराब की सुराही है। यह मेज़ द्राक्ष-लता के चंदवे की छाया में रखी हुई है। द्राक्ष-लता में स्थान स्थान पर कोमल व्यूनोक फूल तथा नन्हे नन्हे चीनी गुलाब गुंथे हुए दिखाई देते हैं। रंगसाज एक नाटा, सांवला और दुबला-पतला आदमी है। उसकी काली काली आंखें स्वप्नदर्शी की-सी मंद मुसकान से प्रकाशित हैं और उसके सफाचट चेहरे के गहरे नीले रंग के बावजूद इस मुसकान के कारण उसके मुख पर सरल, बाल-सुलभ भाव झलकता है। उसका मुख नन्हा-सा, मधुर, किशोरी का-सा है और हाथ उसके लंबे हैं। उसकी चपल उंगलियां गुलाब के एक फूल के साथ खेल रही हैं। इस गुलाब

को वह अपने मोटे होंठों से लगा लेता है और अपनी आंखें मूंद लेता है।

"कौन जाने? हो सकता है," वह धीरे से कहता है। वह अपना लंबा-सा सिर हिलाता है और उसकी लाल-सी घुंघराली लटें उसके विशाल ललाट पर आ लटकती हैं।

"हां, भाई हां! जैसे जैसे उत्तर की ओर बढ़ते जाओ, लोग तुम्हें ज्यादा जिद्दी मिलेंगे!" यह ज्योवान्नी की पक्की राय है। ज्योवान्नी तगड़ा जवान है—बड़ा सिर, चौड़े कंधे और काले घुंघराले बाल। उसका चेहरा ताम्र-वर्ण है, नाक धूप के कारण कुछ काली पड़ी है और उसपर सफ़ेद रंग की चमड़ी की पतली-सी परत है। उसकी बड़ी बड़ी आंखें बैल की सौम्य आंखों के समान हैं। उसके बायें हाथ का अंगूठा ग़ायब है। उसका बोलना बहुत ही मंद है—बिल्कुल उसके हाथों की हरकतों की तरह। हाथ, मशीनी तेल तथा लोह-कणों से सने हुए हैं। टूटे नाखूनोंवाली अपनी सांवली अंगुलियों के बीच शराब का जाम पकड़े हुए वह खरज स्वर में कहता है:

"मिलन, तूरीन—ये बढ़िया कारखाने हैं जहां नये आदमी ढाले जा रहे हैं, जहां नई प्रवृत्ति का उदय हो रहा है! ज़रा राह देखो, कुछ ही समय में दुनिया ईमानदार और समझदार बन जायगी!"

"हां," छोटे-से रंगसाज ने कहा और सूर्य-किरण को पकड़ने के लिए अपना जाम ऊपर उठाते हुए उसने गाना शुरू किया:

यौवन की दुपहरी हमारी
सुखद धूप से भरी भली।
हाय! उष्णता मुरझायी वह
जहां हमारी आयु ढली॥

"मैं कहता हूं कि जैसे जैसे उत्तर की ओर बढ़ते जाओ, काम अधिक अच्छा मिलेगा। देखो, फ्रांसीसी लोग हमारे जितने आलसी नहीं हैं। उनके बाद आते हैं जर्मन। और आखिर रूसी—बस, इन्हें कहते हैं लोग!"

"जी हां!"

"इन दलित और पीड़ित लोगों ने अपनी आज़ादी और ज़िंदगी की बाज़ी लगाकर महान कार्य कर दिखाये। यह उन्हीं की बदौलत हो सका कि सारे पूरब में नवजीवन का संचार हुआ।"

"सच्ची वीर-भूमि है रूस!" अपना सिर नवाते हुए रंगसाज़ ने कहा। "काश! मैं वहां रहता ..."

"तुम!" अपने हाथ से घुटने पर थपकी मारते हुए फ़िटर चिल्लाया।

"अरे, तुम वहां एक हफ़्ते के अंदर बरफ़ का ढेर बन जाते!"

दोनों जने खुलकर हंस पड़े।

उनके चारों ओर नीले तथा सुनहरे फूल खिले थे, हवा में सूर्य-किरणें थिरक रही थीं, शीशे की सुराही में बादामी मदिरा चमचमा रही थी और दूर से सागर की अस्पष्ट ध्वनि लहराती हुई आ रही थी।

"प्यारे विंचेंत्सो," फ़िटर ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम कविता में बयान करो कि मैं समाजवादी कैसे बना। तुम्हें मालूम है न वह क़िस्सा?"

"नहीं जी," जाम में शराब उंडेलते हुए और उस अरुण प्रवाह को निहार कर मुस्कुराते हुए रंगसाज़ ने कहा। "तुमने मुझे कब बताया? अरे, तुम्हारी यह खाल तुम्हारी हड्डियों पर इतनी ठीक बैठती है, मानो तुम उसी के साथ पैदा हुए थे!"

"मैं पैदा हुआ बिल्कुल तुम्हारी तरह और दूसरे सभी लोगों की

तरह—नंगा और मूरख। अपनी जवानी में मैंने किसी धनी औरत के साथ व्याह करने के सपने देखे। जब मैं फ़ौज में था, मैंने अफ़सर बनने के लिए सख़्त मेहनत की। उस वक़्त मेरी उम्र तेईस साल की थी, जब मैं महसूस करने लगा कि दुनिया में सब कुछ ठीक नहीं है और मूरख ही बने रहना शर्म की बात है!"

रंगसाज़ ने मेज़ पर अपनी केहुनियां टेकीं, सिर उठाया और ताकने लगा पहाड़ी की ओर तथा उसकी चोटी पर झूमते हुए विशाल देवदारों की ओर।

"मेरी कंपनी को बलोन्या भेजा गया। वहां के किसानों ने हलचल मचा रखी थी। कुछ की मांग थी कि मालगुज़ारी घटायी जाय जबकि दूसरों का कहना था कि मज़दूरी बढ़ायी जाय। मेरी राय में दोनों ग़लती कर रहे थे। ज़मीन की मालगुज़ारी घटाना और मज़दूरी बढ़ाना, मेरे मत में नामुनासिब था। अरे, ज़मीनदार इससे बरबाद न हो जाते? मुझ जैसे शहरी को यह सरासर बेवक़ूफ़ी और बेअक़्ली महसूस हुई। अलावा इसके, मुझपर बड़ा ग़ुस्सा सवार हुआ था। आख़िर, सब्र की भी हद होती है। तेज़ गरमी, बराबर इधर से उधर और उधर से इधर आना-जाना, और रात की पहरेदारी—क्योंकि वे आदमी ज़मीनदारों की मशीनों को तोड़-फोड़ रहे थे, अनाज में आग लगा रहे थे और ऐसी हर चीज़ को तहस-नहस किये जा रहे थे जो उनकी अपनी नहीं थी।"

उसने थोड़ा थोड़ा करके अपनी शराब को पी लिया और फिर नये जोश के साथ अपनी कहानी आगे चलायी:

"वे भेड़-बकरियों के गल्लों की तरह बड़ी बड़ी टोलियां बनाकर खेतों में घूमे—व्यस्त, झल्लाये हुए और ख़ामोश। हमने उनको तितर-बितर किया अपनी संगीनें दिखाकर और कभी कभी अपनी बंदूक़ों के

कुंदों से धक्के मारकर। लेकिन वे घबड़ाये नहीं, बल्कि धीरे धीरे तितर-बितर हो गये और फिर इकट्ठा हुए। यह मामला लंबी उपासना की तरह बड़ा ही नीरस रहा और बुखार की तरह दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया। हमारे कार्पोरल अब्रुत्से-निवासी लुओतो को, जो कि खुद भी एक किसान है, यह सारा मामला बुरी तरह से चुभ गया। वह दुबला-पतला होता गया और उसके चेहरे पर खिन्नता छा गयी।

"'यह बुरी बात है, मेरे बच्चो!' वह कहा करता। 'ऐसा लगता है कि हमें अपनी बंदूक़ों से काम लेना होगा, छी! छी!!'

"उसकी रटन ने हमें अधिक उत्तेजित किया, और आग में तेल उंड़ेला उन ज़िद्दी किसानों ने जो हर कोने में से, हर पहाड़ी पर से और हर पेड़ पर से हमारी ओर गुस्सा भरी आंखों से घूर रहे थे। स्वाभाविक ही था कि उनके मन में हमारे बारे में ज़रा-सा भी मित्र-भाव नहीं था।"

"पियो!" दुबले-पतले विंचेंत्सो ने एक लबालब भरा जाम अपने मित्र की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"धन्यवाद, अब पियें दृढ़ विश्वासी आदमियों की सेहत के लिए!" फ़िटर ने कहा। उसने पूरा जाम मुंह में उंड़ेल दिया, हाथ से मूंछों को पोंछ लिया और कहानी आगे चलायी:

"एक दिन मैं ज़ैतून-कुंज के पासवाली पहाड़ी पर खड़ा पेड़ों की रखवाली कर रहा था—क्योंकि किसान हर मौक़ा पाकर उन्हें तहस-नहस कर रहे थे। दो किसान, जिनमें से एक बुड्ढा था और दूसरा जवान था, पहाड़ी की तलेटी में एक खाई खोद रहे थे। तेज़ गरमी थी। अंगार बरस रहे थे। यह ऐसा दिन था जब आदमी सोचता है कि काश, मैं मछली होता! आखिर मैं उकता गया और गुस्सा भरी नजर से उनकी ओर देखता रहा। मध्याह्न के समय उन्होंने काम बंद किया और कुछ

डबल-रोटी, पनीर और शराब की एक सुराही निकाल कर वे खाना खाने बैठे। शैतान तुम्हारा सत्यानास करे, मैंने अपने मन में सोचा। यकायक उस बुड्ढे ने, जिसने अब तक मेरी ओर एक बार भी नहीं देखा था, लड़के से कुछ कहा। लड़के ने सिर हिलाया और बुड्ढा सख्त आवाज़ में चिल्ला उठा:

"'जाओ! मैं जो कहे देता हूँ!'

"वह युवक शराब की सुराही लिये मेरे पास आया और ज़रा नाराज़गी से ही बोला—'मेरे पिताजी सोचते हैं कि तुम्हें प्यास लगी है और इसलिए तुम्हें कुछ शराब देना चाहते हैं!'

"बात अजीब थी, लेकिन मज़ेदार भी थी। मैंने शराब लेने से इन्कार कर दिया और गर्दन हिलाकर बुड्ढे को धन्यवाद दिया; लेकिन उसने आकाश की ओर देखते हुए कहा:

"'पीजिये, महाशय, पीजिये! हम यह उपहार आदमी को दे रहे हैं, सिपाही को नहीं। हमें बिल्कुल उम्मीद नहीं है कि यह शराब सिपाही को नरमदिल बना दे।'

"'धिक्कार है तुम्हें! क्यों डंक मार रहे हो!' मैंने अपने आप से कहा और एक घूंट शराब पीकर उनको धन्यवाद दिया। उधर वे खाना खाने लगे। थोड़ी ही देर में ऊगो—जो कि सालेरनो का रहनेवाला है—मुझे छुट्टी देने आया और मैंने उससे कह दिया कि ये दोनों किसान भले आदमी हैं। उसी दिन शाम को जब मैं मशीनों के शेड के किवाड़ के पास खड़ा था, शेड के छप्पर पर से कुछ खपड़े खिसक पड़े। एक मेरे सिर पर गिरा और दूसरा बायें कंधे पर। सिर में विशेष नहीं लेकिन कंधे पर बुरी तरह चोट आयी, जिससे मेरा हाथ सुन्न पड़ गया।"

फ़िटर मुंह को पूरा खोलकर और आंखों को सिकोड़कर ज़ोरों से हंस पड़ा।

"उन दिनों तथा उस स्थान पर," हंसते हंसते उसने कहा, "खपड़ों, पत्थरों और लाठी-काठियों में भी जीवन का संचार हुआ था और इन बेजान कहलानेवाली चीज़ों के ऊधम ने हमारे सिरों को कई अच्छे खासे गुमटों से सजा दिया था। सिपाही कहीं जा रहा हो या चुपचाप खड़ा हो, यकायक ज़मीन में से कोई लाठी उग आती और उसकी ख़ासी मरम्मत कर देती, या आसमान से उसके सिर पर कोई पत्थर टपक पड़ता। बेशक, इसने हमें आग बना दिया।"

दुबले-पतले रंगसाज़ की आँखों में दुःख की छाया नज़र आयी, उसका चेहरा फीका पड़ गया और उसने धीरे से कहा:

"ऐसी बातें सुनना हमेशा ही बड़ा लज्जाजनक होता है..."

"लेकिन करें क्या? लोग सबक़ सीखने में बड़े सुस्त होते हैं। खैर, मैं अपनी कहानी आगे चलाऊं। हां, तब मैं मदद के लिए चिल्लाया। मुझे एक घर में ले जाया गया जहां पर हमारा एक साथी पड़ा हुआ था। पत्थर की मार से उसका चेहरा फट गया था और जब मैंने उससे पूछा कि यह कैसे हुआ तो मुंह ऐंठा कर मुस्कुराते हुए उसने कहा:

"'क्या कहूँ, दोस्त! एक बुढ़िया ने, सफ़ेद बालोंवाली एक डाइन ने मुझपर वार किया और तब खुद अपने को मार डालने के लिए मुझे ललकारा!'

"'तो क्या उसे गिरफ़्तार नहीं किया गया?' मैंने उससे पूछा।

"'जी नहीं। मैंने कह दिया कि मैं खुद ही फिसलकर गिर गया और मुझे चोट आयी। हां, यह सही है कि कमांडर ने मेरी बात में

विश्वास नहीं किया। यह सही है कि उसने मेरी ओर घूरकर देखा, लेकिन मैं यह कैसे कह देता कि एक बुढ़िया ने मुझे घायल कर दिया? शैतान कहीं के! लेकिन उनकी ज़िंदगी बड़ी मुश्किल है और मैं समझ सकता हूँ कि वे क्यों हमसे दुश्मनी करते हैं।'

"'तो यह बात है,' मैंने सोचा। फ़ौरन वहां एक डाक्टर आ गया और उसके साथ दो महिलायें। इनमें से एक बहुत ही सुंदर थी और बाल उसके सुनहरे थे। मेरा ख्याल है कि वह वेनिस की रहनेवाली थी। दूसरी के बारे में मुझे कुछ याद नहीं आता। उन्होंने मेरे कंधे की जांच की—यह बिल्कुल मामूली-सी बात थी—और घाव पर पट्टी बांध कर चल दीं।"

फ़्रिटर ने भौंहें चढ़ायीं, खामोश हुआ और हाथ पर हाथ रगड़ लिया। उसके मित्र ने फिर गिलास भर दिया। शराब उंड़ेलते समय उसने सुराही को ऊंचा उठाया जिससे गिलास में गिरनेवाली लाल लाल मदिरा-धारा हवा में थिरकती-सी दिखाई दी।

"मैं और मेरा साथी खिड़की के पास बैठे थे," फ़्रिटर ने कुछ उदासी के साथ आगे कहना शुरू किया। "हम धूप को टालकर सायादार जगह में बैठे थे और हमने उस सुनहरे बालोंवाली सुंदरी की मीठी आवाज़ सुनी। वह और उसकी सहेली डाक्टर के साथ बग़ीचे में घूम रही थीं। वे फ़्रांसीसी भाषा में बोल रहे थे जो कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

"'तुमने उसकी आँखें देखीं!' मैंने उसे यह कहते हुए सुना। 'बेशक, वह भी एक किसान है और शायद जब वह अपनी वर्दी उतार देगा तब वह भी सही सही समाजवादी दिखाई देगा। ज़रा सोचो तो—ऐसी आँखोंवाले लोग सारे संसार को जीतना चाहते हैं, हर चीज़ को बदल डालना चाहते हैं, हम सबको भगा भगा कर बरबाद करना

चाहते हैं। और यह सब चल रहा है किसी अंधे, रूखे न्याय के नाम पर!'

"'मूरख बच्चे,' डाक्टर ने कहा, 'ये तो आधे बच्चे हैं और आधे जानवर।'

"'हाँ, जानवर कहना ठीक है! लेकिन उनमें लड़कपन क्या है?'

"'वही, सार्वत्रिक समता के सपने...'

"'हां, ज़रा सोचिये तो,' सुंदरी बोली, 'मेरी बराबरी करेगा कौन? एक वह बैल की-सी आँखोंवाला और दूसरा चिड़िया जैसे चेहरेवाला! ऊंह! हम सब–आप, मैं, मेरी सहेली–इन कमीनों के बराबर गिने जायंगे! ये कंबख़्त तो ऐसे हैं कि अपने ही लोगों के गले पर छुरी फेरने के लिए तैयार होंगे, अपने ही जैसे प्राणियों...'

"वह बहुत कुछ बकती गयी, और काफ़ी जोश के साथ बकती गयी। मैंने उसकी बातों को सुन लिया और दिल में सोचा–'ओहो, यह महाशया!' मैंने उसे पहले देखा था, और तुम तो जानते ही हो कि कोई सिपाही किसी स्त्री के बारे में कैसे भावुकतापूर्ण सपने देखता है। स्वाभाविक ही था कि मैंने उसे सदय तथा सहृदय समझ लिया और साथ साथ चतुर भी। क्योंकि उन दिनों मैं मानता था कि सभी उच्चवर्गीय लोग निश्चय ही अतिचतुर होते हैं।

"मैंने अपने साथी से पूछा कि उनकी बातों को वह समझ सका या नहीं। लेकिन वह फ़्रांसीसी भाषा नहीं जानता था। और जब मैंने उसको सुनहरे बालोंवाली उस सुंदरी की बात समझा दी तो वह आगबबूला हो गया। वह एकदम उठ खड़ा हुआ और कमरे में चहलक़दमी करने लगा। उसकी आँखें–या यों कहिये कि आँख, क्योंकि उसकी एक आँख पर पट्टी बंधी हुई थी–चमक रही थीं।

"'सो, यह है दुनिया!' उसने क्रोधावेग में कहा।' वह मुझसे काम तो लेती है लेकिन मुझे इन्सान नहीं समझती! मैं उसके लिए अपमान सहता हूँ लेकिन वह मेरे आत्म-सम्मान को कुचलती जाती है। वह मुझे मानवीय मानमर्यादा के योग्य नहीं मानती। उसकी जायदाद की हिफ़ाज़त के लिए मैं अपनी आत्मा को खो बैठूं...'

"वह कोई मूर्ख आदमी नहीं था और उसे उक्त बात से घोर अपमान महसूस हुआ। मुझे भी ऐसा ही लगा। दूसरे दिन, शब्दों की नाप-तौल न करते हुए हमने खुल्लमखुल्ला उस स्त्री के बारे में बातचीत की। लुओतो सिर्फ़ दबी आवाज़ में कुछ बुदबुदाया और हमें सावधान रहने की सलाह दी।

'भूलो नहीं, मेरे बच्चो, तुम सिपाही हो और तुम्हें अनुशासन का ख्याल रखना है!'

"हम उसे नहीं भूले थे। लेकिन उस दिन के बाद हममें से कई लोग, और सच कहें तो लगभग सब के सब, बहरे तथा अंधे बन गये और उन भले किसानों ने हमारी अचानक दुर्बलताओं से फ़ौरन फ़ायदा उठाया। उन्होंने अपनी लड़ाई जीत ली। वे हमारे प्रति बहुत ही मैत्रीपूर्ण बरताव करने लगे। सुनहरे बालोंवाली उस सुंदरी को उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिये था। उदाहरणार्थ, वे उसे ज़रूर सिखा देते कि ईमानदार लोगों के साथ किस तरह पेश आना चाहिये। आखिर जब हम उस स्थान से हट गये जहां हम खूनखराबी के मक़सद से आये थे, तो हममें से कइयों को फूलों के उपहार मिले। देहात की सड़क पर से जब हम गुज़रने लगे तो, सुनो मेरे दोस्त, उन्होंने हम पर फूल बरसाये—पत्थर और खपड़े नहीं! मैं मानता हूँ कि हम उन फूलों को पाने के क़ाबिल बन गये थे। ऐसी सुंदर विदाई को पाकर हम उस अमैत्रीपूर्ण अगवानी को भूल गये!"

वह हंस पड़ा और फिर बोला—"सो विंचेंत्सो, बनाओ इस प्रसंग पर कविता!"

विचारपूर्ण मुस्कुराहट के साथ रंगसाज़ ने उत्तर दिया:

"जी हाँ, सचमुच यह कविता के योग्य विषय है। मैं जरूर इसपर एक कविता लिखूंगा। जब आदमी पचीसी को लांघ जाता है तब भावगीत आसानी से नहीं लिखे आते।"

उसने हाथ में का फूल, जो अब मुरझा गया था, एक ओर फेंक दिया, दूसरा एक फूल तोड़ लिया और कंधों के ऊपर से नज़र दौड़ाते हुए हल्की आवाज़ में बात आगे चलायी:

"आदमी जब माता के वक्ष से अपनी प्रेयसी के वक्ष तक की यात्रा कर चुका हो तब उसे अलग प्रकार के सुख की कामना करनी चाहिये।"

फ़िटर ने कुछ भी नहीं कहा सिर्फ़ अपने गिलास को ज़रा-सा हिलाया जिससे मदिरा में कंपन पैदा हुआ। उधर नीचे की ओर सागर की मंद छलछलाहट सुनाई दे रही थी और गरम हवा में फूलों की सुगंध तैर रही थी।

"यह सब सूरज की कृपा है जो हम इतने आलसी और नरम होते हैं।" फ़िटर ने कहा।

"अब मैं अच्छा भावगीत बिल्कुल नहीं लिख सकता। मैं ख़ुद अपने ही से बहुत नाराज़ हूँ," अपनी नाज़ुक भौंहों को सिकोड़ते हुए विंचेंत्सो ने कहा।

"क्या तुमने कुछ बनाया?"

रंगसाज़ ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

"जी हाँ," आखिर उसने कहा "कल ही कोमो होटल की छत पर।"

इतना कहकर वह कोमल, लयबद्ध स्वर में सुनाने लगा:

सूना है तट, सांध्य शरद रवि कोमल किरण-करों से।
लें रहा विदा प्राचीन, तटस्थित, भूरी चट्टानों से॥
कृष्ण शिला-खंडों पर जाकर गिरती भूखी लहरें।
सूरज को नहलाती जल में शीतल, नीले, गहरे॥

ताम्र-वर्ण के पत्ते झड़ कर शरद वायु के बल से।
फेनिल जल में तिरते जगमग पक्षि-शवों के जैसे॥
दु:खित, फीका नभ निहारता क्रोधातुर सागर को।
केवल रवि मुसकाता जाता निज विश्राम-स्थल को॥

दोनों देर तक मौन रहे। रंगसाज़ ने सिर नवाकर भूमि की ओर देखा। मोटे-ताज़े फ़िटर के मुख पर मुस्कुराहट दौड़ी। फिर वह बोला:

"कई बातों के बारे में अच्छे गीत लिखे जा सकते हैं लेकिन सबसे श्रेष्ठ गीत होगा मानव के बारे में गाया हुआ गीत, अच्छे इन्सान का गीत!"





भाई और बहन

होटल के बरामदे पर द्राक्ष-लताओं के गहरे हरे परदे में से छन छन कर सूर्य-प्रकाश की स्वर्ण-वर्षा हो रही है—हवा में सोने के डोरे से पड़े हुए हैं। भूरे पटियादार फ़र्श पर और सफ़ेद मेज़पोशों पर कई प्रकार की ऐंद्रजालिक छायाकृतियां दिखाई देती हैं और ऐसा लगता है कि देर तक लगातार देखते रहें तो इन आकृतियों को उसी तरह पढ़ सकेंगे जिस तरह किसी कविता को। सूर्य-प्रकाश में अंगूरों के गुच्छे मोतियों की तरह या विचित्र धुंधले ऑलिवीन रत्न की तरह चमकते हैं और मेज पर रखी हुई पानी की सुराही में नील-हीरक जगमगाते हैं।

मेज़ों के बीच फ़र्श पर एक छोटा-सा लेसदार रूमाल पड़ा हुआ है। निश्चय ही वह एक स्त्री के हाथ से गिरा है और उसके दिव्य सुंदरी होने में कोई संदेह नहीं है। इसके विपरीत हो ही नहीं सकता।

मस्ती भरी गरमी के निर्मल दिन में कुछ और सोचा भी कैसे जा सकता है? यह ऐसा दिन है जब हर मामूली चीज़ सूरज के प्रताप के आगे अदृश्य हो जाती है—मानो लज्जित होकर अपना मुंह छिपा लेती हो!

चारों ओर शांति फैली हुई है और सुनाई देती है केवल बग़ीचों की चिड़ियों की चहक, फूलों पर मंडरानेवाली मधु-मक्खियों की गुन-गुन और पहाड़ियों के किसी अंगूर-बाग़ से लहराकर आते हुए गीत की अस्पष्ट आवाज़। गानेवाले दो जने हैं—एक पुरुष और एक स्त्री, और गीत की प्रत्येक कड़ी के बाद वे एक मिनट मौन रहते हैं। यह मौन उनके गीत को भावपूर्णता और प्रार्थना-गीत की विशिष्ट गरिमा प्रदान करता है।

और इसी समय एक स्त्री बग़ीचे में से धीरे धीरे संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आती दिखाई देती है। ढली हुई उम्र, काफ़ी लंबा क़द, सांवला कठोर चेहरा, सिकुड़ी हुई भौंहें और कसकर भिंचे हुए होंठ—मानो अभी किसी बात पर "ना!" कह दिया हो! अपने दुबले कंधों पर उसने बिना आस्तीन के लबादे की तरह एक चौड़ी रेशमी ओढ़नी पहन रखी है, जिसका रंग सुनहरा है और जिसकी किनारी में लेस लगा हुआ है। लेसदार काला गुलूबंद उसके छोटे-से सफ़ेद सिर पर लिपटा हुआ है। उसके एक हाथ में लंबी मुठिया वाली लाल छतरी है और दूसरे हाथ में काला मख़मली बटुआ, जो चांदी के तारों से कढ़ा हुआ है। सूर्य-किरणों के झीने झीने जाल में से वह सिपाही का-सा दृढ़ पदन्यास करती है और बरामदे के पटियादार फ़र्श पर उसकी छतरी ज़ोरों से खटखटाती है। पार्श्व से उसका चेहरा और भी कठोर दिखाई देता है। नाक चोंचदार है, पतली-सी ठुड्डी पर बड़ा-सा भूरा मस्सा है, ललाट

आँखों के काले काले गड्ढों पर उभड़ा हुआ है और इन गड्ढों के अंदर, बारीक झुर्रियों के जाल में आँखें छिपी हुई हैं। ये आँखें इतनी अंदर धंसी हुई हैं कि वह स्त्री अंधी-सी दिखाई देती है।

इस स्त्री के पीछे पीछे एक ठिंगनी कुबड़ी मूरत बत्तख की तरह डगमगाती हुई चली आती है। इसके झुके हुए बड़े सिर पर नरम सफ़ेद हैट है। इसके हाथ अपनी वास्कट की जेबों में छिपे हुए हैं, जिससे यह व्यक्ति और भी चौड़ा तथा कोनेदार दिखाई देता है। उसने सफ़ेद सूट तथा नरम तलुएवाले सफ़ेद बूट पहन रखे हैं। शारीरिक विकृति के कारण, उसका मुंह अवखुला रहता है और उसके पीले. टेढ़ेमेढ़े दांत दिखाई देते हैं। उसके ऊपरवाले होंठ पर काली, विरल और रूखी मूंछें खड़ी नज़र आती हैं। वह जल्दी जल्दी सांस लेता है और उस समय उसको पीड़ा होती है। उसकी नाक थरथराती है लेकिन मूंछें बिल्कुल नहीं हिलतीं। चलते समय उसके पैर बुरी तरह से उलझते हैं और उसकी बड़ी बड़ी निस्तेज आँखें ज़मीन पर टिकी रहती हैं। उसका नाटा-सा शरीर कई बड़ी बड़ी वस्तुओं से विभूषित है: बायें हाथ की अनामिका में सोने की बड़ी जड़ाऊ अंगूठी है, घड़ी की चेन का काम देनेवाले काले फ़ीते के सिरे में एक बड़ा-सा स्वर्ण-पदक लटक रहा है जिसमें दो लाल जड़े हुए हैं और उसकी नीली टाई में अशुभकारी पोलकी रत्न लगा हुआ है जो आकार में बहुत बड़ा मालूम होता है।

बरामदे में एक और मूरत प्रवेश करती है। यह भी एक वृद्धा है–नाटा, गोल-मटोल शरीर, आरक्त सौजन्यपूर्ण चेहरा और प्रसन्न आँखें–बड़ा ही आनंदी तथा वाचाल जीव लगता है यह।

ये लोग बरामदे को लांघ कर होटल में प्रवेश करते हैं–बिल्कुल होगार्थ द्वारा बनाये गये चित्र की आकृतियों की तरह :– बेढ़ब,

दुखी तथा हास्यजनक, और देदीप्यमान सूर्य-किरणों से प्रकाशित धरती की हर वस्तु के इतने विपरीत कि इनके अमंगल दर्शन से सारा संसार मंद तथा आभाहीन बनता हुआ दिखाई देता है।

दोनों जने हालैंड के रहनेवाले हैं, भाई-बहन हैं और एक जौहरी तथा बैंकर की संतानें हैं। मज़ाक़ में उनके बारे में जो बात बतायी जाती है उसका यदि विश्वास करें तो उनका इतिहास बड़ा विचित्र है।

बचपन में यह कुबड़ा शांत, लजीला तथा विचारशील था और खिलौनों तथा खेलकूद के बारे में बिल्कुल बेपरवाह। इस बात की ओर बहन को छोड़कर और किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया। उसके मां-बाप ने समझा कि उस दुर्दैवी जीव के लिए यह बरताव स्वाभाविक ही है लेकिन छोटी लड़की, जो कि अपने कुबड़े भाई से चार साल बड़ी थी, उसके अजीब बरताव से व्यथित हुई।

वह लगभग सारा समय उसी के साथ गुज़ारती और उसका मन बहलाने का, उसे हंसाने का प्रयत्न करती। बहन उसके लिए खिलौने ला देती और वह उन्हें पिरामिड की शकल में एक के ऊपर एक रख देता। वह शायद ही कभी मुस्कुराता और यह भी अनिच्छा से; आम तौर पर वह बहन की ओर उसी आभाहीन और भावहीन दृष्टि से देखता जिससे वह अपने आसपास की हर चीज़ की ओर ताकता रहता। इस नज़र से बहन चिढ़-सी जाती।

"मेरी ओर इस तरह मत देखो; बड़े होकर तुम मूरख बन जाओगे!" पैर पटक कर वह चिल्ला उठती। वह उसे चिकोटी काटती, थप्पड़ मारती और वह ठुनकता हुआ अपने सिर को बचाने के लिए अपने लंबे लंबे हाथ ऊपर उठा लेता; लेकिन वह बहन के पास से कभी भागता नहीं और न ही किसी के पास जाकर बहन की शिकायत करता।

वाद में, जब वहन ने सोचा कि जो बात खुद उसके लिए अत्यंत स्पष्ट है उसे उसका भाई समझ ही लेगा तव उसने कुवड़े के साथ तर्क करने का प्रयत्न किया:

"तुम कुरूप हो और इसी लिये तुम्हें चतुर बनना चाहिये, नहीं तो हमें—पिताजी को, माताजी को और सभी को—तुम्हारे बारे में बड़ी शरम लगेगी! पंगु बालकवाले रईस के यहां काम करने में नौकर-चाकर तक शरम करेंगे। रईस के घर में सब कुछ या तो सुंदर होना चाहिए या चतुर, समझे?"

"जी हां" अपने विशाल सिर को एक ओर झुकाते हुए और अपनी मंद, निर्जीव नजर वहन पर गड़ाते हुए कुवड़े ने गंभीरता पूर्वक उत्तर दिया।

अपने भाई के प्रति उस लड़की का व्यवहार देखकर माता-पिता को प्रसन्नता हुई, कुवड़े की उपस्थिति में उन्होंने वेटी की सहृदयता की प्रशंसा की और धीरे धीरे यह लड़की अपने छोटे कुवड़े भाई की मानी हुई साथिन वन गई। उसने भाई को खिलौनों का उपयोग करना सिखाया, पढ़ाई में उसकी मदद की और उसे राजकुमारों तथा परियों की कहानियां पढ़ सुनायीं।

लेकिन वह वरावर अपने खिलौनों के ऊंचे ऊंचे ढेर लगाता, मानो किसी अज्ञात विन्दु तक पहुंचने का प्रयत्न कर रहा हो। पढ़ाई में वह तनिक भी रस नहीं लेता। सिर्फ़ परी-कथाओं के पात्रों की अद्‌भुत कृतियों को सुनकर उसके होंठों पर मंद मुस्कुराहट दौड़ जाती। एक दिन उसने अपनी वहन से पूछा:

"क्या कभी राजकुमार भी कुवड़े होते हैं?"

"नहीं।"

"और सरदार?"

"बेशक नहीं!"

लड़के ने शांत आह भरी और बहन ने उसके लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुए कहा:

"लेकिन होशियार जादूगर हमेशा कुबड़े होते हैं।"

"तब मैं जादूगर ही बनूंगा," लड़के ने विनीत भाव से कहा और जरा-सा रुककर कुछ विचार करते हुए उसने पूछा:

"परियां तो अकसर सुंदर हुआ करती हैं न?"

"जी, हमेशा!"

"तुम्हारी तरह?"

"शायद! लेकिन मैं सोचती हूं कि मुझसे भी सुंदर," बहन ने ईमानदारी के साथ कहा।

जब यह लड़का आठ साल का हुआ तो उसकी बहन ने देखा कि जब कभी वे पैदल या किसी सवारी पर ऐसे स्थानों के पास से होकर जाते जहां पर नये मकान बन रहे हों, तो इस बालक का चेहरा आश्चर्य से पुलकित हो उठता, काम करनेवाले मजदूरों की ओर वह एकटक निहारता रहता और फिर प्रश्नार्थक मुद्रा से बहन की ओर देखने लगता।

"इसमें तुम्हें मजा आता है?" बहन ने एक बार पूछा।

"हां," भाई ने उत्तर दिया।

"क्यों?"

"मालूम नहीं।"

लेकिन एक दिन उसने स्पष्ट कर दिया:

"इतने छोटे आदमी और इतनी इतनी-सी ईंटें, लेकिन कैसे बड़े बड़े मकान बना रहे हैं। क्या हमारा सारा शहर इसी तरह बनाया गया है?"

"वेशक।"

"हमारा मकान भी?"

"विल्कुल इसी तरह।"

भाई की ओर देखते हुए वहन ने दृढ़तापूर्वक कहा:

"तुम वड़े होकर प्रसिद्ध शिल्पकार वन जाओगे!"

घरवालों ने उसके लिए लकड़ी के वहुत-से ठप्पे ला दिये और तव से लड़के के मन में मकान वनाने की तीव्र भावना प्रज्वलित हो उठी। लगातार कई दिन वह चुपचाप अपने कमरे के फ़र्श पर वैठा हुआ लंवी लंवी मीनारें वनाता रहा। जव वे धड़ाम से धराशायी हो जातीं तो फिर से उसका निर्माण-कार्य आरंभ हो जाता। यह वात उसके लिए इतनी आवश्यक वन गयी कि भोजन के समय भी वह छुरियों, कांटों तथा गोल नैपकिन-दानों से कुछ न कुछ वना लेने का प्रयत्न करता। उसकी आंखें अधिक गंभीर तथा एकाग्र हो गयीं, उसके हाथों में नवजीवन का संचार होकर वे सदैव किसी न किसी काम में मग्न रहने लगे, और उसकी अंगुलियां पहुंच के अंदर की प्रत्येक वस्तु की जांच-पड़ताल करने लगीं।

अव, शहर का चक्कर लगाते समय वह घंटों नये मकानों को वनते हुए निहारता रहता, उन्हें धीरे धीरे आकाश की ओर उन्नत होते हुए देखता रहता। थरथराते हुए नथुनों के साथ वह ईंटों की वुकनी को तथा खौलते हुए चूने की गंध को लालची की तरह सांसों में भर लेता। उसकी आंखें भारी हो जातीं, उनपर स्वप्नमयी विचारमग्नता का पटल छा जाता और जव उससे कहा जाता कि उस तरह खड़े रहकर ताकना ठीक नहीं है, तो वह सुनी अनसुनी कर देता।

"चलो!" उसका हाथ खींचते हुए वहन आग्रह करती।

वह सिर झुकाकर चलने लगता लेकिन वरावर मुड़ मुड़कर देखता जाता।

"तुम शिल्पकार वनोगे न?" वहन उससे वार वार पूछ लेती।

"हां, हां।"

एक दिन खाना खाने के वाद ये लोग दीवानखाने में कॉफ़ी के इंतज़ार में वैठे हुए थे। इस समय पिता ने कहा कि अव वच्चे को खिलौनों से हटाकर पढ़ने-लिखने में लगा देना चाहिए; लेकिन वहन ने अधिकार के स्वर में पूछा:

"पिताजी, आप उसे किसी स्कूल में भरती कर देने की तो नहीं सोच रहे हैं?"

पिताजी ने चुरुट जलाया। विशालकाय और सफ़ाचट चेहरेवाले इस व्यक्ति के वदन पर जगह जगह कई जवाहरात जगमगा रहे थे।

"और क्यों न उसे स्कूल भेजा जाय?" उन्होंने पूछा।

"आप तो भली भांति जानते हैं।"

चूंकि पिता-पुत्री के वीच कुवड़े के वारे में वातचीत चल रही थी इसलिए वह दीवानखाने से वाहर चला गया और जाते जाते उसने वहन को यह कहते हुए सुना:

"देखिये, हर कोई इसकी हंसी उड़ायगा!"

"हां, तुमने ठीक कहा!" शरत्कालीन हवा की तरह ठंडी और तर आवाज़ में मां ने कहा।

"ऐसे लोगों को तो औरों की निगाह से वचाकर रखना चाहिए!" वहन ने भावुकता के साथ कहा।

"हां, आखिर उसमें अभिमान करने जैसा है भी क्या?" मां ने हामी भरी। "कैसी चतुर है मेरी विटिया!"

"तुम्हारा कहना शायद सही है!" पिता ने स्वीकार किया।

"ओह, कितनी चतुर..."

बरामदे में से मुड़कर कुबड़े ने कहा:

"मैं भी कोई वुद्धू नहीं हूं, समझे..."

"आगे चलकर पता चलेगा ही," पिता ने कहा और मां बोली:

"तुम्हें कौन बुद्धू मानता है, रे..."

"तुम घर ही पर पढ़ोगे," भाई को अपने पास बैठाते हुए बहन ने कहा। "शिल्पकार के लिए आवश्यक सारी बातें तुम सीख जाओगे। तुम्हें पसंद है न?"

"हां, तुम देख लेना।"

"मैं क्या देख लूं, रे?"

"यही कि मुझे क्या पसंद है।"

भाई की अपेक्षा बहन का क़द कोई आधा बित्ता लंबा था लेकिन भाई को उसके आगे और सब लोग बिल्कुल छोटे लगते थे—माता और पिता भी। उस समय वह पंद्रह साल की थी। भाई था केकड़े जैसा और बहन थी छरहरी, सुडौल और स्वस्थ। कुबड़े को वह सुंदर परी जैसी लगती, जिसने खुद उसपर और सारे घर पर जादू-सा फेर दिया हो।

अब कई उदासीन तथा शिष्ट लोग अकसर कुबड़े के पास आने लगे। ये उसे कुछ न कुछ सिखाने की कोशिश करते, उसको प्रयत्नपूर्वक समझाते रहते और सवाल भी पूछ लेते; लेकिन वह निःसंकोच कह देता कि इन अध्यापकों की कुछ भी बात उसकी समझ में नहीं आती और अपने ही विचारों में डूबा हुआ, वह उदासीन दृष्टि से कहीं और ताकता रहता। यह स्पष्ट था कि उसके विचार किसी और ही संसार में भ्रमण करते रहते थे। वह बोलता कुछ भी नहीं लेकिन कभी कभी बड़े अजीव सवाल पूछ बैठता:

"जो लोग कुछ भी नहीं करना चाहते उनका क्या होता है?"

उसके अध्यापक एक संपूर्ण शिष्टाचार संपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने बंद गले का काला लंबा कोट पहन रखा था और वह पादरी तथा सिपाही एक साथ लगते थे। उन्होंने जवाब दिया:

"ओह, ऐसे लोगों के साथ बुरी से बुरी बात हो सकती है। उदाहरणार्थ, उनमें से कई लोग समाजवादी बन जाते हैं।"

"धन्यवाद," कुबड़े ने कहा। उसने अध्यापकों के साथ किसी प्रौढ़ की-सी रूखी नम्रता का व्यवहार किया—"और, यह बताइये कि समाजवादी क्या होता है?"

"वह बहुत होता है तो स्वप्नद्रष्टा तथा आलसी होता है। आम तौर पर वह मानसिक पंगु होता है जिसके दिमाग़ में ईश्वर, संपत्ति या देश की कोई भी कल्पना नहीं होती।

उसके अध्यापक हमेशा मुख़्तसर जवाब देते और उनके उत्तर उसके दिमाग़ में उसी तरह बैठ जाते जिस तरह फ़र्श में पत्थर।

"क्या कोई बुढ़िया भी मानसिक पंगु हो सकती है?"

"बेशक..."

"और छोटी-सी लड़की भी?"

"हां। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे साथ लेकर ही आदमी पैदा होता है..."

उसके अध्यापकों की राय थी कि उसमें गणित की अच्छी क्षमता नहीं है लेकिन नैतिक प्रश्नों में वह काफ़ी रुचि दिखाता है।

जब बहन ने अध्यापकों के साथ होनेवाले उसके संभाषणों की बात सुनी तब उसने कह दिया:

"तुम बहुत ज्यादा बोलते हो।"

"लेकिन वे तो मुझसे भी ज़्यादा बोलते हैं।"

"तुम ईश्वर का नाम शायद ही लेते हो!"

"वह मुझे इस कूवड़ से तो मुक्त करेगा नहीं..."

"अच्छा, तो आजकल तुम यही वात सोचते रहते हो?" वहन आश्चर्य से चिल्लायी। "इस वार मैं तुम्हें क्षमा कर देती हूं," उसने घोषणा की, "लेकिन सुनो, ऐसे विचारों को तुम्हें अपने दिमाग़ से सदा के लिए हटा देना होगा। समझे?"

"जी हां।"

वहन अब लंवी पोशाक पहनने लगी थी और भाई भी तेरह वरस का हो गया था।

उस दिन से वहन पर मुसीवतों की वौछार-सी होने लगी। शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि वह भाई के कमरे में प्रवेश करे और कोई तख़्ता, लकड़ी का टुकड़ा या कोई औज़ार उसके कंधे पर, सिर पर या उंगलियों पर न गिर जाय। कुवड़ा हमेशा उसे चिल्लाकर चेतावनी देता: "खवरदार!" लेकिन हमेशा यह चेतावनी एक-आध मिनट देर से मिलती और वहन अकसर आहत हो जाती।

एक वार, दर्द के साथ लंगड़ाती हुई, ग़ुस्से में लाल-पीली वह कुवड़े पर झपट-सी पड़ी और चिल्लाकर वोली:

"वेढंगा कहीं का! मुझे मालूम है कि तू यह सव जानवूझकर करता है!" यह कहकर उसने भाई को एक तमाचा जड़ दिया।

कुवड़े के पैर कमज़ोर थे। वह गिर पड़ा और वहीं फ़र्श पर वैठे वैठे उसने धीरे से, विना आंसुओं या क्रोध के कहा:

"यह तुम कैसे सोच सकती हो? तुम मुझे प्यार करती हो। करती हो न? ज़रूर तुम मुझे प्यार करती हो।"

पीड़ा के कारण कराहती हुई वह वहां से भाग गयी। वाद में आकर उसने क्षमा-याचना की।

"देखो भाई," बहन ने कहा, "पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था..."

"पहले मेरे पास यह सब था ही नहीं," उसने शांतिपूर्वक कहते हुए ऐसी गहरी नज़र दौड़ायी जिसमें सारा कमरा समा गया—कोनों में एक पर एक रखे हुए तख्ते, बढ़ई की बेंच पर ढेरों लकड़ी के टुकड़े और दीवाल के पास खराद—सब अस्त-व्यस्त।

"यह सारा कूड़ा-कवाड़ तुम यहां क्यों ले आये हो जी?" चारों ओर घृणा तथा शंकापूर्ण दृष्टि डालते हुए बहन ने पूछा।

"तुम देख लोगी!"

कुबड़ा अब कुछ चीज़ें बनाने लग गया था। उसने खरगोशों के लिए एक पिंजड़ा तथा एक कुत्ता-घर बना लिया था और इस समय वह एक नई क़िस्म की मूसदानी बनाने में लगा हुआ था। बहन उत्सुकता पूर्वक उसके कार्य की प्रगति देखती रहती और भोजन के समय माता-पिता को बड़े अभिमान के साथ भाई की सफलता की सूचना देती। पिता सिर हिलाकर अपनी प्रसन्नता सूचित कर देते।

"यह हमेशा का अनुभव है कि हर बात का आरंभ छोटी छोटी चीज़ों से होता है!" पिता ने कहा।

और मां ने अपनी बिटिया को गले लगाते हुए अपने बेटे से कहा:

"तुम जानते हो, इसने तुम्हारा कितना बड़ा उपकार किया है?"

"जी हां," कुबड़े ने उत्तर दिया।

जब मूसदानी बनकर तैयार हुई तो उसने बहन को बुलाकर यह बेढब चीज़ दिखाई।

"यह कोई खिलौना नहीं है, समझी?" कुबड़े ने कहा—"इसके लिए पेटंट लिया जा सकता है! देखो, कितनी सीधी-सादी चीज़ लेकिन कैसी ताक़तवर। हां, रखो यहां अपनी अंगुली।"

लड़की ने मूसदानी को छुआ ही था कि कुछ कल चटक गयी। वह चीख पड़ी और कुवड़ा उसके पास उछलता-कूदता वड़वड़ाता रहा :

"ओह, तुमने ग़लती की, ग़लत हाथ से छू दिया..."

मां दौड़ी आयी और उसके पीछे नौकर-चाकर भी। उन्होंने मूसदानी को तोड़कर लड़की की कुचली हुई तथा नीली अंगुली उसमें से छुड़ाई। वेहोशी की अवस्था में नौकर उसे उठाकर कुवड़े के कमरे से वाहर ले आये।

शाम को वहन ने भाई को पास वुलाकर कहा : "तुमने जान-वूझकर यह किया। तुम मुझसे नफ़रत करते हो। भला, वताओ तो, क्यों?"

"तुमने ग़लत हाथ से छू दिया, वस," अपना कूवड़ हिलाते हुए भाई ने जवाव दिया।

"तुम झूठ वोलते हो!"

"लेकिन ...मैं क्यों तुम्हारे हाथ को वदसूरत करने लगा? और यह हाथ भी वह नहीं था जिससे तुमने मुझे तमाचा जड़ा था..."

"खवरदार कुवड़े, तुम मुझे नहीं हरा सकोगे!"

"यह मैं जानता हूं," कुवड़े ने स्वीकार किया।

उसका कोनेदार चेहरा हमेशा की तरह शांत था; आंखें उसकी विचारमग्न थीं और यह मानना असंभव था कि वह क्रोधित हुआ है या झूठ वोल रहा है।

इस प्रसंग के वाद वहन का उसके कमरे में आना-जाना कम हुआ। सहेलियां अकसर वहन से मिलने आया करतीं। चमकदार रंग-विरंगी पोशाकें पहने हुए ये हंसमुख किशोरियां उन वड़े वड़े, ठंढक भरे और खुश्क-से कमरों में फुदकती-सी रहती और उनकी उपस्थिति में चित्रों, मूर्त्तियों, फूलों तथा मुलम्मेदार आभूषणों में जीवन संचार हुआ-सा दिखाई देता। कभी कभी वहन अपनी सहेलियों को कुवड़े के

कमरे में ले जाती—गुलाबी नाखूनोंवाली अपनी नन्ही नन्ही अंगुलियां वे रस्मी से उसके हाथ में दे देतीं। उसके हाथ को वे बड़ी सावधानी से स्पर्श करतीं मानो डर रही हों कि कहीं वह टूट न जाय। वे उसके साथ कोमलता से बातचीत करतीं, और अपने औज़ारों, चित्रों, लकड़ी के टुकड़ों तथा छीलन के बीच बैठे हुए कुबड़े की ओर कुतूहल से लेकिन बिना दिलचस्पी के देखती रहतीं। उसे मालूम था कि ये लड़कियां उसे "आविष्कारक" कहती हैं, बहन ने उनको ऐसा समझा दिया है, और वे उम्मीद रखती हैं कि यह लड़का आगे चलकर कुछ ऐसी बात कर दिखायगा जिससे उसके पिता का नाम रोशन होगा। बहन हमेशा विश्वासपूर्वक इस बात का ज़िक्र किया करती।

"वह कुरूप तो है, लेकिन है बड़ा चतुर," बहन अकसर कहा करती।

अब वह उन्नीस बरस की हुई और उसकी मंगनी भी हो गई। इधर एक विहार-नौका की दुर्घटना में उसके माता-पिता का देहांत हो गया। नशे में चूर अमरीकन माल-जहाज़ के मल्लाह की ग़लती से यह नौका टकराकर डूब गयी। लड़की भी इस नौका-विहार में जानेवाली थी लेकिन दांतों के दर्द के कारण वह घर पर ही रह गयी।

जब माता-पिता की मृत्यु का समाचार उसने सुना तो वह दांतों का दर्द भूल गयी और रोती तथा हाथों को मलती हुई कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर घूमती रही:

"नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता!"

दरवाज़े के परदे को अपने चारों ओर लपेटकर खड़े कुबड़े ने उसकी ओर टकटकी बांध कर देखा और अपने कूबड़ को हिलाते हुए बोला:

"पिताजी ऐसे गोल-मटोल और इतने पोले-पुलपुले थे कि...पता नहीं, कैसे डूब गये ..."

"चुप बैठ रे! तू किसी को प्यार भी करता है?" बहन चिल्लायी।

"मैं मीठे शब्दों का व्यवहार करना भर नहीं जानता," कुबड़े ने उत्तर दिया।

पिता का शव नहीं मिला लेकिन मां सख्त चोट से मरकर पानी में गिरी थी और उसका शव मिल गया। ताबूत में वह उसी तरह लेटी हुई दिखाई दी जिस तरह जीवन काल में दिखाई देती थी—पुराने वृक्ष की मृत शाखा की तरह सूखी और भुरभुरी।

"अब तुम और मैं अकेले रह गये," मां की अंत्येष्टि-क्रिया के बाद, अपनी उदास भूरी आंखों से भाई की ओर घूरते हुए बहन ने दुःख तथा गंभीरता के साथ कहा—"अब जिंदगी बड़ी मुश्किल होगी। हम कुछ भी नहीं जानते। हमारा बड़ा नुक़सान होगा। कैसे दुख की बात है कि मैं फ़ौरन विवाह नहीं कर सकती!"

"ओहो!" कुबड़ा चिल्लाया।

"क्या मतलब?"

"बस हम अकेले रह गये!" क्षण भर सोचकर कुबड़े ने कहा।

"तुम इस प्रकार बातें करते हो मानो इससे तुम्हें खुशी हुई हो।"

"मैं किसी बात से खुश नहीं होता।"

"यह बड़ी ही दयनीय बात है। तुम हर जीवित व्यक्ति से बिल्कुल निराले हो!"

शाम को बहन का मंगेतर उससे मिलने आया करता। यह एक प्रसन्न-वदन नाटा-सा युवक था। उसके बाल सुनहरे थे, चेहरा गोल तथा धूप से सांवला था, और मूंछें उसकी झब्बेदार थीं। वह सारी शाम

लगातार हंसता रहता और इसमें कोई शक नहीं कि सारे दिन भर भी हंसता रह सकता था। इन दोनों की सगाई हो चुकी थी और शहर की एक अच्छी तथा शांत सड़क पर उनके लिए नया मकान वनाया जा रहा था। यह जगह देखने के लिए कुवड़ा कभी नहीं गया और इस मकान की वात सुनना उसे विल्कुल पसंद नहीं था। वहन का मंगेतर अपने छोटे गोल-मटोल तथा अंगूठियों से लदे हाथ से कुवड़े के कंधे को थपथपाता और वत्तीसी दिखाकर मुसकाते हुए उससे कहता:

"तुम्हें जरूर चलकर मकान देखना चाहिये। कहो, तुम क्या सोचते हो?"

लंबे अर्से तक कुवड़ा किसी न किसी वहाने से टालमटोल करता रहा लेकिन आखिर वह मान गया और अपनी वहन तथा उसके मंगेतर के साथ नये मकान का काम देखने गया। कुवड़ा और मंगेतर दोनों मचान पर चढ़ने लगे लेकिन ऊपर तक पहुंचते ही, धड़ाम से नीचे गिर गये। मंगेतर सीधे चूने के कुंड में गिर गया लेकिन भाई के कपड़े एक उभड़े हुए तख्ते में अटक गये और वह हवा में लटकता रह गया। फिर राजगीर उसे वहां से नीचे ले आये। कुवड़े का एक हाथ तथा एक पैर उखड़ गया और चेहरा कुचल-सा गया, लेकिन मंगेतर की रीढ की हड्डी टूट गयी और एक वग़ल फट गयी।

वहन को दौरे आने लगे। वह ज़मीन पर गिर जाती और अपने नाखूनों से भूमि को कुरेदने लगती जिससे सफ़ेद गर्द का वादल-सा उठता। वह एक महीने से भी अधिक समय तक रोती रही और इसके वाद अपनी माता की तरह दुवली होती गयी। उसकी आवाज़ भी माता जैसी रूखी तथा मंद होती गयी।

"तुम मेरे दुर्दैव हो!" वह कहा करती।

कुवड़ा चुपचाप ज़मीन में आंखें गड़ाये रह जाता। वहन ने काली पोशाक पहनना शुरू किया, उसकी भौंहें हमेशा तनी रहने लगीं। भाई को देखते ही वह अपने दांत इतने जोर से पीसती कि उसके गालों की अस्थियां उभड़ी हुई दिखाई देतीं। वह वहन को टालने की हर कोशिश करता और हमेशा अकेला तथा चुपचाप नक़्शे वग़ैरह वनाने में मग्न रहता। कुवड़े के वालिग़ हो जाने तक यही हालत जारी रही और उसके वालिग़ होते ही उनमें खुली जंग शुरू हुई। उन दोनों के जीवन, इस संघर्ष पर समर्पित हो गये और परस्पर अपमानों तथा अपशब्दों की रज्जुओं ने ही उन्हें वांध रखा।

जिस दिन कुवड़ा वालिग़ हुआ, उसने अधिकारयुक्त वाणी में वहन से कह दिया:

"दुनिया में न होशियार जादूगर हैं और न अच्छी परियां ही। यहां हैं सिर्फ़ लोग। इनमें से कुछ वुरे हैं और वाक़ी हैं वुद्धू; और दयालुता के वारे में जो कुछ कहा जाता है वह है केवल परी-कथा! लेकिन मैं चाहता हूं कि यह परी-कथा सत्य हो जाय। याद है तुमने क्या कहा था? 'धनी के घर में सव कुछ या तो सुंदर होना चाहिए या चतुर।' धनी शहर में भी सव कुछ ख़ूवसूरत होना चाहिए। मैं शहर के वाहर कुछ ज़मीन ख़रीदने जा रहा हूं, जहां मैं अपने लिए तथा अपने जैसे कुवड़ों-कुरूपों के लिए एक मकान वनाऊंगा। मैं इन अपंगों को दूर ले जाऊंगा इस शहर से, जहां उनकी ज़िंदगी वड़ी दर्दभरी रहती है और जिनके कारण तुम जैसे लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचती रहती है..."

"नहीं," वहन ने कहा, "तुम यह नहीं कर सकते! यह विल्कुल पागलपन है!"

"यह तुम्हारा अपना विचार है।"

उनमें डटकर विवाद हुआ। बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह एक दूसरे से घृणा करनेवाले और अपनी दुश्मनी को छिपाने की आवश्यकता न माननेवाले लोगों में होता है।

"वात पक्की हो चुकी है," भाई ने कहा।

"मैंने तो नहीं की है," वहन ने जवाव दिया।

भाई अपने कूवड़ को ऊपर उठाता हुआ वाहर चला गया। कुछ ही देर वाद वहन को पता लगा कि वह उस ज़मीन को खरीद चुका है, मकान की नींव की खोदाई शुरू हो चुकी है और गाड़ियाँ ईंट, पत्थर, लोहे के सामान तथा लकड़ी भर भर के ला रही हैं।

"क्या तुम अभी तक अपने को नन्हा-सा वच्चा समझते हो?" वहन ने पूछा। "क्या तुम मानते हो कि यह कोई खेल है?"

भाई ने जवाव नहीं दिया।

उसकी अकड़वाज़ और घमंडी वहन सप्ताह में एक वार छोटी-सी वग्घी में वैठकर शहर का चक्कर लगाती। सफ़ेद घोड़ेवाली इस गाड़ी को वह ख़ुद ही चलाती और कुवड़े के मकान की जगह से होकर जाते समय वह गाड़ी धीमी कर लेती और उदासीनता से देखती रहती कि लोहे के वल्लों की स्नायुओं के आधार से, मांस सदृश लाल लाल ईंटें रची जा रही हैं और उस विशाल भवन के शरीर में ज्ञान-तंतुओं की तरह, पीली लकड़ी वैठायी जा रही है। दूर से वह देखती कि भाई मचान पर केकड़े की तरह इधर-उधर चलता है। उसके हाथ में छड़ी है, सिर पर सिकुड़ा हुआ टोप है और वह मकड़ी की तरह धूल-सना तथा सफ़ेद दिखाई देता है। वाद में, घर पर, वहन ने अपने भाई के प्रफुल्ल चेहरे को घूरकर देखा और देखा उसकी काली आंखों को जो अव पहले की अपेक्षा अधिक कोमल तथा अधिक स्वच्छ हो गयी थीं।

"मैं कहे देता हूं," उसने धीरे से वहन से कहा "यह मेरी अप्रतिम कल्पना है! इससे हमारा भला होगा और तुम्हारा भी! इस

भवन का निर्माण एक बढ़िया बात है और मुझे लगता है कि अपने को सुखी समझ लेना मेरे लिए शीघ्र ही संभव होगा ..."

"सुखी?" भाई के कुरूप शरीर पर निगाहें गड़ाते हुए बहन ने कहा।

"हां! तुम जानती हो? काम करनेवाले लोग हमसे बिल्कुल अलग होते हैं, वे विलक्षण विचारों की प्रेरणा देते हैं। कितना अच्छा होगा एक राजगीर बनना और उस शहर की सड़कों पर से गुज़रना जहां के दर्जनों मकान अपने ही हाथ से बने हुए हों! मज़दूरों में कई समाजवादी हैं। वे विचारशील लोग हैं और मैं जानता हूं कि उनमें प्रतिष्ठा का तेज़ ख्याल है। कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि हम ख़ुद अपनी जनता के बारे में बहुत ही कम जानते हैं ..."

"कैसी अजीब बातें करते हो!" बहन ने कहा।

दिन-प्रति-दिन कुबड़ा अधिकाधिक प्रसन्न-चित्त होता गया और ख़ूब बोलने भी लगा।

"सच कहें तो हर बात उसी तरह हो रही है जिस तरह तुमने चाहा था," उसने बहन को बता दिया। "मैं वह चतुर जादूगर बनूंगा जो इस शहर को अपंगों-बेढंगों से मुक्त कर देगा। तुम यदि चाहो तो अच्छी परी बन जाओ। अरी, तुम जवाब क्यों नहीं देती?"

"हम इसके बारे में फिर कभी बातें करेंगे," बहन ने अपनी घड़ी की सुनहरी चेन के साथ खेलते हुए कहा।

एक दिन कुबड़े ने उसके साथ ऐसी भाषा में बातचीत की जिससे वह परिचित नहीं थी:

"जितना तुमने मेरा अपराध किया है उससे अधिक शायद मैंने तुम्हारा किया है..."

बहन को आश्चर्य हुआ।

"मैंने तुम्हारा अपराध किया!"

"ज़रा ठहरो! मैं शपथपूर्वक कहता हूं कि मैं उतना अपरावी नहीं हूं जितना तुम मानती हो। मेरे पैर वड़े कमज़ोर हैं, और शायद उस वक़्त मेरा धक्का उसे लग भी गया हो, लेकिन विश्वास करो कि मेरा वैसा इरादा नहीं था! हां, मैं इसलिए वड़ा अपरावी हूं कि मैंने तुम्हारे उस हाथ को विरूप वनाने की कोशिश की जिससे तुमने मुझे तमाचा जड़ दिया था ..."

"हम उस विषय को छोड़ दें," वहन ने कहा।

"हमें अधिक सहृदयता का वरताव करना चाहिये," कुवड़ा वुदवुदाया। "मेरा विश्वास है कि सहृदयता कोई सपना नहीं है, वह सचमुच वरती जा सकती है..."

शहर के वाहर का वह विशाल भवन आश्चर्यजनक शीघ्रता से वन रहा था। वह उस संपन्न भूमि पर फैल गया और उस आकाश को छूने-सा लग गया जो कि हमेशा धूसर दिखाई देता और ऐसा लगता कि अभी पानी वरसने लगेगा।

एक दिन अधिकारियों का एक दल वहां आया, उन्होंने निर्माण कार्य की जांच कर आपस में धीरे धीरे कुछ वातचीत की और हुक्म दिया कि मकान का काम रोक दिया जाय।

"यह तुम्हारी करतूत है।" कुवड़ा चिल्ला उठा। मारे गुस्से के वह वहन पर झपट पड़ा और अपने लंवे, वलिष्ठ हाथों से उसने वहन की गर्दन पकड़ ली। लेकिन लोग आ गये और उन्होंने कुवड़े को खींचकर अलग कर दिया।

"देखा सज्जनो," वहन ने लोगों से कहा, "यह सचमुच पागल है और इसके लिए संरक्षक की आवश्यकता है। हमारे पिताजी का

देहांत हुआ और फ़ौरन यह पागल हो गया, क्योंकि पिताजी से इसका अपार प्रेम था। आप हमारे नौकर-चाकरों से पूछ सकते हैं। वे सभी इसकी बीमारी की बात जानते हैं। वैसे वे इस बारे में खामोश रहे हैं क्योंकि वे भले आदमी हैं और उस घर की प्रतिष्ठा का पूरा ख्याल रखते हैं जहाँ उनमें से कई लोग बचपन से रहते आये हैं। हमारे इस दुर्भाग्य को मैं भी छिपाती रही। आखिर इस बात पर किसी को गर्व थोड़े ही होगा कि अपना भाई पागल है..."

जब कुबड़े ने यह बात सुनी तो वह नीला पड़ गया और उसकी आंखें गड्ढों में से बाहर निकलती हुई-सी दिखाई दीं। उसकी ज़बान जवाब दे गयी और वह चुपचाप उन लोगों के हाथों को नोचने खरोंचने लगा, जो उसे पकड़े हुए थे। उधर बहन आगे कह रही थी:

"इस मकान का खर्चीला मामला ही देख लीजिये न। यह मकान मैं मानसिक व्याधिग्रस्तों के अस्पताल के लिए शहर को दान दूंगी और यह अस्पताल पिताजी के नाम पर होगा।"

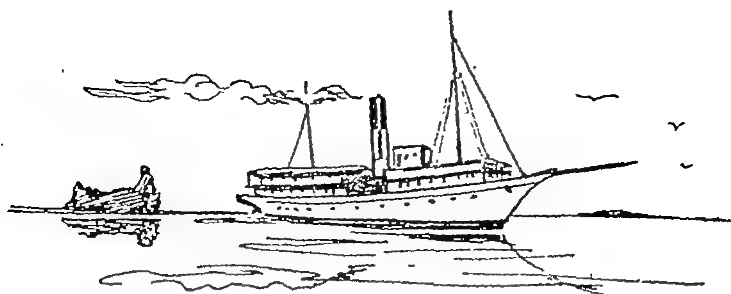
यह सुनते ही कुबड़ा ज़ोरों से चीख पड़ा और फ़ौरन बेहोश हो गया। लोग उसको वहां से उठा ले गये।

बहन ने मकान को उतनी ही तेज़ी के साथ बनवा लिया जितनी तेज़ी के साथ भाई ने उसका काम आरंभ किया था। और, जब मकान बनकर तैयार हुआ तो उसमें पहले मरीज़ के नाते इन भाई साहब को ही भेजा गया। उसने वहां सात साल गुज़ारे। उसके दुर्बल तथा पागल हो जाने के लिए इतना समय काफ़ी था। उसमें उदासी भी बढ़ गयी। इस बीच, उसकी बहन की उम्र ढलने लगी और माता बनने की उसे

कोई उम्मीद न रही। आखिर जब उसने देख लिया कि उसका भाई मानसिक दृष्टि से मर चुका है और फिर से जिंदा नहीं हो सकता तो उसने उसे अपने आश्रय में ले लिया।

अब ये दोनों जने सारे संसार का चक्कर लगा रहे हैं, अंधे पंछियों की तरह इधर-उधर घूमते रहते हैं, मन्द तथा निरानंद दृष्टि से हर चीज़ को निहारते हैं लेकिन उन्हें कहीं भी, अपने सिवाय कुछ भी नज़र नहीं आता।





बुद्धिजीवी

नीला पानी तेल की तरह गाढ़ा दिखाई देता था और जहाज़ का गतिदायक पंखा उसमें धीरे धीरे तथा लगभग बिना आवाज़ किये घूम रहा था। पैरों के नीचे डेक की थरथराहट नहीं महसूस होती थी। हां, निरभ्र आकाश की ओर संकेत करनेवाले मस्तूल में तनाव तथा कंपन था और वायलिन के तार की तरह कसे हुए रस्सों में मृदु गुंजन। लेकिन यह कंपन-गुंजन इतना परिचित था कि उसकी ओर किसी का विशेष ध्यान नहीं जाता था और जहाज़ निश्चल खड़ा दिखाई देता था – चंचल जल पर स्थिर सफ़ेद तथा सुंदर हंस की तरह। गति का ख्याल आने के लिए देखना पड़ता था रेलिंग के उस पार, जहां जहाज़ के किनारों से हरी-सी लहर उछल पड़ती, पिस-सी जाती और चौड़ी, चिकनी तहों में लोप हो जाती। उसके जाते जाते, पारे की-सी जगमगाहट पैदा होती और नींद में खोयी-सी मरमर ध्वनि उठती।

प्रभात का समय था। समुद्र की नींद अभी तक पूरी तरह से नहीं खुली थी। सूर्योदय का सुंदर गुलाबी रंग आकाश में अभी तक फैला हुआ

था, लेकिन गोर्गोन का वन्य द्वीप पीछे छूट चुका था। इस द्वीप में एक भयानक एकाकी चट्टान थी जिसकी चोटी पर एक गोल, भूरी मीनार थी। नींद में खोयी हुई-सी इस खाड़ी के किनारे छोटे छोटे सफ़ेद घरों की भीड़ लगी हुई थी। कुछ छोटी छोटी नौकाएं अभी तेज़ी से गुज़र चुकी थीं—ये थीं उक्त द्वीप के वाशिंदों की सारडिन मछलीमार नौकाएं। लंबे लंबे डांड़ों की नियमित छपछपाहट तथा नौकाओं में खड़े दुवले-पतले मछुओं की स्मृति पीछे रह गयी थी। ये मछुए इस तरह झुके हुए थे मानों सूर्य की वंदना कर रहे हों।

जहाज़ के पीछे पीछे हल्के हरे फेन की एक चौड़ी पट्टी तैरती जा रही थी और ऊपर की ओर समुद्री पंछी अलसाये हुए चक्कर लगा रहे थे। वीच वीच में पानी की सतह पर जल-सर्प तैर आते, और यकायक तीर की तेज़ी से गोता लगाते थे।

दूर अंतर पर लिगेरियन तट के धुंधले वैंगनी पहाड़ सागर के वीच से उभरते हुए नज़र आ रहे थे। संगमरमर के शहर जिनोआ के संकुलित वंदरगाह में जहाज़ के प्रवेश करने में दो तीन घंटों की देर थी।

सूरज आकाश में ऊपर चढ़ने लगा और यह स्पष्ट हुआ कि दिन काफ़ी गरम रहेगा।

दो नौकर दौड़ते हुए डेक पर आये—इनमें से एक था छरहरा तथा फुर्तीला नेपलनिवासी युवक। उसके चंचल चेहरे पर छली भाव झलक रहा था। दूसरा नौकर एक अधेड़ उम्रवाला आदमी था जिसकी मूंछें भूरी थीं और भौंहें काली। इसके गोल सिर के कड़े रुपहले वाल खड़े थे। नाक इसकी गरुड़ की-सी थी और आंखों में गहरी वुद्धिमत्ता की चमक थी। हास्य-विनोद करते हुए दोनों ने झटपट कॉफ़ी-पान के लिए मेज़ सजायी और फ़ौरन वहां से चल दिये। शीघ्र ही एक के वाद एक यात्री अपने अपने कमरे में से वाहर आये। इनमें से एक था मोटा-सा

खिन्न व्यक्ति जिसका सिर छोटा था, चेहरा पिलपिला था, गाल गुलाबी थे और मोटे तथा लाल होंठ लटक से रहे थे। दूसरे गलमुच्छेदार व्यक्ति का क़द लंबा था और ठाठ देखने लायक था। इसकी आंखें फीकी थीं और सपाट, पीले चेहरे पर घुंडी-सी नाक थी। इसके पीछे पीछे पीतल की देहली से ठोकर खाता हुआ एक गोल-मटोल आदमी आया जिसके बाल हल्के लाल रंग के थे, तोंद कुछ निकली हुई थी और मूंछें तीर की तरह खड़ी थीं। यह पहाड़ी पोशाक तथा हरे परवाला हैट पहने हुए था। ये तीनों जहाज़ की रेलिंग के पास गये और मोटे आदमी ने अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए गंभीर भाव से कहा –

"कैसी खामोशी है। है न?"

गलमुच्छेदार व्यक्ति ने अपने हाथ जेबों में डाल लिये और क़दम इस तरह खोल रखे कि वह खुली कैंची की तरह दिखाई दिया। लाल बालोंवाले व्यक्ति ने एक सुनहरी घड़ी निकाली जो कि दादा की दीवाली घड़ी के लंगर जितनी बड़ी थी। इस व्यक्ति ने घड़ी पर, आकाश की ओर तथा डेक पर नज़र दौड़ायी और फिर घड़ी को झुलाते हुए तथा अपने पैर को थपथपाते हुए सीटी बजाना शुरू कर दिया।

इसी समय दो स्त्रियां उपस्थित हुईं – एक थी मोटी-ताज़ी युवती। चीनी गुड़िया का-सा चेहरा, शांत, दूधिया-नीली आंखें और काली भौंहें, जोकि रंगी हुई-सी नज़र आती थीं तथा एक भौंह दूसरी से ज़रा ऊपर उठी दिखाई देती थी। दूसरी औरत उम्र में बड़ी थी। नुकीली नाक, फीके लेकिन फ़ैशन से संवरे हुए बाल, बायें गाल पर बड़ा-सा काला जन्म-चिन्ह, गले में सोने की दो जंजीरें और भूरे गाउन में कमर के पास लटकती ऐनक तथा छोटे छोटे गहनों का एक गुच्छा।

बैरे ने कॉफ़ी मेज़ पर ला रखी। युवती एक शब्द भी न बोलती

हुई, कुर्सी पर बैठ गयी और प्यालों में काली कॉफ़ी डालने लगी। इस समय, कुहनी तक खुले उसके हाथों की एक विचित्र चक्राकार हरकत हो रही थी। उक्त तीन आदमी मेज़ के पास आकर कुर्सियों पर चुपचाप बैठ गये। मोटे आदमी ने एक प्याला उठाया और आह भरते हुए बोला—

"आज काफ़ी गरमी होगी..."

"तुम कॉफ़ी अपनी गोद में गिरा रहे हो," उस प्रौढ़ स्त्री ने कहा।

मोटे आदमी ने अपना सिर झुकाया, जिससे उसका जबड़ा लटकने सा लगा और उसकी ठुड्डी उसके सीने पर दब गयी। प्याले को उसने मेज़ पर रख दिया, भूरे पतलून पर की कॉफ़ी की बूंदें रूमाल से हटा दीं और पसीने से तर अपना चेहरा पोंछ लिया।

"हां", लाल बालोंवाले आदमी ने अपने छोटे पैरों को ज़मीन पर घिसते हुए यकायक ज़ोरदार आवाज़ में कहा—"हां, हां। यद्यपि वाम-पंथियों ने गुंडागीरी के बारे में शिकायत करना शुरू किया है तो भी इसका अर्थ ..."

"ओह, इवान, तुम बकवाद बंद करो!"—प्रौढ़ा ने उसकी बात काटते हुए कहा—"क्या लीज़ा नहीं आ रही है?"

"उसकी तबीयत ठीक नहीं है," युवती ने गूंजती आवाज़ में कहा।

"लेकिन सागर तो बिल्कुल शांत है..."

"आह, जब स्त्रियां ऐसी हालत में होती हैं ..."

मोटे आदमी ने मिठास भरी मुस्कुराहट के साथ अपनी आंखें मूंद लीं।

पानी की निश्चल सतह पर किलोलें करनेवाली डालिफ़न मछलियों के एक झुंड की ओर उत्सुकता से ताकते हुए गलमुच्छेदार आदमी बोल उठा—

"डाल्फ़िन बिल्कुल सुअरों जैसी हैं।"

इसपर लाल बालोंवाले ने कहा—

"आम तौर पर यहां बहुत-सी बातें सुअराना ढंग की हैं।"

अरसिक स्त्री ने अपने प्याले को नाक तक उठाया, कॉफ़ी को सूंघा और मुंह बिगाड़कर नापसंदगी व्यक्त की।

"बिल्कुल बेकार!"

"हां, और दूध ..." मोटे आदमी ने घृणापूर्वक पलक मारते हुए कहा।

चीनी गुड़िया जैसे चेहरेवाली युवती भुनभुनायी—

"हर चीज़ गंदी है, एकदम गंदी! और वे यहूदियों से इतने मिलते-जुलते लगते हैं ..."

लाल बालोंवाला आदमी गलमुच्छेदार आदमी के कान में ऐसी लंबी शब्द-धारा उंडेल रहा था, मानो ज़बानी याद किया गया कोई सबक़ घमंड के साथ दोहरा रहा हो। दूसरा व्यक्ति आसक्तिपूर्ण कौतूहल से सुन रहा था और अपना सिर किंचित् इधर-उधर हिला रहा था। उसके सपाट चेहरे में उसका मुंह सूखे तख़्ते की फटन-सा दिखाई दे रहा था। उसने बात को काटने की कोशिश की और कौतूहलपूर्ण तथा अस्पष्ट आवाज़ में कहना शुरू किया:

"देखिये, मेरे गुबेर्निया में..."

लेकिन उसने आगे कुछ नहीं कहा और फिर से अपना सिर लाल बालोंवाले व्यक्ति की मूंछों की ओर झुकाकर ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

मोटे आदमी ने लंबी आह भरते हुए कहा—

"इवान, तुम कैसे गुनगुनाते हो ..."

"अच्छा, मुझे कॉफ़ी दो।"

उसने शोर के साथ अपनी कुर्सी मेज़ के नज़दीक सरकायी। उसके साथी ने साभिप्राय कहा—

"इवान बड़ा सूझ-बूझवाला है।"

"आपको शायद काफ़ी नींद नहीं आयी," अपनी ऐनक में से गलमुच्छेदार व्यक्ति की ओर नज़र दौड़ाते हुए प्रौढ़ा ने कहा। उस व्यक्ति ने अपने चेहरे पर अपना हाथ फेरा और फिर हथेली देखी।

"मुझे ऐसा लगता है कि मेरे चेहरे में पाउडर लगा हुआ हो। क्या तुम्हें भी ऐसा ही लगता है?"

"हां, चाचाजी।" युवती चिल्लायी। "यह है इटली का हवा-पानी। इससे चमड़ी बुरी तरह सूख जाती है।"

"तुमने देख लिया, लिदी, इनकी शक्कर कैसी भयंकर है" प्रौढ़ा ने पूछा।

इसी वक़्त एक मोटा-ताज़ा आदमी डेक पर दिखाई दिया। घने, सफ़ेद घुंघराले बाल, बड़ी-सी नाक, प्रसन्न आंखें और दांतों के बीच चुरुट दबा हुआ। रेलिंग के पास खड़े नौकरों ने इस व्यक्ति को आदरपूर्वक प्रणाम किया।

"नमस्ते, भाइयो नमस्ते।" खूब सिर हिलाते हुए इस व्यक्ति ने ज़ोरदार रूखी आवाज़ में कहा।

रूसी चुप हो गये और उसकी ओर कनखियों से देखने लगे जबकि मूंछदार इवान ने अपने साथियों को दबी आवाज़ में बतलाना शुरू किया—

"कोई भी फ़ौरन बतला सकता है कि यह एक रिटायर्ड सिपाही है..."

यह जानकर कि ये लोग अपनी ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं, सफ़ेद बालोंवाले व्यक्ति ने मुंह से चुरुट हटाया और अदब से झुक कर रूसियों का अभिवादन किया। प्रौढ़ा ने अपने सिर को झटका दिया, अपनी ऐनक को ऊपर उठाया और उसपर ललकार भरी नज़र गड़ा

दी। मूंछोंवाला आदमी किसी कारण झेंपा हुआ दिखाई दिया । वह झट दूसरी ओर मुड़ा और जेब में से अपनी घड़ी निकालकर उसे हवा में झुलाने लगा। सिर्फ़ मोटे आदमी ने अपनी ठुड्डी को सीने पर दबाये, अभिवादन का उत्तर दिया। इतालवी व्यक्ति इससे ज़रा व्याकुल हुआ और चुरुट मुंह के कोने में दबाये हल्की आवाज़ में एक बूढ़े-से नौकर से पूछा :

"शायद रूसी हैं ?"

"जी हां। एक रूसी गवर्नर और उसका परिवार ..."

"इनके चेहरे सदैव कैसे सौजन्यपूर्ण रहते हैं..."

"जी हां, बड़े अच्छे लोग हैं ..."

"स्लाव जातियों में निश्चय ही सबसे अच्छे ..."

"हां, लेकिन मैं मानता हूं कि ज़रा बेफ़िक्र ..."

"क्या कहा, बेफ़िक्र? सचमुच ?"

"हां, मुझे ऐसा लगता है कि ये दूसरों के बारे में बेफ़िक्र होते हैं।"

मोटे रूसी आदमी का चेहरा लाल हो गया।

"वे हमारे बारे में बातें कर रहे हैं" भेड़ की तरह खीस निकालकर उसने कहा।

"क्या कह रहा है वह ?" प्रौढ़ा ने नफ़रत के साथ पूछा।

"कह रहा है कि स्लावों में हम सबसे अच्छे हैं," मोटे आदमी ने खिसिया कर कहा।

"वे चापलूसी कर रहे हैं।" उस औरत ने घोषित किया और लाल बालोंवाले श्वान ने अपनी घड़ी जेब में रखकर दोनों हाथों से अपनी मूंछें ऐंठते हुए तिरस्कारपूर्वक कहा :

"वे हमारे बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानते ..."

"यहां तुम्हारी प्रशंसा हो रही है और तुम घोषित करते हो कि यह अज्ञानवश हो रहा है..."

"क्या वकवास है! मेरा यह मतलव नहीं था, मैं एक ग्राम वात कह रहा था ... मैं अच्छी तरह जानता हूं कि हम सर्वश्रेष्ठ हैं।"

इस समय तक मछलियों की क्रीड़ा को ध्यानपूर्वक देखनेवाले गलमुच्छेदार व्यक्ति ने ग्राह भरी ग्रौर सिर हिलाकर कहा:

"कैसी मूरख हैं मछलियां!"

सफ़ेद वालोंवाले इतालवी व्यक्ति के पास ग्रौर दो जने ग्रा पहुंचे। एक था वूढ़ा जो काला फ़्राककोट पहने तथा ऐनक लगाये था ग्रौर दूसरा था लंवे वालोंवाला युवक जिसका चेहरा पीला-सा, ललाट उन्नत ग्रौर भौंहें मोटी थीं। तीनों जने रूसियों से कुछ गज़ दूर, रेलिंग के पास खड़े हो गये।

"जव कभी मैं रूसियों को देखता हूं तो मुझे मेसीना का स्मरण हो ग्राता है," सफ़ेद वालोंवाले व्यक्ति ने हल्की ग्रावाज़ में कहा।

"तुम्हें याद है, नेपल्स ग्राये हुए रूसी जहाज़ियों का हमने कैसा स्वागत किया था?" युवक वोला।

"जी हां! ग्रपने जंगलों में वीते उस दिन को वे भुला नहीं सकेंगे!"

"उनके सम्मान में वनाया गया पदक तुमने देखा?"

"जी हां। लेकिन मुझे उसकी कारीगरी नहीं पसंद ग्राती।"

"मेसीना में जो भूकंप हुग्रा था उसी के वारे में ये लोग वातें कर रहे हैं," मोटे ग्रादमी ने ग्रपने साथियों को सूचना दी।

"ग्रौर वे हंस रहे हैं!" युवती वोल उठी। "ग्रजीव वात है!"

समुद्री पंछी जहाज़ के पास ग्रा पहुंचे। उनमें से एक ज़ोरों से ग्रपने टेढ़े-मेढ़े पंखों को फड़फड़ाता हुग्रा जहाज़ के किनारे पर मंडराता रहा।

युवती ने उनकी ओर कुछ विस्कुट फेंके। पंछियों ने विस्कुट अपनी चोंचों में पकड़ लिये, जहाज़ के किनारे से दूर उड़ गये और फिर सागर के ऊपर, नीले अवकाश में ज़ोरों से चिल्लाते हुए चक्कर काटने लगे। इतालवियों के लिए कॉफ़ी लायी गयी और वे भी हवा में विस्कुट फेंक फेंक कर पंछियों को खिलाने लगे। प्रौढ़ा ने त्योरियां चढ़ायीं और कहा—

"विल्कुल बंदरों की तरह।"

इतालवियों के रसपूर्ण संभाषण को सुनकर मोटे आदमी ने फिर से सूचना देना शुरू किया—

"यह सिपाही नहीं वल्कि व्यापारी है। वह हमारे साथ अनाज के व्यापार की वात कर रहा है। वह कहता है कि वे भी हमसे मिट्टी का तेल, इमारती लकड़ी तथा कोयला खरीद सकेंगे।"

"मैंने तो फ़ौरन ही जान लिया था कि यह सिपाही नहीं है," प्रौढ़ा ने घोषणा की।

लाल वालोंवाले आदमी ने गलमुच्छेदार व्यक्ति के साथ फिर से फुसफुसाहट शुरू की। वह ससंदेह मुंह लटकाये सुनता रहा जवकि इतालवी युवक वीच वीच में रूसियों की ओर नज़र दौड़ाते हुए कहता गया—

"कैसी दुःख की वात है कि उन हल्की-नीली आंखोंवाले, महान लोगों के देश को हम वहुत ही कम जानते हैं।"

इस समय सूरज काफ़ी ऊपर आ चुका था और गरमी खूव वढ़ गयी थी। सागर जगमगा रहा था और नौका के दायें दूर पर पहाड़ों अथवा वादलों की परिधि-रेखाएं समुद्र में से ऊपर आती हुई दिखाई दे रही थीं।

"अनेत," गलमुच्छेदार व्यक्ति ने आकर्ण मुंह खोलकर खीस निकालते हुए कहा, "ज़रा इस जॉन की मनगढ़ंत तो सुनो। देहातों

के उन बलवाइयों को खत्म करने का एक बड़ा ही चातुर्यपूर्ण तरीक़ा इसने सोचा है।"

अपनी कुर्सी में आगे पीछे झूमते हुए उसने धीरे धीरे तथा नीरस स्वर में बोलना आरंभ किया, मानो किसी विदेशी भाषा से अनुवाद करके बोल रहा हो—

"यह कहता है कि देहाती मेलों तथा तीज-त्योहारों के अवसर पर स्थानीय महसूल अधिकारियों को चाहिये कि सरकारी खर्च से काफ़ी लाठी-काठियाँ तथा कंकड़-पत्थर तैयार रखें और सरकारी खर्च से ही किसानों की संख्या के अनुसार वोद्का की दस बीस या पचास बालटियों का उपहार प्रदान करें। बस, अपने आप सब काम हो जाएगा।"

"मैं नहीं समझी," प्रौढ़ा ने कहा। "क्या यह कुछ हंसी-मज़ाक है?"

"जी नहीं, बिल्कुल गंभीर बात है।" लाल बालोंवाले व्यक्ति ने शीघ्र ही जवाब दिया। "ज़रा सोच तो लीजिये, मा तांत*..."

युवती की आंखें विस्फारित हुईं और उसने अपने कंधे सिकोड़े।

"कैसी बेकार बात है। उन्हें सरकारी खर्च से वोद्का पिला दें, जबकि वे वैसे भी ..."

"नहीं, नहीं, ज़रा सब्र करो, लीदिया!" अपनी कुर्सी में उछलते हुए, लाल बालोंवाले आदमी ने कहा। गलमुच्छेदार आदमी दायें-बायें झूमते हुए, मुंह को पूरा खोलकर, बिना आवाज़ किये हंस पड़ा।

"ज़रा सोच लो—जो गुंडे पीकर बेसुध नहीं होंगे वे लाठी-पत्थरों से एक-दूसरे की अच्छी खासी मरम्मत करेंगे। समझीं?"

"एक-दूसरे की ही क्यों?" मोटे आदमी ने पूछा।

---

* मेरी चाची (फ़्रेंच भाषा में)—संपा०

"तुम शायद मज़ाक कर रहे हो?" प्रौढ़ा ने फिर से कहा।

लाल वालोंवाला व्यक्ति अपने छोटे हाथों को फैलाकर उत्तेजित आवाज़ में कहता गया—

"जब कभी अधिकारी उन्हें कुचलते हैं तो ये वामपंथी अत्याचारों तथा अमानुषिकताओं का नाम ले लेकर चिल्लाते हैं। इसलिए हमें ऐसा तरीक़ा खोज निकालना चाहिये जिससे वे खुद ही अपने-आपको कुचल डालें। ठीक है न?"

जहाज़ यकायक डोल उठा। मोटी-ताज़ी स्त्री ने घवड़ाकर मेज़ को पकड़ लिया। तश्तरियां खड़खड़ा उठीं और प्रौढ़ा ने मोटे आदमी के कंधे का सहारा लिया।

"यह क्या हो गया?" उसने सख्त आवाज़ में पूछा।

"जहाज़ मुड़ रहा है..."

तट अधिकाधिक स्पष्ट होता गया: वग़ीचों से आच्छादित पहाड़ियां तथा धूसर पहाड़, अंगूर वगीचों के वीच धूमिल चट्टानें, सघन हरियाली के वीच में से झांकनेवाले सफ़ेद घर और सूर्यप्रकाश के कारण जगमगानेवाले खिड़कियों के शीशे। चमकदार रंगवाले दृश्य साफ़ नज़र आने लगे। पानी के विल्कुल किनारे पर, समुद्राभिमुख चट्टानों के वीच एक छोटा-सा घर दिखाई दे रहा था। उसका आगे का भाग चमकदार वैंगनी फूलों के सघन पुंज से तथा पत्थर के वरामदे से लटकनेवाले लाल जिरेनियम पुष्पों के विपुल संभार से आवृत था। रम्य रंगों के कारण सागर तट प्रसन्न तथा चित्ताकर्षक लग रहा था और पहाड़ों की मृदु परिधि-रेखाएं मानो किसी को संकेत कर उद्यानों की शीतल छाया में विश्राम करने के लिए आमंत्रित कर रही थीं।

"यहां हर चीज़ में कैसा भीड़-भड़क्का महसूस होता है," मोटे आदमी ने आह भरते हुए कहा। प्रौढ़ा ने उसकी ओर एक दृढ़ दृष्टिक्षेप

किया और फिर ऐनक उठाकर, अपने पतले होंठों को भींचते हुए तथा सिर को झटका देते हुए, किनारे का अवलोकन करना आरंभ किया।

अब तक डेक पर, हल्के सूट पहने हुए कई श्यामल वर्ण व्यक्ति आ गये थे। वे ज़ोर ज़ोर से बातचीत कर रहे थे। रूसी महिलाओं ने उनकी ओर उसी तिरस्कारभरी दृष्टि से देखा जिस तरह रानियां अपनी प्रजा की ओर देखती हैं।

"कैसे हावभाव दिखा रहे हैं," युवती ने कहा। मोटे आदमी ने हांफते हुए स्पष्टीकरण दिया—

"यह उनकी भाषा की विशेषता है। यह भाषा इतनी दरिद्र है कि बिना हावभावों के कुछ काम ही नहीं बनता ..."

"हे भगवान," प्रौढ़ा ने गहरी सांस खींचते हुए कहा और फिर कुछ रुककर पूछा—

"क्या जिनोआ में भी बहुत से संग्रहालय हैं?"

"मेरे ख्याल से सिर्फ़ तीन," मोटे आदमी ने जवाब दिया।

"और वह क़ब्रिस्तान?" युवती ने पूछा।

"हां हां, वह कैंपो सांतो। और कई गिरजे भी।"

"और क्या यहां की घोड़ा-गाड़ियां भी उतनी ही भद्दी हैं जितनी कि नेपल्स की?"

लाल बालोंवाला व्यक्ति तथा गलमुच्छेदार आदमी दोनों उठ खड़े हुए और उत्सुकतापूर्ण बातचीत करते हुए रेलिंग की ओर चल दिये। दोनों चिंतापूर्ण मुद्रा से एक साथ बोल रहे थे।

"वह इतालवी क्या कह रहा है?" अपने बालों को संवारते हुए उस महिला ने पूछा। उसकी कोहनियां पैनी थीं और कान बड़े तथा

पीले थे, जो कि सूखी पत्तियों जैसे लग रहे थे। मोटा आदमी घुंघराले बालोंवाले इतालवी की रसपूर्ण बातों को आज्ञाकारिता तथा ध्यान के साथ सुन रहा था।

"महाशयो, शायद उनके यहां एक अति प्राचीन क़ानून है जो कि यहूदियों का मास्को जाना निषिद्ध मानता है—यह स्पष्टतया तानाशाही का अवशेष है। इवान निर्मम का नाम तुमने सुना ही होगा! इंग्लैंड में भी कई ऐसे पुराने क़ानून हैं जो आज तक अमल में हैं। लेकिन, शायद यह यहूदी मुझे धोखा दे रहा था। कुछ भी हो, किसी कारणवश उसे मास्को जाने का अधिकार नहीं था। मास्को—ज़ारों का वह प्राचीन नगर, पवित्र नगर ..."

"और यहां मास्को से कई गुना अधिक प्राचीन तथा पवित्र नगर रोम का नगराध्यक्ष यहूदी है," युवक ने हंसते हुए कहा।

"और कैसी चतुराई से वह उस दर्ज़ी पोप* को पराजित करता है।" एक ऐनकधारी बूढ़े ने तालियां बजाते हुए कहा।

"यह बुड्ढा किस बारे में चिल्ला रहा है?" अपनी ऐनक नीचे करते हुए उक्त महिला ने पूछा।

"ऐसे ही कुछ बक रहा है। वे नेपल्स की बोली में बातचीत कर रहे हैं।"

"... तो यह यहूदी मास्को चला गया और, महाशयो, चूंकि आदमी को रहने के लिए कहीं न कहीं तो स्थान चाहिये ही, इसलिए वह एक वेश्या के यहां गया। उसने कहा कि मेरे पास ठहरने की और कोई जगह नहीं है।"

---

*यहां पोप के नाम पर श्लेष किया गया है—इस पोप का इतालवी नाम था सार्तो जिसका अर्थ है "दर्ज़ी"।—संपा०

"यह विल्कुल कपोल-कल्पित कथा है!" कहानी वतानेवाले की वात को काटते हुए वूढ़े ने निश्चयपूर्वक कहा।

"सच कहूं तो मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ?" युवक ने पूछा।

"वेश्या ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया, लेकिन पहले उससे उसी तरह रुपया ले लिया जिस तरह किसी साधारण ग्राहक से ..."

"कैसी नीचता है!" वृद्ध ने कहा "वस, इससे उस आदमी के मन की मलिनता प्रकट होती है, और कुछ नहीं। विश्वविद्यालय में कुछ रूसियों को मैं जानता था, वे वड़े अच्छे लोग थे ..."

मोटे रूसी आदमी ने रूमाल से चेहरे पर का पसीना पोंछते हुए, सुस्ती तथा उदासीनता से महिलाओं से कहा—

"वह एक यहूदी चुटकुला सुना रहा है।"

"ऐसे हुलास के साथ!" युवती हंस पड़ी और दूसरी स्त्री ने कहा—

"जानती हो, हावभावों तथा शोरगुल के वावजूद इन लोगों की वातों में वड़ी नीरसता होती है...।"

सागरतट पर शहर उनकी आंखों के सामने उभर रहा था: पहाड़ियों के पीछे से घर नजर आने लगे, धीरे धीरे उनके वीच का अंतर घटता गया, और आखिर मकानों की एक ठोस दीवाल-सी वन गयी। सूर्य प्रकाश में ये मकान हाथीदांत के-से लगते थे।

"यह शहर विल्कुल याल्ता जैसा लगता है"—युवती ने खड़े होते हुए कहा। "मैं लीज़ा के यहां जाऊंगी।"

वह डेक के उस पार जाने लगी। वह हल्के नीले रंग के कपड़े पहने थी और चलते समय उसका स्थूल शरीर ज़रा-सा झूमता था। जव

वह इतालवी लोगों के उस समूह के पास से जाने लगी तब सफ़ेद बालोंवाला व्यक्ति रुककर दबी आवाज़ में बोल उठा—

"कितनी सुंदर आंखें"

"जी," ऐनकधारी बूढ़े आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा। "बाज़ीलीदा ऐसी ही दिखाई देती होगी!"

"लेकिन बाज़ीलीदा बाइज़ंटाइन थी, ठीक है न?"

"मैं उसे स्लाव के रूप में देखता हूं।"

"वे लीदिया के बारे में बातें कर रहे हैं," भारी-भरकम आदमी ने कहा।

"क्या कह रहे हैं?" स्त्री ने पूछा। "सचमुच कोई अपमानजनक बात?"

"जी नहीं, वे उसकी आंखों के बारे में बातें कर रहे हैं। उनकी वे प्रशंसा करते हैं..."

स्त्री ने मुंह बिराया।

तेज़ और नाज़ुक गति के साथ जहाज़ किनारे की ओर बढ़ा। उसके पीतल के हिस्से जगमगा रहे थे। घाट की काली काली दीवारों के पीछे मस्तूलों का जंगल-सा खड़ा था। यत्र-तत्र चमकदार झंडे निश्चल लटके हुए थे। काला धुआं हवा में गल-सा गया। तेल तथा कोयले की गर्द की गंध, बंदरगाह पर का शोरगुल और बड़े शहर का दबा हुआ कोलाहल जहाज़ पर सुनाई पड़ने लगा।

भारी-भरकम आदमी यकायक ज़ोरों से हंस पड़ा।

"क्यों, तुम हंसते क्यों हो?" अपनी भूरी निस्तेज आंखों को सकुचाते हुए महिला ने पूछा।

"खुदा की क़सम, जर्मन उन्हें चकनाचूर कर देंगे। तुम देख ही लोगे!"

"लेकिन इससे तुम्हें क्यों इतनी खुशी हो रही है?"

"बस, ऐसे ही..."

गलमुच्छेदार व्यक्ति ने अपने पैरों की ओर देखते हुए ज़ोरदार आवाज़ में लाल बालोंवाले आदमी से पूछा—

"तुम्हारे लिए इस ताज्जुब की बात पर खुशी होगी कि नहीं?"

दूसरे ने ज़ोरों से अपनी मूंछें ऐंठीं लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

जहाज़ की गति मंद हो गयी। धुंधले हरे पानी में अब संगमरमर की इमारतों का कोई भी हिस्सा प्रतिबिंबित नहीं हो रहा था। वहां न लंबी मीनारें नज़र आती थीं और न बरामदों की झंझरियां ही। धुंधला, हरा पानी मानो शिकायत के रूप में जहाज़ के दायें-बायें थरांहट के साथ टकराया। तरह तरह के जहाज़ों से ठसाठस भरा बंदरगाह का श्यामल विस्तार उन सब का स्वागत करने लगा।





बातचीत

अमेरिकन की तरह दुबला-पतला और सफ़ाचट चेहरेवाला एक व्यक्ति, जो हल्के रंग का सूट डटे हुए था, रेस्तरां के दरवाज़े के नज़दीक लोहे की एक मेज़ के पास बैठ गया और अलसाये स्वर में उसने पुकारा –

"गा-ड़-सों* ..."

चारों ओर अकातिया के सफ़ेद और सुनहरे पुष्पों के गझिन गुच्छे के गुच्छे लटके हुए थे और सूरज की सुनहरी किरणें धरती तथा आकाश को वसंत की मृदु प्रसन्नता से व्याप्त किये हुए थीं। सड़क पर छोटे गदहे जिनके कानों पर मोटे रोवें थे, टापें पड़पड़ाते हुए जा रहे थे, बड़े बड़े भारवाही घोड़े धीरे धीरे चल रहे थे और लोग भी आराम के साथ चहलक़दमी-सी करते दिखाई दे रहे थे। यह स्पष्ट था कि हर जीवधारी,

---

*गाड़सों (फ़्रेंच) – बैरा – संपा०

सूर्य के प्रकाश में अधिक से अधिक समय तक रहकर मधुर पुष्प-गंध से परिपूर्ण हवा में सांस लेना चाहता था।

वसंत के अग्रदूत—बच्चे सहसा चमक उठते थे और सूर्य उनकी पोशाकों पर जगमग रंग चढ़ा देता था। विलसित-वसना ललनाएं झूमती-इठलाती चली जा रही थीं। हां, उजले दिन में उनका वही महत्त्व होता है जो रात में तारकाओं का।

हल्के रंग का सूटवाला व्यक्ति अजीब तरह से घिसा हुआ-सा लगता था: मानो वह बहुत ही गंदा रहा हो और अभी अभी नहलाकर उसे इतने ज़ोर से साफ़ किया गया हो कि उसके चेहरे पर की सारी सजीवता ही सदा के लिए धुल गयी। अपनी फीकी आंखों से वह चारों ओर इस तरह देख रहा था, मानो मकानों की दीवालों पर, धुंधली सड़क पर से गुज़रनेवाली हर चीज़ पर और सायादार सड़क की चौड़ी चौरस पट्टियों पर थिरकनेवाली सूर्य किरणों को गिन रहा हो। उसके होंठ आगे की ओर उभरे हुए थे और वह धीमे-से और नज़ाकत से सीटी पर एक अजीब दर्दभरी धुन बजा रहा था और मेज़ के किनारे पर अपनी लंबी सफ़ेद अंगुलियों से ताल दे रहा था। उसके नाख़ूनों में मंद-सी चमक थी। उसके दूसरे हाथ में पीले रंग का एक दस्ताना था जिससे वह अपने घुटने पर ताल दे रहा था। उसके मुख पर बुद्धिमत्ता तथा दृढ़प्रतिज्ञता झलक रही थी लेकिन यह देखकर बड़ा दुख होता था कि उस मुख पर से सारा उत्साह खुरच खुरचकर धुल गया है।

खानसामे ने अदब के साथ झुककर उसके सामने कॉफ़ी का प्याला, हरी शराब की एक छोटी-सी बोतल तथा कुछ बिस्कुट रख दिये। इसी समय एक और व्यक्ति बग़लवाली मेज़ के पास बैठ गया। यह बड़ा ही हृष्ट-पुष्ट था और उसकी आंखें सुलेमानी पत्थर ऐसी थीं। उसके गाल, गर्दन तथा हाथ कालिख से सने थे और उसके भारी-भरकम

शरीर में इस्पात की-सी ताक़त थी। वह किसी भीमाकार मशीन का एक हिस्सा ही लगता था।

जव साफ़सुथरे आदमी की आंखें थकावट के साथ उसपर गड़ गयीं तो वह ज़रा-सा ऊपर उठा, अपनी अंगुलियों से अपनी टोपी को स्पर्श किया और उसकी घनी मूंछों में से अभिवादन के शब्द निकले—

"नमस्ते, मिस्टर इंजीनियर।"

"एँ, कौन आमा, तुम फिर यहाँ।"

"जी हाँ, मिस्टर इंजीनियर ..."

"तो उम्मीद है कि कुछ हो जायगा, ठीक है न?"

"कहो, काम कैसे चल रहा है?"

"मेरे दोस्त, सिर्फ़ सवालों के सहारे संभापण नहीं हो सकेगा..." इंजीनियर ने कहा। उसके पतले होंठों पर हल्की-सी मुस्कुराहट दौड़ गयी।

उसके साथी ने अपने टोप को कान पर सरका लिया और ठठाकर हंस पड़ा।

"तुम्हारा कहना सही है" हंसी का फ़व्वारा छोड़ते हुए उसने कहा— "लेकिन मैं क़सम से कहता हूँ कि जानने की वड़ी इच्छा है..."

काले, सफ़ेद और सन जैसे वालोंवाला एक छोटा गदहा कोयला-गाड़ी खींचता जा रहा था। वह वीच राह में रुक गया। उसने गर्दन लंवी कर ली और दर्दभरी आवाज़ में रेंक उठा, लेकिन यह साफ़ दिखाई दिया कि उस दिन अपनी गलेवाज़ी से वह खुश नहीं हो पाया, क्योंकि तार स्वर में गड़वड़ाकर वह चुप हुआ, अपने रोवेंदार कानों को फड़फड़ाया और सिर झुकाये, टापों को पड़पड़ाता हुआ आगे वढ़ा।

"मैं इतनी उत्सुकता से तुम्हारी उस मशीन की प्रतीक्षा कर रहा

हूँ जितनी कि किसी नई पुस्तक की, जिसमें ज्ञान की नव निधि संग्रहीत हो।"

"तुम्हारी इस तुलना को मैं ठीक से समझ नहीं पाया.." कॉफ़ी का मज़ा लेते लेते इंजीनियर बुदबुदाया।

"क्या तुम स्वीकार नहीं करते कि मशीन से मनुष्य की शारीरिक शक्ति को वैसी ही मुक्ति मिलती है जैसी अच्छी पुस्तक से उसकी आत्मा को?"

"हाँ" सिर ऊपर उठाते हुए इंजीनियर ने कहा—"वैसे तुम्हारी बात सही है। और मैं मानता हूँ कि अब तुम अपना प्रचार आरंभ कर दोगे?" खाली प्याला मेज़ पर रखते हुए उसने आगे कहा।

"वह तो मैं शुरू कर भी चुका हूँ। ..."

"फिर हड़तालें और उपद्रव, यही न?"

दूसरे ने ज़रा मुस्कुराते हुए अपने कंधे सिकोड़े।

"अगर बिना इनके काम हो जाता तो..."

एक वृद्धा ने, जो काले वस्त्र पहने थी और वैरागिन की तरह संयमी दिखाई देती थी, चुपचाप वायलेट पुष्पों के गुच्छे इंजीनियर की ओर बढ़ाये। इंजीनियर ने दो गुच्छे ले लिये और उनमें से एक अपने मित्र को देते हुए विचारपूर्ण मुद्रा में कहा—

"त्रामा, तुम्हारा दिमाग़ कितना अच्छा है! भाई, यह दुःख की बात है कि तुम आदर्शवादी हो ..."

"फूलों और प्रशंसा-शब्दों के लिए धन्यवाद। तुम इसे दुःख की बात कहते हो?"

"हाँ तो! तुम यथार्थ में कवि हो और यदि तुम पढ़ो तो अच्छे इंजीनियर भी बन सकते हो ..."

त्रामा मुस्कुराया। उसके सफ़ेद दांत चमक उठे।

"हाँ, ठीक कहते हो!" उसने कहा—"इंजीनियर भी कवि ही होते हैं। तुम्हारे साथ काम करते हुए मैंने यह देख लिया है..."

"तुम बड़े विनयी हो ..."

"और मैंने सोचा कि इंजीनियर महाशय समाजवादी क्यों न बन जायं? समाजवादी भी तो कवि होता है ..."

दोनों व्यक्ति पूर्ण स्वीकार सूचक हंसी हंसे, हालांकि देखने में वे बहुत ही परस्पर विरुद्ध थे। एक था रूक्ष, बेचैन, भावहीन मुखमुद्रा और फीकी आँखोंवाला, जबकि दूसरा ऐसा लगता था मानो कल ही लुहारखाने में गढ़ा गया हो और जिसपर अभी तक पालिश चढ़ाना बाक़ी रहा हो।

"नहीं त्रामा, मैं तो यही पसंद करूंगा कि मेरा अपना छोटा-सा कारखाना हो और तुम जैसे तीन एक दर्जन अच्छे जवान मेरे यहाँ काम करें। तभी हम कुछ कर सकेंगे ..."

उसने मेज पर अपनी अंगुलियां धीरे-से पड़पड़ायीं और बटनहोल में फूल लगाते हुए आह भरी।

"धिक्कार है यदि किसी ने सोचा कि ऐसी फ़ालतू बातें आदमी को जीने से या काम करने से रोक सकती हैं ..." त्रामा ने उत्तेजित होकर कहा।

"ओहो, तो तुम मानवीय इतिहास को फ़ालतू बात मानते हो, मास्टर त्रामा?" हल्की मुसकान के साथ इंजीनियर ने पूछा। मज़दूर ने सिर पर से अपना टोप खिसका लिया और उसके साथ कुछ हावभाव दिखाते हुए जोश के साथ कहता गया—

"ओह, मेरे पुरखों का क्या इतिहास है?"

"तुम्हारे पुरखों का?" पहले शब्द पर जोर देते हुए तथा चुभती हुई मुस्कुराहट के साथ इंजीनियर ने पूछा।

"जी हाँ, मेरे। तुम शायद इसे गुस्ताखी मानते हो? लेकिन क्यों जोर्दानो ब्रुनो, वीको और मदज़ीनी मेरे पुरखे नहीं हैं? क्या मैं उनकी दुनिया में नहीं रह रहा हूँ? क्या मैं उनके महान विचारों का फल नहीं चख रहा हूँ?"

"अच्छा, यह तुम्हारा मक़सद था!"

"पुरखों ने दुनिया को जो कुछ दिया वह सब मेरा भी है।"

"बेशक," गंभीरतापूर्वक अपनी भौंहों को सिकोड़ते हुए इंजीनियर ने कहा।

"और जो कुछ मेरे पहले, हम लोगों से पहले किया गया है वह कच्ची धातु है, जिसे हमें इस्पात में बदल देना है, ठीक है न?"

"हाँ, यह तो बिल्कुल साफ़ है।"

"आखिर, आप पढ़े-लिखे लोग और हम मज़दूर भी अतीत के महान व्यक्तियों के विचारों का ही सुफल प्राप्त कर रहे हैं।"

"मैं कहाँ इससे इनकार करता हूँ?" इंजीनियर ने कहा और ज़रा मुड़कर देखा तो बग़ल में एक छोटा-सा लड़का खड़ा था जो चिथड़े पहने हुए था और खूब पिटी हुई गेंद जैसा लग रहा था। उसके गंदे, नन्हे हाथों में क्रोकस फूलों का एक गुच्छा था और वह अनुरोधपूर्वक कहता जा रहा था—

"महाशय, मेरे फूल खरीद लीजिये ..."

"लेकिन मेरे पास ये जो हैं..."

"महाशय, फूल कभी फ़ाज़िल नहीं हो सकते ..."

"वाह बच्चे, ठीक कहा तूने" त्रामा बोला—"ला, मुझे भी दो ठो दे दे ..."

और जब बालक ने उसे फूल दे दिये तो उसने अपना टोप उठाया और एक गुच्छा इंजीनियर की ओर बढ़ाया।

"लीजियेगा।"

"धन्यवाद।"

"बड़ी खुशी का दिन है, है न?"

"हाँ, पचास साल की उम्र में भी मैं उसके सौंदर्य की सराहना कर सकता हूँ ...।"

इंजीनियर ने आँखें सिकोड़कर अपने चारों ओर देखा और एक आह भरी।

"मैं मानता हूँ कि वासंतिक सूर्य की गरमी को तुम अपनी नसों में इतनी तेज़ी से लहराती हुई अनुभव करते हो, इसका कारण केवल यह नहीं कि तुम युवा हो बल्कि यह कि सारी दुनिया ही तुम्हें मेरी अपेक्षा बिल्कुल निराली दिखाई देती है। ठीक है न?"

"मुझे मालूम नहीं" दूसरे ने मुसकुराते हुए जवाब दिया— "लेकिन ज़िंदगी अच्छी ज़रूर है।"

"हाँ, शायद उम्मीदों की वजह से?" इंजीनियर ने कुछ संदेहभरे स्वर में पूछा। इस सवाल ने उसके साथी को डंक-सा मारा क्योंकि टोप को फिर से सिर पर रखकर उसने तड़ाक से जवाब दिया—

"ज़िंदगी अच्छी है उन सब चीज़ों की वजह से, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ। खैर, मेरे प्यारे दोस्त, शब्द मेरे लिए केवल ध्वनियां और अक्षर नहीं हैं; मैं जब कभी पुस्तक पढ़ता हूँ, चित्र देखता हूँ या किसी सुंदर वस्तु का अवलोकन करता हूँ तब मुझे ऐसा लगता है कि मैंने खुद अपने हाथों से उन चीज़ों का निर्माण किया है।"

इसपर दोनों हंस उठे। एक हंसा खुलकर और खिलखिलाकर, मानो अच्छी तरह हंसने की अपनी क्षमता पर उसे अभिमान हो। हंसते समय उसने अपना सिर पीछे की ओर झटका और चौड़ा सीना आगे

12*

की ओर तान लिया। दूसरे की हंसी लगभग निःशब्द थी, अवरुद्ध-सी थी। हंसते समय उसके दांत दिखाई दिये जिनमें सोना भरा हुआ था और उन्हें देखकर ऐसा लगता था कि वह अभी अभी सोना चबाता रहा हो और फिर दांत साफ़ करना भूल गया हो।

"आमा, तुम बड़े अच्छे युवक हो और तुम्हें देखकर हमेशा ही खुशी होती है," इंजीनियर बोला और पलक मारकर उसने आगे कहा—"खासकर जब तुम उपद्रव नहीं मचाते ..."

"ओह, मैं तो हमेशा ही उपद्रव मचाता हूँ ..." और झूठी गंभीरता की अभिव्यक्ति में, अपनी अथाह, काली आँखों को सिकोड़ते हुए उसने पूछा—

"मैं मानता हूँ कि उस समय हमारा बरताव बिल्कुल ठीक था।"

इंजीनियर ने कंधे सिकोड़े और उठ खड़ा हुआ।

"जी हाँ, बिल्कुल! तुम जानते हो, उस मामले में कंपनी को लगभग सैंतीस हज़ार लीरों से हाथ धोना पड़ा ..."

"अक़्लमंदी यह होती कि उस रक़म को मज़दूरों की तनख़ाह में मिला देते ..."

"ऊंह! तुम्हारा हिसाब ग़लत है। और अक़्लमंदी? अरे, हर जानवर के पास अपनी खास अक़्लमंदी होती है।"

उसने अपना शुष्क, पीला हाथ आगे बढ़ाया और जब मज़दूर ने उससे अपना हाथ मिलाया तो वह बोला—

"मैं फिर दोहराता हूँ कि तुम्हें पढ़ना चाहिये और वह भी सख़्त मेहनत के साथ ..."

"मैं हर मिनट कुछ न कुछ नयी बात सीखता हूँ..."

"तुम बड़े प्रतिभाशाली इंजीनियर बन सकोगे।"

"ओह, वैसे भी मेरी प्रतिभा ठीक काम दे रही है।"

"अच्छा, मेरे ज़िद्दी दोस्त, नमस्ते..."

अपने दुबले-पतले पैरों से लंबे डग भरते हुए तथा अपने दाहिने हाथ की लंबी-पतली अंगुलियों को दस्ताने से ढकते हुए इंजीनियर अकातिया वृक्षों के नीचे से और सूर्य-किरणों के बेल-बूटों के बीच में से चला गया। नाटा-सांवला खानसामा रेस्तरां के दरवाज़े के पास से हट गया जहाँ खड़ा रहकर वह इन दोनों की बातचीत सुन रहा था और तांबे के कुछ सिक्कों के लिए अपनी जेब को टटोलनेवाले मज़दूर से बोला—

"बूढ़ा हो रहा है हमारा मशहूर इंजीनियर..."

"ओह, वह आज भी अपनी योग्यता का एक ही है।" मज़दूर ने आत्मविश्वास के साथ कहा। "उसके दिमाग़ में अभी भी तेज़ आग धधक रही है..."

"अच्छा, अब की बार आपका भाषण कहाँ होगा?"

"वहीं, मज़दूरों के भरती केंद्र पर। क्या तुमने कभी मेरा भाषण सुना है?"

"हाँ साथी, तीन बार..."

तपाक से हाथ मिलाकर और मुस्कुराते हुए वे विदा हुए: एक इंजीनियर की विरुद्ध दिशा में चला गया जबकि दूसरा उदासी भरी धुन गुनगुनाता हुआ मेज साफ़ करने लगा।

सफ़ेद एप्रन पहने हुए छात्रों—लड़कों तथा लड़कियों—का एक दल बीच रास्ते से चारों ओर हल्ला-गुल्ला मचाता तथा हंसी-मजाक बिखेरता हुआ चला जा रहा था; सबसे आगे चलनेवाली

जोड़ी ज़ोरों से काग़ज़ की तुरहियां वजा रही थी और अकातिया वृक्ष उनपर हिम-श्वेत पंखुड़ियों की वर्षा कर रहे थे।

वैसे हमेशा ही, और खासकर वसंत ऋतु में, वच्चों को देखकर हृदय को यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि उच्च तथा आनंदपूर्ण स्वर में नारा लगायें—

"खुश रहो, नन्हे नागरिको। तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल हो।"





वदला

अपने पुरखों की हड्डियों से समृद्ध वनी धरती पर जव रोटी का एक टुकड़ा भी मिलना मुश्किल हो जाता है तो जरूरत के मारे आदमी को मजबूरन अपनी मातृभूमि से विदा लेकर घर से तीस दिन का सफ़र करके दक्षिण अमेरिका की शरण लेनी पड़ती है—आखिर ऐसी वेवसी में आदमी करे भी क्या?

यह व्यक्ति कोई भी क्यों न हो, उसकी वही हालत हो जाती है जो अपनी माता के वक्ष से जवरदस्ती हटाये गये शिशु की। विदेश की मदिरा उसे कड़ई लगती है; उसके दिल को खुश करने के वजाय वह उसे उत्कंठित, खिन्न तथा स्पंज की तरह पिलपिला वना देती है, और मातृभूमि के वक्ष से उखाड़ा गया उसका हृदय सव तरह की वुराई तथा वेरहमी को उसी प्रकार सोख लेता है जिस प्रकार स्पंज पानी को।

इधर कलाब्रिया में हमारे नौजवान ग्राम तौर पर महासागर की मुसाफ़िरी पर रवाना होने के लिए घर से विदा होने के पहले विवाह कर लेते हैं—शायद यह मानकर कि स्त्री के प्रति उनका प्यार उनके मातृभूमि-प्रेम को और गहरा बनाएगा—क्योंकि आदमी के मन में स्त्री के प्रति उतना ही आकर्षण होता है जितना देश के प्रति; और पराये मुल्क में आदमी का रक्षक उस सच्चे प्यार से बढ़कर और कोई नहीं है जो बराबर उसे अपनी मातृभूमि की, और अपनी प्रियतमा के वक्ष की ओर बुलाता रहता है।

किन्तु दारिद्र्य तथा पार्थक्य की छाया से दूषित ये विवाह लगभग हमेशा ही दुर्दैव, प्रतिहिंसा तथा रक्तपात के दुःखांत नाटकों की प्रस्तावना सिद्ध होते हैं। हाल ही में, अपेनियन पर्वतमाला में बसी हुई सेनेर्किया नामक बिरादरी में एक ऐसी ही वारदात हुई।

यह एक सीधा-सादा किन्तु भयंकर क़िस्सा है जो कि बाइबल में से लिया हुआ लगता है। उसे शुरू से जानने के लिए हमें पांच साल पीछे जाना होगा। पांच बरस पहले, ऊंचे पहाड़ में स्थित साराचेना नामक एक छोटे-से देहात में एक सुंदर युवती रहती थी जिसका नाम था एमीलिया ब्राको। उसका पति अमेरिका गया हुआ था और वह अपने सास-ससुर के साथ रहती थी। वह बड़ी स्वस्थ तथा सशक्त लड़की थी और काम-काज में कुशल। उसकी आवाज़ सुरीली थी और वह खुश मिज़ाज थी। हंसी-मज़ाक की शौक़ीन और ख़ूबसूरती के घमंड में ज़रा-सी इठलाने-अकड़नेवाली। इससे देहाती छैलों तथा पहाड़ी लकड़हारों को वह अपने पीछे पागल कर देती। जवानी हंसी-दिल्लगी करते हुए भी वह अपनी मान-रक्षा कर लेती और यद्यपि उसकी प्रसन्न हंसी कइयों के मन में अनुरागमयी आशाओं की लहरें

पैदा कर देती तथापि कोई भी आदमी यह घमंड नहीं कर पाता कि मैंने उसे जीत लिया है।

यह तो जानी-मानी बात है कि संसार में डाह का डंक सबसे ज्यादा परेशान करता है शैतान को और बूढ़ी औरत को। एमीलिया रहती थी अपनी सास के साथ और जहाँ बुरा काम करना है वहाँ शैतान अपना डेरा डाल ही लेता है।

"क्यों बहूरानी, शौहर की ग़ैरहाज़िरी में तुम्हें बड़ा मज़ा आता है न, मेरी लाड़ली?" बुढ़िया कह देती। "मैं यह सब उसे लिख भेजूंगी। ध्यान रखो, तुम्हारे हर क़दम पर मेरी निगरानी है। याद रखो, तुम्हारी इज़्ज़त में हमारी इज़्ज़त है..."

शुरू शुरू में एमीलिया शांत स्वर में अपनी सास को विश्वास दिलाती कि वह अपने पति को प्यार करती है और खुद अपने को कोसने की कोई वजह उसके पास नहीं है। लेकिन बुढ़िया अपनी गंदी आशंकाओं से उसको अपमानित करती रही और शैतान से बढ़ावा पाकर उसने ग़लतफ़हमियां फैलाना शुरू किया कि उसकी बहू सारी लाज-लज्जा खो बैठी है।

जब एमीलिया ने यह सुना तो घबड़ा उठी और उस बूढ़ी डाइन से उसने अनुनय-विनय की, कि डाहभरी गपशप से वह उसका सत्यानास न कर दे। उसने क़सम खाकर कहा कि उसने कभी भी अपने पति के प्रति विश्वासघात नहीं किया है, यहाँ तक कि सपने में भी उसे धोखा देने की नहीं सोची है। लेकिन बुढ़िया कहाँ उसका विश्वास करने लगी?

"ऐसी क़समों की क़ीमत मैं अच्छी तरह जानती हूँ," बुढ़िया ने ताना मारा, "मैं भी तो कभी जवान थी! सुनो, मैंने तो उसको

लिख भी दिया है कि वह फ़ौरन घर लौट आये और अपनी मान-मर्यादा की रक्षा करे!"

"क्या, लिख भी दिया?" एमीलिया ने हाँफते हाँफते धीमी आवाज़ में पूछा।

"हाँ, लिख दिया।"

"वहुत अच्छा..."

हमारे मर्द, अरबों की तरह डाही होते हैं; और एमीलिया समझ चुकी कि पति के घर लौटने पर उसकी क्या दशा होगी।

दूसरे दिन जव सास लकड़ी वटोरने के लिए जंगल चली गयी तो एमीलिया भी अपने लहंगे में कुल्हाड़ी छिपाये उसके पीछे पीछे चल दी। वाद में उसने पुलिसवालों के पास पहुँचकर वता दिया कि उसने अपनी सास का ख़ून कर डाला है।

"वेक़सूर होते हुए भी कुलटा कहलायी जाने की वनिस्वत ख़ूनी वन जाना कहीं अच्छा है" उसने कहा।

उसके ख़िलाफ़ चलाये गये मुक़दमे में उसी की जीत हुई। सेनेर्किया के लगभग सभी वाशिंदे उसके पक्ष में गवाही देने गये और कुछ लोगों ने तो आंसू भरी आँखों के साथ जज से सानुरोध कहा—

"वह वेक़सूर है, उसकी ज़िंदगी ग़ैरइन्साफ़ से वरवाद की गयी है।"

सिर्फ़ वड़े पादरी कोत्सि ने इस दुर्दैवी स्त्री के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठायी। एमीलिया को निर्दोष मान लेने से उसने इन्कार किया। प्राचीन परंपरा की रक्षा करने की आवश्यकता पर उसने वल दिया और लोगों को यह चेतावनी दी कि वे वही ग़लती कर रहे हैं जो फ़्रीना को रिहा करते समय यूनानियों ने कर डाली थी। उन्होंने कहा कि फ़्रीना के सौंदर्य की चकाचौंध में वे उसके दुश्चरित्र को देख

न पाये। जो कुछ भी कहना था, कोत्सि ने कह डाला और शायद यह उसी की कृपा का फल रहा कि एमीलिया को चार साल की क़ैद की सज़ा दी गयी।

एमीलिया के पति की तरह उस देहात का एक और निवासी दोनातो ग्वारनाचिया भी अपनी युवती पत्नी को घर पर छोड़कर समुद्र पार चला गया था और वह बेचारी नीरस जीवन विताती रही।

तीन साल पहले दोनातो को अपनी माँ की एक चिट्ठी मिली जिसमें लिखा गया था कि उसकी पत्नी तेरेज़ा उसके वाप से रम गयी है और उनकी लगावट जारी है। देखिये, फिर वही, वूढ़ी औरत और शैतान!

ग्वारनाचिया ने नेपल्स जानेवाली पहले ही स्टीमर का टिकट कटवाया और यकायक घर पर आ धमका, मानो आसमान से टपक पड़ा हो।

उसकी पत्नी ने तथा वाप ने चौंक उठने का वहाना किया और इस सख्त दिमाग़, शक्की लड़के ने तव तक चुप्पी साधे रहने का निश्चय किया जव तक कि वह शिकायत की सचाई की जांच-पड़ताल न कर पाये; क्योंकि उसने एमीलिया आको वाला क़िस्सा सुन लिया था। उसने अपनी पत्नी के साथ लाड़-प्यार का वरताव किया और तव ऐसा दिखाई दिया कि दोनों फिर से सोहाग-रात मना रहे हों, यौवन के अनुरागमय मधुमास का आनंद ले रहे हों।

माँ ने वेटे के कानों में ज़हर उंडेलने की कोशिश की लेकिन उसने वात काटकर कहा—

"वस करो! मैं खुद ही देख लूंगा।"

वह जानता था कि खुद अन्याय का मारा व्यक्ति विश्वसनीय नहीं होता, भले ही वह अपनी माँ ही क्यों न हो।

लगभग आधी गर्मियां अमन-चैन में बीत गईं और दोनों पति-पत्नी ज़िन्दगी भर इसी तरह रह पाते अगर दोनातो का बाप अपने बेटे की छोटी-मोटी ग़ैरहाज़िरियों से फ़ायदा उठाकर फिर से अपनी बहू के साथ छेड़खानी शुरू न कर देता। लेकिन अब तेरेज़ा ने लंपट बूढ़े का डटकर विरोध किया जिससे वह आगबबूला हो उठा। तेरेज़ा की जवानी का मज़ा लूटने से इस तरह यकायक वंचित होना वह सह न पाया और उसने बदला लेने की ठानी।

"तुम बरबाद हो जाओगी" उसने धमकी दी।

"सो तुम भी" बहू ने जवाब दिया।

हम लोग ज्यादा बोलते नहीं।

दूसरे दिन बाप ने बेटे से कहा—

"क्या तुम्हें ख़बर है कि तुम्हारी बीबी ने तुमसे बेईमानी की है?"

बटे के चेहरे का रंग उड़ गया और सीधे बाप की आँखों में आँखें गड़ाकर उसने पूछा—

"आपके पास क्या सबूत है?"

"जिन्होंने उसके आलिंगनों का मज़ा लिया है उन्होंने मुझे बता दिया कि उसके पेड़ू पर एक बड़ा जन्म-चिन्ह है—कहो है न?"

"अच्छा" दोनातो ने कहा—"पिता जी, जब आप ही कहते हैं कि वह अपराधी है तब उसकी मौत दूर नहीं!"

निर्लज्ज बाप ने अपना सिर हिलाकर हामी भरी।

"बेशक! बदचलन औरतों को मरवा ही डालना चाहिए।"

"और आदमियों को भी" कहकर दोनातो वहाँ से चला गया। वह सीधे अपनी बीवी के पास पहुँचा और अपने भारी हाथों को उसके कन्धों पर रखकर बोला—

"मेरी बात सुनो। मुझे मालूम हो चुका है कि तुमने मुझसे बेईमानी की है। इस धोखेबाज़ी से पहले और बाद में भी हम दोनों का जो प्यार था, उसके लिए बता दो कि वह कौन आदमी है?"

"तुम्हारा बदमाश बाप ही तो तुमसे कह देता! अकेला वही..." वह चिल्लाई।

"तो वही है?" किसान युवक ने पूछा। उसकी आँखों में इस वक़्त खून उतर आया।

"उसने ज़बरदस्ती, धमकियां देकर मुझपर क़ाबू कर लिया। लेकिन पूरी सच्चाई सुन लो..."

दम घुट जाने के कारण वह ज़रा-सी रुक गई।

"बोल, आगे बोल!" उसे ज़ोरों से झंझोड़ते हुए पति गरज उठा।

"जी हाँ, जी हाँ" घोर निराशा में वह फुसफुसाई—"मैं और वह कुछ तीस-चालीस बार मियां-बीबी की तरह सोए..."

दोनातो एकदम घर में घुस गया, अपनी बन्दूक़ ले ली और सीधे खेत की ओर दौड़ा जहाँ उसका बाप पहले ही गया हुआ था। वहाँ उसने उन सारे शब्दों की बौछार की जो ऐसे अवसर पर आदमी एक दूसरे से कहते हैं, और दो ही गोलियों में उसने बाप को ढेर कर दिया। तब उसने बाप के बदन पर थूका और अपनी बन्दूक़ के कुन्दे से उसकी खोपड़ी कुचल डाली। कहते हैं कि बड़ी देर तक वह बाप की लाश की बेइज़्ज़ती करता रहा। वह कूदकर उसकी पीठ पर खड़ा हुआ और वहाँ उसने प्रतिहिंसा का नृत्य किया।

फिर अपनी पत्नी के पास पहुँचकर उसने वन्दूक़ में गोली भरी और कहा—

"चार क़दम पीछे खड़ी रहो और ख़ुदा की इवादत कर लो..."

वह रोने-विलखने लगी तथा ज़िन्दगी की भीख मांगने लगी।

"नहीं" वह वोला—"मुझे वही करना चाहिए जो न्याय की मांग है। मैं वही करूंगा जो तुम्हारे साथ अन्याय होने पर तुम कर देती..."

इतना कहकर उसने गोली चलाई और वीवी को चिड़िया की तरह मार डाला। फिर वह खुद अधिकारियों के सामने हाज़िर हुआ। जव वह देहाती सड़क पर से चल रहा था तो लोगों ने उसे रास्ता दिया और कइयों ने कह दिया—

"वाह दोनातो, तुमने वही वरताव किया जो इज़्ज़तदार आदमी को करना चाहिए..."

मुक़दमा चला और उसने वड़े जोश के साथ अपनी पैरवी की। एक असभ्य जीव की असंस्कृत वाणी वहाँ वरस पड़ी।

"मैं इसलिए वीवी व्याह लाता हूँ कि हमारे प्यार का फल ऐसा वालक हो जिसमें हम दोनों का जीवन जगमगाता रहे! जव आदमी प्यार करने लगता है तव उसकी दुनिया में न वाप की कोई हस्ती है और न माँ ही की; वहाँ रहता है सिर्फ़ प्यार। प्रेम अमर रहे! और अगर कोई आदमी या औरत उसे अपवित्र करे तो वे निस्सन्तान हो जायं, उन्हें ख़तरनाक महामारी हो जाय और वे कुत्ते की मौत मर जायं..."

वचाव पक्ष के वकील ने दरख़ास्त की कि जूरी यह निर्णय दे कि उसने ग़ुस्से के दौरे में ख़ून कर डाला; लेकिन जूरी ने दोनातो को रिहा कर दिया और लोगों ने तालियों की कड़कड़ाहट के साथ

इस निर्णय का स्वागत किया। दोनातो उस शान में सेनेर्किया लौट आया मानो कोई विजयी वीर हो। 'कलंकित प्रतिष्ठा के लिए रक्तपातपूर्ण प्रतिहिंसा की प्राचीन जातीय परम्परा का दृढ़तापूर्वक पालन करनेवाला व्यक्ति' कहकर लोगों ने उसका स्वागत किया।

दोनातो की रिहाई के कुछ ही दिन वाद एमीलिया आको जेल से रिहा हुई। जाड़ों का उदासी भरा मौसम था। ईसा की जयंती का पर्व समीप आ रहा था। यह ऐसा पर्वकाल होता है जव आदमी सव से अविक यह चाहते हैं कि अपने सगे-सम्वन्वियों के वीच रहें, अपने घर के गरम चूल्हे के पास वैठे रहें। लेकिन एमीलिया और दोनातो दोनों अकेले थे; क्योंकि उनकी वह शोहरत नहीं थी जिससे विरादरीवालों में उनके प्रति सम्मान जागृत हो जाय—ख़ूनी आख़िर ख़ूनी ही रहता है। वह लोगों को उत्तेजित कर सकता है, लोग उसका वचाव कर सकते हैं, लेकिन उससे प्रेम कैसे किया जा सकता है? दोनों के हाथों पर ख़ून के धव्वे थे और दिल उनके टूटे हुए थे। दोनों को मुक़दमे के दुःखद नाटक का सामना भी करना पड़ा था और सेनेर्किया के किसी भी वाशिन्दे को इसमें ज़रा-सा भी आश्चर्य नहीं हुआ कि आफ़त के मारे ये दो जीव समीप आकर एक-दूसरे की वरवाद ज़िन्दगी को फिर से वसाने-सजाने की कोशिश करें, क्योंकि वे दोनों जवान थे और थे कोमलता के प्यासे।

"वीते की दर्दभरी याद को लेकर हम यहाँ क्या करें?" शुरुआती वोसों के वाद दोनातो ने एमीलिया से कहा।

"अगर मेरा पति लौट आये तो वह मुझे ज़रूर मार डालेगा; क्योंकि अव की वार मैं अपने मन में उसके प्रति वेईमान वन गई हूँ" एमीलिया ने कहा।

सफ़र के लिए काफ़ी रुपया जुटते ही समुद्र पार जाने का उन्होंने निश्चय किया। और अपने लिए कुछ अमन-चैन का आसरा ढूंढ निकालने में वे शायद कामयाव भी हो जाते, लेकिन वे ऐसे लोगों के वीच रह रहे थे जिनका तर्क इस प्रकार था—

"जोश में किये गये खून को हम मुआफ़ कर सकते हैं। मान-मर्यादा की रक्षा के लिए किये गये अपराव पर हमने तालियां भी वजायीं। लेकिन क्या ये दोनों अव उन्हीं परंपराओं को पैरों तले कुचल नहीं रहे हैं जिनके नाम पर काफ़ी खूनखरावी हो चुकी है?"

ये कठोर तथा दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय, विकट तथा धूमिल अतीत की ये प्रतिध्वनियां, दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक ज़ोरदार होती गयीं, यहाँ तक कि आखिर वे एमीलिया की माँ सेराफ़ीना अमातो के कानों तक जा पहुँचीं। यह एक मज़वूत, घमंडी औरत थी और पचास साल की उम्र के होते हुए भी उसमें पार्वतीय सौंदर्य झलक रहा था।

शुरू शुरू में अपमानकारक अफ़वाहों में उसने विश्वास ही नहीं किया।

"सरासर झूठ" उसने कहा—"क्या तुम भूल गये कि मान-मर्यादा के वचाव के लिए मेरी वेटी ने किस तरह की पीड़ाएं सहीं?"

"हम नहीं, खुद वही भूल गयी है" लोगों ने उत्तर दिया।

फिर सेराफ़ीना, जो दूसरे देहात में रहती थी अपनी वेटी के पास आयी और वोली—

"लोगों ने तुम्हारे वारे में वकना शुरू किया है; तुम्हारे वारे में इस तरह की वातें मैं नहीं सुनना चाहती। पहले तुमने जो कुछ भी

किया था वह रक्तपात के बावजूद एक शुद्ध और प्रतिष्ठित स्त्री का सत्कार्य था; और वह सारे लोगों के लिये एक आदर्श ही बना रहना चाहिये।"

उसकी बेटी रोने-सिसकने लगी और बोली—

"दुनिया का अस्तित्व आदमी के लिये है। लेकिन आख़िर आदमी भी क्या है, अगर वह अपने लिये रह न पाये?"

"अगर तुम इतनी बेअक़्ल हो कि इस सवाल का जवाब ख़ुद ही न पा सको तो जाके पादरी से पूछ लो" माँ ने उत्तर दिया।

इसके बाद वह दोनातो के पास गयी और उसे सख़्त ताक़ीद कर दी—

"मेरी बेटी का पीछा छोड़ दो, वरना तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

"सुनिये तो" युवक ने अनुनय किया—"मैं आपकी बेटी को दिलोजान से प्यार करता हूँ। वह मेरी ही तरह बदक़िस्मत है। उसे अपने साथ विदेश ले जाने की इजाज़त मुझे दीजिये और फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

किन्तु यह कहकर उसने आग में तेल ही उंडेल दिया।

"मतलब यह कि तुम भाग जाना चाहते हो?" क्रोध तथा निराशा के साथ सेराफ़ीना चिल्ला उठी। "नहीं, यह कभी नहीं हो सकता!"

वे जानवरों की तरह गुर्राते-फुंकारते हुए और विद्वेष भरी आंखों से एक-दूसरे को घूरते हुए विदा हुए।

उस दिन से सेराफ़ीना इन प्रेमियों पर ऐसी ही नजर रखे रही जिस तरह होशियार कुत्ता शिकार की टोह में। लेकिन इसने

प्रेमियों के मिलन में कोई रुकावट नहीं आयी। रात में लुकछिप कर उनकी मुलाक़ातें होती ही रहीं। आख़िर प्यार भी तो जानवर जितना चालाक और होशियार ज़रूर होता है!

लेकिन एक वार सेराफ़ीना ने छिपे छिपे अपनी वेटी तथा ग्वारनाचिया के भाग जाने के मंसूबे सुने—और उस कुसाइत पर उसने एक राक्षसी काम करने की ठान ली।

रविवार के दिन लोग प्रार्थना के लिये गिरजे में इकट्ठा हुए। आगे की ओर स्त्रियां अपने शोख, पर्वकालीन लहंगे तथा ओढ़नियां पहने हुए खड़ी थीं और उनके पीछ पुरुष घुटनों के वल खड़े थे। हमारा प्रेमी युगल भी मदोन्ना से प्रार्थना करने आया था कि वह उनकी सहायता करे।

सेराफ़ीना अमातो सवके वाद ज़रा देर से गिरजे में आयी। उसने भी अपनी पर्वकालीन पोशाक पहन रखी थी। अपने लहंगे पर उसने कढ़ा हुआ लम्वा-चौड़ा एप्रन पहन रखा था और उसकी तहों में एक कुल्हाड़ी छिपा रखी थी।

धीरे धीरे, कुछ प्रार्थना कुड़वुड़ाती हुई वह सेनेर्किया के ग्रामरक्षक संत माइकेल की मूर्ति के पास पहुँची। घुटने टेककर उसने मूर्ति के हाथ को अपनी हथेली से स्पर्श किया और फिर चोरी चोरी, सरकती हुई अपनी वेटी के यार के पास आ पहुँची, जो औरों के साथ घुटनों के वल खड़ा था। वहाँ आते ही आते उसने युवक के सिर पर कुल्हाड़ी से इस तरह दो वार किये जिससे उसकी खोपड़ी पर रोमन अक्षर 'वी' (वेंदेत्ता) का चिह्न वन गया जोकि वदले की निशानी माना जाता है।

सारी प्रार्थना-सभा में घवड़ाहट की लहर दौड़ गयी। लोग चीख़ते-चिल्लाते दरवाज़े की ओर दौड़े। कई तो पटियादार फ़र्श पर वेसुध गिर पड़े और कई लोग वच्चों की तरह सिसक सिसककर रोने लगे। लेकिन सेराफ़ीना ग्रामीण न्यायदेवता की मूर्ति की तरह, वेचारे दोनातो तथा अपनी वेहोश लड़की के ऊपर कुल्हाड़ी ताने खड़ी थी।

वह कई मिनट इसी तरह खड़ी रही और जव लोगों ने होश में आकर उसे पकड़ लिया तो उसन जंगली खुशी से ववकती हुई आँखों से आकाश की ओर देखते हुए ज़ोर से प्रार्थना शुरू की—

“संत माइकेल, मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ! तुम्हीं ने तो मुझे अपनी वेटी की वदनामी का वदला लेने की ताक़त दी।”

जव उसे पता लगा कि ग्वारनाचिया अभी तक ज़िन्दा है, उसे कुर्सी में वैठाकर दवाफ़रोश के यहाँ पहुँचाया गया है और वहाँ उसके भयंकर घावों की मरहमपट्टी की जा रही है, तो वह मारे क्रोध के कांप उठी और अपनी उन्मत्त तथा भयपूर्ण आँखों को गुरेरती हुई चिल्ला उठी—

“नहीं, नहीं, मैं भगवान में भरोसा करती हूँ। वह आदमी ज़रूर मर जाएगा। मैंने उसपर दो प्राणघातक वार किये हैं, मेरे हाथों ने यह जान लिया है, और—भगवान न्यायी है—उस आदमी को मर ही जाना चाहिये!”

इस औरत के ख़िलाफ़ शीघ्र मुक़दमा दायर किया जायेगा और उसे सख़्त सजा भी मिलेगी; लेकिन कैसी भी सज़ा हो, वह ऐसे व्यक्ति को क्या सवक़ सिखायेगी जो मानता है कि दूसरों की हिंसा

करने का उसे अधिकार है? हथौड़े की मार से लोहा मुलायम थोड़े ही बनता है?

लोगों का न्याय आदमी से कहता है— तुम अपराधी हो। आदमी उत्तर देता है—मैं अपराधी हूँ या निरपराध, भला उससे क्या होता है? हालत वही रहती है जो पहले थी।

और प्रिय महाशयो, अन्त में कह देना चाहिये कि आदमी वहीं बढ़े और फूले-फले जहाँ पर भगवान ने उसे रखा हो, जहाँ उसे ज़मीन और जोरू का प्यार मिलता हो...





ज्योवान्नी तूवा

बूढ़े ज्योवान्नी तूवा का हृदय तभी से सागर पर समर्पित हुआ था जब वह एक बालक था। सागर! वह नील विस्तार जो एक क्षण किशोरी की चितवन की तरह कोमल-निर्मल रहता है तो दूसरे ही क्षण स्त्री के अनुरागपूर्ण हृदय की तरह उद्दंड। वह ऐसा अरण्य है जो मछलियों के लिये अनावश्यक सूर्यप्रकाश को सोख लेता है और सजीव सुनहरी सूर्यकिरणों के सम्पर्क में आकर उत्पन्न करता है केवल सौंदर्य तथा चौंधियानेवाली जगमगाहट। वह विश्वासघाती सागर जिसके अमर संगीत को सुनकर हृदय दूर दूर जलयात्रा करने की अदम्य इच्छा से परिपूर्ण हो जाता है। कई व्यक्तियों को फुसलाकर वह दूर ले गया है उस मूक, प्रस्तरमयी धरती से जो आसमान से अपार आर्द्रता तथा आदमी से प्रगाढ़ परिश्रम लेकर बदले में देती है केवल अल्प-सा आनन्द!

बचपन में तूवा एक अंगूर-बगीचे में काम करता था जोकि पहाड़ के बाज़ू में भूरे पत्थरों की दीवालों के आधार से बनाये गये

सपाट ऊंचे क्षेत्र में लगाया गया था। इर्द-गिर्द थे अपने शाखा-करों को फैलाये हुए अंजीर के पेड़ तथा गढ़ी हुई-सी पत्तियां धारण किये हुए ज़ैतून वृक्ष; नारंगी के गहरे हरे पेड़ तथा अनार की उलझी हुई डालें; ऊपर उज्ज्वल आकाश तथा नीचे गरम धरती; और सारा वातावरण फूलों की भीनी भीनी सुगन्ध से सराबोर। फिर भी तूवा बुभुक्षित हृदय से तथा प्यासी आँखों से उस नीले विस्तार की ओर ताकता रहता। धरती उसके पैरों तले मानो खिसकती-लुढ़कती रहती। खारी हवा को प्राशन करता हुआ वह तब तक टकटकी बांधे रहता जब तक कि उसके पान से मतवाला न बन जाय। वह शून्यचित्त, सुस्त तथा उद्धत बन जाता जैसा कि अक्सर उन लोगों के बारे में होता है जिनपर सागर का जादू फिर गया हो, जो सागर के प्यार में बुरी तरह फंस गये हों...

और छुट्टी के दिन?... प्रभात का समय है, सूरज अभी अभी निकल रहा है और सोरेन्तो का आकाश ऐसी लालिमा लिये हुए है मानो ख़ूबानी के फूलों से बुना हुआ हो। ऐसी प्रसन्न वेला में, भेड़-कुत्ते की तरह झबरा-सा तूवा कन्धे पर बंसी रखे, एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदता हुआ, पहाड़ी पर से नीचे दौड़ता जाता। उस समय वह लचीली मांसपेशियों की अस्थिहीन गठरी-सा लगता। दौड़कर वह सागर के पास पहुंच जाता। उसका छित्तीदार चेहरा तब मोदमयी मुसकान से चमक उठता जब खिलते हुए फूलों की मधुर सुगन्ध से भी तेज़ समुद्र-गन्ध प्रसन्न प्रभात पवन की लहरों पर तैरती हुई उसके पास पहुंच जाती और नीचे शिलाखण्डों पर हिलोरनेवाली लहरों की मन्द मरमराहट उसको सुनाई देती। किशोरियों की तरह उसे अपनी ओर आकृष्ट करती हुई ये लहरें...

उधर वह एक गुलाबी-भूरी चट्टान पर बैठा है। कांसे के-से उसके पैर ढीली तौर से लटक रहे हैं, जामुन की तरह काली काली और बड़ी बड़ी उसकी आंखें पारदर्शी तथा हल्के हरे रंगवाले पानी को निहार रही हैं और यह तरल शीशा उसके सामने एक ऐसा अद्भुत संसार उपस्थित करता है जोकि उसके द्वारा सुनी गयी सभी परी-कथाओं से अधिक मोहकारी है—सागर तल में ग़लीचों से आच्छादित शिलाओं के बीच लाल-सुनहरी समुद्री लतायें; समुद्री लताओं के वन में से झांकनेवाले मोहक रंगवारी सजीव समुद्री पुष्प "वायोली"; मतवालों की-सी आँखों, धारीदार नाकों और उदर पर नीला दाग़वाले "पेर्कोया"; स्वर्णरंगी "सार्प", भड़कीली धारियोंवाले "कान्यी," खुशदिल शैतानों की तरह तेज़ रफ़्तार से इधर उधर झपटनेवाले कृष्णवर्ण "ग्वर्राचीनी", चांदी की तश्तरियों की तरह चमकदार "स्पराल्योनी" तथा "ओक्यात" और अन्य कई प्यारी प्यारी मछलियां—सबके सब चालाक जीव, जोकि अपने गोल गोल मुंह से चारे को पकड़ने से पहले अपने छोटे छोटे दांत गड़ाकर आज़माते हैं।

इस चमकीले तथा प्रसन्न जल में मूंछोंवाले दशपाद केकड़े उसी तरह तैरते हैं जिस तरह हवा में पंछी; तपस्वी केकड़े अपने अलंकृत कवच-गृहों को अपने पीछे पीछे खींचते हुए सागर-तलस्थ शिलाओं पर रेंगते रहते हैं: रक्तवर्ण तारा-मत्स्य हौले हौले आगे सरकते हैं। बैंगनी छत्रिक चुपचाप झूलते रहते हैं और तेज़ दांतवाले मुरेना का भयंकर मुंह जब-तब किसी पत्थर के नीचे से बाहर निकलता है, लाल चित्तियोंवाला उसका रंगबिरंगे सर्प सदृश शरीर इधर-उधर ऐंठता-मरोड़ता है—बिल्कुल परी-कथा की डायन की तरह, लेकिन उससे भी अधिक बेडौल और भयंकर; इधर यकायक भूरा ऑक्टोपस पानी में गन्दे चिथड़े की तरह फैल जाता

है और एकदम अपने शिकार पर झपट पड़ता है ; और इतने में दिखाई देता है बाँस की वंसियों ऐसे लम्बी लम्बी मूंछोंवाले लोब्स्टर जो चलते समय इन मूंछों को झटकता जाता है। ये और इसी तरह के कई अन्य विचित्र जीव-जन्तु इस पारदर्शक पानी में रहते हैं, जिसके ऊपर सागर के समान ही स्वच्छ किन्तु उससे कई गुना रिक्त आकाश तना हुआ है।

और सागर सांस लेता है, उसका नील वक्ष ऊपर-नीचे होता है। हरित-वर्ण श्वेताग्र लहरें उस चट्टान से टकराती हैं जिसपर तूवा वैठा हुआ है। ये हुलास भरी हिलोरें उसके पैरों से चटकाने के प्रयत्न में एक-दूसरी से होड़-सी लगाती हैं—कभी कभी उनकी चेष्टा सफल हो जाती है और तव तूवा चौंककर मुसकुराता है। फिर लहरें भी ख़ुशी से खिलखिलाती हैं और मानो सहमकर चट्टान से दूर भागती हैं— लेकिन हिलोरें लेती हुईं उसके पास लौट आने के लिये। एक सूर्य किरण पानी में इस तरह गहराई तक गड़ी हुई है, मानो पानी के वक्ष में तेज रोशनी की कीप धंसी हुई हो। विचारों तथा वासनाओं से मुक्त तूवा की आत्मा परमानंद में लवलीन हो जाती है, प्रकृति सौंदर्य का शांतिपूर्वक रसग्रहण करके तृप्त हो जाती है। चमकदार, नीरव लहरें उसके हृदय में हिलोरती हैं और उसकी सर्वव्यापी आत्मा स्वयं सागर की तरह असीम स्वतंत्रता का अनुभव करती है।

इस तरह तूवा छुट्टी के दिन विताता था। कुछ समय वाद, सागर उसे सप्ताह में कई वार वुलाने लगा ; क्योंकि एक वार किसी व्यक्ति के हृदय पर उसने क़ावू कर लिया कि वह व्यक्ति उसी का एक हिस्सा वन जाता है—ठीक उसी तरह, जिस तरह हृदय व्यक्ति का एक अंग-मात्र है। ग़रज़ यह कि तूवा ने अपने हिस्से की ज़मीन को भाई के हवाले कर दिया और अपनी ही तरह सागर-प्रेमी लोगों की एक

मण्डली के साथ, दूर सिसिली के किनारे प्रवाल निकालने के लिये चला गया। यह काम बड़ा दिलचस्प और खतरनाक भी है। दिन में दस बार डूब जाने का खतरा रहता है। लेकिन उस समय कैसी अनोखी चीज़ें नज़र आती हैं जब भारी जाल नीले नीले पानी से ऊपर आता है– मस्तिष्क के विचारों की तरह तेज़ लोहदन्तों की कोरवाले अर्धगोलाकृति जाल में चित्रविचित्र जीवजंतुओं का समुदाय और उसके बीचोंबीच मूल्यवान मूंगे की गुलाबी डालें,–यह है मानव के लिये सागर का उपहार!

और समुद्र के इंद्रजाल में फंसा हुआ यह आदमी धरती से सदा के लिये बिछुड़ गया। स्त्रियों को भी उसने प्यार किया सपने में की तरह, मुख्तसर और चुपचाप; क्योंकि उनसे वह बातचीत कर सकता था केवल उन चीज़ों के बारे में जो उसको मालूम थीं– मछलियां और मूंगे, लहरों की खेलकूद, हवा की सनकें और अज्ञात सागरों की यात्रा करनेवाले बड़े बड़े जहाज़, इत्यादि। भूमि पर उसे भय लगता, ज़मीन पर वह सावधानी तथा आशंका से क़दम बढ़ाता और लोगों से कुछ बातचीत नहीं करता, उनकी ओर सिर्फ़ उस व्यक्ति की शोधक आँखों से ताकता रहता जोकि सागर की विभिन्न गहराइयों को देखने का अभ्यस्त हो और उनका विश्वास न करता हो। लेकिन सागर पर वह सन्तुष्ट तथा सुखी था, अपने साथियों का ध्यान रखता था और डालिफ़न की तरह चपल था।

लेकिन आदमी अपने लिये कैसी भी अच्छी जिन्दगी क्यों न चुन ले, वह एक हद से ज़्यादा टिक नहीं पाती। जब तजरबेकार मल्लाह तूबा ने अस्सी साल की सीमा लांघी तो उसके हाथ गठिया के कारण ऐंठ गये और उन्होंने काम करने से इनकार कर दिया–बस!–उसके गांठदार पैर उसके झुके हुए शरीर को बड़ी मुश्किल से संभाल सकते थे और तब कई तूफ़ानों का मुक़ाबला करनेवाला यह बूढ़ा उदासी के साथ

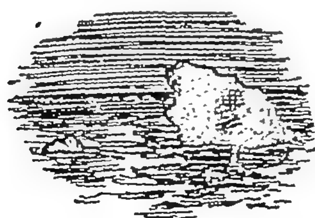
अपने टापू पर उतरा; पहाड़ी पर चढ़कर अपने भाई के यहाँ पहुँचा ताकि उसके बच्चों तथा नाती-पोतों के बीच रह सके। लेकिन ये लोग इतने दरिद्र थे कि उनसे उदारता की आशा नहीं की जा सकती थी, और अब बूढ़ा तूबा पहले की तरह स्वादिष्ट मछलियां भी नहीं ला सकता था!

इन लोगों के बीच बेचारे बूढ़े की हालत बहुत ही ख़राब थी; वे बड़ी सावधानी से देखते रहते कि वह अपने टेढ़े-मेढ़े झुर्रीदार हाथ से रोटी के कितने टुकड़े अपने दंतविहीन मुंह में ठूंसता है। उसने शीघ्र ही पहचान लिया कि वह इन लोगों को बोझ-सा मालूम होता है। उसकी आत्मा पर अंधेरा छा गया, हृदय दुःख से सिकुड़ गया, धूप से रूक्ष बने उसके शरीर पर की झुर्रियां और गहरी हो गयीं और उसकी जर्जर अस्थियां एक नयी पीड़ा से कांप उठीं। सुबह से रात तक सारा दिन वह अपने भाई के घर के बाहर शिलाखंडों पर बैठा रहता, उसके क्षीण नेत्र उस चमकदार सागर को निहारते रहते, जहाँ उसका समूचा जीवन गल गया था—वह नीला सागर जो सूर्य प्रकाश में सुंदर स्वप्न की तरह जगमगा उठता।

यह उससे बहुत दूर था और सागर तक की सैर बूढ़े आदमी के लिए आसान नहीं थी। लेकिन उसने मन में निश्चय कर लिया और एक निस्तब्ध रात में उठकर नुकीले पत्थरों पर से गलितगात्र गोह की तरह रेंगता हुआ पहाड़ी के नीचे की ओर चल दिया। और जब वह लहरों के पास पहुँचा तो वे धरती की निर्जीव चट्टानों पर उछल उछलकर अपनी सुपरिचित मरमर ध्वनि सुनाती हुई उससे मिलीं—आदमियों की आवाज़ों की तुलना में यह ध्वनि अधिक मृदु थी। जैसा कि बाद में लोगों ने अनुमान किया, बूढ़ा घुटनों के बल बैठ गया, आँखें आकाश की ओर उठायीं, सभी अनजाने लोगों के लिए कुछ प्रार्थना की, अपने अस्थिपंजर शरीर को ढकनेवाले चिथड़े उतार दिये, जोकि चमड़ी की

तरह उसके शरीर से चिपके हुए थे। यह अपनी पुरानी चमड़ी — जोकि उसकी होकर भी उसकी नहीं थी — एक चट्टान पर छोड़ दी और तब पानी में चल दिया। अपने धूमिल सिर को झटका देकर वह पीठ के बल लेट गया। मुंह उसका आकाश की ओर था। इसी स्थिति में वह दूर दूर तैरता गया, जहाँ आकाश की गहरी नीलिमा का परदा अपने किनारे से लहरों की काली मुलायम मखमल को स्पर्श करता है, और जहाँ तारे पानी के इतने समीप होते हैं कि बिल्कुल आसानी से हाथ आ जायं।

कोमल ग्रीष्म-रात्रियों में सागर उतना ही शांत रहता है जितनी कि दिन भर की खेलकूद से श्रांत शिशु की आत्मा। वह सो जाता है, अस्पष्ट उसासें भरता है और संभवत: सुंदर सपने देखता है! यदि रात के समय गहरे, गरम पानी में आप तैरने लगें तो आपके हाथों के नीचे नीली नीली चिनगारियां चमकती हैं, चारों ओर नीली ज्योति जगमगाती है और माता द्वारा बतायी गयी कहानी की तरह दुलारभरी कोमल कांति में आपकी आत्मा धीरे धीरे विलीन हो जाती है।





चाचा चेक्को

पवित्र तथा शांत वातावरण में सूर्योदय होता है और सुनहरे भटकटैया पुष्पों की मधुर गंध से लदी हुई हल्की नीली धुंध, प्रस्तरमय द्वीप से उठकर आकाश की ओर तैरती जाती है।

आकाश के फीके गुंबद के नीचे उनींदे जल के काले पुंज के मध्य में स्थित यह द्वीप भगवान भास्कर की पूजा-वेदी-सा दिखाई देता है।

तारे अभी अभी ज्योतिहीन हो चुके हैं किन्तु शुभ्र शुक्र अभी तक मंद प्रकाशित आकाश के शीतल विस्तार में रेशेदार बादलों की पारदर्शी पांत पर जगमगा रहा है। बादलों पर हल्की गुलाबी छटा फैली हुई है और प्रथम किरणों के प्रकाश में वे मंद मंद चमक रहे हैं। सागर के शांत वक्ष पर उनका प्रतिबिंब उस सीप के समान दिखाई देता है जो नीले सागर तल से ऊपर सतह पर आ पहुँचा हो।

रुपहले ओस कणों से लदी हुई घास की पत्तियां तथा फूलों की पंखुड़ियां, सूरज की ओर ऊपर उठती हैं। डंठलों की नोकों पर लटकनेवाले चमकदार ओस कण बड़े होकर गहरी नींद में पसीने से तर हो जानेवाली भूमि पर गिर जाते हैं। जी चाहता है कि ओस कणों की मृदु टपटप सुनते जाएं किन्तु उसके सुनाई न देने पर मन उदास होने लगता है।

पंछी जाग उठे हैं और अपना प्रातःसंगीत सुनाते हुए जैतून की पत्तियों में इधर-उधर उड़ रहे हैं, जबकि नीचे को ओर से उस सागर की भारी उसांसें सुनाई देती हैं जिसे सूरज ने जगा दिया है।

फिर भी वातावरण शांत है, क्योंकि लोग अभी तक सोये हुए हैं। भोर की ताज़गी में फूलों तथा तृणों की सुगंध ध्वनि से अधिक प्रभावशील लगता है।

एक छोटा-सा सफ़ेद घर द्राक्ष-लताओं से इस तरह ढंका हुआ है कि वह हरी लहरों से घिरी हुई नौका के समान दिखाई देता है! इस घर के दरवाज़े में से वृद्ध एत्तोरे चेक्को सूर्य का स्वागत करने के लिए वाहर आता है। अकेला जीव, छोटा-नाटा क़द, वंदर की तरह लंबे लवे हाथ, साधु-सन्यासी के समान नंगा सिर और चेहरे पर काल का हल इस तरह चला हुआ कि उसकी आँखें चेहरे की अनगिनत झुर्रियों में पूरी तरह छिपी हुई सी लगती हैं।

अपने काले वालदार हाथ को धीरे धीरे अपने ललाट की ओर उठाता हुआ वह गुलावी आसमान की दिशा में देखता है और अपने चारों ओर के दृश्य को निहारता है—चट्टानों की भूरी-वैंगनी पृष्ठ भूमि पर विविध फूल-पत्तियों के हरे, सुनहरी, गुलावी, पीले और गहरे लाल रंग का सुंदर सरगम फैला हुआ है।

वृद्ध चाचा चेक्को के सांवले चेहरे पर मृदु मुसकान दिखाई देती है। अपना गोल और भारी सिर हिलाकर वह अपनी प्रसन्नता प्रकट करता है।

वह इस तरह खड़ा है मानो किसी भारी बोझ को उठाये हुए हो। उसकी पीठ कुछ झुकी हुई है, पैर फैले हुए हैं। उसके चारों ओर नये दिन की चमक-दमक है। द्राक्ष-लताओं की हरी हरी पत्तियां अधिक चमकदार दिखाई देती हैं, गोल्डफ़िंच-पंछियों की चहक अधिक ज़ोर से सुनाई पड़ती है; करौंदों तथा स्पर्ज के झुरमुटों में बटेर पंख फड़फड़ाते हैं और कहीं दूर ब्लैकबर्ड अपनी सीटी का सुर सुनाता है। यह पंछी ठीक नेपल्स-निवासियों की तरह बड़ा बांका और निश्चिंत प्रकृति होता है।

चाचा चेक्को अपने लम्बे, थकेमांदे हाथों को सिर के ऊपर उठाकर शरीर को इस तरह तानता है मानो अभी उड़कर नीचे की ओर उस सागर में कूद पड़ेगा जो प्याले की मदिरा के समान निश्चल है।

.. अपने वृद्ध शरीर को अंगड़ाने के बाद वह दरवाज़े के पासवाली एक चट्टान पर बैठ जाता है, अपनी जाकिट के जेब में से एक पोस्टकार्ड निकालता है, उसे हाथ में ज़रा दूर पकड़कर और आँखों को सिकोड़कर उसपर नज़र दौड़ाता है। उसके होंठों में मौन कम्पन होता है। दाढ़ी की रुपहली खूंटियोंवाला उसका चेहरा एक नई मुसकान से उज्ज्वल हो उठता है। यह ऐसी मुसकान है जिसमें प्रेम, दुःख तथा अभिमान का विचित्र मिश्रण दिखाई देता है।

उसके सामने पोस्टकार्ड के टुकड़े पर नीली स्याही से बनाया हुआ एक चित्र है जिसमें चौड़े कंधेवाले दो हंसमुख लड़के साथ साथ बैठे हुए दिखाई देते हैं। बाल इनके घुंघराले तथा सिर बूढ़े चेक्को की तरह बड़े हैं। कार्ड के एकदम ऊपरी हिस्से पर साफ़ टाईप में ये शब्द छपे हुए हैं—

"आरतुरो तथा एनरिको चेक्को—अपने वर्ग-हितार्थ लड़नेवाले दो उदार सैनिक। इन्होंने उन २५,००० कपड़ा कामगारों को संघटित किया जो हफ़्तावार छः डालर कमाते थे, और इसलिए उन्हें जेल भेज दिया गया।

"सामाजिक न्याय के लिए लड़नेवाले वीर चिरायु हों!"

चाचा चेक्को अपढ़ है, और इसके अलावा चित्र का शीर्षक लिखा हुआ है विदेशी भाषा में। लेकिन चेक्को जानता है कि वहाँ क्या लिखा हुआ है। उस पोस्टकार्ड के हर शब्द से वह परिचित है। प्रत्येक शब्द उसे तुरही की ध्वनि के समान सुनाई देता है।

इस नीले पोस्टकार्ड ने बूढ़े को बड़ी परेशानी और फ़िक्र में डाल दिया है। दो महीने पहले यह कार्ड उसके पास पहुँचा और उसके पितृ-भाव ने उसे फ़ौरन बताया कि ज़रूर दाल में कुछ काला है—ग़रीब लोगों के चित्र तभी छपते हैं जब उन्होंने क़ानून तोड़ दिया हो।

चेक्को ने काग़ज़ के टुकड़े को अपने जेब में छिपाकर रखा लेकिन यह उसे अपने हृदय पर बोझ-सा मालूम देता था और यह बोझ दिन-प्रति-दिन अधिक भारी होता गया। कई बार उसका मन हुआ कि पादरी को वह चिट्ठी दिखा दूं, लेकिन दीर्घ अनुभव ने उसको सिखाया था कि लोगों का यह कहना सही है कि "पादरी भगवान से आदमी के बारे में सत्य भले ही कह दे, वह आदमी को सत्य कभी नहीं बताता!"

उक्त पोस्टकार्ड के रहस्यमय अभिप्राय का स्पष्टीकरण उसने पहले पहल लाल बालोंवाले एक चित्रकार से पूछा। यह एक लम्बा और दुबला-पतला परदेसी था जो अक्सर चेक्को के घर के पास आया करता था। अपने चित्र-फलक को सुविधाजनक कोण में रखकर वह उस अपूर्ण चित्र की चौकोर छाया में सिर रखकर उसके पास लेट जाता था।

"महाशय," चेक्को ने उससे पूछा—"बताइये इन जवानों ने क्या किया है?"

चित्रकार ने बूढ़े के हंसमुख लड़कों के चित्र पर नज़र दौड़ायी और कहा—

"ज़रूर कुछ खुशी की बात है।"

"लेकिन यहाँ उनके बारे में लिखा क्या हुआ है?"

"भाई, यह तो अंग्रेज़ी में लिखा हुआ है। अंग्रेज़ों को छोड़कर उनकी भाषा भगवान के अलावा और कोई नहीं समझ पाता। हाँ, मेरी बीवी भी समझ लेती है, अगर वह इस मामले में सच बताये तो... वैसे, किसी भी मामले में वह सच नहीं बताती ..."

चित्रकार मेगपाई पंछी की तरह बड़बड़ाता गया। स्पष्ट था कि वह किसी भी बात पर गम्भीरतापूर्वक नहीं सोच सकता था और इसलिए बूढ़ा निराश होकर वहाँ से चल दिया। दूसरे दिन वह पहुँचा चित्रकार की पत्नी के पास। यह महाशया काफ़ी मोटी थी। बूढ़ा उससे बग़ीचे में मिला। वह पारदर्शक सफ़ेद कपड़े का लहरदार गाउन पहने हुए थी और झूले की खटिया पर लेटी हुई धूप में पिघल-सी रही थी। उसकी नीली आँखें नाराज़गी से आकाश को ताक रही थीं।

"इन जवानों को जेल भेज दिया गया है," टूटी-फूटी इतालवी ज़बान में उसने कहा।

बूढ़े के पैर उस तरह कांप उठे मानो द्वीप को कुछ ज़ोरदार धक्का लग गया हो। फिर भी उसने अपने को सम्भालकर आगे पूछा—

"उन्होंने कहीं चोरी की, या किसी का ख़ून कर डाला?"

"अजी नहीं। बात सिर्फ़ यह है कि वे समाजवादी हैं।"

"समाजवादी क्या होते हैं जी?"

"बूढ़े बाबा, यह राजनीति है" महाशया ने डूबती-सी आवाज़ में जवाब दिया और अपनी आँखें मूंद लीं।

चेक्को जानता था कि विदेशी लोग बड़े नासमझ होते हैं; कलाब्रिया प्रदेश के बाशिंदों से भी अधिक नासमझ; लेकिन वह अपने बेटों के बारे में सच्ची बात जानना चाहता था और इसलिए वह उक्त महाशया के पास इस इंतज़ार में खड़ा रहा कि वह अपनी बड़ी, थकी थकी आँखों

को फिर से खोल दे। और आखिर जब उसने आँखें खोलीं तब बूढ़े ने पोस्टकार्ड की ओर अंगुलि-निर्देश करते हुए पूछा—

"क्या यह ईमानदारी है?"

"मुझे मालूम नहीं" महाशया ने रुष्ट होकर कहा। "यह राजनीति है, मैं कह जो चुकी हूँ। तुम्हारी समझ में नहीं आता?"

नहीं, उसकी समझ में नहीं आ सका। राजनीति कुछ ऐसी बात थी जिसे रोम के मंत्री तथा धनी-मानी लोग ग़रीबों से अधिक कर ऐंठने के लिए प्रयोग करते थे। लेकिन उसके बेटे तो कामगार थे, अमेरिका में रहते थे और थे भले आदमी। उन्हें राजनीति से क्या लेना-देना था?

सारी रात बूढ़ा अपने बेटों का चित्र हाथ में लिए बैठा रहा—चांदनी में वे बहुत ही काले दिखाई दे रहे थे। बूढ़े के विचार और भी उलझ गये। उसने सवेरे पादरी से पूछ लेने का निश्चय किया। काला लबादा पहने हुए पादरी ने तपाक से मुख्तसर जवाब दिया—

"समाजवादी वे लोग हैं जो भगवान की इच्छा को नहीं मानते। बस, तुम्हारे लिए इतना ही काफ़ी है।"

और बूढ़ा जब जाने के लिए मुड़ा तो पादरी ने अधिक कठोरता के साथ कहा—

"ऐसी उम्र में इन बातों में दिलचस्पी लेना तुम्हारे लिए लज्जाजनक है!"

"अच्छा हुआ कि मैंने उसे वह चित्र नहीं दिखाया" चेक्को ने सोचा।

दो-चार दिन बीत गये। तब बूढ़ा एक नाई के पास पहुँचा। यह एक खाली दिमाग़वाला छैला था और जवान गदहे की तरह पुष्ट। उसके बारे में कहा जाता था कि वह पैसे के लिए उन प्रौढ़ अमेरिकन स्त्रियों से प्रेम करता था जोकि वैसे तो द्वीप की प्रकृति-शोभा देखने

के लिए वहाँ आती थीं लेकिन वस्तुतः उनका उद्देश्य रहता ग़रीब लड़कों के साथ प्रेम-क्रीड़ा करने का।

"वाह भगवान!" चित्र का शीर्षक पढ़ते ही यह नालायक़ आदमी चिल्ला उठा और उसके गालों पर ख़ुशी की लालिमा छा गयी। "यही है आरतुरो और एनरिको, मेरे साथी! ओह, चाचा एत्तोरे, मैं हृदय से आपका अभिनन्दन करता हूँ, आपका और अपना भी! अब मुझे और दो मशहूर देशबन्धु मिल गये। क्या यह कम गौरव की बात है?"

"फ़ालतू बकबक न कर" बूढ़े ने नाई को चेतावनी दी।

लेकिन नाई हाथ हिलाता हुआ चिल्लाया—

"बहुत ख़ूब!"

"यहाँ उनके बारे में क्या लिखा हुआ है?" बूढ़े ने पूछा।

"मैं पढ़ तो नहीं सकता कि इसमें क्या लिखा हुआ है लेकिन इतना ज़रूर जानता हूँ कि बात सच्ची है। ग़रीबों के बारे में अगर सच्चाई से काम लिया जाय तो उन्हें महान वीर मानना ही होगा!"

"मेहरबानी करके, ज़रा अपनी ज़बान सम्भालो" कहकर चेक्को वहाँ से चल दिया। पत्थरों पर उसके लकड़ी के जूतों की ज़ोरदार खटखटाहट होती गयी।

अब वह एक रूसी महाशय के पास पहुँचा जिसके बारे में कहा जाता था कि वह सहृदय तथा ईमानदार व्यक्ति है। अन्दर आकर चेक्को उक्त महाशय की खाट के पास बैठ गया। यह महाशय ज़िन्दगी के आख़िरी दिन गिन रहे थे। चेक्को ने उनसे पूछा—

"महाशय, उन दो जवानों के बारे में यहाँ क्या लिखा हुआ है?"

बीमारी के कारण फीकी पड़ी हुई तथा दुःख भरी अपनी आँखों को सिकोड़ते हुए रूसी महाशय ने क्षीण आवाज़ में पोस्टकार्ड का शीर्षक पढ़ा। हार्दिक मुसकान से उसका मुखमण्डल आलोकित हो उठा।

"महाशय" बूढ़े ने रूसी व्यक्ति से कहा—"ग्राप देखते ही हैं कि मैं बहुत ही वृद्ध हो चुका हूँ ग्रौर शीघ्र ही मुझे ग्रपने निर्माता के पास जाना पड़ेगा। जब मदोन्ना मुझसे पूछेगी कि मैंने ग्रपने बेटों के बारे में क्या किया है, तब मुझे तफ़सील के साथ पूरा सत्य बताना होगा। ये हैं मेरे बेटे, लेकिन मुझे मालूम नहीं कि इन्होंने क्या किया है ग्रौर क्यों ये जेल में हैं?"

रूसी ग्रादमी ने चेक्को को गम्भीरता ग्रौर सरलता से सलाह दी—

"ग्राप मदोन्ना से कह दीजियेगा कि ग्रापके बेटों ने खुद मदोन्ना के पुत्र की एक मुख्य ग्राज्ञा का ठीक से पालन किया—उन्होंने सच्चाई के साथ ग्रपने लोगों से प्रेम किया ..."

वृद्ध ने रूसी ग्रादमी की बात का भरोसा किया क्योंकि झूठ कभी सरल भाषा में नहीं कहा जा सकता, झूठ के लिए ग्रावश्यक हैं मीठे शब्द ग्रौर सुन्दर वाकशैली। बूढ़े ने रूसी रुग्ण के छोटे, मृदु हाथ से हाथ मिलाया। यह हाथ श्रम से परिचित नहीं था।

"तो उनका जेल में रहना कोई बदनामी की बात नहीं है?"

"नहीं जी" रूसी व्यक्ति ने कहा—"ग्राप जानते ही हैं कि धनी लोगों को तभी जेल भेजा जाता है जब वे बहुत ज्यादा पाप करते हैं ग्रौर जब उन्हें छिपाये रखना मुश्किल हो जाता है। मगर ग़रीबों को तब जेल जाना पड़ता जब वे थोड़े-से कल्याण की चेष्टा करते हैं। मैं कहता हूँ कि ग्राप बड़े भाग्यवान पिता हैं!"

रूसी व्यक्ति चेक्को के साथ देर तक बातचीत करता रहा। ग्रपनी कमज़ोर ग्रावाज़ में उसने बताया कि दारिद्र्य तथा ग्रज्ञान को ग्रौर इनसे पैदा होनेवाली बुरी तथा घृणास्पद बातों को नष्ट करने के लिए ईमानदार लोग इस दुनिया में क्या क्या कर रहे हैं...

आकाश में सूर्य किसी ज्योतिर्मय पुष्प की तरह प्रज्वलित है, भूरी चट्टानों के वक्ष पर वह किरणों के स्वर्ण-पराग की वर्षा करता है और पत्थर की हर दरार में से जीवन उत्सुकतापूर्वक सूरज की ओर अपना सिर उठाता है—इस जीवन का प्रकट रूप है हरी-भरी घास तथा आकाश की तरह नीले नीले फूल। सूर्य प्रकाश की सुनहरी चिनगारियां चमक उठती हैं और स्फटिक सदृश ओस की मोटी मोटी बूंदों में अपनी ज्योति को खो देती हैं।

बूढ़े को तब तब अपने बेटों की याद आती है जब जब वह हर सजीव वस्तु को जीवनदायी सूर्य के प्रकाश का पान करते हुए देखता है और फुरती के साथ अपने घोंसले बनानेवाली चिड़ियों का संगीत सुनता है। उसके वे बेटे महासागर के उस पार एक बड़े शहर में जेल के पिंजड़े में बन्द हैं। बूढ़े के मन में विचार आता है कि जेल का जीवन उनके स्वास्थ्य के लिए कितना खराब है, हाँ, बहुत ही खराब...

लेकिन फिर वह विचार करता है कि अपने बाप की तरह ईमानदार होने के लिए ही वे जेल में पड़े हुए हैं; और यह अच्छा ही है—उनके लिए और उसकी आत्मा के लिए भी।

उसका कांसे जैसा चेहरा गर्वपूर्ण मुस्कुराहट से पुलकित हो उठता है।

"धरती समृद्ध है, आदमी दरिद्र है; सूरज सहृदय है, आदमी निर्दय है। जिन्दगी भर मैं यही सोचता रहा और हालाँकि मैंने इस सम्बन्ध में अपने बेटों से कुछ भी कहा नहीं, तो भी वे अपने पिता के विचारों को समझ गये। हर हफ़्ते के लिए छः डालर, याने चालीस लीरा! ओहो! लेकिन उन्होंने सोचा कि यह बहुत ही कम है। और उन्हीं के जैसे दूसरे पच्चीस हज़ार लोगों ने भी यही सोचा... अच्छी तरह ज़िन्दगी बिताने की इच्छा करनेवाले आदमी के लिए यह बहुत ही कम है..."

बूढ़े को विश्वास हो चुका है कि उसके हृदय में जो विचार छिपे हुए थे वही उसके बेटों में खिल उठे हैं और इसलिए वह अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। लेकिन यह जानकर कि आदमी अपने ही द्वारा हर दिन बनायी जानेवाली परी-कथाओं में कहाँ तक विश्वास करता है, वह अपने विचारों को प्रकट नहीं करता।

फिर भी उसका विशाल, वृद्ध हृदय कभी कभी अपने बेटों के भविष्यत् के विचारों से उमड़ उठता है और तब बूढ़ा चेक्को अपनी थकी हुई पीठ को सीधी कर लेता है, गहरी सांस खींचता है और अपनी गिरती हुई ताक़त को सम्भालते हुए, सागर की ओर मुड़कर उस दिशा में जोर से पुकार उठता है जहाँ उसके बेटे जेल में बंद पड़े हैं—

"वाल्यो-ओ!"*

सागर की घनी और मुलायम गहराई से ऊपर उठता हुआ सूरज हंस देता है और ऊपर की ओर अंगूर-बग़ीचों में काम करनेवाले लोग बूढ़े की पुकार को प्रतिध्वनित करते हैं—

"ओ—ओ—!"

---

*यहां—"धीरज रखो!"—संपा०





ईसा का जन्म-पर्व

शीघ्र ही आधी रात होनेवाली है।

छोटे-से काप्री चौक के ऊपर नीले आकाश में ज़रा नीचे की ओर बादल मंडरा रहे हैं, जिनमें से तेजस्वी तारों की मनोहर आकृतियों की झलक मिलती है। नीला लुब्धक नक्षत्र झुलमुलकर बुझ जाता है और गिरजे के खुले दरवाज़ों में से आर्गन बाजे की गहरी तथा प्रभावपूर्ण ध्वनि सुनाई देती है। दौड़ने की होड़-सी लगाये हुए बादल, जगमगाते हुए तारे और इमारतों की दीवारों पर तथा चौक के फ़र्श पर छायाओं का नर्तन—यह सब मधुर संगीत-सा लगता है।

इस गम्भीर संगीत के ताल पर सारा चौक रंग-मंच की तरह थिरक उठता है। एक क्षण वह संकरा तथा अंधकारमय दिखाई देता है तो दूसरे ही क्षण विस्तृत तथा मायिक प्रकाश से परिपूर्ण।

मृगशिरा नक्षत्र मोंते-सोलारो पर अपनी आभा फैलाये हुए है। पर्वत-शिखर पर बैठा हुआ एक सफ़ेद बादल चमकदार मुकुट-सा दिखाई देता है और पर्वत के दीवार जैसे खड़े तथा फटनदार बाज़ू किसी प्राचीन कृष्णवर्ण मुखाकृति से दिखाई देते हैं, जिसपर विश्व तथा मानव सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विचारों की क्यारियां बनी हुई हों।

उधर लगभग छः सौ मीटर की ऊंचाई पर एक छोटा-सा परित्यक्त मठ तथा एक छोटा-सा क़ब्रिस्तान है जो इस समय बादल के पीछे छिपा हुआ है। इस क़ब्रिस्तान में पुष्पवाटिकाओं की तरह क़ब्रें दिखाई देती हैं, जिनके नीचे उन संन्यासियों की देहें रखी हुई हैं, जो किसी समय उक्त मठ में रहा करते थे। जब-तब इस मठ की सफ़ेद दीवारें बादलों के बीच से झांकती हुई दिखाई देती हैं मानो नीचे की ओर चल रही बातों को सुन रही हों।

चौक में बच्चों के झुंड शोर-गुल मचाते हुए और पटाखे छोड़ते हुए इधर-उधर घूमते हैं। अग्नि-जिह्वाएं वायुमंडल में लपलपाती हैं और पत्थरों पर लाखों लाल लाल चिनगारियों की बौछार करती हैं। जब-तब कोई धृष्ट हाथ, जलते पटाखे को ऊंचे आसमान में फेंक देता है जहाँ पर वह फुफकारता है तथा घबड़ाये हुए चमगादड़ की तरह चक्कर काटता है। नन्ही नन्ही काली आकृतियां हंसती-चिल्लाती, चारों ओर उछलती-कूदती दिखाई देती हैं और इधर जब ज़ोरदार विस्फोट हो जाता है तब कोनों में झुककर खड़े बच्चों की आकृतियां जगमग ज्योति से प्रकाशित हो जाती हैं और उनकी सतेज आँखें अंधेरे में चमक उठती हैं।

विस्फोटों की आवाज़ लगभग अखण्ड रूप से सुनाई देती है। इस आवाज़ में हंसी, भयपूर्ण चिल्लाहट तथा सड़क पर होनेवाली लकड़ी के जूतों की खटखटाहट डूब-सी जाती है। छायाएं कांपती तथा कूदती हैं, लाल लाल प्रतिबिम्ब के कारण बादल चमक उठते हैं और मकानों

की पुरानी दीवारें हंसती हुई-सी दिखाई देती हैं। इन दीवारों को आज के वृद्ध लोगों का बचपन याद आता है। बड़े दिन की रात को बच्चों द्वारा किया जानेवाला यह खुशी भरा और कुछ खतरनाक खेल इन्होंने अनगिनत बार देखा है।

लेकिन यदि एक क्षण भी शांति लौट आये तो आर्गन की गम्भीर तथा पवित्र ध्वनियां फिर से सुनाई देती हैं। उधर नीचे से तटवर्ती चट्टानों पर टकराकर टूट जानेवाली लहरों की दबी हुई गर्जनाओं तथा कंकड़ों की मृदु फुसफुसाहट के साथ सागर उत्तर देता है।

खाड़ी, काली झागदार शराब से भरे हुए प्याले जैसी दिखाई देती है और उसके किनारे पर नगर-दीप जगमगाते हैं जोकि खाड़ी के कण्ठ में जगमगानेवाली मूल्यवान रत्नमाला से लगते हैं।

नेपल्स का आकाश दूधिया रत्न का-सा लगता है, उत्तर ध्रुव-प्रभा की तरह चमकता-दमकता है, उसमें दर्जनों हवाई-बान तथा अग्नि-शिखाएं लपटती-झपटती हैं और बाद में उनमें रंग-बिरंगे प्रकाश के पुष्प-गुच्छ से लग जाते हैं। क्षण भर वे रोशनी के थर्राते बादल में रुक जाते हैं और फिर जोरदार आवाज़ के साथ बुझ जाते हैं।

खाड़ी का अर्धगोलाकृति क्षेत्र सुंदर अग्नि क्रीड़ा से सजीव हो उठा है, नेपल्स बन्दरगाह के प्रकाश-स्तम्भ का शुभ्र शीतल प्रकाश सागर पर फैला हुआ है और कापो दी मिजेना की लाल आँख चमक उठती है। लेकिन प्रोचिदा की तथा इस्किया के तलप्रदेश की रोशनियां रजनी के काले, मखमली वस्त्र पर टंके हुए बड़े बड़े हीरों की क़तारों-सी लगती हैं।

खाड़ी पर सफ़ेद किनारीदार लहरों के रेवड़ उछलते-कूदते हैं। उनके लयबद्ध आघातों के कारण दूरस्थ विस्फोटों की गर्जना दब-सी जाती है। आर्गन अभी भी बज रहा है और बच्चे हंस रहे हैं। लेकिन यकायक मीनार पर की घड़ी पहले चार बार और फिर बारह बार टनटनाती है।

प्रार्थना समाप्त हुई है। गिरजे के दरवाजे में से रंग-विरंगा जन-प्रवाह उमड़ पड़ता है और चौड़ी सीढ़ियों पर से नीचे उतरता है, जहां लाल लाल पटाखे ऐंठ-ऐंठकर उछलते-कूदते हैं। स्त्रियों के मुंह से हल्की-सी भय-सूचक चीख निकलती है और नन्हे वालक खुशी से खिलखिला उठते हैं। यह उन्हीं का पर्व है और आज रात को रक्तवर्ण अग्नि के साथ खेलने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता।

पर्वकालीन पोशाक पहने हुए किसी गम्भीर-प्रकृति प्रौढ़ व्यक्ति को डराने में सचमुच कैसा मजा आता है! यह अक्खड़ महाशय, जोरों से फफकारकर अपना पीछा करनेवाले तथा अपने वूटों पर चिनगारियों को छितरानेवाले पटाखे को टालने के लिये चौक में घूमते-मुड़ते हुए कूदते-फुदकते हैं! और यह होता है साल में सिर्फ़ एक वार...

उनको प्यार करनेवाले शिशु की जयंती के अवसर पर बच्चे अपने को राजा तथा जीवन के स्वामी मानते हैं। और हंसी-खुशी के कुछ क्षणों का उपयोग वे करते हैं प्रौढ़ों का वदला चुकाने के लिए, जोकि उनपर साल भर कष्टकारक हुकूमत करते हैं। उस समय उन्हें कैसा मजा आता है जव वड़े-वूढ़े लोग आतिशवाजी की आग से वचने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी क़लावाज़ियां करते हैं और खीझे विना शरण मांगते हैं—

"वस करो, नन्हे शैतानो, वस करो!"

अव आते हैं अव्रूत्सा के पहाड़ी गड़रिये—ज़ांपोनियरी, जो छोटे नीले लवादे तथा चौड़े किनारवाले टोप पहने हुए हैं। उनके सुगठित पैरों में सफ़ेद ऊनी मोज़े हैं जिनपर काले चमड़े के तस्मे वंधे हुए हैं। दो जने लवादे के नीचे मसकवाजे लिये हुए हैं, जवकि दूसरे चार जनों के पास लकड़ी की तुरहियां हैं जिनमें से पतली तीव्र ध्वनि निकलती है।

ये लोग हर साल द्वीप-प्रदेश में आकर एक महीना भर वहीं रहते हैं और अपने मधुर, अद्‌भुत संगीत से प्रभु ईसा तथा पवित्र देव-माता का स्तवन करते हैं।

प्रभात के समय उन्हें देखने से हृदय भावपूर्ण हो उठता है। अपने टोपों को पैरों के पास रखे हुए, मदोन्ना की मूर्ति के सामने खड़े रहकर वे माता के सदय मुखमण्डल को भक्ति-भाव से निहारते हैं और उसके लिए वह अवर्णनीय भाव भरा मधुर संगीत बजाते हैं, जिसका किसीने "भगवान की भौतिक अनुभूति" इन यथार्थ शब्दों में वर्णन किया है।

अब ये गड़रिये वृद्ध बढ़ई पवलीनो के घर से, नांद में सोये हुए शिशु को संत तेरेज़ा के गिरजे की ओर ले जा रहे हैं।

बच्चे उनके पीछे पीछे दौड़ते हैं। संकरी सड़क उनकी काली आकृतियों को निगल लेती है और चन्द मिनटों में चौक खाली हो जाता है। सिर्फ़ गिरजे के पास वाली सीढ़ियों पर छोटी-सी भीड़ जुलूस के इन्तज़ार में खड़ी है, नीरव बादलों की स्नेह भरी छायाएं हौले हौले इमारतों की दीवारों और लोगों के सिर पर से सरकती जाती हैं मानो उनका आलिंगन कर रही हों।

सागर आह भरता है। दूर संयोग-भूमि पर एक चीड़ वृक्ष नाज़ुक आधार पर रखे हुए बड़े गुलदान-सा दिखाई देता है। लुब्धक नक्षत्र उस प्रकार जगमगाता है कि आँखें चौंधिया जाती हैं। मोन्ते सोलारो के ऊपर मंडरानेवाला बादल ओझल हो गया है और चट्टान के किनारे पर खड़ा छोटा-सा अकेला मठ तथा उससे ऊपर उठा हुआ, संतरी जैसा वह अकेला वृक्ष स्पष्ट दिखाई देता है।

गड़रियों के गीतों की चमकदार ध्वनि-लहरियां तुरही की आवाज़ की तरह सड़क की महराबों में से गुज़रती हैं। नंगे सिर, टेढ़ी-नुकीली नाक और काले लबादों के कारण वे भीमाकार पंछी-से लगते हैं। लम्बे लम्बे बांसों पर लालटेनें लटकाये हुए बच्चों की भीड़ इन गड़रियों को घेरे हुए है। लालटेनें हवा में हिलती-डुलती हैं और वृद्ध पवलीनो की छोटी-सी गोल-मटोल देह, उसका रुपहला सिर, उसके

हाथों में रखी हुई फूलों से भरी नांद और उसमें सोये हुए हंसमुख शिशु ईसा की गुलाबी मूर्ति जोकि आशीर्वाद देने के लिए अपने नन्हे नन्हे हाथों को उठाये हुए है, आलोकित हो उठती हैं।

वृद्ध पवलीनो इस मिट्टी की मूर्ति को ऐसे भक्ति भाव से निहारता है, मानो वह सचमुच सजीव है और सूर्योदय होते ही "सारी मानवजाति के लिए सुख और शान्ति का वरदान" दे देगी।

सफ़ेद, नंगे सिर, गम्भीर चेहरे और कोमलता से प्रकाशित नेत्र, चारों ओर से नांद पर झुकते हैं। फुलझड़ियां छूटती हैं और चौक का अन्धेरा नष्ट हो जाता है। मानो यकायक ऊषा का आगमन हुआ हो। बच्चे गाते, चिल्लाते और हंसते हैं, प्रौढ़ लोगों के मुख पर हल्की-सी हंसी दौड़ती है और ऐसा लगता है कि बच्चों के सामने अप्रतिष्ठ दिखाई देने का डर न होता तो ये बड़े-बूढ़े भी बच्चों की तरह खुशी में उछलना-चिल्लाना शुरू कर देते।

मोमबत्तियों की पीतवर्ण ज्योतियां भीड़ के ऊपर सुनहरे फतिंगों की तरह फड़फड़ाती हैं और उनके ऊपर गहरे नीले आकाश में तारे चमकते हैं। दूसरी सड़क पर से एक और जुलूस आता है जिसमें बालिकाएं मदोन्ना की मूर्ति उठाये चल रही हैं। अब वहाँ संगीत, दीपक, आनन्द-ध्वनियां तथा बच्चों की हंसी-खुशी की मात्रा बढ़ जाती है। पर्वकालीन वातावरण से दर्शक का हृदय पूर्णतया प्रभावित हो जाता है।

शिशु ईसा की मूर्ति को यह जुलूस पुराने गिरजे में ले जाता है। एक लम्बे अरसे से इस गिरजे में प्रार्थना-सभाएं नहीं हो रही हैं और साल भर यह बिल्कुल खाली रहता है। लेकिन आज उसकी पुरानी दीवालें रंग-बिरंगे फूलों तथा ताड़-पत्तों से, सुनहरे नीबुओं तथा नारंगिओं से सजी हुई हैं और उसका पूरा अन्दरूनी हिस्सा एक

विशाल कलापूर्ण प्रदर्शनी से व्याप्त है, जिसमें ईसा के जन्म की झांकियां दिखाई देती हैं।

काग के बड़े बड़े टुकड़ों के सहारे पहाड़, गुफाएं, बेथलेम, तथा पर्वत-शिखरों पर अद्‌भुत क़िले बनाये गये हैं। पहाड़ के बाजुओं पर एक सर्पिल सड़क दिखाई देती है। हरे-भरे चरागाहों में भेड़-बकरियां चरती हुई नज़र आती हैं। शीशे के टुकड़ों से चमकदार जल-प्रपात बनाये गये हैं। गड़रियों के समूह आकाश की ओर देखते हुए खड़े हैं जहाँ एक सुनहरा सितारा जगमगाता है। आकाश में देवदूत मंडरा रहे हैं, एक हाथ से वे बेथलेम के सितारे की ओर संकेत करते हैं जबकि दूसरे हाथ से उस गुफा की ओर जहाँ पवित्र माता तथा जोसफ़ और आकाश की ओर दोनों हाथ उठाया हुआ शिशु दिखाई देता है। जादूगरों और क़ीमती पोशाकें पहने हुए राजाओं का एक समूह गुफा के पास आता है और उनके ऊपर अपने हाथों में ताड़-पत्र तथा गुलाब लिये हुए देवदूत रुपहले कलाबत्तू के तारों पर चक्कर काटते हैं। वहाँ दिखाई देते हैं चमकदार रेशमी जामे पहने हुए तथा ऊंट पर बैठे हुए लम्बी दाढ़ीवाले जादूगर, क़ीमती कमख़ाबी पोशाकें तथा भूरे-घुंघराले बनावटी बालों के भारी टोप पहनकर घोड़े पर सवार राजा, घुंघराले बालोंवाले नूमिदियन, अरब तथा यहूदी और अन्य चित्र-विचित्र अद्‌भुत पोशाकोंवाली सैंकड़ों मृण्मय मूर्तियां।

नांद के इर्द-गिर्द सफ़ेदपोश अरबों ने अपनी दूकानें खोल रखी हैं और वे मोम से बने शस्त्र, रेशमी कपड़े तथा मिठाइयां बेच रहे हैं। यहाँ भी किसी अज्ञात जाति के लोग शराब बेच रहे हैं। कन्धों पर पानी के कलसे लिये हुए स्त्रियां कुएं की ओर जा रही हैं। एक किसान गदहे पर सूखी टहनियां लादे हुए चल रहा है और लोगों की

भीड़ शिशु के चारों ओर घुटने टेककर बैठी हुई है। और, यत्र-तत्र सर्वत्र बच्चे ही बच्चे नज़र आते हैं।

यह सारा विविधतापूर्ण दृश्य ऐसे कलाकौशल के साथ बनाया गया है कि वह सजीव तथा हिलता-बोलता-सा लगता है।

इस प्रदर्शनी के समीप खड़े रहकर बच्चे उसकी आलोचना-सी कर रहे हैं। उनकी तेज़ चौकस आँखें ऐसी हर नई चीज़ को निहारती हैं जो गत साल वहां नहीं थी। अपनी खोजें वे उत्सुकता से एक-दूसरे को बताते हैं। वे तर्क करते हैं, हंसते हैं और चिल्लाते हैं। पास में खड़े गर्वीले चित्रकार बड़े आनन्द के साथ इन नन्हे-मुन्ने रसिकों की प्रशंसा को सुन रहे हैं।

यह सच है कि वे प्रौढ़ व्यक्ति हैं, बच्चों के बाप हैं और इतने गम्भीर हैं कि खेल की चीज़ों में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है। वे बहाना करते हैं कि इन सब बातों से उनका कोई सरोकार नहीं, लेकिन बच्चे अक्सर प्रौढ़ों से अधिक सयाने और हमेशा ही अधिक ईमानदार होते हैं। वे जानते हैं कि बड़े-बूढ़ों को भी अपनी प्रशंसा प्रिय लगती है और इसलिए तारीफ़ के पुल बांधने में बच्चे कोई कोर-कसर नहीं रखते और चित्रकार सन्तोष भरी मुसकान को छिपाने के लिए अपने गलमुच्छों तथा दाढ़ियों को थपथपाते हैं।

इधर-उधर बच्चे गुट बनाकर खड़े रहते हैं और आपस में व्यग्रता से चर्चा करते हैं। वे अपनी "टुकड़ियां" बना रहे हैं। नववर्ष की सन्ध्या के अवसर पर वे बड़ी बड़ी टोलियां बनाकर क्रिसमस वृक्ष तथा सितारे साथ लिये सारे द्वीप का चक्कर लगायेंगे और चलते समय पुराने बाजों की गगनभेदी गड़गड़ाहट के ताल पर देवमूर्ति के

स्तुतिगीत गाते जायंगे जोकि प्रतिवर्ष स्थानीय कवियों द्वारा इस अवसर के लिए बनाये जाते हैं।

अहे सज्जनो और देवियो,
सुखमय हो नववर्ष सभी को!
नन्हे मीत आज जो लाये
सुनिये उन सुख-संदेशों को।।
कर्ण, हृदय के द्वार खोलिये
और खोलिये मुख थैली का।
खुशी आज हम सभी मनाते
दिन यह जग के उद्धारक का।।
जन्म लिया जग के रक्षक ने
नंगे तन में, दरिद्रता में।
वृषभों की मृदु-सी सांसों से
रही उष्णता उसके तन में।।
नष्ट हुआ वह हमें बचाने
दुनिया के सारे दुःखों से।
अपना जीवन किया समर्पित
दरिद्र जन के लिए प्यार से।।
करें प्रशंसा जग-पालक की
और नाम में खुशी मनायें।
उसका दिन है आज, इसे हम
सब के सुख का पर्व बनायें।।

इधर बच्चों की एक टोली मूर्तिपूजा के इस स्तोत्र को गाती हुई उसके ताल पर नाचती है, तो उधर दूसरी टोली इससे भी अधिक आनन्द भरा गीत गाकर पहले गीत को डुबो-सा देती है—

चरवाहों को याद कीजिये
ऐंद्रजालिकों और नृपों को।
घुटने टेक, हुए नतमस्तक
जग-पालक की देख नांद को।

धम्! धम्! ढोल वजता है, जवकि नरकट की वांसुरी वच्चों के संगीत के साथ मेल नहीं खाती, और उसमें से एक दर्दभरी सीटी-सी वजती है–

दुष्ट-हृदय हेरोद नृपति न
दैवी शिशु के भय के मारे।
जितने वालक रहे राज्य में
सभी मौत के घाट उतारे।।
रही कहानी अतीत की यह
हुआ नृपति मृत, हम हैं जीवित्
पर्व आज है, इस अवसर पर
मारे जाते केवल कुक्कुट।।

वड़े-वूढ़े लोग भी इस संगीत की स्फूर्तिदायक लय से प्रभावित हुए विना नहीं रहते और अव मोटा कोचवान कारलो वम्वोला डगमग चाल से वच्चों की ओर वढ़ता है और उनकी आवाज़ों को डुवाता हुआ ऊंचे से ऊंचे स्वर में गाने लगता है। गाने के कष्ट से उसका चेहरा लाल हो उठता है–

चिंताओं को भगा दीजिये
भुला दीजिये सव दुःखों को।
सदा रहेंगे रोगमुक्त हम
कभी न पहुँचेगी क्षति हम को।।
जगमग जगमग तारा-दीपक

नभ को करते हैं आलोकित।
उज्ज्वल हो वैसे ही जीवन
और सदा हो पूर्णोत्साहित ॥

बच्चों को निहारकर स्त्रियों की काली आँखें चमक उठती हैं मानो कोई सपना देख रही हों। अमोद-प्रमोद बढ़ता जाता है, लोगों के चेहरे चमक उठते हैं। पर्वकालीन पोशाकें पहनी हुई लड़कियां चालाकी भरी नज़रों से लड़कों की ओर देखकर मुस्कुराती हैं। तारे निष्प्रभ हो जाते हैं और कहीं ऊपर से—छप्पर से या खिड़की से एक मधुर ध्वनि गूंज उठती है—

सदा रहें, बस, स्वस्थ उल्लसित
शेष सभी होगा सुख पूरित।

पुराना गिरजा बच्चों की लहराती हुई हंसी से गूंज उठता है—यह है धरती पर का सर्वोत्तम संगीत। द्वीप के ऊपर का आकाश फीका पड़ता है। ऊषा का आगमन हो रहा है और तारागण आकाश की नीली गहराई में विलीन होते जा रहे हैं।

द्वीप के गहरे हरे बग़ीचों में सुनहरे संतरे चमकने लगते हैं, और अन्धकार में से पीले नीबू झांककर देखते हैं। वे बड़े बड़े उल्लुओं की आँखों के समान दिखाई देते हैं। नई पीत हरित कोपलें नारंगी के वृक्षों के मुकुटों को आलोकित करती हैं। जैतून वृक्षों की पत्तियां चांदी की तरह चमकती हैं और खुली द्राक्षलताओं की नक्काशी थिरक उठती है।

चित्र-विचित्र कारनेशन फूल तथा सेज पौधे की लाल लाल टहनियां मुस्कुराकर ऊषा का स्वागत करती हैं। नारसिसस पुष्पों की भीनी-भीनी सुगन्ध सागर की खारी सांस में मिश्रित होकर सुबह की ताज़ी हवा पर तैरती है।

लहरों की छलछलाहट तेज़ हो जाती है। अब वे पारदर्शक बन गई हैं और उनका फेन हिम-धवल दिखाई देता है।



नून्चा

सान जाकोमो वस्ती को अपने फ़व्वारे पर उचित गर्व है। अमर ज्योवान्नी बोकाच्चो वड़े प्यार से इसके पास वैठकर उत्साहपूर्ण वार्तालाप किया करता था और तोम्माज़ो अनियेल्लो के मित्र महान चित्रकार सल्वातोरे रोज़ा ने कई वार वड़े वड़े कैनवासों पर उसका चित्रण किया था। तोम्माज़ो अनियेल्लो भी हमारी वस्ती में पैदा हुआ था और जिन ग़रीबों की आज़ादी के लिए वह लड़ा तथा मरा, वे लोग उसे मज़ानियेल्लो नाम से पुकारते थे।

सचमुच कई नामवर व्यक्ति हमारी वस्ती में पैदा हुए तथा वड़े हुए। पुराने ज़माने में विख्यात व्यक्ति आज की अपेक्षा अधिक पैदा होते थे और उनका वड़प्पन स्पष्ट दिखाई देता था। इधर आजकल हर व्यक्ति जाकिट पहनकर वड़े ठाठ से चलता है और राजनीति में जुट जाता है, और इससे किसी भी व्यक्ति के लिए अपने साथियों

से ऊपर उठना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, आत्मा जब अखबारी काग़ज़ में लपेटी हुई हो तब उसका उचित विकास होना असम्भव है।

गत गरमियों तक नून्चा भी हमारी बस्ती का गौरव थी। नून्चा थी एक कुंजड़िन लेकिन दुनिया का सबसे सुखी जीव थी, और थी हमारी गली की रूपरानी। हमारी बस्ती में शहर के अन्य हिस्सों की अपेक्षा सूरज कुछ ज्यादा देर तक जगमगाता है। हमारे यहाँ का फ़व्वारा अभी भी वैसा ही है जैसा वह हमेशा से रहा है। समय के बीतते वह पीला पड़ने लगा है, लेकिन अपने विचित्र सौंदर्य से विदेशियों को वह हमेशा खुश करता रहेगा क्योंकि संगमरमर के बच्चे कभी बुड्ढे नहीं होते और न ही अपनी खेलकूद से थकते हैं।

लेकिन गत गरमियों में प्यारी नून्चा का देहांत हुआ। सड़क पर नाचते हुए उसकी मृत्यु हुई और चूंकि इस तरह की मौत कोई आम घटना नहीं है इसलिए नून्चा की मृत्यु कहानी का विषय बन गई है।

वह इतनी रंगीली और खुशदिल औरत थी कि पति के साथ शान्तिपूर्वक जीवन बिताना उसके लिए असंभव था। देर तक उसका पति इस बात को समझ नहीं सका और चीखता-चिल्लाता, हाथों को घुमाता-फिराता तथा छुरा निकालकर लोगों को धमकाता रहा। आखिर एक दिन उसने किसी की बग़ल में छुरा भोंक ही दिया। लेकिन पुलिसवालों को ऐसा मज़ाक़ पसन्द नहीं आता है, इसलिए स्तेफ़ानो को जेल जाना पड़ा और रिहाई के बाद वह आर्जेन्टाइन चला गया—गरममिज़ाज लोगों के लिए हवा का बदल ज़रूर फ़ायदेमंद होता है न!

इस तरह तेईस बरस की उमर ही में नून्चा विधवा बन गई। उसके एक पांच बरस की लड़की थी और उसकी जायदाद थी दो

गदहे, सागसब्जी का एक बग़ीचा और एक छोटी-सी ठेला गाड़ी। और चूंकि खुशदिल व्यक्ति के लिए ज्यादा चीज़ों की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए यह जायदाद उसके लिए काफ़ी थी। काम करना वह जानती थी और हमेशा ही कई लोग उसकी मदद करने के लिए उत्सुक रहते थे। और जब उनकी मज़दूरी अदा करने के लिए उसके पास पैसा नहीं रहता था तब वह उसकी अदायगी कर देती मुस्कराहट से, गीतों से तथा उन सभी बातों से जोकि धन से ज्यादा क़ीमती होती हैं।

कई स्त्रियों को और कई पुरुषों को भी उसकी ज़िन्दगी का तरीक़ा पसन्द नहीं था। लेकिन वह दिल की ईमानदार थी और विवाहित पुरुषों को उसने दूर रखा था, इतना ही नहीं बल्कि कइयों का अपनी अपनी बीवियों के साथ समझौता करा दिया था।

"जो आदमी औरत का प्यार खोता है वह असल में प्यार करना जानता ही नहीं..." वह कहा करती।

आरतुरो लानो एक मछुआ था और जवानी में धार्मिक पाठशाला में जाया करता था। जवानी में वह पुरोहित पद के लिए प्रशिक्षण लेता रहा लेकिन उसी समय वह धर्म के मार्ग से हट गया और सागर, सरायों तथा ऐसी ही खुशी भरी जगहों का चक्कर काटता रहा। अश्लील गीत-रचना की कला में कोविद लानो ने एक दिन नून्चा से कहा –

"तुम शायद सोचती हो कि प्रेम-विद्या अध्यात्म-विद्या की तरह ही बड़ी गूढ़ होती है।"

"विद्या का मैं कुछ नहीं जानती" उसने उत्तर दिया – "लेकिन तुम्हारे सभी गीत जरूर जानती हूँ।"

यह कहकर उसने पीपे की तरह गोल-मटोल आरतुरो को एक गीत सुनाया –

घटना है यह अति साधारण,
दुनिया में देखते सदा हम।
वसंत के आरंभ काल में
हुई सगर्भा कुंवरी मरियम।।

आरतुरो हंसते हंसते लोट-पोट हो गया और उसकी चतुर छोटी छोटी आँखें उसके गोबरे लाल लाल गालों की लहरों में छिप गईं।

इस तरह नून्चा रह रही थी—खुद आनन्दी तथा औरों को आनन्दी करती हुई। सबको वह प्यारी लगती थी। यहाँ तक कि उसकी सहेलियों ने भी उसे मुआफ़ कर दिया था—यह सोचकर कि मिज़ाज की कोई दवा नहीं है और यह कि साधु-संत तक सदैव अपनी प्रकृति को जीत नहीं सके हैं। अलावा इसके, आदमी कोई भगवान तो है नहीं; और हमें ईमानदार रहना चाहिए सिर्फ़ भगवान के प्रति...

दस-एक साल नून्चा सितारे की तरह चमकती रही। सभी ने माना कि वह हमारी बस्ती की परमसुंदरी तथा श्रेष्ठ नर्तकी है और अगर वह कुंवारी होती तो निःसंशय बाज़ार की रानी चुनी जाती, और वस्तुतः सभी की नज़र में वह रानी थी भी।

विदेशियों तक को नून्चा दिखाई जाती और उनमें से कई जने उसके साथ एकान्त वार्तालाप के लिए काफ़ी धन निछावर करने को तैयार थे; लेकिन इस बात पर वह हमेशा खिलखिलाकर हंस पड़ती।

"यह बने-ठने छैला महाशय मेरे साथ किस भाषा में बातचीत करेंगे?"

"अरी पगली, सुनहरे सिक्कों की भाषा में" आदरणीय लोग उसे आश्वासन देते। लेकिन नून्चा उनसे कहती—

"अजनबियों को बेचने के लिए मेरे पास प्याज़, लहसुन और टमाटर के अलावा और कुछ नहीं है..."

कई वार सचमुच उसका भला चाहनेवाले लोग आग्रहपूर्वक उसे समझाने का प्रयास करते।

"नून्वा, वस एकाव महीने की वात है और तुम धनी वन जाओगी! जरा गौर से सोच लो, और ध्यान रखो कि तुम्हारे एक लड़की है।"

"जी नहीं" दृढ़तापूर्वक नून्वा ने कहा। "मैं अपने शरीर को प्यार करती हूँ और उसका अपमान नहीं करना चाहती। मैं जानती हूँ कि अनिच्छा से एक वार भी कुछ करना आत्मसम्मान को सदा के लिये खोने के वरावर है।"

"लेकिन तुम दूसरों से इन्कार नहीं करतीं?

"हाँ, अपने लोगों से मैं इन्कार नहीं करती और वह भी अपनी इच्छा के अनुसार।"

"अपने लोग? याने?"

"याने वे लोग जिनके वीच मेरी आत्मा पली है और जो उसे जानते हैं" उसने जवाव दिया।

फिर भी एक विदेशी के साथ उसका प्रेम-प्रसंग हो ही गया। यह इंगलैंड का निवासी था। स्वभाव का विचित्र और हमारी भापा को जानते हुए भी खामोश। वह जवान था लेकिन वाल उसके सफ़ेद हो गये थे और उसके चेहरे पर एक दाग़ था। खूनी का-सा चेहरा किन्तु आँखें साधु की-सी। कुछ लोग कहते कि वह पुस्तकें लिखता है और कुछ वताते कि वह जुआरी है। नून्वा उसके साथ भागकर सिसिली गई और वहुत ही दुवली होकर लौट आई। लेकिन यह स्पप्ट हुआ कि वह परदेसी कोई धनी आदमी नहीं था; क्योंकि नून्वा जव वापस आई तव उसके पास न धन था और न कुछ उपहार ही। फिर से वह सुख और आनंद की चाह करती हुई हमारे वीच रहने लगी।

एक त्योहार का दिन था। लोग जब गिरजे से बाहर आ रहे थे तो किसी ने आश्चर्य के साथ कहा—

"देखो! नीना बिल्कुल अपनी माँ की तरह दिखाई देने लगी है!"

यह सच था। बिल्कुल मई मास के दिन की तरह साफ़: नून्चा की बिटिया के जीवन में यौवन-वसंत ने प्रवेश किया था और वह अपनी माता ही की तरह एक तेजस्वी तारका लग रही थी। वह थी केवल चौदह बरस की लेकिन काफ़ी लंबी थी। केश उसके विपुल थे और आँखें गर्वीली। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफ़ी बड़ी लगती और उसका गदराया हुआ यौवन स्त्रीत्व के लिए परिपक्व दिखाई देता।

खुद नून्चा तक उसे देखकर दंग रह गई।

"पवित्र मदोन्ना! नीना, बिटिया, क्या तुम मुझसे भी सुन्दर बनना चाहती हो?"

लड़की मुस्कुराई। "नहीं" उसने जवाब दिया—"मैं सिर्फ़ तुम्हारी जितनी सुंदर बनना चाहती हूँ। मेरे लिए इतना काफ़ी है।"

पहली ही बार उस खुशदिल स्त्री के चेहरे पर छाया नज़र आई और उस शाम को उसने अपनी सहेलियों से कहा—

"यह है जीवन! तुम अपने गिलास को आधा भी पी न पाये कि दूसरा हाथ उसके लिये आगे बढ़ता है..."

निश्चय ही शुरू शुरू में माँ तथा बेटी के बीच होड़ की कोई निशानी नज़र नहीं आई। बेटी का बर्ताव विनम्र तथा सावधानीपूर्ण रहा। अपनी लंबी बरौनियों में से वह दुनिया को देखती रहती और पुरुषों की उपस्थिति में शायद ही अपना मुँह खोलती। इधर उसकी माँ की आँखें अधिक लालच से जल उठतीं और उसकी आवाज़ में हमेशा से ज्यादा फुसलाहट सुनाई देती।

उसकी उपस्थिति में आदमियों के चेहरे पर वही लालिमा छा जाती जो उषःकाल में सूर्य की प्रथम किरण पाकर पालों पर छा

जाती है। और वस्तुतः कई जनों के लिए नून्चा प्रेम-प्रभात की प्रथम किरण थी, और जब वह अपनी छोटी-सी गाड़ी के साथ सड़क पर से चलती तो कई लोग मूक कृतज्ञता से उसको निहारते रहते। चलते समय वह मस्तूल की तरह सीधी तथा सुडौल दिखाई देती और उसकी आवाज़ मकानों की छतों पर प्रतिध्वनित हो उठती। बाज़ार में भी जब वह रंग-बिरंगी साग-भाजी के ढेर के आगे खड़ी रहती तब उसे देखते ही बनता। गिरजे की सफ़ेद दीवार की पृष्ठभूमि पर किसी महान चित्रकार द्वारा बनाई गई चित्रकृति-सी वह लगती। संत जाकोमो गिरजे के पास सीढ़ियों के बायें उसकी जगह थी और इस स्थान से तीन क़दम के अन्दर ही उसने आखिरी सांस खींची। जब वह जगमगाती ज्योति के समान वहाँ खड़ी रहकर भीड़ के सिर पर चमकीली चिनगारियों की तरह हंसी-मज़ाक़ तथा गीतों की—गीत उसको हज़ारों याद थे—बौछार करती जाती तब वह बड़ी ही सुंदर दिखाई देती।

वह इस तरह पोशाक पहनना जानती थी जिससे कपड़े उसके सौंदर्य को वैसे ही झलका उठते जैसे स्फटिक का जाम अच्छी मदिरा को झलकाता है। जाम जितना अधिक पारदर्शी होता है उतनी ही मदिरा की आत्मा अधिक झलमलाती है, क्योंकि रंग हमेशा ही स्वाद तथा सुगंध की मात्रा को बढ़ाता है, अंतिम स्वर तक वह लाल निःशब्द संगीत सुनाता है, जिसे हम अपनी आत्मा को सूर्य का कुछ रक्त प्रदान करने के लिये पी लेते हैं। मदिरा! हे भगवान, समग्र कोलाहल तथा व्याकुलता से परिपूर्ण दुनिया की क़ीमत गदहे के एक खुर जितनी भी न होती, अगर आदमी को अपनी ग़रीब बेचारी रूह को उस लाल शराब का एकाध जाम पीकर तरोताज़ा करने का मीठा मौक़ा न मिलता, जोकि पवित्र ईश-भोज की तरह हमारे पापों

के वदवूदार मैल को धो डालती है और काफ़ी वुराइयों से भरी इस दुनिया को प्यार और मुआफ़ करने की सीख हमें देती है... वस, अपने जाम के ज़रिये सूरज की ओर देखो और शराव तुम्हें वह क़िस्से-कहानियां सुना देगी ...

उधर धूप में नून्चा खड़ी है, अपने इर्द-गिर्द खड़े लोगों में सुखी विचार तथा अपनी कृपा को जीत लेने की प्यास जाग्रत करती हुई—जब पास में सुंदर स्त्री होती है तब कोई भी आदमी उपेक्षित रहना वरदाश्त नहीं कर सकता और अपने ही को मात करने की कोशिश करता है। नून्चा ने कई अच्छी वातें की थीं। कइयों की आंतरिक शक्तियों को जागृत करके उसने जीवन को समृद्ध कर दिया था। अच्छाई हमेशा अधिक अच्छाई के लिए प्रेरणा देती है।

हाँ, अव लड़की अधिक वार अपनी माँ के साथ दिखाई देती है—सन्यासिनी के समान नम्र, या यों कहिये कि म्यान में रखी कटार जैसी। आदमी देखते हैं और तुलना करते हैं, और शायद उनमें से कुछ लोग समझने लगते हैं कि स्त्री कभी कभी क्या सोचती होगी और जीवन उसके लिए कैसा कठोर होता होगा।

समय अपने तेज़, नन्हे क़दमों को और तेज़ करता हुआ आगे वढ़ता है और समय की तुलना में लोग लाल सूर्य-किरण में तैरनेवाले धूलि-कणों के समान हैं। नून्चा की घनी भौंहें वार वार सिकुड़ने लगती हैं और कभी कभी वह होंठ चवाकर अपनी लड़की की ओर उसी तरह देखती है जिस तरह एक जुआरी दूसरे जुआरी की ओर देखता है, और यह जानने की कोशिश करता है कि अपने प्रतियोगी के हाथ में कौनसे पत्ते हैं...

एक वर्ष वीत गया, फिर दूसरा वर्ष वीत गया और वेटी माँ के अति निकट और साथ साथ उससे अत्यंत दूर हो गई। अव जवान

लोगों के सामने समस्या-सी खड़ी हुई--किस पर अपनी नज़र टिकायें? नून्वा पर, या नीना पर? इधर नून्वा की सहेलियों ने उसपर मर्म-भेदक ताने कसना शुरू किया--

"क्यों री नून्वा, क्या तुम्हारी बिटिया तुम्हें मात कर देगी?"

लेकिन नून्वा ने हंसकर जवाब दिया--

"चांद के रहते हुए भी बड़े सितारों की जगमगाहट कहीं छिपती नहीं..."

माता के नाते उसे अपनी बेटी के सौंदर्य पर गर्व था, लेकिन स्त्री के नाते नीना की जवानी पर उसे ईर्ष्या थी; क्योंकि नीना उसके तथा सूरज के बीच खड़ी थी, और छाया में रहना माँ के लिए नागवार था।

लानो ने एक नये गीत की रचना की जिसकी पहली कड़ी इस प्रकार थी--

रूपमती को जन्म दे दिया
नारी का कर्तव्य जो किया।
यदि मैं पुरुष जन्म से होती
यही चाहती प्रिय पत्नी से।।

नून्वा इस गीत को नहीं गाना चाहती थी। लोगों में अफ़वाह फैली थी कि नीना ने अपनी माँ को कई बार बता दिया है कि--

"माँ, अगर तुम ज्यादा अक़्लमंदी से काम लो तो हम दोनों की ज़िन्दगी अच्छी हो जायगी।"

आखिर वह दिन भी आया जब बेटी ने अपनी माँ से कह दिया--

"माँ, तुम मुझे बहुत ही अंधेरे में रखती हो। अब मैं बच्ची नहीं रही हूँ, और मैं भी जिन्दगी का मजा चखना चाहती हूँ। तुमने काफ़ी मज़े में दिन बिताये; क्या अब मुझे जीने का मौक़ा नहीं दोगी?"

"आख़िर बात क्या है?" माँ ने पूछा लेकिन उसकी आँखें अपराधिनी की तरह ज़मीन में गड़ गईं; क्योंकि वह जानती थी कि बात क्या है।

इसी बीच एन्रीको बोरबोने आस्ट्रेलिया से वापस आया था। वह उस अद्भुत भूमि में लकड़ी काटने का काम करता था, जहाँ इच्छा करते ही किसी को भी काफ़ी पैसा मिल सकता है। अपनी मातृभूमि की धूप से ज़रा-सी गरमाहट पाने के लिए वह घर आया था और उस मुल्क को वापस जाना चाहता था जहाँ पर ज़िन्दगी घर की बनिस्बत ज्यादा आज़ाद थी। उसकी उम्र छत्तीस साल की थी और वह बड़ा ही ख़ुशदिल था। दढ़ियल, ताक़तवर और ख़ुशमिज़ाज। घने जंगलों में किये गये पराक्रमों तथा वहाँ की अपनी ज़िन्दगी के रोमांचकारी क़िस्से वह सुनाता। हर कोई सोचता कि वह परी-कथाएं सुना रहा है; लेकिन यह माँ-बेटी उसकी सब बातों में विश्वास रखतीं।

"मैं जानती हूँ कि एन्रीको मुझे पसंद करता है" नीना ने कहा—"लेकिन तुम जो उसके साथ चोचले करती हो, जिससे उसका सिर चकरा जाता है और मेरा मौक़ा मेरे हाथ से निकल जाता है।"

"मैं समझ गई" नून्त्सा ने कहा—"ठीक है, अब आगे चलकर तुम्हें मदोन्ना के पास अपनी माँ की शिकायत करने का कोई कारण नहीं रहेगा।"

और उसने इस आदमी को छोड़ दिया। लोग जानते थे कि वह उसको औरों की अपेक्षा ज्यादा पसंद करती है।

लेकिन यह मशहूर बात है कि सरल विजय के कारण विजेताओं के सिर फिर जाते हैं, और जब ये विजेता अभी बच्चे होते हैं तब तो कुछ पूछिये ही नहीं!

नीना माँ को इस तरह की बातें सुनाने लगी जो उसके लिए वाजिब नहीं थी। और एक दिन, जोकि संत जाकोमो का दिन, हमारे पर्व का दिन था, हर कोई आमोद-प्रमोद में मग्न था और नून्चा ने अभी अभी शानदार तरान्तेल्ला नृत्य पूरा किया था कि इतने में उसकी बेटी ने सबको सुनाई देने लायक़ आवाज़ में कहा–

"क्या तुम बहुत ज़्यादा नहीं नाच रही हो? तुम्हारी इस उम्र में यह शायद तुम्हारे दिल के लिये नुक़सानदेह होगा..."

कोमल स्वर में कहा गया यह उद्धत उद्‌गार जिस किसी ने सुन लिया वही क्षण भर खामोश रहा और अपनी पतली कमर पर हाथ रखे हुए नून्चा क्रोध से चिल्ला उठी–

"मेरा दिल? तुम क्यों मेरे दिल की फ़िक्र करने लगी? अच्छा, बिटिया, शुक्रिया! लेकिन हम देख ही लें कि किसका दिल ज़्यादा मजबूत है!"

और क्षण भर सोचकर उसने सुझाव दिया–

"चलो, हम यहाँ से फ़व्वारे तक और वहाँ से वापस यहाँ तक, बिना रुके दौड़ते हुए तीन फेरियाँ करने की होड़ लगाकर देखें..."

कई लोगों ने इस सारी बात को निरर्थक माना और कुछ ने तो उसे निंदाव्यंजक समझा; लेकिन बहुसंख्य लोगों ने नून्चा के प्रति आदरभाव के कारण गंभीर विनोद-वृत्ति के साथ उसके सुझाव का समर्थन किया और ज़ोर देकर कहा कि नीना को अपनी माँ की चुनौती स्वीकार करनी चाहिये।

उन्होंने पंचों का चुनाव किया और समय की मर्यादा भी निश्चित की–ग़रज़ यह कि घुड़दौड़ की तरह होड़ के सभी नियमों का पालन किया गया। बहुत-से स्त्री-पुरुष ईमानदारी से चाहते थे कि माँ जीत जाय। उन्होंने नून्चा को आशीर्वाद दिये और मदोन्ना से

वड़ी मिन्नतें मनाकर प्रार्थना की कि वह उसकी सहायता करे तथा उसे शक्ति प्रदान करे।

अव माँ और वेटी एक-दूसरे की ओर न देखती हुई पास पास खड़ी रहीं। खंजरी झनझना उठी और होड़ शुरू हुई। चौक तक की सड़क पर दौड़ते समय दोनों वड़े वड़े सफ़ेद पक्षियों की तरह दिखाई दे रही थीं। माँ के सिर पर लाल रूमाल था और वेटी के सिर पर हल्का नीला।

होड़ के आरंभ ही से स्पष्ट था कि माँ अपनी वेटी की वनिस्वत ज़्यादा ताक़तवर है और वदन उसका हल्का-सा है। नून्चा निहायत नज़ाकत के साथ दौड़ रही थी। ऐसा लग रहा था कि धरती ही उसे उठाकर ले जा रही हो, जिस तरह शिशु को माँ ले जाती है। खिड़कियों में से लोगों ने उसके क़दमों पर फूलों की वरसात की और तालियाँ वजाकर तथा चिल्ला चिल्लाकर उसको प्रोत्साहन दिया। दूसरी फेरी के वाद वह चार मिनट से वेटी के आगे थी और नीना, जोकि अपनी हार के कारण हतोत्साह तथा वेचैन हो गई थी, हाँफती तथा आँसू वहाती हुई गिरजे की सीढ़ी पर गिर पड़ी। तीसरी वार दौड़ना उसके लिए असंभव ही था।

विल्ली की तरह चुस्त नून्चा उसपर झुककर औरों के साथ हंसने लगी।

"विटिया," वेटी के विखरे हुए वालों को अपने मज़वूत हाथ से थपथपाते हुए उसने कहा—"तुम्हें मालूम होना चाहिये कि खेल, काम और प्यार में उसी स्त्री का हृदय सवसे वलवान होता है जोकि जीवन की कसौटी पर कसी हुई है; और इसकी प्राप्ति होती है काफ़ी देर से, उम्र के तीस साल वीतने के वाद... सो मेरी विटिया, परेशान मत होना।"

और होड़ के वाद विश्राम के लिए ज़रा भी न रुकते हुए नून्चा ने फिर से तरान्तेल्ला नृत्य नाचना चाहा—

"मेरे साथ कौन नाचेगा?"

एन्रीको आगे बढ़ा, उसने अपना टोप उतारा और इस अजीब औरत के सामने आदर के साथ सिर नवाते हुए शानदार अभिवादन किया।

फिर खंजरी की झनझनाहट शुरू हुई और उससे उक्त जोशीले नृत्य के बोल झनकार उठे—पुरानी, तेज़ और मधुर मदिरा की तरह उन्मादक। नून्चा थिरक उठी—तेज़ी के साथ घूमती तथा चक्कर खाती हुई और सर्पिल गति में लचकती-मुड़ती हुई! इस उत्कट नृत्य को उसने अच्छी तरह जान लिया था और उसके कांतिमान तथा दुर्जय शरीर की नाज़ुक अदायें देखकर आँखों की प्यास बुझती थी।

देर तक वह नाचती रही और कइयों के साथ उसने नृत्य किया। उसके साथी थक गये लेकिन उसने और भी नाचना चाहा। आख़िर, मध्यरात के बाद वह चिल्ला उठी—

"आओ, एन्रीको, फिर एक बार आओ। बस अब आख़िरी बार!" और धीरे धीरे उसके साथ नाचने लगी। उसकी आँखें विस्फारित हुईं और उनमें कोमल प्रतिज्ञा चमक उठी। फिर यकायक वह ज़रा-सी चीख उठी, उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और आहत-सी होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

डाक्टर ने बताया कि हृदय-गति रुक जाने से उसकी मृत्यु हो गई है।

शायद ...





लुहार गल्यार्दी

खामोशी की चादर ओढ़े द्वीप सोया हुआ है। सागर पर भी क़ब्रिस्तान का-सा सन्नाटा फैला हुआ है; ऐसा लगता है कि किसी बलिष्ठ हाथ ने आकाश में से इस द्वीप रूपी काली, बेढंगी चट्टान को सागर के सीने में ज़ोर से मार दिया हो जिससे उसका जीवन चकनाचूर हो चुका है।

जहाँ आकाश-गंगा का सुनहरा अर्धवृत्त सागर के काले पानी को छूता है वहाँ से इस द्वीप को देखने पर वह मोथरी थूथनी वाले उस पशु जैसा लगता है, जो अपनी पीठ कमान की तरह झुकाकर सागर-तट पर तेल की तरह जमा हुआ पानी चुपचाप पी रहा हो।

अचेतन शांति की ये काली रातें दिसंबर महीने में अक्सर देखने को मिलती हैं; इन रातों में ऐसा अजीब सन्नाटा छाया रहता है कि हल्की-सी फुसफुसाहट से अधिक ऊँची आवाज़ में बोलने को जी नहीं चाहता। हाँ, कहीं ऐसा न हो कि रात्रिकालीन आकाश के नीले चंदवे

के नीचे गुप्त रीति से चल रही किसी कार्रवाई में थोड़े-से भी शोरगुल से बाधा पहुँच जाय।

टापू के किनारे पर स्थित चट्टानों के गड़बड़झाले के बीच बैठे हुए दो व्यक्ति इसी तरह दबी हुई आवाज़ में बातचीत कर रहे हैं। उनमें से एक है चुंगी का सिपाही जिसने पीले किनारेवाला वर्दी का जाकिट पहन रखा है और जिसकी पीठ पर एक छोटी बन्दूक़ लटकी हुई है। मछुओं तथा किसानों को चट्टानों की दरारों में जमा हुआ नमक इकट्ठा करने से रोकने के लिये ही वह यहां खड़ा है। दूसरा आदमी है एक बूढ़ा मछुआ—काला और स्पेनियर्ड की तरह सफ़ाचट चेहरा, रुपहले गलमुच्छे और तोते की तरह बड़ी तथा टेढ़ी नाक।

चट्टानें चाँदी से मढ़ी हुई-सी लगती हैं और यह चाँदी खारे पानी के कारण कुछ काली पड़ गयी हैं।

सिपाही जवान है और जवान होने के कारण वह उसी विषय पर बोलता है जो उसके युवा हृदय को अत्यंत प्रिय है। बूढ़ा सुस्ती से और कभी कभी सख़्ती से जवाब देता है:

"दिसंबर में भी कोई प्यार शुरू करता है?" वह कहता है—"वर्ष की इस अवधि में बच्चे पैदा होने लगते हैं..."

"ऊँह! जब आदमी जवान होते हैं तब वे इंतज़ार नहीं करते ..."

"वाह, उन्हें करना तो चाहिये..."

"क्या तुमने किया था?"

"मेरे दोस्त, मैं कभी सिपाही नहीं था। मैं काम करता रहा और मैंने यथासमय उन सब बातों का अनुभव किया जो एक आदमी के लिये ज़रूरी हैं।"

"मैं नहीं समझ पाया ..."

"किसी दिन ज़रूर समझ जाओगे ..."

तट के समीप ही सागर में लुब्धक नक्षत्र का नीला प्रतिबिंब दिखाई देता है। इस मंद प्रकाश को अगर देर तक निहारते रहें तो पानी पर मानवीय सिर की तरह गोल और पूर्णतया निश्चल तैरता पीपा दिखाई देगा।

"तुम सोते क्यों नहीं?"

बूढ़ा अपना पुराना, फीका पड़ा, बिना आस्तीन का लबादा खोल लेता है और खाँसता हुआ उत्तर देता है:

"हमने यहाँ अपने जाल फेंके हैं। वह तैरता पीपा देखते हो न?"

"हाँ"

"तीन दिन पहले वहाँ एक जाल फटा था।"

"शायद डाल्फ़िनों ने फाड़ डाला हो?"

"जाड़ों में डाल्फ़िन? नहीं! यह शायद शार्कों का या तोन्ना मछली का काम है। कौन जाने?"

किसी अदृश्य प्राणी के पैर से उखड़ा हुआ एक छोटा-सा पत्थर पहाड़ी पर से, सूखी घास में लुढ़कता हुआ आया और उछलकर सागर में छपाक से गिर पड़ा। खामोश रात में इस तरह का ज़रा-सा शोर अच्छा लगता है और रात उसको बड़े प्यार के साथ अपना लेती है, मानो उसकी स्मृति को हृदय में चिरकाल रखना चाहती हो।

सिपाही ने नज़ाकत के साथ एक मज़ाक़ भरा गीत गाना शुरू किया:

कह सकते हो उम्बेर्तो, क्यों
बूढ़ों को है नींद न आती?
जवान थे जब, सुन लो, इनकी
शराब से थी गहरी दोस्ती।।

"मेरी नहीं," बूढ़ा गुर्राया।

चतुर वेर्गीतो, कहो और क्यों
वृद्ध नहीं सुख से सो सकते?
काफ़ी प्यार नहीं कर पाये
यौवन की दुनिया में जब थे।।

"क्यों चाचा पश्काले, अच्छा है न गीत?"

"जब तुम अपनी उम्र के साठवें साल को लाँघ जाओगे तब ख़ुद ही इसका जवाब पाओगे। फिर मुझसे क्यों पूछते हो?"

देर तक दोनों ख़ामोश रहे—बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रात में सारा संसार चुप था। फिर बूढ़े ने अपने मुँह से अपना पाइप हटाया, एक पत्थर पर उसे खटखटाया और खटखटाहट को सुनते हुए कहा:

"तुम जवान लोग हँसते हो ख़ूब, लेकिन मालूम नहीं, गुज़रे ज़माने के लोगों की तरह प्रेम करना जानते हो कि नहीं .."

"छि:! वही पुरानी बात। मैं मानता हूँ कि प्रेम सदैव एक-सा रहता है ..."

"तुम मानते हो, लेकिन जानते नहीं! उधर पहाड़ी के पीछे सेंत्सामाने परिवार रहता है। उनसे कहो कि वे तुम्हें दादा कार्लो की कहानी सुना दें। तुम्हारी बीवी के लिए यह बड़ा अच्छा होगा।"

"भला, मैं पराये लोगों से क्यों पूछूँ जब ख़ुद तुम्हीं उसे बता सकते हो ..."

कहीं से अदृश्य निशा-पंछी के उड़ने की आवाज़ आयी और उसने वायुमंडल में कंपन पैदा किया। इस अजीब ध्वनि को सुनकर ऐसा लगा कि ऊनी कपड़े से सूखी चट्टानों को रगड़ा जा रहा हो।

अंधेरा अधिक घना, नम तथा गरम होता गया, आकाश ऊपर को हटा और आकाश-गंगा की रुपहली धुंध में तारे अधिकाधिक चमकने लगे।

"पुराने ज़माने में स्त्रियों को अधिक महत्त्व दिया जाता था..."

"सचमुच? मुझे यह मालूम नहीं था ..."

"पुरुष अक्सर युद्ध पर जाते थे ..."

"हाँ, और विधवाओं की संख्या काफ़ी बढ़ जाती थी ..."

"हमेशा ही समुद्री डाकुओं तथा सिपाहियों का खतरा रहता था और हर पाँच-छः साल बाद नेपल्स में नये शासक आते थे। स्त्रियों को ताले में बन्द रखना पड़ता था।"

"आज भी ऐसा करना ठीक होगा ..."

"उन्हें मुर्गियों की तरह चुराया करते ..."

"हालाँकि वे लोमड़ियों से ज्यादा मिलती-जुलती होती हैं ..."

बूढ़ा खामोश रहा और उसने अपना पाइप जलाया। निश्चल हवा में सफ़ेद, सुगन्धी धुएं का बादल-सा तैरने लगा। पाइप के प्रकाश में उसकी काली, टेढ़ी नाक तथा छोटी-सी मूँछें चमक उठीं।

"अच्छा, फिर क्या?" सिपाही ने तंद्रा में पूछा।

"तुम्हें सुनना हो तो चुप रहो।"

लुब्धक नक्षत्र बहुत ही तेज़ जगमगाने लगा। ऐसा लगता था कि यह गर्वीला तारा आकाश के सभी अन्य ग्रह-नक्षत्रों को मात करना चाहता है। सागर पर स्वर्ण-धूलि फैली हुई थी और आकाश के अस्पष्ट प्रतिबिंब ने उस अंधकार तथा शांतिपूर्ण अरण्य को जीवन तथा जगमगाहट प्रदान की थी। ऐसा दिखाई देता था मानों सागर की गहराई से सहस्र सहस्र सतेज नेत्र चमक रहे हों।

"मैं सुन रहा हूँ," मछुए की नाराज़गी भरी चुप्पी के कारण अधीर होकर सिपाही ने कहा और बूढ़े ने एक ऐसी कहानी बुननी शुरू की जो हमेशा दिलचस्पी के साथ सुनी जाएगी।

"लगभग सौ साल पहले, उस पहाड़ की चोटी पर, जहाँ सनोवर

वृक्ष खड़े हैं, एक कुवड़ा श्रौर वूढ़ा यूनानी रहता था। उसका नाम था एक्केल्लानी। वह चुंगीचोर था श्रौर लोग मानते थे कि वह काला जादू जानता है। एक्केल्लानी के एक वेटा था अरिस्तीदो। यह शिकारी था। उन दिनों द्वीप में जंगली वकरे जो घूमा करते थे। उस समय यहां सवसे धनी परिवार था गल्यार्दियों का। आजकल वे अपने दादा के नाम का यानी सेंत्सामाने का उपयोग करते हैं। पचास फ़ीसदी अंगूर-वग़ीचों के श्रौर शराव के आठ तहख़ानों के वे मालिक थे। इन तहख़ानों में एक हज़ार से भी ज्यादा पीपे थे। उन दिनों हमारी सफ़ेद शराव फ़ान्स तक में काफ़ी क़ीमती मानी जाती थी। सुना है कि फ़ान्स में लोग शराव के सिवा श्रौर किसी भी चीज़ की क़दर नहीं कर सकते। ये फ़ान्सीसी लोग सव के सव जुआरी श्रौर शरावी होते हैं; शैतान के साथ उन्होंने अपने राजा के सिर तक की वाज़ी लगाई है..."

सिपाही धीरे-से हंस पड़ा श्रौर मानों उसकी हंसी को प्रतिध्वनित करते हुए कहीं नज़दीक से पानी की छलछलाहट सुनाई दी। दोनों ने कान उठाये श्रौर उस सागर की श्रोर देखा जहां हल्की-सी लहरियां किनारे से पीछे हट रही थीं।

"शायद मछली वंसी के कांटे को कुतर रही है।"

"अच्छा, आगे वढ़ो ..."

"हां ... मैं गल्यार्दी परिवार के वारे में वोल रहा था। ये तीन भाई थे। मेरी कहानी है मझले भाई कर्लोने के वारे में। यह नाम उसे इसलिये दिया गया था कि उसका मुंह वड़ा था श्रौर आवाज़ थी वादलों की गड़गड़ाहट जैसी। लुहार की लड़की जूलिया पर वह लट्टू था। लड़की थी वड़ी चतुर। पहलवान ख़ुद कभी अक़्लमंद नहीं होता, श्रौर इस दृष्टि से उसका यह चुनाव ठीक रहा। किसी न किसी कारण इनका विवाह स्थगित होता रहा श्रौर दोनों वड़ी अधीरता से व्याह के दिन की राह देखते रहे। इधर जूलिया पर यूनानी के लड़के की भी श्रांख गड़ी हुई थी श्रौर वह चुप नहीं वैठा था। लंवे अरसे से वह जूलिया के

प्यार को जीतने की कोशिश करता रहा, लेकिन उसको कामयाबी नहीं मिली। फिर इस लड़के ने यह सोचकर जूलिया को बदनाम करने की ठानी कि कर्लोनें गल्यार्दी उसे ठुकरा देगा और फिर वह आसानी से अपने हाथ आ जायगी। उन दिनों लोग आज की वनिस्बत ज्यादा सख्त थे..."

"लेकिन आजकल भी ..."

"ऐयाशी अमीरों का दिलवहलाव है। यहाँ हम सब ग़रीब लोग हैं," वृद्ध ने कठोरता के साथ कहा और फिर अतीत को स्मरण करते हुए कहानी आगे चलाई:

"एक दिन जब लड़की अंगूर वेलियों की कटी टहनियाँ इकट्ठी कर रही थी, यूनानी का लड़का वहाँ आ पहुँचा और यह बहाना करके कि अंगूर-बग़ीचे की चहारदीवारी के पीछे वाली पगडंडी पर से पाँव फिसल गया है, धड़ाम से जूलिया के पैरों के पास आ गिरा। जूलिया, जोकि एक अच्छी ईसाइन थी, झुककर देखने लगी कि लड़के को कहीं चोट तो नहीं आयी। वह कराह उठा।

"'जूलिया' उसने क्षीण स्वर में गिड़गिड़ाते हुए कहा— 'मदद के लिये किसी को न पुकारना, मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ। मुझे डर लगता है। अगर तुम्हारा डाही मंगेतर मुझे यहाँ तुम्हारे पास देख लेगा तो वह मुझे मार ही डालेगा। मुझे यहाँ ज़रा-सा आराम करने दो और फिर मैं अपनी राह चला जाऊंगा...'

"जूलिया के घुटनों पर सिर रखकर उसने वेहोशी का बहाना किया। घबड़ायी हुई लड़की ने मदद के लिए आवाज़ दी, लेकिन जब लोग दौड़े हुए वहाँ पहुँचे तो वह यकायक उठ खड़ा हुआ—बिल्कुल हट्टाकट्टा। उसने बड़ी परेशानी का अभिनय किया और ज़ोरों से जूलिया के प्रति अपने प्रेम की घोषणा करते हुए सदाशयता की दुहाई दी। उसने घोषित किया कि इस लड़की के साथ ब्याह करके वह उसके कलंक को

छिपा देगा। थोड़े में, उसने ऐसा अभिनय दिखाया कि लड़की के आलिंगनों से श्रांत होकर वह उसकी गोद में सो गया था। लड़की के क्रोधपूर्ण निषेध-वचनों के बावजूद इन सीधे-सादे लोगों ने लड़के की ही बात में विश्वास किया। वे भूल गये कि खुद लड़की ने ही मदद के लिए आवाज़ दी थी। उनको मालूम नहीं था कि चालाकी यूनानी की प्रकृति है और खुद शैतान ने ईसाइयों के काम में उलझन पैदा करने के लिए ही यूनानियों को ईसाई बनाया है। लड़की शपथपूर्वक कह रही थी कि यूनानी लड़का झूठ बोल रहा है, लेकिन लड़के ने जवाब दिया कि वह केवल सच्चाई को स्वीकार करने में शरमाती है और कर्लोने के भारी हाथ का उसे डर लग रहा है। लड़के ने लोगों के मन में विश्वास जमा लिया लेकिन लड़की बेचारी पागल-सी हो गयी। वह कंकड़-पत्थर उठाकर लोगों पर फेंकने लगी और तब उन्होंने उसे रस्सी में जकड़ दिया। फिर सारा देहात शहर के लिए रवाना हुआ। इधर कर्लोने ने जूलिया का रोना-चिल्लाना सुना और उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ा। लेकिन जब लोगों ने उसको हक़ीक़त बतायी तो वह भीड़ में अपने घुटनों के बल बैठ गया, फिर उछलकर खड़ा हुआ और उसने अपने बायें हाथ से अपनी मंगेतर के मुँह में एक तमाचा जड़ दिया और दाहिने हाथ से यूनानी लड़के की गर्दन मरोड़ने लगा। बड़ी मुश्किल से लोग उसको वहाँ से हटा सके।"

"कैसा मूर्ख था," सिपाही गुर्राया।

"ईमानदार आदमी का दिमाग़ उसके दिल में होता है! मैंने तुमसे कहा न था कि यह सारी घटना जाड़ों में, शिशु ईसा के जन्म-पर्व के कुछ ही दिन पहले हुई थी। इस दिन सभी लोग अपने यहाँ की फ़ालतू चीजें—शराब, फल, मछली, मुर्ग़ी, वतख़ वग़ैरह—एक-दूसरे को भेंट में दे देते हैं; हर कोई देता रहता है और बेशक सबसे ज्यादा पाते हैं सबसे ग़रीब लोग। मुझे याद नहीं कि कर्लोने को सच्ची बात

कैसे मालूम हुई, लेकिन उसको पता ज़रूर लगा था और पर्व के पहले दिन जूलिया के माता-पिता को, जो गिरजे में जाने के लिए भी घर से बाहर नहीं निकले थे, एक ही भेंट मिली—सनोवर की शाखाओं से भरी हुई एक टोकरी और शाखाओं के बीच—कर्लोने गल्यार्दी का बायां हाथ—वही हाथ जिसने जूलिया को तमाचा जड़ दिया था। जूलिया के मां-बाप बेटी को साथ लिये घबड़ाकर कर्लोने के घर गये। उसने अपने घर की देहली पर घुटने टेककर उनका स्वागत किया। उसके ठूंठे हाथ पर एक चिथड़ा लपटा हुआ था जिसपर खून के धब्बे थे। वह बच्चे की तरह सिसक सिसककर रो रहा था।

"'तुमने अपने साथ यह क्या कर डाला?' उन्होंने पूछा।

"और उसने जवाब दिया:

'मैंने वही किया जो करना चाहिये था: जिस आदमी ने मेरे प्रेम का अपमान किया वह ज़िंदा नहीं रह सकता था और मैंने उसका खातमा कर भी डाला... मैंने अपनी निर्दोष प्रेयसी को जिस हाथ से तमाचा जड़ा था उसने मेरा अपराध किया था और इसलिये मैंने उसे तोड़ डाला... जूलिया, इस समय मैं सिर्फ़ यही माँगता हूँ कि तुम और तुम्हारे सगेसंबंधी मुझे मुआफ़ कर दें...'

"बेशक, उन्होंने उसको मुआफ़ कर दिया; लेकिन ऐसा क़ानून भी तो मौजूद है जो बदमाशों तक की रक्षा करता है। यूनानी युवक की हत्या के लिए गल्यार्दी को दो साल के लिए जेल भेज दिया गया और उसे जेल से छुड़वाने के लिए उसके भाइयों को भारी क़ीमत देनी पड़ी...

"बाद में उसने जूलिया के साथ ब्याह किया और दोनों ने बुढ़ापे तक लंबा तथा सुखी जीवन बिताया। इनके कारण द्वीप में एक नया कुल-नाम आया—सेंत्सामाने, हथकटा।"

बूढ़ा ख़ामोश हुआ और उसने पाइप का एक ज़ोरदार कश खींचा।

"मुझे यह कहानी पसंद नहीं है," सिपाही ने कहा—"तुम्हारा वह कर्लोने बड़ा जंगली था। और आम तौर पर सारी बात ही मूर्खतापूर्ण थी।"

"आज से एक सौ साल बाद तुम्हारा जीवन भी मूर्खतापूर्ण दिखाई देगा," वृद्ध ने गंभीरता के साथ कहा और सफ़ेद धुएं का एक बादल उड़ाते हुए आगे बोला:

"हाँ, लेकिन यह तभी हो सकता है जब किसी को याद रहे कि तुम इस धरती पर कभी रहते भी थे ..."

फिर ख़ामोशी में ज़ोरदार छपछपाहट सुनाई दी। इस वक़्त यह बड़ी ही तेज़ रही। बूढ़े ने अपना लबादा फेंक दिया, जल्दी जल्दी उठ खड़ा हुआ और इस तरह आँखों से ओझल हो गया मानों काले तथा स्थिर पानी ने उसको निगल लिया हो। सागर की स्थिरता में केवल किनारे के पास नीली छटा लिये हल्की लहरियाँ थिरक रही थीं जो रुपहली मछलियों जैसी दिखाई देती थीं।





तरुण इटली

मखमली वस्त्रधारिणी रजनी हरे भरे मैदानों से मृदु पदन्यास करती हुई नगर-प्रवेश करती है और सहस्र सहस्र सुनहरे दीपों से नगर उसका स्वागत करता है। दो स्त्रियाँ तथा एक युवक खेतों में चल रहे हैं मानों वे भी रात की अगवानी कर रहे हों। दिन भर के परिश्रम से थके हुए जीवन का कोलाहल धीमे धीमे इनका अनुसरण करता है।

रोमन ग़ुलामों की बहुभाषी टोलियों द्वारा बनायी गयी पक्की पत्थरदार पुरानी सड़क की काली पटियों पर तीन व्यक्तियों के पैरों की हल्की आहट सुनाई देती है और गहरी निस्तब्धता में एक स्त्री का विश्वासपूर्ण तथा स्नेहमय स्वर गूंज उठता है:

"लोगों के साथ व्यवहार करते समय कभी भी कठोर न बनना..."

"मां, तुमने मुझे कभी कठोर होते हुए देखा है?" युवक विचारपूर्वक पूछता है।

"तुम बहुत ही भावुकता से तर्क करते हो।"

"मैं सच्चाई को भावुकता से प्यार करता हूँ।"

युवक के बायें एक लड़की चलती है जिसकी लकड़ी की जूतियाँ पत्थरों पर खटखटाती हैं। वह इस तरह चलती है मानो अंधी हो। उसका मुख आकाश की ओर उठा हुआ है, जहाँ सांध्य तारा पूर्ण प्रकाश से जगमगाता है और उसके नीचे दिखाई देती है सूर्यास्त की मंद लालिमा। इस लालिमा की पृष्ठभूमि पर खुदे हुए-से दो चिनार वृक्ष बुझी हुई मशालों-से लगते हैं।

"समाजवादियों को अक्सर जेल भेज दिया जाता है" आह भरती हुई माँ कहती है।

"यह हमेशा ऐसा नहीं रहेगा," युवक शांतिपूर्वक उत्तर देता है– "इसमें तो कोई फ़ायदा नहीं ..."

"हाँ, लेकिन बीच में ..."

"ऐसी कोई भी ताक़त नहीं जो दुनिया के जवान दिल को कुचल सके। यह कभी नहीं होगा ..."

"मेरे लाल, गीत के लिए ये शब्द बड़े अच्छे हैं ..."

"लाखों लोग इस गीत को गा रहे हैं, माँ। और सारा संसार उसको अधिकाधिक गौर से सुनता जा रहा है। तुम खुद भी मेरी और पावलो की बातें उतनी शांति और सहृदयता के साथ कभी नहीं सुनती थीं, जितनी आज सुनती हो।"

"हाँ! हाँ! ... लेकिन हड़ताल न तुम्हें अपने शहर से जुदा कर दिया ..."

"क्योंकि यह भूमि हम दोनों के लिए काफ़ी नहीं है। बस, पावलो यहाँ रह जाय! लेकिन हड़ताल में जीत हमारी ही हुई ..."

"जी हाँ," लड़की न पुरआवाज जवाब दिया – "तुम और पावलो..."

वह रुक गयी और जरा-सी मुस्कुराने लगी। फिर एक-दो मिनट ये लोग चुपचाप चलते रहे। सामने फैले हुए अंधकार में से एक टीला उभर आया। यह किसी पुरानी इमारत के भग्नावशेष थे। टीले पर मधुर गंधवाले यूकेलिप्टस की नाजुक डालें फैली हुई थीं और जब ये तीनों उसके पास पहुँचे तो शाखाओं में कोमल कंपन हो उठा।

"यह है पावलो," लड़की ने कहा।

भग्नावशेषों में से एक काली, लंबी आकृति वाहर आकर वीच रास्ते में खड़ी हुई।

"क्या तुम्हारे दिल ने वता दिया कि वह यहाँ है?" युवक ने हंसते हुए पूछा।

"आ गये?" उस आदमी की आवाज़ प्रतिध्वनि की तरह सुनाई दी।

"जी हाँ, और ये हैं मेरी माताजी और वहन। तुम्हें मेरे साथ और आगे चलने की आवश्यकता नहीं है। रोम का रास्ता सिर्फ़ पाँच घंटों का है और मैं वहाँ पैदल ही जाना चाहता हूँ, ताकि चलते चलते मैं अपने विचारों का सिलसिला वांध सकूं ..."

वे रुक गये। लंवे आदमी ने अपना टोप उतारा। "अपनी माँ और वहन के वारे में तुम तनिक भी चिंता न करो," अवरुद्ध कंठ से उसने कहा। "सव ठीक हो जायगा!"

"मैं जानता हूँ। अच्छा, आज्ञा हो, माताजी!"

वह हल्के-से सिसक तथा कराह उठी। तव तीन चुम्वन-ध्वनियां सुनाई दीं और एक मर्दानी आवाज़ ने कहा:

"घर जाओ और आराम करो। समय वड़ा कठिन आया है। लेकिन जाओ, सव कुछ ठीक होगा। पावलो भी मेरी ही तरह तुम्हारा पुत्र है। अच्छा, मेरी नन्ही वहन ..."

फिर चुम्वनों की आवाज़ और पत्थरों पर पैरों की सूखी खड़खड़ाहट – रात की गहरी निस्तव्धता में सभी ध्वनियाँ उसी तरह परावर्तित हो रही थीं जिस तरह दर्पण में प्रकाश की किरणें।

अंधकार से आवृत चार कृष्णाकृतियों ने मानो एक विशाल शरीर धारण किया और कुछ देर तक वे पृथक् नहीं दिखाई दीं। फिर चुपचाप ये एक-दूसरी से अलग हुईं: तीन आकृतियाँ धीरे धीरे शहर की ओर वापस चलीं और एक आकृति तेजी के साथ वढ़ी पश्चिम की ओर, जहाँ सूर्यास्त की लालिमा मुरझा गयी थी और आकाश में सहस्र सहस्र तारे जगमगाने लगे थे।

"विदा!" दुःख भरी धीमी आवाज़ रात की शांति में गूंज उठी।

और दूर से एक खुशदिल आवाज़ ने उत्तर दिया:

"विदा! दुःखी न होना, हम जल्द ही फिर मिलेंगे..."

लड़की की लकड़ीवाली जूतियाँ फ़र्श पर खुश्क आवाज़ कर रही थीं और वह युवक कुछ रूखी आवाज़ में सांत्वना के शब्द सुना रहा था:

"सब कुछ ठीक होगा, दोन्ना फ़िलोमेना। इसका आप उतना ही विश्वास करें जितना माता मदोन्ना की कृपा का करती हैं। उसका दिमाग़ अच्छा है और दिल पक्का है। वह प्रेम करना और दूसरों के मन में अपने लिए प्रेम पैदा करना अच्छी तरह जानता है... और, लोगों का प्रेम आदमी को ऐसे पंख प्रदान करता है जिनके सहारे वह सबसे ऊँचा उठ सकता है..."

अंधकार में नगर अपनी मंद रोशनियों को अधिकाधिक फैलाता है। लंबे आदमी के शब्द भी चिनगारी की तरह चमक उठते हैं।

"जिस आदमी के हृदय में वह शब्द है जिससे सारी दुनिया के लोग एक हो जायं, लोग उसकी हमेशा क़दर करेंगे—हमेशा!"

नगर-रक्षक दीवालों के पास एक छोटी सफ़ेद सराय है जो प्रकाशित प्रवेश द्वार रूपी अपनी चौकोर आँख से पथिकों की ओर ताककर उन्हें आमंत्रित-सी करती है। दरवाज़े के पास छोटी छोटी तीन मेज़ों पर बैठी हुई काली आकृतियाँ गीतारों की कराहों तथा मैंडोलिनों की लहरदार ध्वनि की संगत पर शोरगुल के साथ खुशियाँ मना रही हैं।

दरवाज़े के पास उपर्युक्त तीन व्यक्तियों के आ पहुँचते ही बाजे रुक गये, शोरगुल कम हो गया और सराय में बैठे हुए व्यक्तियों में से कई उठ खड़े हुए।

"नमस्ते साथियो!" लंबे आदमी ने अभिवादन किया।

और लगभग एक दर्जन आवाज़ों ने उत्साह से प्रत्यभिवादन किया:

"नमस्ते, साथी पावलो! क्या तुम भी हमारे साथ मिल जाओगे? आओ एकाध जाम हो जाय?"

"जी नहीं... धन्यवाद!"

माता ने आह भरते हुए कहा:

"हमारे लोग तुम्हें भी प्यार करते हैं।"

"क्या कहा दोन्ना फ़िलोमेना, हमारे लोग?"

"ओह मेरी बात पर हंसो मत। अपने लोगों के लिए मैं अजनबी नहीं हूँ। वे सब तुमको प्यार करते हैं: तुमको और उसको..."

लंबे आदमी ने लड़की का हाथ पकड़कर कहा:

"हाँ सब, तथा एक और भी। ठीक है न?"

"जी हाँ," लड़की ने धीमी आवाज़ में कहा—"बेशक।"

तब माता ने मुस्कुराकर कहा:

"ओह, मेरे बच्चो! जब मैं तुम्हें देखती हूँ और तुम्हारी बातें सुनती हूँ तब यह सोचे बिना नहीं रह पाती कि तुम लोगों का जीवन हमारे जीवन की अपेक्षा अवश्य ही अधिक अच्छा होगा..."

और फिर तीनों, नगर की एक सड़क पर चलते हुए आँखों से ओझल हो गये। यह सड़क फटे-पुराने कपड़े की आस्तीन की तरह तंग तथा बेढंगी थी।





द्वेष

सुबह से धुआँधार पानी पड़ रहा था लेकिन दोपहर के समय बादल छंट गये, काला मेघ-वस्त्र जर्जर हो गया और हवा ने उसकी धूमिल धज्जियाँ सागर की ओर उड़ा दीं, जहाँ पर फिर से उनका नीला-भूरा सघन पुंज बन गया और वर्षाशांत जल पर उसकी घनी छाया फैल गयी।

पूर्व में अंधकारमय आकाश बिजली की कौंध से चीरा-सा गया जबकि देदीप्यमान सूर्य ने आँखों को चौंधियानेवाला प्रकाश उस द्वीप पर फैला दिया।

दूर सागर में से देखने पर यह द्वीप पर्व के दिन सजे हुए वैभवशाली मंदिर-सा लगता था। हर चीज स्वच्छता से सुप्रकाशित थी, चमकदार फूलों से सुशोभित थी और बारिश की बड़ी बड़ी बूंदें हर जगह जगमगा रही थीं: द्राक्ष लताओं की हल्की पीली कोमल पत्तियों पर पुखराजों जैसी, विस्तारिया के गुच्छों पर नील मणियों जैसी,

गहरे लाल जिरानियम पर माणिकों जैसी और घास, हरी-भरी जंगली झाड़ियों तथा पेड़ों की पत्तियों पर वेहिसाव विखेरे गये मरकत मणियों जैसी वे लगती थीं।

सारा संसार वर्षा के वाद ग्रानेवाली निश्चलता के कारण शांत था और केवल एक सोते की कोमल कलकल सुनाई दे रही थी जो चट्टानों के वीच और सेंहुड़, काली रसभरी तथा सुगंधी ऐंठनदार क्लेमाटिस की जड़ों में छिपा हुआ वहता था। नीचे की ओर, सागर धीरे-से मरमरा रहा था।

भटकटैया के सुनहरे डंठल आकाश को लक्ष्य किये खड़े थे और नमी से वोझिल हो धीरे धीरे झूमते थे। अपने कल्पनारम्य पुष्प-गुच्छों पर संचित जलकणों को वे नीरवता के साथ नीचे गिरा रहे थे।

रसीली तथा हरी-भरी पृष्ठभूमि पर हल्के वैंगनी विस्तारिया पुष्प लोहित वर्ण जिरानियमों तथा गुलावों से होड़ लगाये हुए थे, क्लेमाटिस के गुच्छों का लाल छिड़काव सहित पीला कमखाव इरिस तथा गिली पुष्पों की मखमल के साथ मिला हुआ था और यह सारा दृश्य इतना सजीव तथा सतेज था कि सारे फूल वायलिनों, वांसुरियों तथा भावभरे सेलों की तरह गाते हुए से नज़र आ रहे थे।

नम हवा पुरानी शराव की तरह खुशबूदार और नशीली थी।

उधर एक भूरी चट्टान खड़ी थी, जो सुरंग की वारूद की वजह से खुरखुरी तथा फटनदार थी और जिसकी दरारों में मुर्चेदार लोहे के मोटे दाग़ नज़र आते थे। पास ही भूरे तथा पीले रंगवाले शिलाखंड पड़े थे जिनमें से डाइनामाइट की खट्टी-सी गंध रस रही थी। इस चट्टान के नीचे की ओर तथा शिलाखंडों के वीच वैठे चार पत्थरखनिक अपना दोपहर का खाना खा रहे थे—हट्टे-कट्टे आदमी, वदन पर गीले चिथड़े और पैरों में चमड़े के सैंडल।

वे ज़ैतून के तेल में आलू तथा टमाटर के साथ भूना और एक बड़े-से कटोरे में रखा हुआ आक्टोपस का कड़ा मांस, धीरे धीरे तथा संतोषपूर्वक खा रहे थे और फिर पारी पारी से एक बोतल में से लाल शराब पी रहे थे।

इनमें से दो आदमियों के चेहरे सफ़ाचट थे और दोनों में इतना सादृश्य था कि वे भाई भाई–बहुत कुछ जुड़वां भाई–ही दीखते थे। तीसरा एक नाटा-सा, लंगड़ा, काना व्यक्ति था जो चंचल, सकंप हरकतों के कारण बूढ़े, जर्जर पंछी-सा लगता था। चौथा था अधेड़ उम्र का एक दढ़ियल व्यक्ति जिसके कंधे चौड़े थे, नाक टेढ़ी थी और सिर पर सफ़ेद बालों का काफ़ी छिड़काव था।

रोटी के बड़े बड़े टुकड़े तोड़, इस अधेड़ व्यक्ति ने शराब के धब्बे लगी अपनी मूंछों को सहलाया और अपने काले मुंह में रोटी का एक टुकड़ा ठूंस दिया।

"बिल्कुल झूठ," वह कह रहा था और बोलते समय उसके बालदार जबड़ों की क्रमबद्ध हरकतें जारी थीं। "यह झूठ है। मैंने कुछ भी ग़लत बात नहीं की..."

मोटी भौंहोंवाली उसकी भूरी आंखों में दुःख तथा उपहास की झलक दिखाई दी। उसकी आवाज़ भारी तथा कठोर थी और बोलना मंद तथा अनिच्छापूर्ण। उसका टोप, उसका बालदार तथा लुटेरे जैसा चेहरा, उसके बड़े बड़े हाथ और उसका गहरा नीला सूट जिसमें चट्टान की सफ़ेद बुकनी लगी हुई थी–ग़रज़ यह कि उसकी हर बात यह दिखा रही थी कि यही वह व्यक्ति था जिसने सुरंग उड़ाने के लिए पहाड़ के बाज़ू में सूराख बनाये थे।

उसके तीन कामगार साथी, उसकी बात को बिना काटे ग़ौर से सुनते जा रहे थे। सिर्फ़ कभी कभी उसकी आंख से आंख मिला लेते मानो कह रहे हों:

"आगे बढ़ो..."

और उसने आगे कहना शुरू किया। बोलते समय उसकी सफ़ेद भौंहें ऊपर नीचे हो रही थीं:

"वह आदमी—अंद्रेआ ग्रास्सो कहते थे उसको—बिल्कुल चोर की तरह, रात के समय हमारे गाँव में आया; उसने चिथड़े पहन रखे थे और उसका टोप उसके बूटों के रंग का और उन्हीं की तरह फटा-पुराना था। वह लालची, निर्लज्ज और निष्ठुर था। और सात साल बाद हमारे यहाँ के बड़े बूढ़े लोग उसके आगे अपने टोप उतारने लगे जबकि वह मुश्किल से गर्दन हिलाकर उनके सलामों का जवाब देता। आसपास चालीस मील के घेरे में हर कोई उसका क़र्ज़दार बन गया।"

"हाँ, दुनिया में ऐसे लोग हैं सही," आह भरकर तथा सिर हिलाकर कमानदार पैरवाले ने कहा।

कहानी सुनानेवाले ने उसपर एक नज़र दौड़ाई।

"तो तुमने भी ऐसे लोग देखे हैं?" उसने उपहासपूर्वक पूछा।

बूढ़े ने एक संकेत किया, सफ़ाचट चेहरेवाले दो जने एक साथ मुस्कुरा उठे, टेढ़ी नाकवाले ने कुछ शराब पी और नीले आसमान में उड़ रहे एक बाज़ को देखते हुए कथासूत्र आगे बढ़ाया:

"जब अपने मकान के लिए पत्थर ले जाने के काम पर उसने औरों के साथ मुझे भी लगा दिया तब मेरी उम्र तेरह साल की थी। वह हमें जानवरों से भी गया-बीता मानता था और जब मेरे दोस्त लुकीनो ने उसको यह बात बतायी तो वह बोला: 'मेरा गदहा भी मेरा अपना है, जबकि तुम सब मेरे लिए पराये हो, फिर मैं क्यों तुमसे नरम बर्ताव करूं?' इन शब्दों ने मेरे दिल पर गहरी चोट कर दी और उस समय से मैं उसकी ओर ज्यादा बारीकी से देखने लगा।

मैंने देखा कि वह हर एक के साथ क्षुद्र तथा पाशविक वर्ताव करता था, यहाँ तक कि वूढ़ों और औरतों को भी एक ही लाठी से हाँकता था। और जब शरीफ़ लोग उसको वता देते कि वह वुरा वर्ताव कर रहा है तो वह उनके मुंह पर हंस देता और कहता: 'जब मैं ग़रीब था तब मेरे साथ किसने इससे अच्छा वर्ताव किया था?' उसका वास्ता हमेशा पादरियों, करविनेरों और पुलिसवालों से पड़ता और बाक़ी लोग तभी उससे मिल सकते जब वे भारी मुसीबत में हों। और तब वह उनके साथ मनमानी कर सकता था।"

"हाँ, दुनिया में ऐसे लोग हैं सही," कमानदार पैरवाले ने फिर धीरे-से हामी भरी और तीनों ने उसकी ओर सहानुभूति से देखा। सफ़ाचट चेहरेवाले कामगारों में से एक ने चुपचाप शराव की वोतल उसकी ओर वढ़ा दी, वूढ़े ने उसे लेकर प्रकाश में ऊपर उठाया और अपने होंठों में लगाने से पहले कह दिया:

"मदोन्ना के पवित्र हृदय को स्मरण करके मैं पीता हूँ!"

"वह अक्सर कहा करता कि हमेशा ही ग़रीब लोग धनियों के लिए और मूर्ख लोग सयानों के लिए काम करते आये हैं, और हमेशा ऐसा होना भी चाहिये।"

कहानी सुनानेवाला मुस्कुराया और वोतल के लिए उसने हाथ वढ़ाया। वोतल खाली थी। उसने वेपर्वाही के साथ उसे उन पत्थरों पर पटक दिया जहाँ हथौड़े, कुदालियाँ, गैंते तथा सुरंगवाली वत्ती की एक गेंडुरी पड़ी हुई थी।

"तब मैं जवान था और वे शब्द मुझे वुरी तरह से चुभ गये। मेरे साथी कामगारों ने भी ऐसा ही महसूस किया। उन शब्दों ने अच्छी ज़िंदगी की हमारी उम्मीदों और ख्वाहिशों का खातमा कर डाला। एक वार शाम को मैं और मेरा दोस्त लुकीनो उसके मुक़ावले खड़े हुए। वह

घोड़े पर सवार हुआ एक खेत में से जा रहा था। हमने उसको रोक लिया और नम्रता से लेकिन दृढ़ता से कह दिया : 'हम अनुरोध करते हैं कि आयंदा लोगों के साथ अच्छी तरह से पेश आया कीजियेगा।'"

सफ़ाचट चेहरेवाले आदमी ठट्टा मारकर हंस पड़े, एकाक्ष व्यक्ति भी धीरे-से मुस्कुराया, जबकि कहानी सुनानेवाले ने गहरी आह भरते हुए कहा :

"हाँ, यह मूर्खता ज़रूर थी! लेकिन जवानी ईमानदार होती है। जवानी शब्द की शक्ति में विश्वास रखती है। कह सकते हो कि जवानी जीवन की अंतरात्मा है..."

"अच्छा, फिर उसने क्या कहा?" बूढ़े ने पूछा।

"वह हिम्मत बटोरकर चिल्लाया : 'लुटेरो, छोड़ दो मेरे घोड़े को!' और उसने हम पर पिस्तौल तान दिया। हमने कहा : 'ग्रास्सो, तुम्हें हमसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं। और ग़ुस्सा करने की भी आवश्यकता नहीं। हम तुम्हें सिर्फ़ ज़रा-सी सलाह दे रहे हैं।'"

"हाँ, यह ठीक रहा!" सफ़ाचट चेहरेवालों में से एक ने कहा और दूसरे ने सिर हिलाकर हामी भर दी। कमानदार पैरवाले ने अपने होंठ भींच लिये और एक पत्थर की ओर ताकता हुआ अपनी टेढ़ीमेढ़ी अंगुलियों से उसे टटोलता रहा।

खाना ख़त्म हुआ। उनमें से एक आदमी पतली-सी छड़ी के सहारे घास की नोकों पर से स्फ़टिक सदृश जल-कणों को नीचे गिराता रहा जबकि दूसरा एक तिनके से अपने दाँतों को खोदता हुआ देखता रहा। हवा अधिक रुक्ष तथा गरम हो गयी। मध्याह्न की छोटी छोटी छायाएं शीघ्रता से विलीन हो रही थीं। सागर की मंद मरमराहट जारी थी और गंभीर कहानी धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी :

"लुकीनो के लिए उस मुठभेड़ का नतीजा बहुत ही बुरा

साबित हुआ। उसका बाप और चाचा दोनों ग्रास्सो के देनदार थे। लुकीनो बेचारा दुबला-पतला और रूखा-सूखा होता गया, दाँत पीसता रहा और उसकी आँखों से वह चमक ग़ायब हो गयी जिसपर किसी ज़माने में लड़कियाँ निछावर हो जाती थीं। 'ओह,' एक रोज़ उसने मुझसे कहा—'उस दिन हमने बड़ी मूर्खता की। अरे, लात का भूत बात से नहीं मानता!' 'लुकीनो ख़ून करने पर उतारू हुआ है,' मैंने मन ही मन सोचा। उस लड़के के लिए तथा उसके भले घरवालों के लिए मुझे बड़ा दुःख हुआ। लेकिन मैं भी तो ग़रीब था और दुनिया में अकेला था, क्योंकि मेरी माँ कुछ ही समय पहले चल बसी थी।"

टेढ़ी नाकवाले कामगार ने चूने से सनी अपनी अंगुलियों से अपनी दाढ़ी-मूंछों को सहलाया और ऐसा करते समय उसके बायें हाथ की तर्जनी पर चाँदी की एक भारी-सी अंगूठी चमक उठी।

"अगर मैं मामले को पूरा कर डालता तो सचमुच अपनी बिरादरी वालों की अच्छी सेवा हो जाती, लेकिन मैं था नरमदिल। एक दिन, सड़क पर ग्रास्सो के दिखाई देते ही मैं उसके साथ साथ चलने लगा और अत्यंत नम्रता के साथ मैंने कहा: 'तुम लालची और डाही हो। तुम्हारे साथ रहना लोगों के लिए बड़ा मुश्किल है। तुम ज़रूर किसी को उभाड़ दोगे और वह तुम पर छुरा तान देगा। मेरी सलाह है कि तुम यहाँ से चले जाओ।'—'तुम मूरख हो, छोकरे!' उसने कहा, लेकिन मैं ज़ोर देता रहा। 'सुनो,' उसने हंसते हुए कहा—'मुझे परेशान न करने के लिए तुम क्या लोगे? कहो, एक लीरा काफ़ी होगा?' यह मेरा अपमान था लेकिन मैंने अपने ग़ुस्से पर क़ाबू रखा। 'यहाँ से चले जाओ, मैं कहे देता हूँ,' मैंने डटकर कहा। हम कंधे से कंधा लगाकर जा रहे थे। मैं उसके दाहिने चल रहा था। मैं ज़रा इधर-उधर देख रहा था कि उसने छुरा निकाला और मुझपर वार कर दिया। लेकिन बायें हाथ से कुछ ख़ास काम नहीं हो सकता

ग्रौर इसी कारण छुरा मेरे सीने में सिर्फ़ एक ही इंच घुस सका। कहने की ज़रूरत नहीं कि मैंने उसे ज़मीन पर पटक दिया ग्रौर इस तरह लताड़ा जिस तरह सुग्रर को लताड़ते हैं।

"'तो ग्रव तुम चले जाग्रोगे!' मैंने कहा जव वह ज़मीन पर छटपटा रहा था।"

सफ़ाचट चेहरेवाले दो ग्रादमियों ने कहानी वतानेवाले की ग्रोर संदेहयुक्त दृष्टि डाली ग्रौर फिर ग्राँखें नीचे कर लीं! लंगड़ा ग्रपने सैंडलों के तस्मे वाँवने के लिए झुक गया।

"दूसरे दिन सवेरे, जव मैं विस्तर ही में था, करविनेर ग्रा धमके ग्रौर मुझे न्यायाधीश के पास ले गये। न्यायाधीश ग्रास्सो का दोस्त था। 'चीरो, तुम ईमानदार ग्रादमी हो,' उसने कहा—'सो तुम इनकार नहीं करोगे कि तुमने कल रात को ग्रास्सो का ख़ून करने की कोशिश की।' मैंने कह दिया कि यह सच नहीं है; लेकिन ऐसी वातों के वारे में उनका ग्रपना दृष्टिकोण होता है। तव उन्होंने मुक़दमा चलने से पहले मुझे दो महीने जेल में रखा ग्रौर जव मुक़दमा चला तो मुझे एक साल ग्राठ महीने की क़ैद दी गयी। 'ठीक है,' मैंने न्यायाधीशों से कहा—'लेकिन मामला यहीं ख़तम नहीं होता!'"

पत्थरों के वीच में से उसने शराव की नई वोतल निकाली ग्रौर ग्रपनी मूंछों के नीचे सरकाकर शराव का एक ज़ोरदार घूंट पी लिया; उसके गले की रोएंदार घंटी प्यास से ऊपर नीचे होती रही ग्रौर दाढ़ी के वाल खड़े हो गये। ग्राँखों के तीन जोड़े उसकी ग्रोर सख़्त नज़र ग्रौर ख़ामोशी के साथ देखते रहे।

"उसके वारे में मैं वोलते वोलते ऊव गया हूँ," वोतल को ग्रपने साथियों की ग्रोर वढ़ाते ग्रौर ग्रपनी गीली दाढ़ी को सहलाते हुए उसने कहा।

"जव मैं देहात को लौट ग्राया तो मैंने देखा कि मेरे लिए वहाँ पर जगह नहीं है। हर कोई मुझसे डरने लगा था। लुकीनो ने मुझसे

कहा कि उस साल ज़िंदगी और भी मुश्किल हो गयी थी। वेचारा सूखकर काठ-सा वन गया था। 'अच्छा,' मैंने अपने आपसे कहा और फिर ग्रास्सो से मिलने चला गया। 'देखो, मैं लौट आया हूँ,' मैंने कहा—'अब जाने की पारी है तुम्हारी।' उसने अपनी बन्दूक़ उठाई और गोली चला दी लेकिन उसमें पक्षियों के मारने के छर्रे भरे हुए थे और उसने निशान भी साधा था तो मेरे पैरों का। मैं गिरा भी नहीं। 'अगर तुम मुझे मार डालते, तो भी मैं क़ब्र से उठकर तुम्हें झपट लेता,' मैंने उससे कह दिया—'मैंने मदोन्ना की क़सम खायी है कि तुम्हें यहाँ से उखाड़कर ही रहूँगा। तुम ज़िद्दी हो, तो मैं भी ऐसा ही हूँ।' हम दोनों की हाथापाई शुरू हो गयी और मेरे जानने से पहले ही संयोगवश मैंने उसका हाथ उखाड़ डाला था। मैंने उसको मारपीट करने की विल्कुल नहीं सोची थी, लेकिन उसी ने पहले धावा वोल दिया था। भीड़ जमा हुई और मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया। इस वक़्त मुझे तीन साल और नौ महीने क़ैद की सज़ा दी गयी और जव यह मियाद ख़त्म हुई तो वार्डन ने, जोकि सारा क़िस्सा जानता था और मुझे पसंद करता था, मुझे घर वापस जाने से रोकने की कोशिश की। उसने अपने दामाद के यहाँ मुझे नौकरी दिलाना चाहा। अपूलिया में उसके दामाद का काफ़ी वड़ा खेत और एक अंगूर-वग़ीचा था। लेकिन यह स्वाभाविक था कि मैं हाथ में लिया गया काम छोड़ नहीं सकता था। ग़रज़ यह कि मैं घर लौट गया। इस समय मैंने पक्का निश्चय कर लिया था कि वेकार वातचीत विल्कुल नहीं करूँगा; क्योंकि इस समय तक मैं समझ चुका था कि दस में से नौ शब्द फ़िज़ूल होते हैं। मैं उससे सिर्फ़ एक वात कहना चाहता था: 'चले जाओ!' मैं रविवार के दिन देहात में आ पहुँचा और सामुदायिक प्रार्थना के समय सीधे गिरजे में जा खड़ा हुआ। ग्रास्सो वहीं था। मुझे देखते ही वह उछल

पड़ा और सारे गिरजे में उसने शोर मचाया: 'नागरिको, यह आदमी मुझे मार डालने के लिये यहाँ आया है। शैतान ही ने उसे मेरी रूह के लिए भेज दिया है!' उसको छूने से पहले ही, अपनी बात उसको सुनाने के पहले ही मुझे लोगों ने घेर लिया। लेकिन उधर वह बेहोश होकर पत्थर के फ़र्श पर गिर पड़ा और उसके दाहिने बाजू और ज़बान पर लकवा मार गया। सात हफ़्ते बाद वह मर गया... बस। और, लोगों ने मेरे बारे में एक अजीब कहानी खोज निकाली। बड़ी भयंकर, लेकिन वैसी ही बेमतलब।"

वह ज़रा-सा मुस्कुराया और सूरज की ओर देखकर बोला: "चलो, अब काम शुरू करना चाहिये..."

बाक़ी तीनों चुपचाप और धीरे-से उठ खड़े हुए। टेढ़ी नाकवाले कामगार ने चट्टान की मुर्चेदार तथा तेलिया रंग की दरारों की ओर ताकते हुए कहा: "चलो, काम पर चलें..."

सूरज सिर पर चढ़ आया था और सारी छायाएं सिकुड़कर ओझल हो गयी थीं।

क्षितिज पर के बादल सागर-तल में डूब गये, जोकि पहले की अपेक्षा अधिक शांत और अधिक नीला हो गया था।





पेपे

पेपे दस वरस का है। दुवला-पतला, नाजुक और छिपकली की तरह चपल। रंग-विरंगे चियड़े उसके छोटे कंधों से लटकते हैं और अनगिनत छेदों में से उसका शरीर झांकता है, जो धूप तथा धूल से काला पड़ गया है।

वह सूखी घास के उस तिनके जैसा दिखाई देता है जिसे समुद्री हवा का झोंका इधर-उधर उड़ाता हो। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक पेपे द्वीप प्रदेश में एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदता जाता है और उसकी अथक पतली-सी आवाज़ सदैव सुनाई पड़ती है:

सुंदर इटली,
मेरा इटली!

हर वात उसके लिए रोचक है: हरी-भरी धरती पर महमहाकर खिलनेवाले फूल, वैंगनी चट्टानों पर सरसराती हुई छिपकलियाँ, ज़ैतून

वृक्ष की सुघड़ पत्तियों तथा नक्काशीदार हरी अंगूर लताओं में फुदकनेवाली चिड़ियाँ, सागर तल के अंधेरे उद्यानों की मछलियाँ और शहर की संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर से गुज़रनेवाले परदेशी: चेहरे पर तलवार की खरोंचवाला मोटा-सा जर्मन, जनशत्रु की भूमिका खेलनेवाले अभिनेता की याद दिलानेवाला अंग्रेज़, अंग्रेज़ की तरह दिखाई देने का असफल प्रयत्न करनेवाला अमेरिकन और झुनझुने की तरह शोर मचानेवाला बेजोड़ फ़्रांसीसी।

"क्या चेहरा है!" अपनी तेज़ आँखें उस जर्मन पर गड़ाते हुए पेपे अपने दोस्तों से कहता है। यह जर्मन बड़प्पन के ख्याल से इस क़दर फूला हुआ है कि उसके बाल खड़े-से दिखाई देते हैं। "भाई, उसका चेहरा मेरी तोंद जितना बड़ा है!"

पेपे जर्मनों को पसंद नहीं करता। उसके विचार वही हैं जो सड़कों, चौराहों तथा उन छोटी छोटी अंधेरी दूकानों में सुनाई देते हैं जहाँ लोग शराब पीते हैं, ताश खेलते हैं और अख़बार पढ़ते हुए राजनीति की चर्चा करते हैं।

"हम ग़रीब दक्षिणियों के लिये बल्कान के स्लाव हमारे उन अच्छे दोस्तों से कहीं नज़दीक हैं जिन्होंने हमें मैत्री के लिए अफ़्रीका के रेगिस्तानों का उपहार दे दिया," वे कहते हैं।

दक्षिण के सीधे-सादे लोग इस बात को बार बार दोहराते हैं। पेपे सब सुनता है और भूलता कुछ भी नहीं।

इधर कैंचीनुमा पैरवाला एक अनमना अंग्रेज़ लंबे डग भरता हुआ जा रहा है। पेपे उसके आगे आगे कुछ मरसिया या साधारण शोकगीत-सा गुनगुनाता है:

मित्र मेरा चल वसा जव
दुख हुआ मेरी प्रिया को।
कुछ नहीं मैं सोच सकता
हृदय में उसकी व्यथा क्यों ॥

पेपे के साथी हंसते हंसते दोहरे होते हुए पीछे चलते हैं और जब वह परदेशी अपनी फीकी आँखों से उनपर शांत नजर दौड़ाता है तब वे झाड़ियों या दीवालों के पीछे छिपने के लिए चूहों की तरह सरपट दौड़ते हैं।

पेपे के बारे में कई दिलचस्प क़िस्से सुनाये जा सकते हैं।

एक दिन एक महाशया ने अपने वग़ीचे के सेवों से भरी डलिया पेपे के हाथों अपने मित्र के यहाँ भेजनी चाही।

"मैं तुम्हें एक सोल्दो दूंगी!" उसने कहा– "इसमें तुम्हें कोई नुक़सान नहीं होगा।"

पेपे ने फ़ौरन डलिया उठायी, अपने सिर पर रखी और वहाँ से चल दिया। शाम तक वह सोल्दो के लिए वापस नहीं आया।

"तुम्हें कुछ जल्दी थोड़े ही थी," उस स्त्री ने कहा।

"ओह, प्रिय सीन्योरा,* लेकिन मैं इतना थक गया हूँ ..." आह भरते हुए पेपे ने कहा–"आप ही सोचिये, वे दस से ज्यादा थे!"

"ज़रूर! दस से ...! डलिया भरी हुई जो थी!"

"सेव नहीं, सीन्योरा, लड़के।"

"लेकिन सेवों का क्या हुआ?"

"पहले लड़कों की बात सुनिये सीन्योरा: मीकेल, ज्योवान्नी ..."

---

* महाशया (इतालवी) – संपा०

वह क्रुद्ध हुई। पेपे के कंधे पकड़कर उसने उसे ज़ोरों से झंझोड़ा।

"मेरी बात का जवाब दो। तुमने सेब पहुँचा दिये कि नहीं?" उसने पूछा।

"सीन्योरा, मैं उनको लेकर चौराहे तक गया! सुनिये, मैंने कैसा अच्छा बरताव किया। शुरू शुरू में मैंने उनकी तानेबाज़ी पर ध्यान नहीं दिया। मैंने अपने आप से कहा कि भले ही वे गदहे के साथ मेरी तुलना करें, मैं उसको सह लूंगा—केवल इसलिए कि मैं आपकी इज़्ज़त करता हूँ। लेकिन जब उन्होंने मेरी माँ के बारे में चुटकियाँ लेना शुरू किया तब सब्र की हद हो गयी। मैंने डलिया नीचे रख दी और सीन्योरा, आपको देखना ही चाहिए था कि किस तरह मैंने उन नन्हें शैतानों पर सेबों की तेज़ बौछार की। आपको बड़ा मज़ा आ जाता!"

"मेरे फल उन्होंने चुरा लिए!" सीन्योरा चिल्लाई।

पेपे ने एक दर्दभरी आह खींची।

"जी नहीं," उसने कहा—"जो सेब निशाना चूक गये वे दीवाल पर टकराकर चकनाचूर हो गये; लेकिन बचे-खुचे हम सब ने खा लिये, जब अपने दुश्मनों को परास्त करके मैंने उनसे सुलह कर ली ..."

पेपे के छोटे-से सफ़ाचट सिर पर उस औरत ने गालियों का एक रेला-सा छोड़ दिया। वह ध्यान से और नम्रता से सुनता गया। जब तब कुछ विशेष वाक्व्यवहार की प्रशंसा में वह ज़बान को चटकारता और कह उठता:

"वाह वाह! क्या ज़बान है!"

आखिर जब वह थक गयी और वहाँ से जाने लगी तो पेपे चिल्ला उठा:

"अगर आप देख लेतीं कि मैंने किस ख़ूबसूरती के साथ आपके बढ़िया सेबों को उन ठगों की गंदी खोपड़ियों पर दे मारा, तो आप इस तरह गुस्सा न हो जातीं। आपको देखना ही चाहिये था। बस, तब आप मुझे एक के बदले दो सोल्दो दे देतीं!"

वह वेग्रदव ग्रौरत उस विजेता के विनीत गर्व को समझ न पायी ग्रौर उसने पेपे की ग्रोर घूंसा ताना।

पेपे के एक वहन थी। उम्र में उससे काफ़ी वड़ी लेकिन चतुराई में नहीं। एक धनी ग्रमेरिकन के देहाती ग्राराम-घर में वह नौकरानी वन गयी। तव उसका हुलिया एकदम वदल गया; वह साफ़-सुथरी रहने लगी, ग्रच्छे खाने-पीने से उसके गालों पर गुलाव खिले ग्रौर वह ग्रगस्त महीने में फूलने-फलनेवाले नाशपाती की तरह गदराने लगी।

"सचमुच तुम हर रोज़ खाना खाती हो?" एक वार भाई ने उससे पूछा।

"चाहूं तो दिन में दो-तीन वार भी," वहन ने रुग्राव के साथ जवाव दिया।

"ध्यान रखना, कहीं तुम्हारे दांत न विगड़ जायं," पेपे ने सलाह दी।

"क्या तुम्हारा मालिक वहुत मालदार है?" कुछ रुककर उसने पूछा।

"मैं तो मानती हूं कि वह राजा से भी ज़्यादा धनी है!"

"तुम किसी ग्रौर को वुद्धू वनाग्रो! कहो, उसके पास कितने पतलून हैं?"

"कहना मुश्किल है।"

"दस?"

"शायद ज़्यादा ..."

"तो उनमें से एक मुझे ला देना। ज़्यादा लंवा न हो, लेकिन गरम ज़रूर हो," पेपे ने कहा।

"भला किस लिए?"

"ज़रा मेरे पतलून की ग्रोर देखो तो सही!"

सचमुच वहाँ देखने के लिए कुछ था ही नहीं; क्योंकि उसके वदन पर पतलून कहलाने लायक़ शायद ही कुछ वचा था।

"हाँ," वहन ने स्वीकार किया—"तुम्हारे लिए सचमुच कुछ कपड़ों की ज़रूरत है! लेकिन क्या मेरा मालिक यह नहीं समझेगा कि हमने चोरी की है?"

"यह न सोचना कि लोग हमसे ज्यादा वेवक़ूफ़ हैं!" पेपे ने उसको ढाढ़स दिलाया। "जिसके पास अभाप है उससे ज़रा-सा ले लेना चोरी नहीं, वल्कि वाजिव हिस्सेदारी है।"

"यह सव कविता में ठीक है," वहन ने आपत्ति की; लेकिन पेपे ने शीघ्र ही उसकी शंकानिवृत्ति की और वह हल्के भूरे रंगवाला एक अच्छा-सा पतलून लेकर रसोई में आयी। वेशक, पेपे की पूरी लम्वाई से भी वह कुछ लंवा था, लेकिन पेपे ने फ़ौरन ताड़ लिया कि इस कठिनाई को कैसे पार करना चाहिये।

"मुझे ज़रा छुरी दे दो!" उसने कहा।

दोनों ने मिलकर कुछ ही देर में अमेरिकन के उस पतलून को लड़के के योग्य पोशाक में वदल डाला। उनकी कोशिशों का नतीजा रहा एक ढ़ीला-ढाला वोरा, जो पेपे के लिए असुविवाजनक न था। गर्दन में वंधे हुए धागे के दो टुकड़ों के सहारे वह उसके कंधों से लटकता रहा और पतलून की जेवों ने आस्तीनों का काम दिया।

पतलून के मालिक की वीवी ने अगर उनकी कोशिशों में दखल न दिया होता तो शायद वे इससे अच्छी और अधिक आरामदेह पोशाक वना लेते। लेकिन यह औरत रसोई में घुस आई और उसने कई भाषाओं में अत्यंत अशुद्ध उच्चारणों के साथ गालियों की वौछार शुरू की, जैसा कि अमेरिकन अक्सर किया करते हैं।

उसकी वाक्-पटुता के इस प्रवाह को रोकने का पेपे का कोई भी उपाय सफल नहीं रहा। उसने नाक-भौं सिकोड़ी, अपने दिल पर हाथ रखा और निराशा से अपना सिर पकड़कर ज़ोरदार आह भरी;

लेकिन उसके गुस्से का पारा ज़रा भी नीचे नहीं आया। आखिर उसका पति वहां आ पहुंचा।

"क्या मामला है जी?" उसने पूछा।

तब पेपे बोल उठा:

"सीन्योर, आपकी सीन्योरा ने जो हलचल मचा दी है उसपर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। असल में आपके लिए मुझे यहां कुछ अपमानित होना पड़ा। जहां तक मैं समझता हूं, वह मानती है कि हमने पतलून का सत्यानास कर डाला है, लेकिन मैं निश्चय के साथ कहता हूं कि वह मेरे लिए बिल्कुल ठीक हुआ है। सीन्योरा शायद ऐसा मानती है कि हमने आपका आखिरी पतलून ले लिया और अब दूसरा खरीदना आपके लिए नामुमकिन है ..."

पेपे के भाषण को शांतिपूर्वक सुन लेने के बाद अमेरिकन ने कहा:

"और मैं मानता हूं कि अब पुलिस को बुलाना चाहिये, समझे छोकरे?"

"सचमुच?" पेपे ने आश्चर्य से पूछा—"लेकिन किस लिए?"

"तुम्हें जेल ले जाने के लिए ..."

पेपे को गहरी चोट पहुंची। सचमुच वह रोने को था लेकिन आंसू पीकर रह गया और बड़े ठाठ से बोला:

"सीन्योर, अगर लोगों को जेल भिजवाने में आपको मज़ा आता हो तो बात दूसरी है! लेकिन मैं ऐसा कभी नहीं करता अगर मेरे पास कई पतलून होते और आपके पास एक भी न होता! मैं आपको दो और शायद तीन पतलून भी दे देता हालांकि एक साथ तीन पतलून पहनना नामुमकिन है! खासकर गरम मौसम में ..."

अमेरिकन ठट्ठा मारकर हंस पड़ा क्योंकि धनी आदमी भी कभी कभी खुशी में होते हैं। फिर उसने पेपे को कुछ चाकोलेट दिया और एक फ्रैंक का सिक्का भी। पेपे ने सिक्के को दांतों में पकड़कर चख-सा लिया और दाता को धन्यवाद दिया:

"शुक्रिया, सीन्योर! मैं मानता हूँ कि सिक्का असली है?"

लेकिन पेपे की सर्वोत्तम झाँकी तब दिखाई देती है जब वह अकेला कहीं चट्टानों के बीच खड़ा, ग़ौर से उनकी दरारों की जाँच-सी करता है; मानों चट्टानों के जीवन का अंधकारमय इतिहास पढ़ रहा हो। ऐसे अवसरों पर उसकी सजीव आँखें आश्चर्य से विस्फारित तथा झिल्लीदार हो जाती हैं, उसके पतले-से हाथ पीठ पर बंधे रहते हैं और ज़रा-सा झुका हुआ उसका सिर वायु-लहरी में झूमनेवाले फूल की तरह झूमता है। वह धीरे-से कुछ न कुछ गुनगुनाता रहता है; क्योंकि संगीत उसकी साँस है।

फूलों को, दीवालों पर उमड़ पड़नेवाले विस्तारिया के बैंगनी पुष्प-गुच्छों को निहारते हुए पेपे की मूरत भी मनोहर होती है। वायलिन के तार की तरह तनकर वह खड़ा रहता है; मानो समुद्री हवा के झोंके से छेड़ी गयी रेशमी पंखुड़ियों के मृदु कंपन को ग़ौर से सुन रहा हो।

वह देखता रहता है और गाता जाता है:

"फ़िओरीनो ... फ़िओरीनो ..."*

और दूर से किसी विशाल खंजरी की आवाज़ की तरह सागर की दबी हुई-सी आह सुनाई देती है। फूलों पर तितलियाँ दौड़ा-दौड़ी का खेल खेलती हैं। पेपे अपना सिर उठाता है और उनकी दौड़-धूप को निहारता रहता है। सूर्य के प्रकाश में उसकी आँखें मिचकती हैं, उसके होंठ विलग होते हैं और उनपर मुसकान दौड़ती है। इस मुसकान में ईर्ष्या तथा दुःख की छटा है, लेकिन फिर भी वह धरती के एक बड़े जीव की उदार मुसकान है।

"चो!" पन्ने जैसी हरी छिपकली को डराने के लिए ताली बजाकर वह चिल्लाता है।

और जब सागर शीशे की तरह शांत होता है तथा चट्टानों पर बाढ़ के सफ़ेद लेसदार झाग का कोई निशान नहीं बचता, तब पेपे एक

---

* फ़िओरीनो — एक पुराना सिक्का — संपा०

शिलाखंड पर बैठकर अपनी चमकीली आँखों से उस पारदर्शक पानी में टकटकी लगाकर देखता है जहाँ लाल-सी समुद्री लताओं के बीच मछलियाँ धीमे धीमे सरकती रहती हैं, दशपाद केकड़े आगे-पीछे झपटते हैं और दूसरे केकड़े तिरछे तिरछे रेंगते जाते हैं। निस्तब्धता में उस लड़के की स्पष्ट चिंतापूर्ण आवाज़ नीले पानी पर धीरे-से लहरा उठती है:

"सागर, हे सागर ..."

बड़े-बूढ़े लोग पेपे की ओर देखकर कहते हैं:

"यह तो अराजकतावादी बन जाएगा।"

लेकिन अधिक सूझबूझवाले और कुछ सहृदय लोगों की राय दूसरी ही है। वे कहते हैं:

"पेपे हमारा कवि बनेगा ..."

और चांदी के ढले हुए-से सिरवाला तथा प्राचीन रोमन सिक्कों पर खुदे हुए-से चेहरेवाला बूढ़ा बढ़ई पास्कवालीनो, जो एक बुद्धिमान तथा आदरणीय व्यक्ति है, अपना मत प्रकट करता है:

"हमारे बच्चे हमसे बहुत अच्छे होंगे और उनका जीवन भी अधिक अच्छा होगा!"

कई लोग उसका विश्वास करते हैं।





ईस्टर

ईस्टर से पहले का एक शनिवार। अंधेरी रात में काला लवादा पहने एक स्त्री शहर की सरहद पर स्थित संकरी दरारों जैसी गलियों में से धीरे धीरे चली जा रही थी। चेहरा उसका ओढ़नी में छिपा था और ढीले-ढाले लवादे की वहुत-सी परतों के कारण वह काफ़ी लंवी नज़र आ रही थी। वह ख़ामोश चल रही थी, गंभीरतम दुःख की हू-वहू प्रतिमा-सी।

उसके पीछे पीछे, उसी धीमी चाल से चल रहे थे वाजेवाले—उनका दल इतना ठोस था कि वह एक ही शरीर-सा लग रहा था—और उनके ऊपर तैर-से रहे थे उनके वाजों के पीले पीले, विकराल मुंह। कुछ वाजे आगे की ओर फैल रहे थे तो दूसरे उठ रहे थे काले आसमान की ओर। सवके सव चिल्ला रहे थे, कराह रहे थे: लंवी, निद्राहीन रात्रि-

उपासना के अंत में गानेवाले कई संन्यासियों की तरह क्लेरिनेट अपना उदास राग अलाप रहे थे और वसून याद दिला रहे थे कंगनियों में कराहनेवाली दूषित हवा की; कोर्नेट-अ-पिस्टन भर्रायी आवाज़ में विलाप कर रहा था और जवाब में फ़ान्सीसी तुरहियों की निराशा भरी आवाज़ उठ रही थी; इधर सक्सहार्न ने दर्द भरी तान सुनायी तो उधर बड़े ढोल ने उदासी भरे मार्च का ताल बजाया जबकि छोटे ढोलक की धमधमाहट पक्की पत्थरदार सड़क पर चलनेवाले सैकड़ों लोगों की पदध्वनि में डूब गयी।

पीतल के बाजे पीली, निर्जीव कान्ति से चमक रहे थे, उन्हें कमरबंद से कसे हुए लोग बड़े अजीब लग रहे थे। लकड़ी के बाजे फुफकार से रहे थे और वादक-समूह दिखाई दे रहा था उस प्रचंड काले साँप की थूथनी जैसा, जो भूरी दीवारोंवाले मकानों के बीच से संकरी सड़क पर कष्ट के साथ रेंगता हुआ चला जा रहा हो।

ईसा के कष्टों की आखिरी रात का यह अजीब-सा जुलूस बार बार किसी छोटे से, टेढ़े-मेढ़े चौक में उमड़ पड़ता। शहर में ऐसे कई टेढ़े-मेढ़े चौक थे जो कि शहर की पथरीली पोशाक में काल प्रभाव के कारण बने हुए छिद्र से दिखाई देते। चौक में से आगे बढ़कर जुलूस फिर सड़क की किसी गली की दरार में घुस जाता, मानो उसकी दीवारों को ज़बरदस्ती दूर हटाने की कोशिश कर रहा हो। घंटे पर घंटे बीतते गये और यह खतरनाक साँप, जिसकी हर पसली एक सजीव मानवदेह थी, उस स्त्री की रहस्यमयी आकृति का अनुसरण करता हुआ आकाश के नीरव गुंबद के नीचे सारे शहर में रेंगता गया।

मौन, कृष्णवसना और दुःख का अभेद्य कवच पहने जा रही उस स्त्री ने रात में अपना अन्वेषण जारी रखा। उसको देखकर कल्पना प्राचीन विश्वासों की अंधकारमय गहराई में जा पहुँचती थी और दर्शक

को स्मरण हो आता इसिस का, जिसके भाई–जो उसका पति भी था–को दुष्ट सेथ-तिफ़ोन का शिकार होना पड़ा था। आखिर वह अजीव आकृति कालिमा का प्रचंड-पुंज-सा उगलती हुई दिखाई दी, जिसने आसपास की हर चीज़ को पुरातन के अंधेरे में डुबो दिया। मानव को अतीत के साथ अपने घनिष्ठ संवंध की याद दिलाने के लिए ही मानो उस कृष्ण रात्रि का पुनर्निर्माण हुआ था।

मरसियों की तर्ज़ें खिड़कियों से टकराकर प्रतिध्वनित हो रही थीं और खिड़कियों के शीशों में से सकम्प ध्वनि-लहरियाँ वहती जा रही थीं, लेकिन वाजों की ध्वनि और लोगों की मंद गुनगुनाहट पक्की पत्थरदार सड़क पर चल रहे हज़ारों पैरों की आवाज़ में डूव जाती थी। पैरों के नीचे सख्त पत्थर थे, फिर भी धरती काँपती हुई-सी दिखाई दे रही थी और दुनिया छोटी-सी। उसपर तैर रही थी इन्सान की भारी गंध। आँखें वरावर आकाश की ओर उठती थीं जहाँ कुहरे में से तारे टिमटिमा रहे थे।

लेकिन अव दूर एक लंवी दीवाल की खिड़कियों के काले चौकोरों पर प्रकाश का लाल प्रतिविंव चमक उठा–चमका, ग़ायव हुआ, फिर जगमगाया और भीड़ में से एक दवी हुई-सी मरमराहट जंगली झाड़ियों में से गुज़रती हुई वासंतिक वायु के झोंके की तरह दौड़ गयी।

"वे आ रहे हैं ... वे आ रहे हैं ..."

कहीं आगे की ओर नई आवाज़ें पैदा हुई थीं और अव उनका ज़ोर वढ़ता जा रहा था। इन आवाज़ों में उदासी कम थी और वहाँ की रोशनी भी तेज़ होती जा रही थी। वह स्त्री अपने क़दम तेज़ करती हुई दिखाई दी और उसके साथ रहने के लिए भीड़ भी अपनी रफ़्तार वढ़ाकर आगे की ओर उमड़-सी पड़ी। वाजेवाले भी ताल चूक गये और एक क्षण के लिए वाजों की लय लड़खड़ा गई, तर्ज़ तितर-वितर हो

गई और एक बांसुरी ने जल्दबाज़ी में ग़लत तार-स्वर छेड़ दिया जिससे भीड़ में हंसी की एक हल्की लहर दौड़ गई।

अगले ही क्षण, परी-कथा की तरह अचानक एक छोटा-सा चौक आगे की ओर खुल गया, जिसके बीचोंबीच मशालों तथा फुलझड़ियों से आलोकित दो मूर्तियां खड़ी थीं। इनमें से एक थी सुनहरे बालोंवाले ईसा की सुपरिचित आकृति, जो सफ़ेद चिकना जामा पहने थी और दूसरी आकृति थी ईसा के प्रिय शिष्य जॉन की, जिसने नीला कुर्ता पहन रखा था। उनके इर्दगिर्द कई काली मूर्तियां थीं जिनके हाथों में जलती हुई मशालें थीं और जिनके काले तथा बिल्कुल एक-से दक्षिणी चेहरे अनुपमेय आनंद से आलोकित थे—यह आनंद उन्हीं का निर्माण किया हुआ था और उस पर उन्हें गर्व था।

ईसा भी बड़े प्रसन्न थे। एक हाथ में उन्होंने फूलों से सजा हुआ वध-स्तंभ पकड़ा था और दूसरे हाथ को ज़ोरों से हिलाते हुए वह कुछ बोलते जा रहे थे। जवान, दाढ़ीहीन और अदोनिस की तरह ख़ूबसूरत जॉन ने घुंघराले, लहरदार बालोंवाले अपने सिर को पीछे की ओर झटक दिया और हंस पड़ा।

भीड़ चौक में फैल गयी और लोगों ने उक्त दोनों के इर्दगिर्द एक घेरा बना लिया जबकि अभ्राच्छादित रात की तरह काली वह स्त्री ऊपर उठकर ईसा मसीह की ओर तैरती हुई-सी दिखाई दी। उनके पास पहुंचते हुए उसने अपनी ओढ़नी पीछे को हटा दी और उसका काला लबादा बादल की तरह उसके पैरों से चिपका रहा।

अब झिलमिलाती हुई मशालों के प्रसन्न, प्रमुदित प्रकाश में, खिसकती हुई ओढ़नी में से मदोन्ना का देदीप्यमान, सुनहरा मस्तक प्रकट हुआ और उसके लबादे के नीचे से तथा भगवज्जननी के अति समीप खड़ी आकृतियों के हाथों में से सैकड़ों सफ़ेद कबूतर

चमकदार पर फड़फड़ाते हुए, काले ग्रासमान की ग्रोर उड़े। सचमुच एक क्षण ऐसा लगा कि चांदी के कलावत्तू के कारण चमकनेवाले सफ़ेद वस्त्र पहने तथा पुष्पहार धारण किये हुए वह स्त्री, सफ़ेद पारदर्शी-सा ईसा मसीह ग्रौर नील वस्त्रधारी जॉन–तीनों की ग्रलौकिक छविवाली मूर्तियाँ कबूतरों के परों की सजीव फड़फड़ाहट के बीच, मानो देवदूतों से घिरी हुई स्वर्गारोहण कर रही हैं।

"ग्लोरिया मदोन्ना, ग्लोरिया!"* जनसमूह के धुंधले पुंज के बीच सहस्र सहस्र कंठों से घोषणाएं गूंज उठीं ग्रौर दुनिया पर जादू-सा फिर गया: सारी खिड़कियों में बत्तियाँ जल उठीं, शत शत हाथों ने लोगों के सिर के ऊपर मशालें उठायीं, नीचे सब जगह सुनहरी चिनगारियों की वर्षा हुई; हरी, लाल तथा बनफ़शी रोशनियाँ जगमगा उठीं, कबूतर ऊपर चक्कर काटते रहे ग्रौर सभी चेहरे ऊपर की ग्रोर उठ गये, जब भीड़ ने सहर्ष गर्जना की:

"मदोन्ना की जय! मदोन्ना की जय!"

प्रकाश की क्रीड़ा में मकानों की दीवालें थर्रा-सी उठीं ग्रौर खिड़कियों में बच्चे तथा स्त्रियाँ–युवतियाँ तथा वृद्धाएं–ग्रा खड़ी हुईं। उनकी शोख रंगवाली पर्वकालीन पोशाकें विशाल फूलों की तरह खिल-सी उठीं जबकि जॉन तथा ईसा मसीह के बीच रुपहला जामा पहने हुए खड़ी मदोन्ना जलती हुई तथा गलकर विलीन होती हुई-सी दिखाई दी– ऐसा लगा कि उसके विशाल तथा सफ़ेद-गुलाबी चेहरा है, बड़े बड़े नेत्र हैं ग्रौर है सुनहरी केशराशि, जिसके दो घुंघराले गुच्छे उसके कंधों पर लटक रहे हैं। ईसा मसीह के मुख पर सानंद हास्य फैला हुग्रा था जो मृत्यु से उत्थान हुए के योग्य था। नील-नेत्रा मदोन्ना ने मुस्कुराते हुए ग्रपना सिर हिलाया जबकि जॉन ने एक मशाल को पकड़कर इधर-

---

*मदोन्ना की जय!–संपा०

उधर घुमाया जिससे उसके चारों ओर चिनगारियों की बौछार हुई—वह अब तक एक लड़का ही तो था—तेज आंखोंवाला, पंछी की तरह चपल तथा चंचल और खेलकूद का मज़ा लेने में मग्न।

तीनों जने साथ साथ अजय हंसी हंसे। सिर्फ़ वही लोग इस तरह हंस सकते हैं जो कि दक्षिणी सूर्य के प्रकाश में, आनंदी सागर के तट पर रहते हैं। तीनों को हंसते हुए देखकर आसपास के लोग भी हंस उठे—वे लोग जो खुशियां मनाना जानते हैं, जो हर चीज से सौंदर्य निर्माण करने की कला जानते हैं और जो स्वयं भी सबसे सुंदर एवं दर्शनीय वस्तु हैं।

हां, बच्चे वहां ज़रूर थे। तीनों मूर्तियों के पैरों के पास वे आसमान में पर फड़फड़ाते हुए चक्कर काटनेवाले सफ़ेद पंछियों की तरह फुदक रहे थे। अपनी लहरदार, आनंदभरी और उत्साहपूर्ण आवाज़ में बच्चे चिल्लाये :

"मदोन्ना की जय! मदोन्ना की जय!"

बूढ़ी औरतें प्रार्थना कर रही थीं। स्वप्न-रम्य त्रिमूर्ति की ओर उन्होंने देखा और यद्यपि वे अच्छी तरह जानती थीं कि यह ईसा मसीह और कोई नहीं बल्कि पिज़्ज़ा नि सड़क पर रहनेवाला बढ़ई है, जॉन एक घड़ीसाज़ है और मदोन्ना है ज़रदोज़िन अनीता ब्रगाल्या, फिर भी उन्होंने प्रार्थनाएं कीं और अपने जर्जर होंठों से धीमी आवाज़ में मदोन्ना को हर बात के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया, खासकर उसके अस्तित्व के लिए...

पवित्र संगीत की ध्वनि दूर से सुनाई दी और उस पुराने, परिचित गीत के शब्द स्मरण हो आये :

"मृत्यु की ही मृत्यु का हम, अब मनाते पर्व हैं..."

पौ फट रही थी। गिरजे की घंटियां खुशी से टुनटुनाकर जल्दी जल्दी यह घोषित कर रही थीं कि ईसा मसीह, वसंत का भगवान, मृत्यु-निद्रा से जाग उठा है। चौक में बाजेवाले मंडल बनाकर खड़े रहे।

वाजों से संगीत गूँज उठा और उसके ताल पर कई लोग गिरजों की ओर वढ़ने लगे। वहाँ भी अरगन वाजे मुक्त कंठ से पुनरुत्थित वसंत के भगवान के स्तोत्र गा रहे थे और लोगों द्वारा इस पवित्र अवसर पर आकाश में छोड़ने के लिए लाये गये पंछी गुंवदों के नीचे मुक्त विहार कर रहे थे।

मानवों के महान पर्व में पंछियों को, प्राणधारियों में सवसे शुद्ध जीवों को, अंशभागी करने की यह प्रथा सचमुच महान है। हृदय अद्भुत माधुरी से परिपूर्ण हो जाता है रंगविरंगे परोंवाले इन सैकड़ों नन्हे नन्हे जीवों को देखकर, जव वे चहकते-किलकते गिरजे के चारों ओर चक्कर काटते हैं, कंगनियों तथा मूर्तियों पर वैठते हैं और जव-तव नीचे पूजावेदी की ओर उड़ते जाते हैं।

चौक वीरान होने लगा। तीनों देदीप्यमान मूर्तियों ने एक मधुर गीत गाना शुरू किया और तीनों हाथ में हाथ डाले आगे वढ़े। इनके पीछे हो लिये वाजेवाले और उनका अनुसरण किया भीड़ ने। इनके पीछे दौड़ते हुए वच्चे पर्वकालीन रंगविरंगी रोशनी में ऐसे लग रहे थे मानो मूंगे की माला टूटकर उसके दाने विखर गये हों। उधर कवूतर छतों तथा ओरियों पर वैठकर गुटरगूँ कर रहे थे।

और फिर एक वार उस अच्छे, पुराने गीत के शव्द याद आये:

"जाग उठे हैं फिर से ईसा ..."

और मृत्यु को मृत्यु ही से कुचलकर हम सव मृत्यु-निद्रा से जाग उठेंगे।



पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।